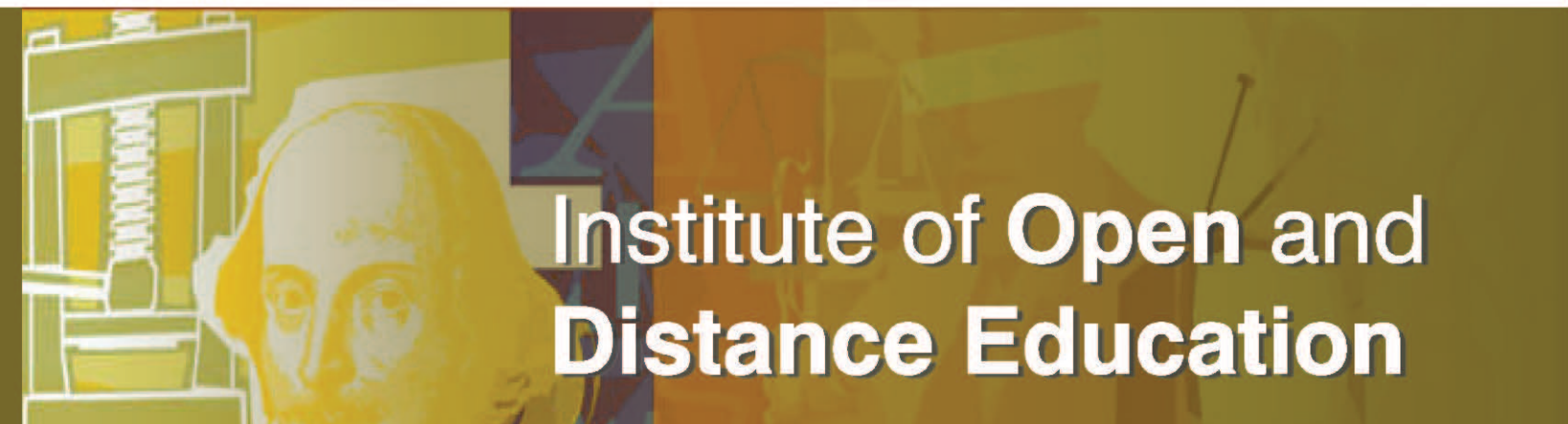


Dr. C.V. Raman University
Kargi Road, Kota, BILASPUR, (C. G.),
Ph. : +07753-253801, +07753-253872
E-mail : info@cvru.ac.in | Website : www.cvru.ac.in

Library Classification Theory



**Institute of Open and
Distance Education**

Faculty of Arts

Library Classification Theory



1BLIB3



DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY

Chhattisgarh, Bilaspur A STATUTORY UNIVERSITY UNDER SECTION 2(F) OF THE UGC ACT

1BLIB3

पुस्तकालय वर्गीकरण सिद्धान्त

IBLIB3, Library Classification Theory

Edition: March 2024

Compiled, reviewed and edited by Subject Expert team of University

1. Dr. Sangeeta Singh

(Professor, Dr. C. V. Raman University)

2. Dr. Sarita Mishra

(Associate Professor, Dr. C. V. Raman University)

3. Dr. Anjani Saraf

(Assistant Professor, Dr. C. V. Raman University)

Warning:

All rights reserved, No part of this publication may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the publisher.

Published by:

Dr. C.V. Raman University

Kargi Road, Kota, Bilaspur, (C. G.),

Ph. +07753-253801,07753-253872

E-mail: info@cvru.ac.in

Website: www.cvru.ac.in

अनुक्रमणिका

अध्याय— 1 आधारभूत शब्दावली एवं ऐतिहासिक परिदृश्य 9—26

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. वर्गीकरण शब्दावली: ऐतिहासिक परिदृश्य
4. वर्गीकरण शब्दावली: भारतीय विचार-संप्रदाय
5. वर्गीकरण शब्दावली के स्रोत
6. परिभाषाएँ
7. सार-संक्षेप
8. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
9. अभ्यास-प्रश्न
10. संदर्भ ग्रन्थ सूची

अध्याय— 2 पुस्तकालय वर्गीकरण की आवश्यकता तथा उद्देश्य 27—44

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. प्रलेख
4. वर्गीकरण
5. सार-संक्षेप
6. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
7. मुख्य शब्द
8. अभ्यास-प्रश्न
9. संदर्भ ग्रंथ सूची

अध्याय— 3 पुस्तकालय वर्गीकरण का सामान्य सिद्धान्त 45—66

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. पुस्तकालय वर्गीकरण का सिद्धांत
4. पुस्तकालय वर्गीकरण का विवरणात्मक सिद्धांत
5. पुस्तकालय वर्गीकरण का गत्यात्मक सिद्धांत
6. सार-संक्षेप

7. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
8. मुख्य शब्द
9. अभ्यास-प्रश्न
10. संदर्भ ग्रंथ सूची

अध्याय— 4 पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धतियों की प्रजातियाँ 67—82

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. पुस्तकालय वर्गीकरण की प्रजातियाँ
4. कुछ प्रमुख वर्गीकरण पद्धतियाँ
5. गहन अनुसूचियाँ
6. सार-संक्षेप
7. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
8. मुख्य शब्द
9. अभ्यास-प्रश्न
10. ग्रंथ सूची

अध्याय— 5 विषयों के सम्बन्ध में जानकारी 83—106

1. अध्याय के उद्देश्य
2. परिचय
3. विषय जगत्
2. विषय निर्माण की विधियाँ
4. विषयों के अध्ययन की विधि
5. सार-संक्षेप
6. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
7. मुख्य शब्द
8. अभ्यास प्रश्न
9. संदर्भ ग्रन्थ सूची

अध्याय— 6 अभिधरणात्मक एवं प्रणालीगत उपागम 107—118

1. अध्याय के उद्देश्य
2. परिचय
3. विषय का प्रतिनिधित्व
4. अभिधरणात्मक उपागम

5. प्रणालीगत उपागम
6. सार-संक्षेप
7. स्व—प्रगति परीक्षण प्रश्नों
8. मुख्य शब्द
9. अभ्यास प्रश्न
10. संदर्भ ग्रन्थ सूची।

अध्याय— 7 मूलभूत श्रेणियाँ, पक्ष विश्लेषण एवं पक्ष अनुक्रम 119—144

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. मूलभूत श्रेणियाँ
4. पक्ष विश्लेषण
5. पक्ष अनुक्रम
6. कुछ सामान्य टिप्पणियाँ
7. सार-संक्षेप
8. स्व—प्रगति परीक्षण प्रश्नों
9. मुख्य शब्द
10. अभ्यास प्रश्न
11. ग्रन्थ सूची

अध्याय— 8 दशा सम्बन्ध एवं सामान्य एकल 145—174

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. मूल, यौगिक एवं मिश्रित विषय
4. दशा सम्बन्ध
5. सामान्य एकल
6. सार-संक्षेप
7. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
8. मुख्य शब्द
9. अभ्यास-प्रश्न
10. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अध्याय— 9 पुस्तकालय वर्गीकरण में प्रयुक्त युक्तियाँ 175—196

1. अध्ययन के उद्देश्य।

2. परिचय
3. पुस्तकालय वर्गीकरण में प्रयुक्त युक्तियाँ
4. युक्तियों के प्रकार
5. वर्गीकरण पद्धतियों में युक्तियों का प्रयोग
6. सार-संक्षेप
7. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
8. मुख्य शब्द
9. अभ्यास प्रश्न
10. संदर्भ ग्रंथ सूची

अध्याय— 10 ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन (डी डी सी) 197—220

1. अध्ययन के उद्देश्य।
2. परिचय
3. डीडी सी का उद्भव
4. उत्तरवर्ती संस्करण
5. आधारभूत सिद्धांत
6. संशोधन प्रक्रिया
7. डी डी का 19वाँ संस्करण
8. मूल्यांकन
9. सार-संक्षेप
10. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
11. मुख्य शब्द
12. अभ्यास प्रश्न
13. संदर्भ ग्रन्थ सूची

अध्याय— 11 ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के 19वें (1979), 20वें (1989) एवं 21वें (1996) संस्करणों का तुलनात्मक अध्ययन 221—236

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. डी डी सी-19 (1979) की मुख्य विशेषताएँ
4. डी डी सी-20 (1989)
5. डी डी सी-21 (1996)
6. आगामी प्रवृत्तियाँ
7. सार-संक्षेप

8. प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
9. मुख्य शब्द
10. अभ्यास-प्रश्न
11. संदर्भ ग्रन्थ सूची

अध्याय— 12 यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन (यू डी सी) 237—258

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
4. प्रकृति एवं संरचना
5. अंकन
6. वर्णानुक्रमिक विषय अनुक्रमणिका
7. भविष्य में विस्तार के लिए प्रावधान
8. यू डी सी का संग्रह प्रकाशन
9. यू डी सी के गुण एवं दोष
10. यू डी सी द्वारा वर्गीकरण अभ्यास
11. सार-संक्षेप
12. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों
13. मुख्य शब्द
14. अभ्यास-प्रश्न
15. संदर्भ ग्रन्थ-सूची

अध्याय— 13 कोलन क्लैसिफिकेशन (सी सी) 259—276

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. कोलन क्लैसिफिकेशन का उद्भव
4. कोलन क्लैसिफिकेशन के आधारभूत सिद्धान्त
5. अंकन
6. युक्तियाँ
7. दशा सम्बन्ध
8. प्रणाली एवं विशिष्ट वर्ग
9. कोलन क्लैसिफिकेशन के गुण एवं दोष
10. कोलन क्लैसिफिकेशन द्वारा वर्गीकरण अभ्यास
11. सार-संक्षेप

12. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
13. मुख्य शब्द
14. अभ्यास प्रश्न
15. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अध्याय— 14 कोलन क्लैसिफिकेशन के विभिन्न पाठांतर 277-288

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. कोलन क्लैसिफिकेशन पाठांतर 1 : सिद्धान्त निरपेक्ष पाठांतर
4. कोलन क्लैसिफिकेशन पाठांतर 2 : सिद्धान्त सापेक्ष पाठांतर
5. कोलन क्लैसिफिकेशन पाठांतर 3
6. सी सी के सातवें संस्करण में किए गए परिवर्तन
7. सार-संक्षेप
8. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों
9. अभ्यास-प्रश्न
10. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अध्याय— 15 पुस्तकालय वर्गीकरण में वर्तमान प्रवृत्तियाँ 289-304

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. तीन मुख्य काल
4. डी डी सी का विकास
5. यू डी सी का विकास
6. कोलन क्लैसिफिकेशन का विकास
7. अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन
8. संगठन, संस्थाएँ एवं शोध दल
9. वर्गीकरण पद्धतियों की जाँच
10. यूनीसिस्ट एवं ब्रॉड सिस्टम ऑफ आर्डरिंग (बी एस ओ)
11. स्टैंडर्ड रेफरेन्स कोड (एस आर सी) तथा बी एस ओ के लिए एफ आई डी का प्रस्ताव
12. पुस्तकालय वर्गीकरण की विशिष्ट पद्धतियों
13. पुस्तकालय वर्गीकरण एवं कम्प्यूटर
14. इंटरनेट : पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धतियाँ
15. सार-संक्षेप
16. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
17. अभ्यास-प्रश्न

आधारभूत शब्दावली एवं ऐतिहासिक परिदृश्य

NOTES

अध्याय में सम्मिलित है :

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. वर्गीकरण शब्दावली: ऐतिहासिक परिदृश्य
 - 3.1. पुस्तकालय विज्ञान में अन्य शब्दावलियों से संबंध
 - 3.2. पदों की प्रकृति
4. वर्गीकरण शब्दावली: भारतीय विचार-संप्रदाय
5. वर्गीकरण शब्दावली के स्रोत
6. परिभाषाएँ
 - 6.1. "वर्गीकरण" का अर्थ
 - 6.2. जगत् एवं सत्ता
 - 6.3. समूह एवं वर्ग
 - 6.4. लक्षण एवं अभिलक्षण
 - 6.5. पुस्तकालय वर्गीकरण के प्रकार
 - 6.6. महाविषय एवं विषय
 - 6.7. श्रेणी, पक्ष एवं एकल
 - 6.8. पंक्ति एवं श्रृंखला
 - 6.9. वर्गीकरण अनुसूचियाँ
 - 6.10. वर्गीकरण की प्रजातियाँ
 - 6.11. अंकन
7. सार-संक्षेप
8. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
9. अभ्यास-प्रश्न
10. संदर्भ ग्रन्थ सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्याय में वर्गीकरण जैसे वैज्ञानिक विषय के लिए पारिभाषिक शब्दावली के महत्त्व की व्याख्या की गई है। यह वर्गीकरण जैसे विषय में प्रयुक्त बंधारणाओं एवं शब्दों से आपको सुपरिचित कराती हैं इस अध्याय का अध्ययन करने के पश्चात् आप:

एक वैज्ञानिक विषय में शब्दावली के महत्त्व को समझ पाएँगे; तथा

पुस्तकालय वर्गीकरण सिद्धांत एवं अभ्यास में व्यवहार में आने वाले शब्दों के अर्थ एवं उनके प्रयोग को समझ पाएँगे।

2. परिचय

एक शब्द को किसी भी दी गई सत्ता (entity) अथवा अवधारणा के मानकीकृत सटीक नाम के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि शब्दावली का प्रयोग किसी भी वर्गीकरण पद्धति में वर्गों एवं श्रेणीबद्ध एकलों को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। प्रयुक्त शब्दों एवं अवधारणाओं के मध्य हमेशा पारस्परिक संबंध होना चाहिए। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक अवधारणा को एक शब्द, पद अथवा वाक्यांश द्वारा व्यक्त किया जाएगा तथा प्रत्येक शब्द अथवा वाक्यांश एक अवधारणा को व्यक्त करेगा। किसी वैज्ञानिक, शैक्षणिक अथवा वैधानिक संप्रेषण प्रक्रिया में मानकीकृत शब्दावली न केवल महत्त्वपूर्ण है अपितु अत्यंत आवश्यक भी है। प्रभावी संप्रेषण उस समय तक नहीं हो सकता जब तक अवधारणाओं एवं शब्दों को तयपारक रूप से परिभाषित न किया गया हो। पूर्व परिभाषित शब्दों को तकनीकी शब्दावली के रूप में भी जाना जाता है। यह विरोधाभास ही है कि जनसाधारण जिस भाषा का प्रयोग करता है वह दुर्बल भी होती है और समृद्ध भी। उसमें भिन्नार्थक शब्दों की भरमार रहती है। एक ही पद का प्रयोग भिन्ना-भिन्न अर्थों में होता है। उदाहरणार्थ "क्रिकेट" (Cricket) एवं "ब्रिज" (Bridge) प्रत्येक के दो-दो अर्थ हैं। ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी में ऑर्डर (Order) शब्द के दो सौ से अधिक अर्थ दिए हैं। एक ही शब्द भिन्न-भिन्न अर्थों को व्यक्त कर सकता है। पदुय की एक पंक्ति अलग-अलग व्यक्तियों को अलग-अलग अर्थ व्यंजित कर सकती है। भाषा में पर्यायवाची शब्द होते ही हैं। उदाहरणार्थ, किसी विचार को एक भाषा में एक से अधिक शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है जैसे—मजदूरी, वेतन एवं पगार एक ही अर्थ को व्यक्त करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सामान्य भाषा, संप्रेषण का आदर्श उपकरण नहीं है। अगर इसका प्रयोग बिना किसी परिवर्तन के वैज्ञानिक विषय में किया जाएगा तो हय संप्रेषण में व्यवधान उत्पन्न कर विषय के विकास में अवरोध बनेगी। "ए टावर ऑफ बैबिल" (A Tower of Babel) तो विषय की प्रगति एवं अभिव्यक्ति की जगह केवल भ्रम एवं गोलमान को ही व्यक्त करेगा। इस समस्या का केवल एक ही समाधान है कि एक सटीक रूप से परिभाषित शब्दावली का निर्माण किया जाए। इसके बिना किसी भी विषय का विकास संभव नहीं हो सकता।

दूसरे शब्दों में, इस दिशा में निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सुनियोजित प्रयास होने चाहिए:

- (i) शब्दों की संदिग्धता अथवा दृव्यर्थकता पर अंकुश लगाकर अस्पष्टता को समाप्त करना;
- (ii) प्रत्येक विषय के लिए, पर्यायवाची एवं समानार्थी शब्दों से मुक्त एवं सहमति के आधार पर एक मानकीकृत शब्दावली विकसित करना; तथा
- (iii) जब कोई नया विचार उत्पन्न हो अथवा पुराने शब्द को पुनर्स्थापित करना हो तो नए शब्दों के निर्माण के लिए एक विधि निर्धारित करना।

एस.आर. रंगनाथन (1872-1972) का मत था कि पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए वैज्ञानिक शब्दावली दो कारणों से महत्त्वपूर्ण है। प्रथम, छ पुस्तकालयाध्यक्ष एवं सूचना वैज्ञानिक दूसरे विषयों की तकनीकी शब्दावली को सीख कर पाठकों के साथ प्रभावी रूप से संप्रेषण कर सकते हैं एवं सेवा प्रदान कर सकते हैं। द्वितीय, इसलिए कि अपने व्यवसाय एवं विषय में शोध एवं विकास से संबंधित तकनीकी मामलों को सहयोगियों के साथ विचार-विमर्श करने के लिए उन्हें अपने विषय की शब्दावली को समझना होगा।

3. वर्गीकरण शब्दावली : ऐतिहासिक परिदृश्य

पुस्तकालय वर्गीकरण एक शैक्षिक विषय के रूप में 125 वर्ष पुराना है। अब इसके अध्ययन एवं शोध में तेजी आई है। हमें इस सत्य को भी स्वीकार करना होगा कि इसकी शब्दावली अभी तक सुस्थापित नहीं हो पाई है।

पुस्तकालय वर्गीकरण के क्षेत्र में प्रोफेसर एस.आर. रंगनाथन (1892-1872) का एक महत्वपूर्ण योगदान है कि उन्होंने विचारों को व्यक्त करने के लिए शब्दावली का निर्माण किया। भारत में पुस्तकालय वर्गीकरण की शब्दावली का विकास वर्गीकरण के सिद्धांत एवं अभ्यास के विकास के साथ-साथ हुआ है। विगत शताब्दी के छठवें से आठवें दशक के मध्य यह विकास अत्यंत तीव्र गति से हुआ। इसका प्रमुख कारण विषय में गहन अनुसंधान कार्य है।

वर्गीकरण की विशिष्ट शब्दावली को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रोत्साहित करने में क्लैसिफिकेशन रिसर्च ग्रुप, लंदन (CRG : Classification Research Group, London) की महत्वपूर्ण भूमिका है। सी आर जी (CRG) के सदस्यों का रंगनाथन से अत्यंत निकट का संबंध था। उन्होंने उनके प्रत्येक शब्द को समालोचनात्मक रूप से विश्लेषित किया, कुछ पदों में संशोधन भी किया, बहुत से शब्दों को जेस का तैसा रखा, तथा कुछ शब्दों को व्यायात्मक रूप से परिभाषित करके ब्रिटेन एवं अन्य देशों को पुस्तकालय जगत् में फैलाया। रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित विचारों का प्रयोग करते हुए पाठ्य-पुस्तक प्रकाशित होने लगीं।

सी आर जी के तत्वावधान में वर्गीकरण का पहला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन डार्किंग (Dorking) में हुआ जिसमें यह निष्कर्ष निकाला गया कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयुक्त शब्दों की एक व्यापक शब्दावली विकसित की जाए। नई शब्दावली को नए पाठकों के उपयोग हेतु बी.सी. बिरी (B.C. Vickery) द्वारा संकलित किया गया। इसको एफ आई डी (FID International Federatio for information and Documentation/ Federation Internationale d' Information et de documetation) कांग्रेस ने खूब सराहा। रंगनाथन स्वयं भी एक आई डी/सी ए (FID/CA) (CA : Committee on Classification Theory) के सदस्य थे। वर्गीकरण एवं शोध प्रक्रिया से संबंधित द्वितीय, एवं चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों ने शब्दों के विकास की गति को संतोषजनक पाया।

आज हम पाते हैं कि रंगनानि द्वारा विकसित वर्गीकरण शब्दावली वर्गीकरण के शोध, अध्यापन, अध्ययन एवं लेखन का अभिन्न अंग बन चुकी है।

3.1 पुस्तकालय विज्ञान में अन्य शब्दावलियों से संबंध

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में वर्गीकरण एक अपरिहार्य विषय है तथा यह पुस्तकालय विान की सभी शाखाओं में व्याप्त है। इस प्रकार वर्गीकरण शब्दावली एक अन्योन्य शब्दावली है। विषय अनुक्रमणीकरण शब्दावली में वर्गीकरण एवं सूचीकरण की प्रतीकात्मक प्रप्रकृति से सर्व सामान्य कड़ी का रूप ग्रहण कर लिया है। वर्गीकरण शब्दावली के शाब्दिक धरातल के अनेक नियम प्रसूचीकरण शब्दावली के शाब्दिक धरातल के अनेक नियम प्रसूचीकरण शब्दावली के नियमों के रूप में भी कार्य करते हैं।

संदर्भ सेवा के संबंध में हम कह सकते हैं कि वर्गीकरण द्वारा वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक (analytic synthetic) ढाँचा प्रदान किया जाता है जो संदर्भ कार्य एवं सेवाओं को प्रभावशाली रूप से संपन्न करने में सहायक है। वर्गीकरण के अनेक पदों का प्रयोग न्यनाधिक रूप में सूचना एवं संदर्भ कार्यों में लगभग समान रूप से किया जा सकता है। इस प्रकार, पुस्तकालय विज्ञान के दो विषयों से सह-अस्तित्व क एक रेखा दिखाई देती है। कुछ सीमा तक, पुस्तकालय प्रबंधन के कुछ पक्षों की व्याख्या करने के लिए भी वर्गीकरण शब्दावली का प्रयोग किया जा सकता है।

अतः निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि वर्गीकरण शब्दावली पुस्तकालय विज्ञान विषय के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं कि वर्गीकरण शब्दावली पुस्तकालय विज्ञान की बौद्धिक वर्गीकरण पदावली में निहित हैं।

NOTES

3.2 पदों की प्रकृति

NOTES

वर्गीकरण शब्दावली का विश्लेषण करते हुए सन् 1986 में प्रसाद (Prasad) ने तीन प्रकार के पदों की पहचान की—नियामक, मौलिक एवं सहायोगी। नियामक पदों (Normative Terms) की प्रकृति काग्रवाहक होती है जो कि कार्यविधि को व्यक्त करती है तथा कार्य की संभावित गुणवत्ता को व्यक्त करने में सहायक होती है। उदाहरणार्थ, विभिन्नता का उपसूत्र (Conon of Differentiation)

दूसरी तरफ मूलभूत पद (Fundamental Terms) आधारभूत अवधारणाओं को परिभाषित करते हैं, जो कि वर्गीकरण प्रक्रिया के बीज रूप में संस्थित हैं। उदाहरणार्थ, विभाजन एवं अभिलक्षण। सहयोगी शब्द (Associative Terms) वे हैं जो वर्गीकरण शोध प्रक्रिया में परिचर्चा तथा संचालन के लिए मौलिक शब्दों के अर्थ विभिन्न संदर्भों में विस्तारित करते हैं। उदाहरणार्थ, खुले अंत वाली पंक्ति (Open-ended Array)।

नीचे दी गई तालिका, प्रकृति के अनुसार समूहबद्ध किए पद पदों की गणना को व्यक्त करती हैं:

इस प्रकार प्रोलेगोमेना (Prolegomena) के तीन संस्करणों में कुल मिलाकर 514 तकनीकी शब्दों का प्रयोग किया गया है। इन शब्दों का प्रयोग किया गया है। इन शब्दों को कार्य धरातलों में विभाजित किया गया है: 1) वैचारिक धरातल (Idea Plane) में 298 शब्द, 2) शाब्दिक धरातल (Verbal Plane) में 35, शब्द, एवं 3) अंकन धरातल (Notational Plane) में 181 शब्द। इसके अतिरिक्त बहुत सारे नए शब्दों तथा पुराने शब्दों को परिष्कृत करने का एक महान कार्य रंगनाथन एवं उनके अनुयायियों द्वारा डी आर टी सी (DRTC : Documentation Research and Training Centre) में किया गया। इसके अतिरिक्त 1975 में मुंबई में वर्गीकरण शोध पर आयोजित तृतीय विश्व सम्मेलन (Third International Study conference on Classification Reserch) में प्रस्तुत आलेखों एवं चर्चा में इस बात पर बल दिया गया कि वर्गीकरण की अंतरविषयी प्रकृति की यह मांग है कि ज्ञान मीमांसा, तर्क, मनोविज्ञान, गणित, भाषा विज्ञान एवं सामाजिक अवधारणाओं से संबंधित अवधारणाओं तथा पदों के बीच समन्वय-कार्य किया जाना चाहिए। इस सम्मेलन में वर्गीकरण के जुड़ी विचारधाराओं सार्वभौमिकता, उनकी वर्गीकरण के प्रति विभिन्न अंतर्निहित दृष्टिकोणों को परस्पर संबंधित करने की क्षमता तथा ज्ञान की क्रम-व्यवस्था पर विचार-विमर्श किया गया। फ्रैंकफर्ट (जर्मनी) से प्रकाशित एक पत्रिका इण्टरनेशनल क्लैसिफिकेशन (International Classification) जिसका नाम अब नॉलिज ऑर्गेजेशन (Knowledge Organisation) हो गया है, ने वर्गीकरण साहित्य में प्रयुक्त शब्दावली को परिष्कृत करना शुरू कर दिया गया है तथा कंप्यूटर विज्ञान तथा संप्रेषण सिद्धांत से संबंधित विचारों का प्रयोग होने लगा है। एफ आई डी/सी आर (FID/CR) (CR : Committee on Classification Research) द्वारा विभिन्न राष्ट्रों के प्रतिवेदनों को प्रकाशित किया गया तथा ब्लिस वर्गीकरण दल (Bliss's Classification) ने इस पद्धति के बहुत सारे गहन संस्करण प्रकाशित किए।

4. वर्गीकरण शब्दावली : भारतीय विचार-संप्रदाय

पिछले सौ वर्षों से पुस्तकालय वर्गीकरण पर बहुत सरी पद्धतियाँ प्रतिपाति की गईं। 16 सितंबर 1955 को ब्रुसेल्य से एफ आई डी की आम सभा की बैठक से से यह निष्पत्ति लिया गया कि वर्गीकरण की एक शब्दावली तैयार करने के लिए आवश्यक कदम उठपए जाने चाहिए। इस दिशा में 1957 में ही यह संस्सुि की गई कि वर्गीकरण सिद्धांत के प्रत्येक विचार-संप्रदाय को अपने द्वारा प्रयुक्त शब्दों की एक शब्दावली तैयार करी चाहिए। वर्गीकरण की ऐसी सभी शब्दावलियों को एकत्र कर एक सार्वभौमिक विस्तृत शब्दावली (Universal Comprehensive Glossary) का संकलन किया जाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त साक्षरता में वृद्धि तथा देश में पुस्तकालयों की संख्या में वृद्धि के कारण विभिन्न पुस्तकालयों में कार्यरत कर्मचारियों के मार्गदर्शन हेतु एक आधिकारिक एवं विस्तृत शब्दावली की आवश्यकता थी। भारतीय मानक संस्थान (Indian Standards Institution) ने, जिसे अब ब्यूरो ऑफ इण्डियन स्टैंडर्ड्स (Bureau of Indian Standards) के नाम से जाना जाता है, अपनी प्रलेखन समिति के द्वारा वर्गीकरण शब्दों की शब्दावली तैयार करने का कार्य प्रारंभ किया।

NOTES

भारतीय विचार-संप्रदाय में प्रचलित वर्गीकरण शब्दावली का निम्न कार्य तीन स्तरों पर पूरा हुआ। प्रथम स्तर पर न केवल भारतीय विचार-संप्रदाय के प्रचलित शब्दों को अपितु अँगरेजी भाषा बोलने वाले देशों के विचार-संप्रदाय में प्रचलित शब्दों को भी लिया गया। प्रथम प्रारूप में सम्मिलित परिभाषाओं को ए एल ए ग्लोसरी (ALA Glossary) तथा हेनरी एव्लिन ब्लिस (Henry Evelyn Bliss) डॉकर ड्यूविस (Donker Duyvis), एस.आर. रंगनाथन, डब्ल्यू.सी बरविक-सेयर्स (W.C. Berwic Sayers) बी.सी. विकरी (b.C. Vickery) तथा फ्रेंड एव एस. वेंगर जूनियर (Frank S. Wanger Jr.) की रचनाओं से लिया गया है। द्वितीय स्तर पर केवल उन्हीं शब्दों को मसौदे में शामिल किया गया जो कि इस विभागीय समिति को स्वीकार्य थे। तृतीय तथा अंतिम चरण में उन सुझावों पर विचार किया गया जो द्वितीय मसौदे की व्यापक वितरण के कारण प्रस्तुत किए गए थे और तत्पश्चात् अंतिममानको तैयार किया गया।

इस मानक (IS : 2550-1963) में 23 अध्याय हैं जो 3 व्यापक शीर्षकों के अंतर्गत व्यवस्थित हैं : वर्गीकरण सामान्य रूप में, पुस्तकालय वर्गीकरण के लिए जगत् एवं ज्ञान जगत् वर्गीकरण।

वर्गीकरण की ये तीन आधारभूत अवधारणाएँ निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत परिगणित हैं:

जगत् एवं सत्ता, समूह एवं वर्ग, लक्षण एवं अभिलक्षण, पुस्तकालय वर्गीकरण के प्रकार, महाविषय एवं आधारभूत विषय, श्रेणियों, पंच एवं एकल, पंक्ति एवं श्रृंखला, वर्गीकरण के लिए अनुसूचियाँ, विषय के लिए वर्गीकरण की प्रजातियाँ, अंकन

आगामी अनुच्छेदों में आपको सामान्य वर्गीकरण की कुछ मूल एवं प्रमुख अवधारणाओं/पदों से परिचित कराने का प्रयास किया गया है। वर्गीकरण के अन्य पदों को बी एल आई एस 03 : पुस्तकालय वर्गीकरण सिद्धांत तथा 03P : पुस्तकालय वर्गीकरण अभ्यास के मुख्य शब्द अनुभाग के स्पष्ट किया गया है।

5. वर्गीकरण शब्दावली के स्रोत

वर्गीकरण शब्दावली के निम्नलिखित स्रोत हैं:

- (a) ALA Glossary of Library Terms; 1956
- (b) BLISS (H.E). Bibliographic Classification; 1-11, 1952
- (c) RANGNATHAN (SR)
- (i) Classification and Communication; 1951
- (ii) The Series on Common Isolates (Review of Documentation, 23-25; 1956-57)
- (iii) Prolegomena to Library Classification; Ed. 12, 1957
- (iv) Classified Catalogue Code; Ed. 5, 1964
- (v) Library Classification Glossary (Annals of Library Science, 5; 1958; 76-112)
- (vi) Colon Classification; Ed. 6, 1959 and Ed. 7, 1987
- (vii) Elements of Library Classification; Ed. 3, 1961
- (viii) Notational Plane : Interpolation and Extrapolation] (Annals of Library Science, 10; 1963; 1-13)
- (d) SAYERS (W C Berwick)
 - (i) Manual of Classification; Ed. 1955
 - (ii) Introduction of Library Classification, Ed. 9, 1958
- (e) VICKERY (B C) Faceted Classification
- (f) WANGER (Frank S). Dictionary of Documentation Terms (Americal Documentation, 11; 1960; 102-119)

NOTES

6. परिभाषाएँ

प्रोलेगोमना टू लाइब्रेररी क्लैसिफिकेश (Prolegomena to Library Classification) (1937) के प्रथम संस्करण में अधिकतर पदों को परिभाषा सहित प्रथम बार प्रयुक्त किया गया था। इस अनुच्छेद में वर्णित परिभाषाओं को रंगनाथन की इस कृति के तृतीय संस्करण के खंड 1 (1967) से लिया गया है।

6.1 "वर्गीकरण" का अर्थ

लोकप्रिय प्रचलन में "वर्गीकरण" शब्द के दो या अधिक आशय हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि "वर्गीकरण पद भिन्नार्थक" शब्द है।

सही संप्रेषण के लिए आवश्यक है कि इस भिन्नार्थकता का निदान किया जाए।

विभाजन

- (i) "वर्गीकरण किसी जगत् को एक वरीय अभिलक्ष के आधार पर छाँटने की प्रक्रिया है या फिर समान गुण वाली सत्ताओं को एक उप-समूह में तथा भिन्न गुण वाली सत्ताओं को अलग उप-समूह में रखने की प्रक्रिया है"।
- (ii) "आशय-1 में वर्णित विभाजन का प्रतिफल—अर्थात् जगत् की सत्ताओं से विभाजन से निर्मित उप-समूह का समुच्च"।

वर्गीकरण का द्वितीय आशय

सामूहिकीकरण

- (i) "सामूहिकीकरण से तात्पर्य एक दिए गए जगत् को छोटे-छोटे समूहों में विभाजित करने से है तथा साथ ही प्रत्येक समूह को एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित करने से है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि प्रत्येक प्रतिपादित समूह को क्रम प्रदान करना सामूहिकीकरण का ही अंग है"।
- (ii) प्रथम आशय के अंतर्गत जगत् सत्ता का सामूहिकीकरण ही इसके प्रथम आशय का प्रतिफल है। इसका वैकल्पिक पद 'वर्गीकरण' है 'द्वितीय आशय: प्रचलित अर्थ'।

प्रथम आशय में उल्लिखित वर्गीकरण तथा व्युत्पन्न समूहों का वरीय अनुक्रम में व्यवस्थापन।

वर्गीकरण का तृतीय आशय

"तृतीय आशय से तात्पर्य वर्गीकरण के द्वितीय आशय में निहित कार्य तथा प्रत्येक सत्ता को एक क्रमबोधक प्रणाली में से क्रमबोधक संख्या प्रदान करना है जिससे कि निश्चित क्रम को स्वतः ही प्राप्त किया जा सके। इससे:

- (i) एक सत्ता को निश्चित म से बाहर निकाले जाने की स्थिति में उसे पुनर्स्थापित किया जा सकता है; तथा
- (ii) यदि कोई सत्ता भविष्य में निरूपित होती है तो उसे उसके निश्चित स्थान पर प्रतिस्थापित किया जा सकता है"।

6.2 जगत् एवं सत्ता

"वर्गीकरण सिद्धांत में अनेक सारगर्भित पद होते हैं" जो कल्पित पद हैं। इनमें कुछ पदों की व्याख्या आगे की गई है तथा कुछ पदों की परिभाषा किसी अन्य पद की व्याख्या करते हुए दी गई है।

सत्ता (Entity)

"जिसका अस्तित्व हो—चाहे मूर्त या वैचारिक, अर्थात् कोई वस्तु या विचार" एन्टिटी या सत्ता है।

"उदाहरणार्थ—एक लड़का, पुस्तक, मधुरता, दर्शनिक प्रणाली, अध्ययन का एक विषय"

जगत्

“दिए गए संदर्भ में वर्गीकरण के लिए लिया गया समुच्च”। समुच्च का अर्थ है, “किसी सत्ता का व्यवस्थाहीन संग्रह या ढेर”। जगत् तीन प्रकार के हो सकते हैं।

ससीम जगत् “जगत् जिसमें सत्ताओं की संख्या नियत या सीमित हो। उदाहरणार्थ कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या”।

असीम जगत् : “जगत् जिसमें सत्ताओं की मात्र अनियत या असीम हो। उदाहरणार्थ पूर्णांकों का जगत्”

वर्धनशील जगत्: “ऐसा जगत् जिसमें समय-समय पर नई सत्ताएँ जुड़ती या विकसित होती रहती हैं, उदाहरणार्थ अध्ययन के विषय”।

6.3 समूह एवं वर्ग

समूह

“किसी जगत् की सत्ताओं के विभाजन द्वारा प्राप्त सत्ताओं का उप-समुच्चय” समूह हैं समूह दो प्रकार के होते हैं।

एकल समूह : वह समूह जिसमें एक और केवल एक सत्ता हो।

बहुल समूह : वह समूह जिसमें दो या दो से अधिक सत्ताएँ हों।

वर्ग

वर्ग एक क्रमबद्ध समूह है और क्रमबद्ध करने का अर्थ है, “किसी जगत् की सत्ताओं के विभाजन से प्राप्त सूहों को निश्चित अनुक्रम में व्यवस्थापित करना ताकि उनका सामूहिकीकरण किया जा सके”।

वर्ग दो प्रकार के होते हैं।

एकल वर्ग : “वह वर्ग जिसमें केवल एक ही सत्ता होती है”।

बहुल वर्ग : “वह वर्ग जिसमें दो या दो से अधिक सत्ताएँ होती हैं”।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. वर्गीकरण के पहले अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में क्या निर्णय हुआ?
2. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में वर्गीकरण शब्दावली की क्या उपयोगिता है,?

.....
.....
.....
.....

6.4 लक्षण एवं अभिलक्षण

लक्षण

किसी भी सत्ता में निहित गुणधर्म अथवा संख्यात्मक क्षमता अथवा गुणवत्ता को उसका लक्षण कहते हैं। रंगनाथन ने अपनी पुस्तक *प्रोलोगामेना टू लाइब्रेरी क्लैसिफिकेशन* में लक्षण के निम्नांकित उदाहरण दिए हैं:

उदाहरण

एक पुस्तक में निहित कुछ लक्षण इस प्रकार हैं:

विषय-वस्तु

विषय प्रस्तुति के विभिन्न स्वरूप जैसे प्रश्नोत्तरी, नाटक, गद्य, चित्रकथा या वृत्तांत इत्यादि।

NOTES

भाषा किसी दार्शनिक विचारधारा के कुछ लक्षण निम्नलिखित हो सकते हैं:

माने गए चरम सिद्धांतों की संख्या जैसे अद्वैतवाद, द्वैतवाद एवं बहुलवाद; यथार्थ के प्रति मनोवृत्ति; आदर्शवाद तथा यथार्थवाद; प्रतिपादन से संबंधित देश।

NOTES

अभिलक्षण

दूसरी तरफ, अभिलक्षण का अर्थ है, "ऐसा लक्षण अथवा लक्षण-समूह जिसके आधार पर सत्ताओं की समानता एवं असमानता का निर्धारण किया जा सके तथा प्रतिफल के रूप में कम से कम दो अलग-अलग वर्गों को प्राप्त किया जा सके"।

उदाहरणार्थ

'लंबाई' लड़को का एक अभिलक्षण है। परंतु 'चेहरा' उनका अभिलक्षण नहीं है। : 'चेहरा होना' एक लक्षण है जो सारे लड़को से समान है।

अभिलक्षण भी विभिन्न प्रकार के होते हैं जो निम्नलिखित हैं:

प्राकृतिक अभिलक्षण: "वर्गीकरण के लिए, लिए गए जगत् की सभी सत्ताओं में समान रूप से पाए जाने वाले वे अभिलक्षण जिन्हें उनसे अलग न किया जा सके या जो उनमें अंतर्निहित हों," जैसे लंबाई, आयु अथवा कार्य करने की योग्यता।

कृत्रिम अभिलक्षण: "वर्गीकरण के लिए, लिए गए जगत् की समस्त सत्ताओं—चाहे उनमें से कुछ क वर्गीकरण पर विचार किया जा रहा हो या नहीं में निहित सार्वजनीन अभिलक्षण। उदाहरणार्थ, एक व्यक्ति के द्वारा पहने ए कपड़े, अथवा केश काढ़ने का तरीका"।

विभाजन अभिलक्षण : "किसी जगत् की सत्ताओं के विभाजन के लिए प्रयुक्त अभिलक्षण।

उदाहरणार्थ, एक कक्षा छात्रों का समुच्चय ही जगत् है। यदि हम 'लंबाई' के आधार पर उन्हें छांटते हैं (1.51 उपविभाजन को देखें) तो उनकी 'लंबाई', को यहां विभाजन अभिलक्षण कहा जाएगा और एक ही लंबाई के छात्र एक उप-समुच्चय का निर्माण करेंगे"।

सामूहिकीकरण अभिलक्षण: "किसी जगत् के सामूहिकीकरण के लिए प्रयुक्त अभिलक्षण"।

6.5 पुस्तकालय वर्गीकरण के प्रकार

जब सत्ताएँ पुस्तक अथवा सूचना के अन्य स्रोत हों, तो उनका वर्गीकरण *पुस्तकालय वर्गीकरण (Library Classification)* कहलाता है। पुस्तकालय वर्गीकरण को ज्ञान वर्गीकरण भी कहते हैं क्योंकि पुस्तकें एवं अन्य पाठ्य सामग्री में ज्ञान निहित होता है। पुस्तकालय इस अर्थ में प्रत्यक्ष रूप से उपयोगितावादी है कि इसका एक आसन्न उद्देश्य होता है। पुस्तकालय वर्गीकरण के विभिन्न अर्थ हैं। जब इसका प्रयोग पुस्तकों एवं अन्य सूक्ष्म ग्रंथों को निधानियों पर व्यवस्थित करने के लिए किया जाता है तो यह *ग्रंथ वर्गीकरण (Book Classification)* कहलाता है। लेकिन जब इसका प्रयोग ग्रंथपरक सूचना—जैसे ग्रंथसूची, अथवा प्रसूची को व्यवस्थित करने के लिए किया जाता है तो यह *ग्रंथात्मक वर्गीकरण (Bibliographic Classification)* कहलाता है। ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन का प्रतिपादन ग्रंथ वर्गीकरण के लिए किया गया था जबकि यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन का प्रतिपादन ग्रंथात्मक वर्गीकरण के लिए किया गया था। ग्रंथात्मक वर्गीकरण पद का प्रयोग विस्तृत एवं गहन वर्गीकरण के लिए किया गया है। *गहन वर्गीकरण* करने के लिए सूक्ष्मतरंग प्रलेखों की आवश्यकता होती है और इसी को *गहन वर्गीकरण (Depth Classification)* कहते हैं लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस क्लैसिफिकेशन एक अपेक्षाकृत गहन वर्गीकरण है। एक वर्गीकरण पद्धति जो कि सूक्ष्म वर्गीकरण प्रदान नहीं करती है तथा छोटे पुस्तकालयों के उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करती है। उसे *स्थूल वर्गीकरण (Broad Classification)* कहते हैं। उदाहरणार्थ राइडर्स इंटरनेशनल क्लैसिफिकेशन (1961) एवं ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के प्रारंभिक संस्करण।

ज्ञान के सीमित क्षेत्र—जैसे अर्थशास्त्र, व्यावसायिक सुरक्षा, पर्यावरण, अभियांत्रिकी या चर्म प्रौद्योगिकी—के वर्गीकरण को *विशिष्ट वर्गीकरण (General Classification)* कहलाता है। कुछ लोग इसे *सार्वभौमिक वर्गीकरण (Universal Classification)* कहते हैं।

पुस्तकालय वर्गीकरण, चाहे वह किसी प्रकार का क्यों न हो, को परिभाषित करते हुए रीटा मार्सेलो एवं राबर्ट न्यूटन (Rita Marcella and Robert Newton) ने कहा है: “ग्रंथों एवं अन्य पाठ्य सामग्री का विषयानुसार व्यवस्थापनल याल सूची लएवं अनुक्रमणिका के संलेखो का ऐसे क्रम से व्यवस्थापन जो वांछित सूचना के खोजना में अत्यधिक उपयोगी हो या वांछित विषय की खोज में संभावित स्त्रोतों को प्रदर्शित कर सकें”।

वर्गीकरण का उद्देश्य पुस्तकालय के संसाधनों का ईष्टतम उपयोग सुनिश्चित कराना है। मानवचालित एवं स्वचालित सूचना पुनः प्राप्ति प्रणाली दोनों के लिए यह एक महत्वपूर्ण उपकरण है।

6.5. महाविषय एवं विषय

एक आधुनिक पुस्तकालय में प्रलेखों का व्यवस्थापन साधारणतया विषयानुसार होता है। ग्रंथों के इस प्रकार के व्यवस्थापन के लिए विषय की विशिष्टता के अनुसार ही विभाजन किया जाता है। एक विषय सुसंबद्ध, समांगी एवं संगत विचारों या ज्ञान का ऐसा टुकड़ा है, जिसकी गहराई एवं सीमाएँ एक सामान्य बुद्धिशील व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता एवं विशेषज्ञता के अंतर्गत समा सकें। लेकिन पुस्तकालय वर्गीकरण से हमारा संबंध विशिष्ट विषय से होता है। जब हम एक विशिष्ट विषय का जिक्र करते हैं तो हम सर्वदा एक प्रलेख की बात करते हैं। प्रलेख के विशिष्ट विषय को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि यह प्रलेख का विषय है जिसकी विस्तृति (विस्तार क्षेत्र/सीमाएँ) तथा सघनता (गहराई/विवरण) प्रलेख के अंतर्विषय के समतुल्य है। ज्ञान को बड़े क्षेत्रों, जिन्हें महाविषय कहते हैं, में विभाजित किया जाता है।

महाविषय (Discipline) का ज्ञान एक मुख्य सतत् क्षेत्र है जो या तो अध्ययन के विषयों की समानता के आधार पर बनता है (चाहे यह प्रकृति नैसर्गिक उद्देश्य होया सामाजिक मुद्दों), अथवा ज्ञानार्जन के लिए किस पद्धति का प्रयोग करके प्राप्त किया गया है (कल्पनाशीलता पर आधारित य अनुभवजन्य)। जोटे तौर पर ज्ञान जगत् के अंतर्गत तीन महाविषय हैं:

विज्ञान (प्राकृतिक पदार्थों का अध्ययन)

सामाजिक विज्ञान (समाज की समस्याओं का अध्ययन)

मानविकी (कल्पना अथवा बोध के द्वारा अध्ययन)

फिर भी, किसी महाविषय के अर्थ समय-समय पर परिवर्तित होते रहते हैं। वर्तमान में सभी वर्गीकरण महाविषयों के अनुसार हैं। इसकी शुरुआत मेल्विल ड्यूई (Melvil Dewey) (1851-1931) ने की थी। एक प्रकरण (Topic) का कई विषयों में समावेश हो सकता है।

महाविषयको पुनः आधारभूत विषयों या मुख्य वर्गों में विभाजित किया जाता है। मुख्य वर्ग (Main Class) परंपरागत लेकिन ज्ञान के अतिसंगत क्षेत्र हैं। पुस्तकालय वर्गीकरणमें इस न्यूनाधिक रूप में ज्ञान जगत् का प्राथमिक विभाजन माना जाता है। किसी प्रचीन मुख्य वर्ग का पारंपरिक उपविभाजन *प्रामाणिक वर्ग (Canocial Class)* कहलाता है।

उदाहरणार्थ: पात, प्रकाश, चुंबकत्व, विद्युत मुख्य वर्ग भौतिक विज्ञान के प्रामाणिक वर्ग हैं। इसी तरह बीजगणित, ज्यामिति, विश्लेषण इत्यादि गणित मुख्य वर्ग के प्रामाणिक वर्ग हैं। प्रामाणिक वर्ग केवल किसी प्रचीन या पारंपरिक मुख्य वर्गों संबंधित हैं। नवीन मुख्य वर्गों—जैसे पुस्तकालय विज्ञान, पत्रकारिता, कंप्यूटर विज्ञान—में प्रामाणिक वर्ग नहीं होते हैं।

कुछ मुख्य वर्ग विचारधाराओं या मत से उत्पन्न होते हैं, जैसे मार्क्स का अर्थशास्त्र, या न्यूटन का भौतिक विज्ञान, या होम्योपैथी। ऐसे प्रमुख वर्गों को *प्रणाली मुख्य वर्ग (System Main Class)* के नाम से जाना जाता है। उस मुख्य वर्ग जिसका अध्ययन किसी विशिष्ट दृष्टिकोण से किया गया हो तो उसे *विशिष्ट मुख्य वर्ग (Special Main Class)* कहते हैं, जैसे उड्डयन चिकित्सा, बाल चिकित्सा खेल चिकित्सा या

NOTES

NOTES

लघु उद्योग अर्थव्यवस्था। इसी प्रकार एक मुख्य वर्ग जो कि भौतिक या सामाजिक समस्या या पर्यावरण की दृष्टि से प्रतिपादित होता है उसे पर्यावरण मुख्य वर्ग (Environmental Main Class) कहा जाता है। उदाहरणस्वरूप—युद्ध, ऊंचाई अभियांत्रिकी, कटिबंधीय औषधि इत्यादि पर्यावरण मुख्य वर्ग में आते हैं। प्रामाणिक, प्रणाली, विशिष्ट एवं पर्यावरणीय मुख्य वर्ग—इन सबको मिलाकर आधारभूत विषय विषय (Basic Subject) का नाम दिया जाता है।

रंगनाथन ने निम्न तीन प्रकार के विषयों की अभिधारणा प्रस्तुत की है;

आधारभूत विषय, यौगित विषय, मिश्रित विषय।

आधारभूत विषय (Basic Subject) उन्हें कहते हैं:

- जिन्हें आधारभूत/मुख्य विषयों की तालिका में परिगणित किया गया हो,
- जिनको विद्यमान आधारभूत विषयों के किसी यौगिक विषय के रूप में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता हो;
- जो अपने विकास के दौरान, डॉ रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक विधि के चक्र की पूरी परिक्रमाकर चुके हों। विषय गठन की विभिन्न विधियों को भी ये प्रदर्शित करते हैं;
- जिनके लिए व्यक्तित्व एकल, पदार्थ एकल तथा ऊर्जा एकलों को तालिका दी गई हो।

पुस्तकालय विज्ञान, भौतिक विज्ञान, बीजगणित, आयुर्वेदिक औषधि, मार्क्सवादी अर्थशास्त्र, मनो-विश्लेषण इत्यादि आधारभूत विषयों में आते हैं। आधारभूत विषय की अवधारणा सामाजिक है। आधारभूत विषयों के अर्थ एवं संख्या में समय-समय पर परिवर्तन होता रहता है। उदाहरणस्वरूप, सी सी के छठवें संस्करण (1960) में आधारभूत विषयों की संख्या मात्र 150 थी जबकि सातवें संस्करण (1987) में यह बढ़कर 750 से भी अधिक हो गई।

यौगिक विषय (Compound Subject) एक यह मूल विषय है जिसमें कम से कम एक केन्द्र हो या एक विषय पक्ष हो। अर्थात् इसमें एक आधारभूत पक्ष तथा एक या अधिक एकल पक्ष हों। कृषि एक आधारभूत विषय है लेकिन गेहूँ की कृषि या गेहूँ के पौधे की बीमारी यौगिक विषय है। इस प्रकार मनोविज्ञान एक आधारभूत विषय है लेकिन बाल-मनोविज्ञान या व्यक्तित्व विकास यौगिक विषय है। यौगिक विषयों की गिनती इस जगत् में असीम या अपरिमित है।

मिश्रित विषय (Complex Subject) यह एक द्वि-पक्षीय विषय होता है और वह दो या दो से अधिक आधारभूत या यौगित विषयों की संधि से निर्मित होता है। इनमें से एक विषय दूसरे का एकल बन जाता है। उदाहरण नर्सों के लिए मनोविज्ञान, भारतीय एवं ब्रिटिश संविधान का तुलनात्मक अध्ययन, या भूगोल का इतिहास पर प्रभाव, या शरीर रचना शास्त्र तथा शरीर विज्ञान में संबंध। ऐसे विषय प्रायः अंतर्विषयी होते हैं। इस प्रकार के मिश्रित विषयों की विश्लेषण पद्धति को दशा विश्लेषण कहते हैं (पूर्व दशा संबंधों की व्याख्या के लिए खण्ड 3 की इकाई 8 देखें)।

6.7 श्रेणी, पक्ष एवं एकल

एकल (Isolate) एक अकेला स्वतंत्र विचार जिसका आगे उपविभाजन नहीं किया जा सके तथा जो सर्व्य को काई विषय न बन सके, एकल कहलाता है। जैसे गेहूँ, बालक, भारत अपने आप में एकल हैं क्योंकि वे अस्पष्ट हैं और स्वयं में या अकेले में किसी विषय को द्योतित नहीं करते। ये तभी सार्थक होते हैं जब कि इनका उपयोग किसी आधारभूत वर्ग के साथ किया जाता है। उदाहरणस्वरूप गेहूँ का रोग, बाल मनोविज्ञान, या भारतीय इतिहास से कुछ भाव स्पष्ट होता है। एक एकल ज्ञान का चरम या अंतिम विभाजन है। डॉ. रंगनाथन ने यागिक विषय को परिभाषित करते हुए लिखा है कि इसमें एक आधारभूत विषय के साथ एक या एक से अधिक एकल होते हैं। अतः एक आधारभूत विषय के साथ जुड़कर एकल एक यौगित विषय बनाता है और आधारभूत विषय बिना एकल के होता है।

NOTES

पक्ष (Facet) : एकलों को सामान्य अभिलक्षणों के आधार पर समूह में एकत्र करने पर पक्ष बन जाता है। इस प्रकार किसी सत्ता के अभिलक्षणों की लड़ी के आधार पर प्राप्त हुए एकलों के समुच्चय को पक्ष कहते हैं। वास्तव में रंगनाथन ने पक्ष को परिभाषित करते हुए लिखा है, "किसी घटक—चाहे वह किस यौगिक विषय का आधारभूत विषय या एकल हो तथा इसका श्रेणीबद्ध रूप, पद या अंक हों—को द्वयोक्ति करने वाले सजातीय पद को पक्ष कहते हैं। इस प्रकार हम इसे मूल पक्ष, एकल पक्ष, भौगोलिक पक्ष, भाषा पक्ष, शैक्षिक पक्ष, गुणधर्म पक्ष, अंग पक्ष, पैदावार या इत्यादि कह सकते हैं।

समान अभिलक्षणों वाले पक्षों के समुच्च को श्रेणी (Category) कहते हैं। उदाहरणस्वरूप, पुस्तकालय विज्ञान में पुस्तकालय के प्रकारों से संबंधित सभी पक्ष, जैसे शैक्षिक, सार्वजनिक, विशिष्ट पुस्तकालय एक श्रेणी में आते हैं जिसे हम व्यक्तित्व श्रेणी कहते हैं। दूसरी श्रेणी पुस्तकालय प्रक्रिया की हो सकती है, जैसे प्रक्रम सेवाएँ, संरक्षण इत्यादि जो ऊर्जा श्रेणी कहलाती है। अतः एक 'श्रेणी' ज्ञान का अति सामान्य विभाजन है। रंगनाथन ने यह अभिधारणा दी है कि एक विषय में अधिकतम पाँच मौलिक श्रेणियाँ हो सकती हैं: व्यक्तित्व, पदार्थ, ऊर्जा, स्थान, तथा काल (PMEST) (देखें इकाई 7, खण्ड 3, बी एल आई एस-03)। दूसरे शब्दों में ज्ञान जगत् की सभी अवधारणाएँ केवल इन्हीं पाँच श्रेणियों से संबंधित रहती हैं।

6.8 पंक्ति एवं श्रृंखला

एकलों को पंक्तियों (Arrays) तथा श्रृंखलाओं (Chains) में व्यवस्थित किया जाता है। समकक्ष वर्ग के एकलों की अवली या लड़ी को पंक्ति की संज्ञा दी जाती है। रंगनाथन द्वारा दी गई परिभाषा इस प्रकार है—"पंक्ति ऐसे वर्गों का एक सुव्यवस्थित समूह है जिसे प्रत्येक स्तर पर एन्टिटी जगत् में एक ही अभिलक्षण के आधार पर प्राप्त किया गया हो"।

उदाहरणस्वरूप, बी एल आई एस के विद्यार्थियों को जब अनुक्रमांक के अनुसार, वर्णानुक्रम में, नाम के अनुसार, या योग्यता के आधार पर किसी क्रम में व्यवस्थित करें तो पंक्ति बन जाती है। उसी प्रकार, एक माता-पिता के पुत्र तथा पुत्रियों एक पंक्ति बनाते हैं। संसार के सभी महाद्वीप एक पंक्ति का निर्माण करते हैं। संसार के सभी देशों को किसी क्रम में व्यवस्थित करने पर एक पंक्ति बन जाती है। जब वर्गों की एक पंक्ति में बहिर्वेशन किया जा सके तो उसे खुली पंक्ति कहते हैं और यदि बहिर्वेशन न किया जा सके तो उसे बंद पंक्ति कहते हैं। एक पंक्ति के सभी सदस्यों के सुनियोजित उपयोगितावदी व्यवस्थापन को सहायक अनुक्रम (Helpful Sequence) कहते हैं। इस व्यवस्थापन को इसलिए सहायक कहा जाता है क्योंकि यह वर्गीकरण अधिकांश उपयोक्ताओं के लिए सहायक होता है यद्यपि सभी के लिए सहायक नहीं हो सकता। किसी पंक्ति के व्यपाक समूहों को फिलिएटरी अनुक्रम (Filiatory Sequence) में व्यवस्थित करते हैं। इसका अर्थ यह है कि निकटतम संबंधित वर्गों को एक-दूसरे के पास रखा जाए। जे.डी. ब्राउन के सब्जेक्ट क्लेसिफिकेशन (J.D. Brown's Subject Classification) (1906) में मुख्य वर्गों को पदार्थ-बल-जीवन-मस्कि-अभिलेख के विकासात्मक क्रम (evolutionary order of matter-force-life-mind-record) में क्रमबद्ध किया गया है।

श्रृंखला का अर्थ है, की जगत् के वर्गों का ऐसा अनुक्रम जिसमें वर्ग तथा इसकी उत्तरवर्ती कड़ियों का जगत् होता है जिन्हें वांछित बिंदु तक पश्चिमुखी विस्तारण प्रदान किया जाता है—अर्थात् जिसके सभी सदस्य असमक्ष दर्जे के होते हैं। तथा सतत हासमान विस्तार एवं वर्धमान गहनता के क्रम में व्यवस्थित होते हैं। श्रृंखला का क्रम सामान्य से विशेष की ओर होता है अथवा विशेष से सामान्य के विपर्यय क्रम में होता है।

उदाहरणार्थ—संसार, एशिया भारीत, महाराष्ट्र, मुंबई के क्रम से या इसके विपर्यय क्रम से एक श्रृंखला का निम्नण होता है। वैसे ही समाजिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, वित्त, मुद्रा, बैंक या इसके विपर्यय क्रम से वर्गों की श्रृंखला बनेगी। आपके पितामह, पिता और पाप वर्गों की एक श्रृंखला का निर्माण करते हैं जबकि आपके सारे भाई एवं बहन वर्गों की पंक्ति का निर्माण करते हैं। श्रृंखला में सत्ताओं का व्यवस्थापन पदानुक्रम में होता है।

NOTES

पुस्तकालय वर्गीकरण के लिए अनिवार्यतः वर्गों तथा उनके उपविभागों की ऐसी लिखित सूचियों की आवश्यकता होती है जिनमें वर्गों की क्रमबद्ध तरीके से उनके लिए प्रयुक्त प्रतीकों के साथ व्यवस्थित किया गया हो। वर्गों की इस क्रमबद्ध एवं विस्तृत सूची को अनुसूची (Schedule) कहते हैं। इन अनुसूचियों, वर्गों की वर्णानुक्रमिक अनुक्रमणिका (जिसमें वर्गों को उनसे संबंधित प्रतीकों से संदर्भित किया जाता है) तथा सामान्य उपविभाजन नामक सहायक उवधारणाओं के सामूहिक रूप को **वर्गीकरण पद्धति (Classification System)** कहा जाता है। वर्गीकरण की कई पद्धतियाँ हैं—जैसे ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन, रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित कोलन क्लैसिफिकेशन, तथा लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस क्लैसिफिकेशन। कम से कम आधा दर्जन सामान्य वर्गीकरण पद्धतियाँ प्रयोग में हैं। एक **अनुक्रमणिका** क्रमबद्ध अनुसूचियों के लिए वर्णक्रमानुसार अभिगम उपलब्ध करती है। महाविषयों के अनुसार विखरे हुए प्रकरणों को अनुक्रमणिका में साथ-साथ रखा जाता है।

अनुसूचियाँ किसी वर्गीकरण पद्धति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनके अतिरिक्त वर्गीकरण पद्धति में कुछ सहायक सारणियाँ भी होती हैं। ये सहायक सारणियाँ कुछ पुनरावर्ती अवधारणाओं से संबंधित होती हैं, जैसे भौगोलिक एकल, काल एकल, भाषा एकल तथा प्रलेख के प्रस्तुतीकरण का रूप (जैसे, शब्दकोश या सममेलन की कार्यवाही) या भौतिक आकार-प्रकार जैसे पुस्तक, पत्रिका, फ्लापी, मानचित्र, डी डी-रोम या वीडियो टेप। ये पुनरावर्ती अवधारणाएँ अपने प्रतीकों या अंकन के साथ एक बार सूचीबद्ध की जाती हैं। इन पुनरावर्ती अवधारणाओं को डी डी सी में मानक उपविभाजन (Standard Subdivisions): सी सी में सामान्य एकल (Common solates) और यू डी सी में सामान्य सहायक सारणी (Common Auxiliaries) कहा जाता है। ये किसी प्रलेख के कई विषयपर पक्षों या उपन्तीय लेकिन पुनरावर्ती विषय-पक्षों का निरूपण करती हैं। अनुसूचियाँ या तो मुद्रित रूप या इलेक्ट्रॉनिक रूप—जैसे फ्लापी, सी डी-रोम—में हो सकती हैं। डी डी सी का 21वाँ संस्करण सी डी-रोम में आरूप में भी उपलब्ध है जिसकी आख्या *ड्यूई फॉर विंडोज (Dewey for Windows)* है।

वर्गीकरण पद्धति के रचयिता या प्रतिपादक को **वर्गीकरणा प्रणाली प्रणोता (Classificationist)** कहा जाता है। वर्गीकरण प्रणाली प्रणोताओं में एस.आर. रंगनाथन, मेल्विल ड्यूई, एच.ई. ब्लिस, सी.ए. कटर जैसे कुछ ख्याति प्राप्त नाम हैं। किसी वर्गीकरण पद्धति के आधार पर वर्गीकरण का कार्य करने वाले व्यक्ति को **वर्गीकरणकार (Classifier)** कहते हैं। बी बल आइ एस-03P पाठ्यक्रम के माध्यम से आपको एक उत्तम वर्गीकरण, बनाना अभीष्ट है। अधिकतम पुस्तकालयाध्यक्ष वर्गीकरणकार भी है।

6.10 वर्गीकरण की प्रजातियाँ

मोटे तौर पर वर्गीकरण पद्धतियों की दो प्रजातियाँ हैं—परिगणात्मक एवं पक्षात्मक।

परिगणात्मक वर्गीकरण (Enumerative Classification) वह है जिसमें सभी वर्गों तथा उनसे संबंधित प्रतीकों को परिगणित या सूचीबद्ध किया गया हो। इसमें अनिवार्यतः एक ही अनुसूची में भूत, वर्तमान एवं संभावित भविष्य के सभी विषयों की परिगणना कर दी जाती है। दूसरे शब्दों में, इसमें एक वर्ग के लिए प्रतीक या प्रतीकों की बनी-बनाई श्रंखला प्रदान की जाती है तथा इसमें वर्गीकरणकार को संख्या-निर्माण करने की न तो आवश्यकता होती है न ही अधिकार होता है। लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस क्लैसिफिकेशन पद्धति राइडर्स इंटरनेशनल क्लैसिफिकेशन तथा ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के प्रारंभिक संस्करण परिगणात्मक वर्गीकरण पद्धति के उदाहरण हैं। परिगणात्मक वर्गीकरण को तिरस्कारपूर्ण शब्दों में *मार्क एंड पार्क पद्धति (Mark and Park System)* कहा जाता है।

“वर्गीकरण की लगभग परिगणात्मक पद्धति (Almost Enumerative Scheme)” में एक बृहत् अनुसूची होती है जिसमें भूत, वर्तमान, एवं संभावित भविष्य के समस्त विषयों को परिगणित किया जाता है तथा इसके अतिरिक्त सामान्य एकलों की कुछ सारणियाँ भी होती हैं। ब्रउन का सब्जेक्ट क्लैसिफिकेशन तथा ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। **पक्षात्मक वर्गीकरण (Faceted Classification)** परिगणात्मक वर्गीकरण के विपरीत वर्गीकरण पद्धति की दूसरी प्रजाति है जिसमें आधारभूत वर्गों, सामान्य

NOTES

एकलों तथा विशिष्ट एकलों की अनुसूचियात्र होती हैं। इसकी भी तीन उप-प्रजातियाँ हैं: लगभग-पक्षात्मक (Almost-Faceted) अनम्य-पक्षात्मक (Rigidly-Faceted) तथा निर्बाधस पक्षात्मक वर्गीकरण (Freely Faceted Classification)। परिभाषा के अनुसार "लगभग पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति वह पद्धति है जिसमें भूत, वर्तमान तथा संभावित भविष्य के अधिकतम विषयों को एक बृहत् अनुसूची में परिगणित किया जाता है तथा इसके अतिरिक्त सामान्य एकलों तथा विशिष्ट एकलों की सारणियाँ होती हैं"। इसकी भी तीन-प्रजातियाँ हैं: लगभग पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति वह पद्धति है जिसमें भूत, वर्तमान तथा संभावित भविष्य के अधिकतम विषयों को एक बृहत् अनुसूची में परिगणित किया जाता है तथा इसके अतिरिक्त सामान्य एकलों तथा विशिष्ट एकलों तथा विशिष्ट एकलों की सारणियाँ होती हैं" युनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन एवं ब्लिस का बिब्ल्योग्राफिक क्लैसिफिकेशन इसके उदाहरण हैं।

"अनम्य पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति (rigidly-Faceted Scheme for Classification) में आधारभूत वर्ग के साथ संपूर्ण विषयों के पक्ष एवं उनके अनुक्रम पूर्व निर्धारित होते हैं"।

कोलन क्लैसिफिकेशन के प्रथम तीन संस्करण, जिनमें प्रत्येक आधारभूत वर्ग के लिए पक्ष-परिसूत्र का प्रावधान किया गया है, अनम्य पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति के अच्छे उदाहरण हैं।

"निर्बाध पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति (Freely Faceted Scheme for Classification) में आधारभूत विषय से संलग्न यौगिक विषयों के लिए अनम्य या पूर्व-निर्धारित पक्षात्मक परिसूत्र नहीं होते हैं"। यह आवश्यक रूप में वेश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण है जो अभिधारणाओं तथा सिद्धांता द्वारा निर्देशित होते हैं। सी सी के चौथे, पाँचवें और छठे संस्करणों को लगभग निर्बाध पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति माना जाता है।

6.11 अंकन

यह सर्वविदित है कि विषयों का व्यवस्थान सहायक फिलिएटरी अनुक्रम में उत्तरवर्ती अभिलक्षणों की पद्धति या योजना के आधार पर होना चाहिए। पुनः इस व्यवस्थापन के यंत्रीकरण की भी आवश्यकता है। यंत्रीकरण से तात्पर्य है, याद रखने की जरूरत से मुक्ति दिला ना या वर्गों की व्याख्या तथा व्यवस्था उनके पारस्परिक संबंध के आधार पर करना। ये दो उपयोगिताएँ निम्नलिखित अवधारणाओं पर बल देती हैं— 1) शब्दावली, एवं 2) अंकन। शब्दावली का महत्त्व अनुभाग 1.1 में दर्शाया जा चुका है।

जहाँ तक वरीय क्रम से विषयों के व्यवस्थान के यंत्रीकरण का प्रश्न है, वर्णानुक्रमिक व्यवस्थापन की एक संभावना मान सकते हैं। लेकिन विषयों के नामों के आधार पर वर्णानुक्रमिक रूप में व्यवस्थापन के यंत्रीकरण को निम्नलिखित तथ्यों द्वारा नकारा जा सकता है:

क्योंकि, यह ऐसा अनुक्रम प्रदान करता है जो कि सहायक नहीं होता

क्योंकि, विषयों के नाम चिरस्थायी नहीं होते

क्योंकि, विषयों के नाम अनन्य या अद्वितीय नहीं होते

भाषानुसार एक ही विषय का वर्णानुक्रम भिन्न-भिन्न होगा

शब्दों द्वारा निदिष्ट विषय अद्वितीय नहीं होते

अतः वरीय या श्रेष्ठ सहायक अनुक्रम में विषय व्यवस्थापन के यंत्रीकरण के लिए एक अंकन प्रणाली की आवश्यकता है। अंकन प्रणाली से संबंधित आधारभूत अवधारणाओं की चर्चा नीचे की गई है (परिभाषाओं के लिए सी सी 7वें संस्करण का अध्याय CJ देखें)।

अंकन धरातल : परिभाषिक शब्दावली

संख्या

मूलभूत संख्या : संख्या शब्द के सुनने पर हमारे मन में दस हिंद-अरबी अंकों का तथा मूलभूत संख्याओं के रूप में उनके प्रयोग का विचार आता है। अतः हम यह कह सकते हैं कि मूलभूत संख्याएँ वे संख्याएँ हैं जिनका उपयोग गिनती करने या मापने करने या मापने में किया जाता है।

NOTES

- क्रमबोधक संख्या (Ordianl Number)** : "क्रमबोधक संख्या" का उपयोग किसी सत्ता के क्रम की स्थिति का निश्चय करने के लिए किया जाता है।
- क्रमबोधक संख्या में स्वतंत्रता (Freedom) In Ordinal Number** : इण्डो-अरेबिक अंकों के अतिरिक्त अन्य अंकों का उपयोग भी क्रमबोधक संख्या के रूप में किया जा सकता है, परंतु इसके लिए अन्य अंकों के बीच उनका क्रमबोधक मान परिभाषित करना होगा। उदाहरणस्वरूप रोमन लघु अक्षर, दीर्घ अक्षर, विराम चिह्न तथा कुद अन्य सरल चिह्न, कुछ विशिष्ट चिह्न इत्यादि।
- क्रमबोधक संख्या का कोलन क्लैसिफिकेशन में उपयोग** : सी सी में क्रमबोधक संख्याओं का उपयोग किया गया है।
- अंकन प्रणाली** : किसी वर्गीकरण पद्धति द्वारा प्रयुक्त अंकों या संख्याओं (Notational Systems) की पद्धति।
- अंकन** : अंकन पद्धति में प्रयुक्त अंक।
- अंकन पद्धति (सी सी)** : सी सी की अंकन पद्धति क्रमबोध संख्याओं से निर्मित है।
- अंक (Digit)** : अंक पद किसी एक, एकलिकृत प्राथमिक प्रतीक अर्थात् संप्रतीक को द्योतित करता है। अर्थात् किसी वर्गीकरण पद्धति की अंकन प्रणाली में प्रयुक्त विशिष्ट चिह्न।
- सारगर्भित अंक (Substantivfe Digits)** : सी सी में परिगणित समस्त अंक—इण्डो-अरेबिक संख्याएँ, रोमन लघु अक्षर, रोमन दीर्घ अक्षर, ग्रीक अक्षर।
- सारगर्भित अंकों की संख्या** : सी सी की अंकन पद्धति में प्रयुक्त सारगर्भित अंकों की संख्या 60 है।
- सी सी में प्रयुक्त अंक**
- रोमन लघु अक्षर (Roman Small)** : a, b, c, d, e, f, g, h, i, j, k, l, m, n, o, p, q, r, s, s, t, u, v, w, x, y, z, रोमन लघु अक्षर हैं। यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि i, l तथा o को लघु अक्षरों की सूची से निकाल दिया गया है। क्योंकि वे लेखन, टंकण तथा मुद्रण में कठिनाई उत्पन्न करते हैं।
- इण्डो-अरेबिक अंक (Indo-Arabic Numeral)** : 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 इण्डो-अरेबिक अंक है।
- रोमन दीर्घ अक्षर** : A, B, C, D, E, F, G, H, I, J, K, L, M, N, O, P, Q, R, S, T, U, V, W, X, Y, Z रोमन दीर्घ अक्षर हैं। और O का उपयोग क्रमशः केवल वनस्पति शास्त्र एवं साहित्य के मुख्य वर्ग के लिए किया गया है।
- ग्रीक अक्षर (Greek Letter)** : केवल डेल्टा () ग्रीक अक्षर का ही उपयोग किया गया है।
- सामान्य संकेतक अंक (Ordinary Indicator Digit)** : सामान्य संकेतक अंक निम्नलिखित हैं:
(अंत कोष्ठक)
& (एम्परसेंड)
' (विपर्यस्त कोमा)

NOTES

- (बिन्दु)
- : (कौलन)
- ; (सेमीकौलन)
- , (कोमा)
- (हायफन)
- = (समान)
- (अग्रमुखी तीर)
- + (धन चिह्न)
- ((आरंभिक कोष्ठक)

पूर्वस्थापक अंक : पूर्वस्थापक अंकों में (तारक) ← (पश्चमुखी तीर) तथा “ (दोहरा उद्धरण चिह्न) आते हैं
(Anteriorising Digit)

संकेतक अंकों की संख्या : सी सी की अंकन पद्धति में संकेतक अंकों की संख्या पंद्रह है।

अंकों की प्रजातियाँ : अंकों की प्रजातियों का अर्थ उन अंकों के प्रकार से है जिनका
(Species of Digits) प्रयोग सी सी की अंकन पद्धति में किया गया है।

अंकों की प्रजातियों : सी सी की अंकन पद्धति में प्रयुक्त अंकों की छः प्रजातियाँ हैं।
की संख्या

अंकन का आधार : सी सी की अंकन पद्धति के आधार पर साठ सारगर्भित अंक हैं।

मिश्रित आधार : सी सी में मिश्रित अंकन पद्धति का प्रयोग किया गया है
(Mixed Base) क्योंकि इसमें एक से अधिक अंकों की प्रजातियों का उपयोग में लाया गया है।

आधार क्षमता : सी सी की अंकन पद्धति साठ सारगर्भित अंकों पर आधारित है।

मिश्रित अंकन : सी सी की अंकन पद्धति मिश्रित है क्योंकि इसका आधार
(Mixedm Notation) मिश्रित है और उसमें पंद्रह संकेतक अंकों का समावेश किया गया है
जिसमें दो प्रकार की भिन्न प्रजातियाँ इस्तेमाल की गई हैं।

अंकन की कुल संख्या : इस प्रकार सी सी की अंकन पद्धति में उपयोग किए गए अंकों की
कुल संख्या पचहत्तर है।

अंकों का क्रमबोध मान : अंकन पद्धति में प्रयुक्त अंकों के क्रम बोधमान को नीचे दर्शाया गया है।
(Ordinal Value
of Digit)

(क) सी सी में प्रयुक्त अंकों की पहली तीन प्रजातियाँ, अपने-अपने अनुभागों, में अपने पारस्परिक क्रमिक मान के आरोही क्रम में व्यवस्थित हैं।

(ख) इनका पारस्परिक आरोही क्रम निम्नलिखित है:

(ग) रोमन लघु अक्षर, इण्डो-अरेबि अंक, तथा रोमन दीर्घ अक्षर।

(घ) डेल्टा () अंक का क्रमबोध मान “M” और “N” अंकों के मध्य स्थित है।

(ङ) सामान्य संकेतक अंकों की प्रजाति के अंक अपने अनुभाग में आरोही अनुक्रम क्रमबोध मान में व्यवस्थित किए गए हैं।

स्पष्ट रूप से, अंक “)” (अंक कोष्ठक) का क्रमबोध मान सब अंकों में सबसे कम तथा “(” (आरंभिक कोष्ठक) का सबसे अधिक होता है।

सामान्य वर्ग संख्या को सहायक अनुक्रम प्रदान करने के लिए सामान्य संकेतक अंकों के उपर्युक्त क्रम को मान्यता देनी होगी।

क्रमबोध मान के आरोही अनुक्रम में व्यवस्थित करने पर, उपर्युक्त सभी अंक निम्नलिखित क्रम में व्यवस्थित होंगे:

) - ' . : ; ; - = + a b...y z 0 1...89 A B...M M...YZ (

NOTES

पूर्वस्थापक मानयुक्त अंक : अंक (तारक चिह्न). + (धन चिह्न), “ (दोहरा उद्धरण चिह्न), (पश्चमुखी तीर) का पूर्वस्थापक मान है। इस कारण अन्य प्रजाति के अंकों के परिप्रेक्ष्य में इनका क्रमबोध मान निर्धारण करने के आवश्यकता नहीं है। इन अंकों का क्रमबोध मान, परस्पर, आरोही क्रम में निम्न प्रकार है:

- + ”

दोहरे उद्धरण चिह्न के उदाहरण:

B”a B Ba सह अनुक्रम हैं क्योंकि (दोहरा उद्धरण चिह्न) का मान पूर्वस्थापक है। B”a को B से पूर्व व्यवस्थित किया जाएगा। वास्तव में कोई आतिथेय वर्ग जिसके बाद” (दोहरा उद्धरण चिह्न) हो, पूर्व में आएगा। अर्थात् वह आतिथेय वर्ग से पूर्व स्थापित होगा। कहने का तात्पर्य यही है कि” (दोहरा उद्धरण चिह्न) को पूर्वस्थापक अंक कहा गया है।

पश्चमुखी तीर ← के उदाहरण :

V, 2 : 1’M92

भारत का 1892 तक का इतिहास

V, 2, 1’M94 ← M92

भारत का 1892 से 1894 तक का इतिहास

V, 2; 1’M94

भारत का 1894 तक का इतिहास

यही सही अनुक्रम है क्योंकि पश्चमुखी तीर का पूर्वस्थापक मान है।

अंक क स्थानिक मान: जब तक कि कोई अंक दो या दो से अधिक पूर्ण संख्या का कोई हिस्सा नहीं है तब तक एक अंक का स्थानिक मान किसी भी संदर्भ में दशमलव भिन्न होता है। सी सी की प्रत्येक संख्या से पूर्व दशमलव बिंदु का होना मान लिया जाता है।

दाशमलव अंकन का पहला लाभ : अंतर्वेशन

दशमलव अंकन में दस अंकों के मध्य में कितने ही अंकों को अनुप्रविष्ट किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप यदि 22 और 23 को पूर्ण संख्या पढ़े तो हम उनके मध्य में किसी भी पूर्ण संख्या के अनुप्रविष्ट नहीं कर सकते। अगर उन्हें दशमलव भिन्न पढ़ें तो उनके मध्य 221, 222, 223,229 तक के अंकों की अनुप्रविष्ट आवश्यकतानुसार की जा सकती है।

दशमलव अंकन का द्वितीय लाभ : अचर स्थानित मान

दशमलव अंकन के दाहिनी ओर किसी अंक का जोड़ना विद्यमान अंक के स्थानिक मान को प्रभावित नहीं करता। इसके विपरीत अगर पूर्ण संख्या में ऐसा किया जाए तो सारे अंकों का स्थानिक मान बदल जाएगा। उदाहरण के तौर पर हम पूर्ण संख्या के अंक 2, 25 और 258 के स्थानिक मान की तुलना करें। पहली संख्या में यह 2 ही है। दूसरी संख्या में 2 का स्थानिक मान 20 है तथा 5 का स्थानिक मान 5 है। तृतीय संख्या में 2 का स्थानिक मान 200 है, 5 का स्थानिक मान 50 है और 8 का स्थानिक मान 8 है। दूसरी ओर यदि 2, 25 तथा 258 को दशमलव भिन्न माना जाए तो तृतीय संख्या में भी 2 का स्थानिक मान 2/10 और 5 का स्थानिक मान 5/100 तथा 8 का स्थानिक मान 8/1000 होगा।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. भारतीय विचार-संप्रदाय में प्रचलित वर्गीकरण शब्दावली के निर्माण के स्तर बताइए।
4. वर्गीकरण के द्वितीय आशय 'सामूहिकीकरण' से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

वैचारिक धरातल की शब्दावली के समकक्ष

वैचारिक धरातल (Idea Plane) में प्रयुक्त पदों जैसे आधारभूत विषय (BS : Basic Subject) या 'एकल विचार' (Isolate Idea) की तर्ज पर हम अंकन धरातल में भी आधारभूत वर्ग संख्या (BCN: Basic Class Number) या एकल संख्या (IN: Isolate Number) जैसे पदों का प्रयोग कर सकते हैं। यौगिक विषय तथा मिश्रित विषय के लिए अंकन धरातल में यौगिक वर्ग संख्या (Dc CN% Compound Class Number) और मिश्रित वर्ग संख्या (Cx CN : Complex Class Number) जैसे पदों का उपयोग किया जा सकता है।

अंकन धरातल में पंक्ति

अंकन धरातल में पंक्ति से तात्पर्य है, क्रमबोध अनुक्रम में व्यवस्थित समकक्ष एकल अंकों या तुल्य अंकों का सेट।

7. सार-संक्षेप

इस इकाई में हमने शब्दावली के महत्त्व का विवेचन किया है तथा भारतीय विचार संप्रदाय पर जोर देते हुए ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में शब्दावली को खोजा है।

वर्गीकरण की जिन आधारभूत अवधारणाओं की चर्चा की गई है उनका संबंध जगत् एवं सत्ता, समूह एवं वर्ग; लक्षण एवं अभिलक्षण; पुस्तकालय वर्गीकरण के प्रकार; महाविषय एवं आधारभूत विषय, श्रेणियाँ; पक्ष एवं एकल; पंक्ति एवं श्रृंखला; वर्गीकरण का अनुसूचियाँ, वर्गीकरण की प्रजातियाँ एवं अंकन से है। इसके अलावा वर्गीकरण के कुछ पदों की व्याख्या बी. एल. आई. एस-03 : पुस्तकालय वर्गीकरण सिद्धांत तथा बी. एल. आई. एस-03F पुस्तकालय वर्गीकरण अभ्यास की इकाइयों में की गई है।

8. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. सी आर जी के तत्वावधान में वर्गीकरण का पहला अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन डार्किंग (Dorking) में हुआ जिसमें यह निष्कर्ष निकाला गया कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रयुक्त शब्दों की एक व्यापक शब्दावली विकसित की जाए। नई शब्दावली को नए पाठकों के उपयोग हेतु बी.सी. विरी (B.C. Vickery) द्वारा संकलित किया गया। इसको एफ आई डी (FID International Federation for information and Documentation/Federation Internationale d' Information et de documetation) कांग्रेस ने खूब सराहा। रंगनाथन स्वयं भी एक आई डी/सी ए (FID/CA) (CA : Committee on Classification Theory) के सदस्य थे। वर्गीकरण एवं शोध प्रक्रिया से संबंधित द्वितीय, एवं चतुर्थ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों ने शब्दों के विकास की गति को संतोषजनक पाया।
2. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में वर्गीकरण एक अपरिहार्य विषय है तथा यह पुस्तकालय विज्ञान की सभी शाखाओं में व्याप्त है। इस प्रकार वर्गीकरण शब्दावली एक अन्यान्य शब्दावली है। विषय अनुक्रमणीकरण शब्दावली में वर्गीकरण एवं सूचीकरण की प्रतीकात्मक प्रप्रकृति से सर्व सामान्य कड़ी का रूप ग्रहण कर लिया है। वर्गीकरण शब्दावली के शाब्दिक धरातल के अनेक नियम प्रसूचीकरण शब्दावली के शाब्दिक धरातल के अनेक नियम प्रसूचीकरण शब्दावली के नियमों के रूप में भी कार्य करते हैं।
संदर्भ सेवा के संबंध में हम कह सकते हैं कि वर्गीकरण द्वारा वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक (analytic synthetic) ढाँचा प्रदान किया जाता है जो संदर्भ कार्य एवं सेवाओं को प्रभावशाली रूप से संपन्न करने में सहायक है। वर्गीकरण के अनेक पदों का प्रयोग न्यनाधिक रूप में सूचना एवं संदर्भ कार्यों में लगभग समान रूप से किया जा सकता है। इस प्रकार, पुस्तकालय विज्ञान के दो विषयों से सह-अस्तित्व क एक रेखा दिखाई देती है। कुछ सीमा तक, पुस्तकालय प्रबंधन के कुछ पक्षों की व्याख्या करने के लिए भी वर्गीकरण शब्दावली का प्रयोग किया जा सकता है।
3. भारतीय विचार-संप्रदाय में प्रचलित वर्गीकरण शब्दावली का निम्न कार्य तीन स्तरों पर पूरा हुआ। प्रथम स्तर पर न केवल भारतीय विचार-संप्रदाय के प्रचलित शब्दों को अपितु अँगरेजी भाषा बोलने वाले देशों के विचार-संप्रदाय में प्रचलित शब्दों को भी लिया गया। प्रथम प्रारूप में सम्मिलित परिभाषाओं को ए एल ए ग्लोसरी (ALA Glossary) तथा हेनरी एवलिन ब्लिस (Henry

NOTES

Evelyn Bliss) डॉकर ड्यूविस (Donker Duyvis), एस.आर. रंगनाथन, डब्ल्यू.सी. बरविक सेयर्स (W.C. Berwic Sayers) बी.सी. विकरी (b.C. Vickery) तथा फ्रेंड एव एस. वेंगर जूनियर (Frans S. Wanger Jr.) की रचनाओं से लिया गया है। द्वितीय स्तर पर केवल उन्हीं शब्दों को मसौदे में शामिल किया गया जो कि इस विभागीय समिति को स्वीकार्य थे। तृतीय तथा अंतिम चरण में उन सुझावों पर विचार किया गया जो द्वितीय मसौदे का व्यापक वितरण के कारण प्रस्तुत किए गए थे और तत्पश्चात् अंतिममानको तैयार किया गया।

4. वर्गीकरण का द्वितीय आशय

सामूहिकीकरण

(i) "सामूहिकीकरण से तात्पर्य एक दिए गए जगत् को छोटे-छोटे समूहों में विभाजित करने से है तथा साथ ही प्रत्येक समूह को एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित करने से है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि प्रत्येक प्रतिपादित समूह को क्रम प्रदान करना सामूहिकीकरण का ही अंग है"।

(ii) प्रथम आशय के अंतर्गत जगत् सत्ता का सामूहिकीकरण ही इसके प्रथम आशय का प्रतिफल है। इसका वैकल्पिक पद 'वर्गीकरण' है 'द्वितीय आशय: प्रचलित अर्थ'।

प्रथम आशय में उल्लिखित वर्गीकरण तथा व्युत्पन्न समूहों का वरीय अनुक्रम में व्यवस्थापन।

9. अभ्यास-प्रश्न

1. वर्गीकरण शब्दावली के इतिहास पर प्रकाश डालिए।
2. पद कितने प्रकार के होते हैं? उनकी प्रकृति की विवेचना कीजिए।
3. वर्गीकरण शब्दावली के भारतीय विचार-संप्रदाय का परिचय दीजिए।
4. पुस्तकालय वर्गीकरण के प्रकारों की व्याख्या कीजिए।
5. वर्गीकरण शब्दावली के स्रोतों का विवरण दीजिए।

10. संदर्भ ग्रंथ सूची

Fosket, A.C. (1977). *Subject Approach to information*, 3rd ed, Landon; Clive Bingley. Mills, J. (1960). *A Modern Outline of Library Classification*, Bombay; Asia Publishing House.

Prasad, K.N. (1986). *Development of Classification Technology : Contributions of Prof. S.R. Ranganathan. In: Rajagopalan, T.S. (ed). Ranganathan Philosophy : Assessment, impact and Relevance*. New Delhi : Vikash Publishing House. pp. 246-256.

Ranganathan, S.R. (1987), *Colon Clasification*, 7th ed. edited by M.A. Gopinath Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.

Ranganathan, S.R. (1967). *Prolegomena to Library Classification*, 3rd ed. Bangalore: Sarada Ranganathan Endowment for Libraray Science.

शर्मा, पाण्डेय एस. के. (1996)। सरलीकृत पुस्तकालय वर्गीकरण सिद्धांत। दिल्ली: ज्ञान गंगा।

शर्मा, पाण्डेय एस. के. (1998)। सरलीकृत दिवबिंदु वर्गीकरण। दिल्ली: सत्साहित्य प्रकाशन।

पुस्तकालय वर्गीकरण की आवश्यकता तथा उद्देश्य

NOTES

अध्याय में सम्मिलित है :

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. प्रलेख
 - 3.1 प्रलेखों की प्रकृति
 - 3.2 प्रलेखों का संग्रहण तथा भंडारण
 - 3.3 प्रलेख व्यवस्थापन के निर्धारक घटक
 - 3.4 पुस्तकालयों में प्रलेखों का व्यवस्थापन
 - 3.5. प्रलेखों के लिए पाठकों के उपागम
4. वर्गीकरण
 - 4.1 पुस्तकालय वर्गीकरण की परिभाषा
 - 4.2 पुस्तकालय वर्गीकरण की परिभाषा
 - 4.3 आह्वान संख्या
 - 4.4 उद्देश्य तथा कार्य
5. सार-संक्षेप
6. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
7. मुख्य शब्द
8. अभ्यास-प्रश्न
9. संदर्भ ग्रंथ सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप:

- पुस्तकालयों द्वारा अधिगृहीत विभिन्न प्रकार के प्रलेखों को सूचीबद्ध कर सकेंगे तथा उनकी प्रकृति एवं उनके व्यवस्थापन का वर्णन कर सकेंगे;
- पुस्तकालयों के विभिन्न संग्रहों के व्यवस्थापन के निर्धारक घटकों को पहचान पाएँगे;
- प्रलेखों के ढूँढने के लिए पाठकों द्वारा अपनाए जाने वाले विभिन्न उपागमों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- पुस्तकालय वर्गीकरण का अर्थ स्पष्ट कर पाएँगे; तथा
- पुस्तकालय वर्गीकरण की आवश्यकता, उद्देश्य तथा कार्यों का वर्णन कर पाएँगे।

2. परिचय

इस पाठ्यक्रम में आप या तो ऐ पुस्तकालय कार्मिक के रूप में भाग ले रहे हैं या पुस्तकालय कार्मिक बनना चाहते हैं। आप यह जानत ही हैं कि पुस्तकालयों में भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रलेख होते हैं। आरंभ में यह जानना परमावश्यकत है कि पुस्तकालयों में अनेक प्रकार के संग्रह होते हैं जैसे मुद्रित? पुस्तकें, शोध पत्रिकाएँ, पांडुलिपियाँ, मानचित्र, चार्ट, सूक्ष्म प्रलेख, सीडी-रोम श्रवरू एवं दृश्य कैसेट्स इत्यादि के संग्रह। इन सभी संग्रहों का सुनियोजित ढंग से व्यवस्थान करना आवश्यक है।

एक पाठक पुस्तकालय सामग्री को तीन संभावित प्रकार से माँग सकता है। जिस कृति को वह पढ़ना चाहता है उसे या तो उसके लेखक के नाम से या उस पुस्तक की आख्या के नाम से माँग सकता है। तीसरी स्थिति यह है कि उसे किसी विशिष्ट विषय की पुस्तक/पुस्तकों को आवश्यकता हो सकती है। यह अंतिम माँग विषय के नाम से होती है जिसे विषय उपागम (Subject Approach) कहते हैं। संक्षेप में विषय उपागम, संग्रह से अनजान प्रलेखों को प्राप्त करने का एक साधन है और वर्गीकरण इसमें सहायता प्रदान करने का माध्यम है। पुस्तकालय वर्गीकरण द्वारा पुस्तकालय सामग्री का विषयानुसार व्यवस्थापन किया जाता है और प्रलेखों को विषय के निहित विचारों द्वारा व्यवस्थित किया जाता है तथा हर विषय के बाद एक अन्य संबंधित विषय रहता है। जैसे गणित के बाद भौतिक विज्ञान रहेगा। यही सुनियोजित व्यवस्थापन (Systematic Arrangement) कहलाता है।

पुस्तकालय की अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियाँ, जैसे पुस्तक चयन, देय-आदेय गतिविधि, संदर्भ सेवा इत्यादि न्यूनाधिक अप्रत्यक्ष रूप से पुस्तकालय वर्गीकरण पर आश्रित रहती है। इस प्रकार यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि व्यापक रूप से वर्गीकरण को पुस्तकालय विज्ञान की नींव माना जाता है। वर्गीकरण द्वारा पुस्तकालय सामग्री का पूर्ण उपयोग सुनिश्चित किया जाता है तथा पुस्तकालय की अन्य सेवाओं को सशक्त बनाया जा सकता है। आधुनिक पुस्तकालयों में वर्गीकरण की आवश्यकता और भी अधिक है क्योंकि ये भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रलेखों का भंडारण करते हैं जिनके लिए विविध भंडारण माध्यमों की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में, उसी विषय के प्रलेख अपने माध्यमों के भिन्न भौतिक स्वरूपों के कारण संपूर्ण संग्रह में अलग-अलग हो जाएँगे। इस प्रकार वर्गीकरण फलकों पर तथा उनके संलेखों को सूची या अनुक्रमणिका में एक स्थान पर लाने का माध्यम है। अतः आइए हम स्वयं इन विविध प्रकार के प्रलेखों से परिचित प्राप्त करें जिनका अर्जन तथा संग्रहण आधुनिक पुस्तकालय करते हैं।

3. प्रलेख

हमें पुस्तकालयों में भिन्न प्रकार के प्रलेख मिलते हैं जैसे पांडुलिपियाँ, मुद्रित पुस्तकें, पत्रिकाएँ, पैम्फलेट, प्रतिवेदन, फोटो प्रतिलिपियाँ, ग्रामोफोन रिकार्ड्स, फिल्म, म्यूजिकल स्कोर्स, माइक्रोफिल्म, मानचित्र, मानचित्रावली, चार्ट्स, चित्र तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आइटम जैसे सीडी-रोम जिनके द्वारा मानव विचारों

का संचारण तथा संरक्षण किया जाता है। इन प्रलेखों का यथोचित संग्रह, भंडारण तथा अधिकतम उपयोग ही आज के पुस्तकालयों का मुख्य कार्य है।

पुस्तकालय वर्गीकरण की आवश्यकता तथा उद्देश्य

3.1 प्रलेखों की प्रकृति

प्रलेखों के संग्रहण, भंडारण तथा पुर्प्राप्ति की समस्या निम्नलिखित घटकों के कारण जटिल हो गई है:

- विभिन्न प्रकार के प्रलेखों के उत्पादन में सतत वृद्धि, जिसे प्रचलित शब्दावली में “ज्ञान विस्फोट” (Knowledge explosion) या ‘सूचना विस्फोट’ (Information explosion) या “सूचना बाढ़” (Information flood) सूचना बूम या ब्लूम (Information boom or bloom) कहा जाता है।
- संसार की विभिन्न भाषाओं में प्रलेखों का प्रकाशन होना।
- प्रलेखों का विविध भौतिक आकारों में उत्पादन होना।
- विविध प्रकार के प्रलेखों में प्रस्तुत की गई विषय वस्तु के अंतर्विषय की प्रकृति एवं इसमें विद्यमान जटिलता।
- पुस्तकालय तथा प्रलेखों के लिए पाठकों का जटिल उपागम।

एक व्यक्ति के समान हर एक प्रलेख केवल अनूठा ही नहीं होता वरन् अन्य प्रलेखों के साथ अपने जटिल संबंधों को भी प्रदर्शित करता है। प्रलेखों के बाह्य लक्षण - जैसे आकार, रंग, खण्ड, जिल्द, प्रकाशन तिथि या आंतरिक लक्षण - जैसे प्रलेखों के अंतर्विषय तथा उनका व्यवस्थापन या सूचना की प्रकृति अर्थात् पाठ्यपरक, संख्यात्मक, ग्रंथात्मक या ग्राफिक भी संग्रह के अधिकतम उपयोग के उद्देश्य को प्राप्त करने में पुस्तकालयों की समस्या में और भी जटिलता प्रदान करते हैं।

अंतर्विषय की जटिलता तथा विविध प्रकार के प्रलेखों के मध्य संबंधों की प्रकृति की आवश्यक जानकारी उनके अधिकतम उपयोग के लिए स्पष्ट रूप से स्थापित होनी चाहिए। प्रलेखों का अधिकतम उपयोग निम्नलिखित रीति से सुनिश्चित किया जा सकता है:

- (i) पाठकों की व्यक्तिगत सहायता;
- (ii) सुनियोजित व्यवस्थापन, एवं
- (iii) पुस्तकालय में पाठ्य सामग्रीका समुचित प्रदर्शन।

यदि किसी पुस्तकालय का संग्रह सुनियोजित रीति से व्यवस्थित है तो प्रलेखों को आसानी से खोजा जा तथा पुनर्प्राप्त किया जा सकता है। पुस्तकालय में पुस्तकों के व्यवस्थान के लिए वर्गीकरण पद्धति एक युक्ति है।

3.2 प्रलेखों का संग्रहण तथा भंडारण

सभ्यता के प्रारंभ से ही मानव ने मानव विचारों के अभिलेखों के संग्रहण तथा संरक्षण की आवश्यकता महसूस की है। पुस्तकें तथा अन्य ग्राफिक सामग्री मानव विचारों, कार्यों तथा उपलब्धियों का अभिलेख प्रस्तुत करती हैं तथा भविष्य की उपलब्धि के लिए आधार प्रदान कर सकती हैं। इस प्रकार समाज में उनके मूल्य को बढ़ा चढ़ा कर कहने की आवश्यकता नहीं। इन अभिलेखों का पुस्तकालयों में संग्रहण तथा संरक्षण वर्तमान तथा भावी पीढ़ी के हित को ध्यान में रखकर किया जाता है। इन अभिलेखों को जो विविधापूर्ण तथा अंतरविषयी है, सजातीय पद ‘प्रलेख’ (Document) से निर्देशित किया गया है।

3.3 प्रलेखों के व्यवस्थापन के निर्धारक घटक

एक पुस्तकालय में प्रलेखों को कई प्रकार से व्यवस्थित किया जा सकता है। जैसे लेखक या आख्या या विषय या आकार, भाषा जिल्द का रंग, या अन्य किसी मानदंड के आधार पर।

NOTES

पुस्तकालय में प्रलेखों का व्यवस्थापन पाठकों की आवश्यकताओं के आधार पर भी हो सकता है। मिल्स (Mils) ने अपनी पुस्तक *Modern Outline of Library Classification* में प्रलेखों के व्यवस्थापन का निर्धारण करने के लिए निम्नलिखित संभावित अभिलक्षणों की सूची दी है:

NOTES

- (i) पाठकों की आयु : बाल पुस्तकें युवा-वर्ग की पुस्तकों से अलग की जाती है।
- (ii) सामग्री के उपयोग से संबंधित शर्तें : ण पर दी जाने वाली पुस्तकें उन पुस्तकों से अलग की जाती हैं जिनका उपयोग केवल पुस्तकालय के परिसर में ही किया जा सकता है। साधारणता संदर्भ पुस्तकें इस श्रेणी में आती हैं।
- (iii) असामान्य आकार के प्रलेख : असाधारण आकार, बृहत् आकार या लघु आकार या लघु आकार के प्रलेखों को अलग-अलग फलकों पर रखा जाता है। ऐसा ग्रंथागार में स्थान संरक्षण के लिए किया जाता है।
- (iv) असामान्य कलेवर के प्रलेख : माइक्रो कार्ड, ग्रामोफोन रिकार्ड्स, टेप्स, स्लाइड्स तथा अन्य दृश्य-श्रवण सामग्री तथा इलेक्ट्रॉनिक प्रलेखों को अलग फलकों पर रखा जाता है।
- (v) प्रलेखों के अंतर्विषय (विषय वस्तु) : तथ्यात्मक साहित्य का व्यवस्थापन विषयानुसार तथा कल्पना आधारित साहित्य का भाषा या लेखक के अनुसार किया जाता है।
- (vi) प्रलेखों की भाषा : विदेशी भाषाओं के प्रलेखों को अलग से उनकी मूल भाषा के अंतर्गत व्यवस्थित किया जाता है।
- (vii) प्रलेख का मूल्य : हस्तलिखित ग्रंथ (पांडुलिपियों) और अप्राप्य तथा मूल्यावान प्रलेखों को अलग से व्यवस्थित किया जाता है।
- (viii) प्रस्तुतीकरण के रूप की विलक्षणताएँ : जिल्दबद्ध पत्रिकाओं को अलग से रखा जाता है।
- (ix) मुद्रण तिथि : हनकुनाबुला (Incunabula) — प्राचीन मुद्रित ग्रंथों को अलग से रखा जाता है।
- (x) स्थानीय इतिहास संग्रह : किसी स्थान, इलाका या क्षेत्र से संबंधित साहित्य को अलग से रखा जाता है।
- (xi) उपहार संग्रह : बहुत-सी पुस्तकें उपहार में इस शर्त के साथ प्राप्त होती हैं कि उनको अलग से फलकों पर रखा जाए।

उपर्युक्त घटक पुस्तकालयों में प्रलेखों के व्यवस्थापन को प्रभावित करते हैं। लेकिन प्रलेखों का अनुक्रम निश्चित करने में अंतर्विषय या विषय व्यवस्थापन (मिल्स की सूची में 5वाँ) जब भी प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण घटक हैं। उपर्युक्त सूची में अन्य घटक कार्यात्मक हैं। यद्यपि एक संग्रह को उपर्युक्त कार्यात्मक घटकों के आधार पर कई अनुभागों में विभाजित किया जा सकता है फिर भी विषय सामग्री के आधार पर हर एक अनुभाग में प्रलेखों का व्यवस्थान सहायक रहेगा। इससे पुस्तकालयों के विभिन्न संग्रहों में समानांतर अनुक्रम हो जाता है। एक पुस्तकालय में संपूर्ण संग्रह पुस्तकों तथा संदर्भ पुस्तकों, पाठ्य पुस्तकों, पत्रिकाओं इत्यादि के अलग-अलग संग्रहों में विभाजित हो जाता है। इस प्रकार पुस्तकालय में एक ही विषयकी पुस्तकों के कई अनक्रम होते हैं। इन अनुक्रमों को "समानांतर अनुक्रम" (Parallel Sequence) कहते हैं।

3.4 पुस्तकालयों में प्रलेखों का व्यवस्थापन

19वीं शताब्दी के अंत तक आकार में पुस्तकालय संग्रह छोटे होते थे। इतने विषय-क्षेत्रों का विकास नहीं हुआ था जितने कि अब दिखाई पड़ते हैं तथा प्रकाशन-कार्य भी विस्तृत रूप से फैला हुआ नहीं था। पाठक भी इतने अधिक नहीं थे जितने कि हम वर्तमान काल में देखते हैं। पहले के पुस्तकालय अपने संग्रह को स्थिर अवस्थित (Fixed location) के आधार पर व्यवस्थित करने का प्रयास करते थे। इस विधि द्वारा पुस्तकालय में फलकों पर हल प्रलेख को एक स्थिर स्थान आबंटित कर दिया जाता है। हर नवीन प्रलेख को बिना उसके अंतर्विषय पर ध्यान दिए संग्रह में उसके पहले रखे गए प्रलेख के साथ व्यवस्थित कर दिया जाता था।

स्थिरस्थान विधि उसी विषय में सन्नहित प्रलेखों को एक साथ लाने में असफल सिद्ध हुई। स्थिर स्थान विधि में विस्तृत विषय श्रेणी के अंतर्गत परिग्रहण के कालक्रमानुसार ग्रंथों का व्यवस्थापन किया जाता है।

कुछ प्रचीन पुस्तकालयों में संग्रह को बाह्य अभिलक्षणों जैसे रंग, आकार, प्रकाशन तिथि, जिल्दसाजी की किस्म के आधार पर व्यवस्थित करने के प्रयास किए गए थे। ये सभी व्यवस्थाएँ या अनुक्रम इतने सहायक नहीं हैं जितना कि विषय व्यवस्थापन।

3.5 प्रलेखों के लिए पाठकों के उपागम

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, पुस्तकालयों में प्रलेखों का व्यवस्थापन जिल्द के रंगों, आकार, भाषा, प्रकाशन तिथि, परिग्रहण संख्या इत्यादि के आधार पर हो सकता है। लेकिन ये विधियाँ तथा असहायक हैं क्योंकि वे प्रलेखों के लेखक, आख्या या विषय सामग्री को पाठक के समक्ष नहीं ला सकतीं। आज खोजन पर भी बहुत की कम या नगण्य पुस्तकालय मिलेंगे जिन्होंने अपने संग्रह का व्यवस्थापन रंग, आकार, प्रकाशन तिथि, या प्रकाशन के नाम के आधार पर किया हो। जब आकार में संग्रह बहुत छोटे थे तब इन अभिलक्षणों का उपयोग व्यवस्थापन के लिए किया जाना मुमकिन था।

कुछ ऐसे पुस्तकालय भी हैं जहाँ पर संग्रहों का व्यवस्थापन परिग्रहण संख्या या क्रमांक के आधार पर किया जाता है। अन्य विधियाँ जिनके द्वारा प्रलेखों का आमतौर पर व्यवस्थापन किया जाता है वे आख्या, लेखक या विषय पर आधारित हैं। इसका कारण यह है कि आधुनिक पुस्तकालयों में किसी विशिष्ट ग्रंथ के लिए पाठकोंका उपागम आख्या या लेखक या विषय के द्वारा होता है। सामान्यतया उपन्यासोंका व्यवस्थापन लेखक के अंतर्गत, पत्रिकाओं का आख्या के अंतर्गत एवं वैज्ञानिक तथा तथ्यात्मक साहित्य का विषय के अंतर्गत किया जाता है। कुछ पुस्तकालयों में कल्पनाशील साहित्य (belles letters)का व्यवस्थापन पहले भाषा के अंतर्गत और भाषा के अंतर्गत विधा के द्वारा तथा इसके बाद लेखक के अंतर्गत और यदि आवश्यक हुआ तो कृति संख्या के द्वारा किया जाता है।

पूर्व में यह समझाया चुका है कि एक पाठक एक प्रलेख की माँग किसी विशिष्ट आख्या के द्वारा या किसी विषय के द्वारा कर सकता है। इस प्रकार किसी संग्रह के लिए मुख्यतः तीन उपागम बिंदु होते हैं: लेखक, आख्या तथा विषय। ये किसी हद तक सहायक है इसकी व्याख्या नीचे दी जा रही है:

लेखक उपागम (Author Approach) : प्रायः पाठक पुस्तकालय में

- (i) एक विशिष्ट ग्रंथ को ढूँढने जाते हैं जिसके लेखक की जानकारी हो या फिर यह देखते हैं कि
- (ii) एक विशिष्ट लेखक की कौन-कौन सी कृतियाँ पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

लेकिन लेखक के आधार पर प्रलेखों का व्यवस्थापन हमेशा सहायक नहीं होता। अगर आप किसी विशिष्ट प्रलेख या विशिष्ट विषय के प्रलेखों को ढूँढ रहे हैं तो लेखक व्यवस्थापन उसी विषय के विशिष्ट तथा उससे संबंधित विषयों को एक स्थान पर लाने में असफल हो जाता है। यहाँ इसका एक उदाहरण पुस्तुत है:

| | | |
|--------------------|---|----------------------------|
| Marsten, R.B. | : | Communication Technology |
| Marston, A.N. | : | Encyclopaedia of Angling |
| Marston, E.H. | : | Dynamic Environment |
| Marston, Elizabeth | : | Rain Forest |
| Marston, John | : | Dutch Courtesan |
| Marston, J.E. | : | Nature of Public Relations |
| Marston, Phillip | : | Breeder of Democaracy |
| Marston, P.B. | : | Collected Poems |
| Marst, R.M. | : | Electronic Projects |
| Martell, P. | : | World Military Leaders |

NOTES

NOTES

आख्या उपागम (Title Approach) : कभी-कभी आप एक प्रलेख को लेने के लिए एक पुस्तकालय में तब जाते हैं जब उसकी आख्या मालूम होती है। अगर पुस्तकालय में पुस्तकें आख्या द्वारा व्यवस्थित हैं तो आपकी आवश्यकता की पूर्ति हो सकती है। लेकिन आख्या के आधार पर प्रलेखों के व्यवस्थापन की विधि बहुत सहायक नहीं है। हमेशा ही किसी आख्या को गलत कहे जाने के अवसर रहते हैं। कभी-कभी एक संस्करण से दूसरे संस्करण में आख्याएँ बदल जाती हैं। एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने पर उसी प्रलेख की आख्या भिन्न हो जाती है। कभी-कभी वही प्रलेख विभिन्न देशों में विभिन्न आख्याओं के अंतर्गत प्रकाशित किया जा सकता है यद्यपि भाषा वही हो सकती है।

अतः आख्या व्यवस्थापन, लेखक व्यवस्थापन के समान उसी विशिष्ट विषय से संबंधित होने के बावजूद उन सब को एक स्थान पर लाने में असफल रहता है। इन्हीं कमियों के कारण आख्या के आधार पर प्रलेखों का व्यवस्थापन बहुत सहायक नहीं होता। यहाँ एक उदाहरण प्रस्तुत है;

Instant Astrology by Jack London

Instant Beauty Tricks by P. Brooks

Instant Book Keeping by D.C. Conaway

Instant Chicago by J. Graham

Instant College by R.W. Graham

Instant Divorce by S. Rosen

Instant English Handbook by M. Semmeimeyer

Instant Medical Advisor by J. Smith

Instant Paintings by N. Koni

Instant Quotation Dictionary by B.O. Bolander

विषय उपागम (Subject Approach) : शैक्षिक, विशिष्ट, तकनीकी तथा शोध पुस्तकालयों और बहुत हद तक सार्वजनिक पुस्तकालयों में आप देखेंगे कि प्रलेखों को ढूँढने कि प्रलेखों को ढूँढने के लिए अधिकतम पाठकों का उपागम विषय के आधार पर होता है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा बहुत हद तक सामाजिक विज्ञानों में विकास के कारण पाठकों का विषयपरक उपागम बढ़ गया है। जहाँ प्रलेखों के लेखक तथा आख्या महत्वपूर्ण तो होते हैं परंतु पर्याप्त नहीं होते। इन क्षेत्रों में ग्रंथों का अत्याधिक प्रकाशन होने के कारण, श्रेण्य ग्रंथों को छोड़कर विशिष्ट आख्या या लेखक को सही प्रकार से याद रखना अकस मुश्किल हो गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सुव्यवस्थित पुस्तकालयों में प्रलेखों का व्यवस्थापन विषय सामग्री के आधार पर किया जाता है। यह व्यवस्थापन उसी विशिष्ट विषय से संबंधित प्रलेखों का एक स्थान पर लाने में और संबंधित विषयों के प्रलेखों को अति सन्निकट फलक पर लाने में सहायक होता है। डॉक्टर रंगनाथन ने इसी को अपूपा (APUPA) व्यवस्थापन कहा है जो पुस्तकालय विज्ञान के पंच सूत्रों की अनुरूपता में उपयुक्त समय पर पाठकों को पूर्ण संतोष प्रदान करता है। इ व्यवस्थापन में प्रच्छया क्षेत्र (UMBRALE REGION) किसी की भी अभिरुचि को केंद्र बिंदु होता है। इसके पहले और पश्चात् उपच्छया क्षेत्र (PENUMBRALE REGION) होता है तथा विषयों का निरूपण करते हुए दोनों तरफ हास स्थिति में असंगत (ALIEN REGION) होता जाता है। खास तौर से मुक्त प्रवेश प्रणाली का अनुपालन करने वाले पुस्तकालयों के लिए यह व्यवस्थापन सहायक तथा सुविधाजनक है। पाठक सीधे फलकों पर जा सकते हैं और ग्रंथ संग्रह का अवलोकन कर सकते हैं। साधारणतया पुस्तकालयों का उद्देश्य हर जगह अपूपा व्यवस्थापन (APUPA ARRANGEMENT EVERYWHERE) को सुनिश्चित करना होता है।

इस प्रकार विषय व्यवस्थापन फलकों पर एक ही विषय तथा उसके बाद संबंधित विषय के प्रलेखों को साथ-साथ लाने में सहायक होता है। मान लें कि आप भौतिक विज्ञान पर एक विशिष्ट प्रलेख खोज रहे हैं।

NOTES

जहाँ विषय व्यवस्थापन है वहाँ आप केवल भौतिक विज्ञान के प्रलेखों को ही नहीं वरन उसके बहुत ही सन्निकट विषयों के प्रलेखों को भी प्राप्त कर सकते हैं, जैसे रसायन विज्ञान। ऐसा भी हो सकता है कि अगर एक विशिष्ट आख्या जिसकी आपको आवश्यकता है अप्राप्य है तो आप उस विषय पर किसी अन्य आख्या को प्राप्त कर सकते हैं जो कि आपकी जरूरत को पूरा कर सकती है। कुछ विद्वानों को अपने विषय पर जो कुछ भी उपलब्ध है उस सभी की आवश्यकता हो सकती है। आप देखेंगे कि रसायन विज्ञान के पास एक तरफ संबंधित विषय जैसे गणित तथा खगोल शास्त्र की पुस्तकें हैं तथा दूसरी तरफ जीव विज्ञान की पुस्तकें।

प्रलेखों के विषय व्यवस्थापन से आप यह जान जाते हैं कि:

- (i) पुस्तकालय में एक विशिष्ट विषय पर कौन-कौन से प्रलेख उपलब्ध हैं; एवं
- (ii) उस विषय पर संग्रह की गुणवत्ता कैसी है और संग्रह में क्या कमियाँ हैं।

इस प्रकार का व्यवस्थापन फिलिएटरी अनुक्रम (Filiatory Sequence) कहलाता है। बड़े तथा विशिष्ट पुस्तकालयों में प्रलेखों से संबंधित कई अनुभाग होते हैं। जैसे;

- (i) पाठ्य पुस्तकें
- (ii) संदर्भ पुस्तकें
- (iii) प्रबंध तथा लघुशोध प्रबंध
- (iv) पैपलेट्स
- (v) पत्रिकाओं के जिल्दबद्ध खंड

आप देखेंगे कि ये भिन्न-भिन्न संग्रह एक पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति का उपयोग करते हुए विषय क्रम में व्यवस्थित किए गए हैं।

विशेषज्ञों का यह सुविचारित मत रहा है कि आधुनिक पुस्तकालयों में प्रलेखों का व्यवस्थापन विषय की अपेक्षा किसी अन्य विधि से करने पर अधिकम पाठकों की आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया जा सकता। आजकल पुस्तकों के लिए विषय अपागम प्रधान है। मेल्विल ड्यूई (Melvil Dewey), जे.डी. ब्राउन (J.D. Brown), सी.ए. कटर (C.A. Cutter), डब्लू.सी.बी. सेयर्स (W.C.B. Sayers), एस.आर. रंगनाथन (S.R. Ranganathan), एच.ई. ब्लिस (H.E. Bliss) तथा अन्य वर्गीकरण पद्धति प्रणेताओं ने प्रलेखों के विषयानुसार व्यवस्थापन की वकालत की है। विषयानुसार व्यवस्थापन से यह तात्पर्य नहीं है कि लेखक और आख्या उपागम के लिए उनमें कोई स्थान ही नहीं होता है। इन उपागमों को लेखक तथा आख्या प्रसूचियों के माध्यम से संतुष्ट किया जाता है। अतः विषय व्यवस्थापन सर्वश्रेष्ठ है और उसका प्रलेखों के अंतर्विषय हैं। पुस्तकालय वर्गीकरण एक ऐसी तकनीक है जिसका पुस्तकालयों में उपयोग प्रलेखों के अंतर्विषय के यंत्रीकरण के लिए किया जाता है। पुस्तकालयों को अधिक सहायक रूप प्रदान करने की यह एक तकनीक है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. प्रलेखों की प्रकृति से आप क्या समझते हैं?
2. प्रलेखों का संग्रहण तथा भंडारण क्यों आवश्यक है?

.....

.....

.....

.....

4. वर्गीकरण

4.1 वर्गीकरण का अर्थ

NOTES

किसी माँग को पूरा करने के लिए सत्ताओं (अमूर्त एवं मूर्त) का सुनियोजित समूहीकरण वर्गीकरण कहलाता है। मानव के सभी कार्यकलापों के मूल में वर्गीकरण स्थित है। हमारा दैनिक जीवन वर्गीकरण प्रक्रिया पर अधिकतम निर्भर है चाहे यह प्रक्रिया कितनी भी मामूली क्यों न हो। आप अपने इर्द-गिर्द के बहुत से कार्यकलापों को याद कर सकते हैं जहाँ वर्गीकरण अपनी भूमिका निभाता है। उदाहरणस्वरूप, रेलवे समय सारणी में अंतर्विषयों का व्यवस्थापन, किराने की दुकान में चीजों का प्रदर्शन विभागीय भंडार में ग्राहकों द्वारा विभिन्न मर्दों के चयन की सुविधा के लिए प्रतिरूपकों का व्यवस्थापन, नाट्यशाला तथा स्टेडियम में बैठने का व्यवस्थापन एक राज्य परिवहन प्रधिकरण द्वारा विभिन्न मोटरों वाहनों पर रजिस्ट्रेशन नंबर निर्दिष्ट या डाकियों द्वारा डाक के त्वरित वितरण के लिए पत्रों को पहले नगर फिर गली और अंत में मकान नंबर द्वारा छँटना। ये साधारण से उदाहरण हैं जिनसे मालूम होता है कि हम अपने क्रियाकलापों में वर्गीकरण का कैसे उपयोग करते हैं।

लैटिन शब्द *Classes* से *Classification* शब्द व्युत्पन्न हुआ है जिनका अर्थ रोमन समाज में जन्म तथा संपत्ति के आधार पर कुलीन वर्ग की जनता की श्रेणी या स्तर से था। वर्गीकरण एक मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक समान अभिलक्षण के आधार पर हम वस्तुओं के समूह बनाते या अलग करते हैं। उदाहरणस्वरूप समान अभिलक्षणों के आधार पर वस्तुओं के समूह बनाना। दूसरे शब्दों में, वर्गीकरण समान चीजों के वर्ग को पहचानने का प्रयास है। हम अपने प्रयास में एक अभिलक्षण के उपयोग के द्वारा समान चीजों को उसमान चीजों से अलग करने में सफल होते हैं। सार यह है कि वर्गीकरण का अर्थ समूहों में विभाजन, सूहीकरण, छँटना, व्यवस्थापन, क्रमबद्ध करना, श्रेणीबद्ध करना तथा एक सत्ता से दूसरी सत्ता को संबंधित करना है।

डॉ. रंगनाथन ने *Prolegomena to Library Classification* (1967) में वर्गीकरण के अर्थ की बृहत् रूप से विवेचना की है। भौतिक पदार्थों के संबंध में विभाजन तथा सामूहिकीकरण वर्गीकरणों के दो प्रतिफल हैं। डॉ. रंगनाथन के अनुसार विभाजन में दो या अधिक समूहों में पदार्थों को छँटना अंतर्निहित है। सामूहिकीकरण में इसके साथ-साथ निर्धारित अनुक्रम में इन समूहों का व्यवस्थापन किया जाता है। इसके आगे पुस्तकालय वर्गीकरण में वस्तुओं अर्थात् प्रलेखों का अनुक्रम द्वारा यंत्रीकृत कर दिया जाता है। जब एक नए ग्रंथ को पुस्तकालय में जोड़ा जाता है या उसका अधिग्रहण किया जाता है तो यह अंकन में प्रतिबिम्बित होता है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि 'वर्गीकरण' शब्द एक समध्वनिक भिन्नार्थ शब्द है। इसलिए रंगनाथन ने कई तरीकों से जाँच करके इसके अर्थ को स्थिर करने का प्रयास किया जिसमें इस शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया गया:

वर्गीकरण प्रथम आशय में विभाजन है।

वर्गीकरण द्वितीय आशय में सामूहिकीकरण है।

वर्गीकरण, तृतीय आशय में, द्वितीय अभिप्राय के साथ हर एक सत्ता को क्रमबोधक संख्या की प्रणाली से लिए गए एक क्रमबोधक संख्या द्वारा प्रदर्शित करना है जिसे इस प्रणाली के अनुक्रम के रख-रखाव कार्य तथा यंत्रीकरण के लिए रचा गया हो।

चतुर्थ आशय में वर्गीकरण तृतीय आशय के साथ-साथ परिवर्धित जगत् का पूर्ण सामूहिकीकरण है। अर्थात् जब उत्तरवर्ती सामूहिकीकरण प्रक्रिया से उत्पन्न सत्ताएँ तथा छद्म सत्ताएँ एक ही फिलिएटरी अनुक्रम में व्यवस्थित हो जाएँ तो वह चतुर्थ अभिप्राय वाला वर्गीकरण कहलाता है।

वर्गीकरण, पंखम आशय में, वर्गीकरण के चतुर्थ आशय वाली सभी सत्ताओं को हटाते हुए केवल छद्म सत्ताओं या वर्गों को ही लेता है।

पुस्तकालय वर्गीकरण की आवश्यकता तथा उद्देश्य

वर्गीकरण के पंचम आशय का उपयोग तब किया जाता है जब

- (i) या जो वर्गीकृत जगत् असीम है।
- (ii) जबकि कुछ सत्ताएँ किसी क्षण अज्ञात और अज्ञेय हों, भले ही वर्गीकृत जगत् सीमित हो।

वर्गीकरण का यही पंचम आशय पुस्तकालय व्यवसाय से प्रयुक्त होता है। पुस्तकालयों का मुख्य प्रयोजन प्रलेखों को अधिकतम सहायक व्यवस्थापन में स्थापित करना है। इसलिए पुस्तकालय वर्गीकरण में अंकन अर्थात् विषयों के नाम के सूक्ष्म प्रतीक का उपयोग किया जाता है। अतः यही अभिप्राय या आशय है जिसके संदर्भ में वर्गीकरण शब्द का इस या अन्य इकाइयों में प्रयोग किया गया है।

4.2 पुस्तकालय वर्गीकरण की परिभाषा

पुस्तकालय विज्ञान में वर्गीकरण के अर्थ को समझ लेने के पश्चात् अब हम पुस्तकालय वर्गीकरण की कुछ प्रसिद्ध परिभाषाओं पर विचार करते हैं।

पुस्तकालय वर्गीकरण को वर्गीकरण प्रणाली प्रणेताओं और आलोचकों दोनों ने ही परिभाषित किया है।

Margaret Mann के अनुसार, "वर्गीकरण कुछ समानता और असमानता के आधार पर व्यवस्थित करना है। यह चीजों को चुनना तथा उनका सामूहिकीकरण है, लेकिन पुस्तकों का वर्गीकरण ज्ञान वर्गीकरण है जिसमें पुस्तकों के भौतिक स्वरूप के द्वारा आवश्यक एकीकरण करना पड़ता है"। W.C. Berwick Sayer ने इसकी परिभाषा देते हुए लिखा है "फलकों पर पुस्तकों का व्यवस्थापन या उनका विवरण इस प्रकार का हो कि जो उनको पढ़ते हैं उन्हें बहुत ही सहायक हो"। Arthur Maltby ने Sayers की परिभाषा को संशोधित करते हुए लिखा है, "फलकों पर पुस्तकों तथा अन्य सामग्री या सूची या अनुक्रमणिका के संलेखों का इस प्रकार सुनियोजित व्यवस्थापन हो जो पढ़ने वालों को या जो किसी विशिष्ट सूचना को खोजते हैं उन्हें अधिकतम लाभदायक हो"। रंगनाथन की परिभाषा अधिक व्यापक है इसलिए उनकी परिभाषा का विस्तार से अध्ययन करते हैं।

रंगनाथन के अनुसार, "पुस्तकालय वर्गीकरण एक पुस्तक के विषय के नाम का क्रमबोधक संख्या की कृत्रिम भाषा में अनुवाद है तथा उसी एक ही विशिष्ट विषय को अंगीकृत करने वाली कई पुस्तकों का स्पष्टीकरण आगे क्रमबोधक संख्या के समुच्चय द्वारा करना है जो कि अंतर्विषय की अपेक्षा पुस्तक के अन्य लक्षणों का निरूपण करता है"। इस परिभाषा में तीन महत्पूर्ण वाक्यांश हैं:

- (i) कृत्रिम भाषा (artificial language),
- (ii) क्रमबोधक संख्याएँ (ordinal numbers), तथा
- (iii) विशिष्ट विषय (specific subject)।

इन तीनों वाक्यांशों के लिए कुछ स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

कृत्रिम भाषा : पुस्तकालय वर्गीकरण में हम विषयों को द्योतित करने के लिए प्रतीकों का प्रयोग करते हैं। विषयों के नाम एक साधारण आदमी की समझ में आने वाली सामान्य भाषा में होते हैं। इसलिए हम इसे प्राकृतिक भाषा कहते हैं। जिसे समाज में रहते हुए मानव प्राकृतिक रूप से समझता है। इसके विपरीत विषय को निर्दिष्ट करने के लिए प्रतीकों का प्रयोग भी किया जा सकता है कृत्रिम भाषा का उदाहरण है। जैसे गणित के लिए B या 510 या QA इस अर्थ में कृत्रिम हैं कि वे आम आदमी की समझ में नहीं आएँगे। अतः ये कृत्रिम

NOTES

NOTES

हैं और विशेष रूप से प्रशिक्षित पेशेवर वर्ग के लिए ही बोधगम्य हैं। उनका मूल्य केवल क्रमबोधक है जिसका अर्थ है कि प्रतीकों का परिमाणात्मक या गुणात्मक मूल्य नहीं होते हैं; वे केवल फलकों पर प्रलेखों का क्रम/ अनुक्रम निश्चित करते हैं। ये प्रतीक ही चुने हुए अनुक्रम या क्रम को रख रखाव या संरक्षण प्रदान करते हैं क्योंकि ग्रंथों को ऋण पर देने या पढ़ने के लिए लेने के पश्चात् वापस आने पर उन्हें उनके उपयुक्त स्थान पर रखना होता है। ये प्रतीक फलकों पर इन प्रलेखों के क्रम/अनुक्रम के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं दर्शाते हैं।

क्रमबोधक संख्या : इनका प्रयोग गिनने के उद्देश्य के लिए नहीं किया जाता है वरन् वस्तुओं के व्यवस्थापन में क्रमवद्धता तथा यंत्रीकरण लाने के लिए किया जाता है। उदाहरण के तौर पर एक सम्मेलन में किसी समुचित सिद्धांत के आधार पर वांछित अनुक्रम में सूची बनाई जा सकती है तथा इस अनुक्रम का क्रमबोधक संख्या की सहायता से यंत्रीकरण हो सकता है।

मेल्विल ड्यूई (Melvil Dewey) (1851-1931) ने, जिन्हें आधुनिक पुस्तकालय वर्गीकरण का जनक माना जाता है, सर्वप्रथम हिन्दी-अरबी संख्याओं (0-9) को, व्यापक एवं संकीर्ण विषयों के लिए क्रमबोधक संख्या के रूप में, 1876 में प्रकाशित डेसिमल क्लैसिफिकेशन में प्रयुक्त किया। ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन की अधिक जानकारी की लिए इस पाठ्यक्रम की इकाई 4, 10, तथा 11 और बी आई एल एस-03P के खंड 1 और 2 को देखें। तथी से क्रमबोधक संख्या, जिसे पुस्तकालय वर्गीकरण में अंकन कहते हैं, पुस्तकालय वर्गीकरण प्रणाली के अभिकल्प तथा उपयोग का प्रमुख तत्व रही है।

विशिष्ट विषय : एक प्रलेख के अंतर्विषय का संबंध ज्ञान के किसी क्षेत्र की विवेचना से होता है। एक वर्गीकरणकार के लिए यह परमावश्यक है कि वह समझ ले कि प्रलेख की सटीक विषय-वस्तु क्या है। सही विषय या विशिष्ट विषय का निर्धारण करने के बाद वर्गीकरणकार विशिष्ट विषय का अनुवाद कृत्रिम भाषा, या जिस वर्गीकरण पद्धति का उपयोग किया जा रहा है उसकी क्रमबोध संख्या, में करता है। प्रलेख के विशिष्ट विषय को जानने के हेतु वर्गीकरणकार को इसकी आख्या, वर्ण्य विषय, प्रस्तावना तथा भूमिका का अवलोकन करना होता है और कुछ अध्यायों का सूक्ष्म निरीक्षण तथा आवश्यक हो तो पूरी पुस्तक को पढ़ना होता है। ऐसे भी कुछ मौके आ जाते हैं जहाँ कि वर्गीकरणकार को प्रलेख के विशिष्ट विषय के निर्धारण के लिए किसी विशेषज्ञ से संपर्क करना पड़ता है।

डॉ. रंगनाथन ने विशिष्ट विषय की परिभाषा इस प्रकार दी है कि "यह ज्ञान का ऐसा विभाग है जिसका विस्तार तथा जिसकी गहनता उसके विचारांश के समान हो"। विस्तार का अर्थ विषय-क्षेत्र से है और गहनता का अर्थ प्रलेख में व्यवहृत विषय की गूढ़ता से है।

पामर एवं वेल्स (Palmer and Wells) ने इसकी परिभाषा करते हुए कहा है कि "यह ज्ञान का वह विभाजन है जिसमें उव सभी घटकों का समावेश होता है जिनसे उसका निर्माण होता है"। अब हम एक उदाहरण द्वारा विश्लेषण करते हुए विशिष्ट का निर्धारण करें।

A.L. Srivastave : *A Short History of Akbar the Great* (1442-1605). Agra, Shivial Agarwal, 1957.

इस पुस्तक के अंतर्विषय की व्याख्या "इतिहास" या "भारत का इतिहास" या "मुगलकाल में भारत का इतिहास" के रूप में की जा सकती है। ये सभी संभाव्य विषय अति विशिष्ट नहीं हैं और वे पुस्तक के वास्तविक विचारांशों के अस्पष्ट रूप से बताते हैं। अतः उपर्युक्त व्याख्या को पूर्ण करने के लिए एक वाक्यांश को जोड़ना आवश्यक है। वह वाक्यांश है "अकबर का शासन"। इन सभी पक्षों को वर्ग संख्या में परिवर्तित करना है। अगर आप इनमें से किसी भी पक्ष को छोड़ देते हैं तो उसकी विस्तृति तथा गहनता पुस्तक के अंतर्विषय के समान नहीं होगी।

इस पुस्तक के विशिष्ट विषय को निम्नलिखित रीति से प्राप्त किया जा सकता है:

History (इतिहास)

Indian History (भारतीय इतिहास)

Mughal Perios (मुगल काल)

Akbar (अकबर)

Reign (शासन)

पुस्तकालय वर्गीकरण की
आवश्यकता तथा उद्देश्य

NOTES

उपर्युक्त विवरण के अनुसार जब हम प्रलेख के अंतर्विषय का विवेचन करेंगे तो उत्तरवीं विभाजन में विस्तार (विषय-क्षेत्र) का हास तथा उसकी गहनता की वृद्धि होती जाएगी। विषय को इस रीति से क्रमबद्ध करना "सामान्य से विशिष्ट" (general to specific) कहलाता है।

रंगनाथन द्वारा दी गई परिभाषा, जिसे ऊपर उद्धृत किया गया है, दो उद्देश्यों को इंगित करती है। पहला, विषय का क्रमबोधक संख्या में अनुवाद, तथा दूसरा, पुस्तकालय प्रलेखों के संपूर्ण क्रम में विशिष्ट प्रलेख का व्यष्टीकरण। एक प्रलेख के विषय का वर्ग संख्या में अनुवाद अंकन की सहायता से किया जाता है। लेकिन कई प्रलेखों की एक ही वर्ग संख्या होने की स्थिति में व्यष्टीकरण की समस्या उत्पन्न होती है अतः केवल वर्ग संख्या से काम नहीं चलता। इसके लिए एक पूरक तत्व या आवश्यक हो दो अतिरिक्त पूरक तत्वों का प्रयोग करना होता है। ये अतिरिक्त तत्व (1) पुस्तक संख्या (Book Number), तथा (2) संग्रह संख्या (Collection Number) है। वर्ग संख्या, पुस्तक संख्या और संग्रह संख्या को मिलाकर किसी प्रलेख की आह्वान संख्या (Call Number) का निर्माण होता है। यह केवल आह्वान संख्या है जो कि पुस्तकालय में एक विशिष्ट प्रलेख का व्यष्टीकरण करती है। अब हम देखेंगे कि आह्वान संख्या कैसे निर्मित होती है।

4.3 आह्वान संख्या

एक प्रलेख की आह्वान संख्या तीन तत्वों द्वारा निर्मित होती है:

- वर्ग संख्या,
- पुस्तक संख्या, तथा
- संग्रह संख्या।

निम्नलिखित उदाहरण में आह्वान संख्या के इन तीनों तत्वों को दर्शाया गया है:

Jawaharlal Nehru: An Autobiography with Musings on Recent Events in India, Bombay, Allied. 1962.

ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के अनुसार इस पुस्तक की आह्वान संख्या इस प्रकार होगी:

923.254 वर्ग संख्या
NEH पुस्तक संख्या आह्वान संख्या
RR संग्रह संख्या

इस आह्वान संख्या की व्याख्य निम्नलिखित प्रकार से की जा सकती है:

923.254 एक भारतीयराजनीतिज्ञ का जीवन चरित (अर्थात् पुस्तक का विषय, अर्थात् वर्ग संख्या)
NEH Nehru (लेखक के कुलनाम के प्रथम तीन अक्षर, अर्थात् पुस्तक संख्या)
RR पठन-कक्ष (रीडिंग रूम) संग्रह (पुस्तकालय में संग्रह की प्रकृति, अर्थात् संग्रह संख्या)

इस प्रकार पुस्तक संख्या तथा संग्रह संख्या की सहायता से एक प्रलेख पूर्ण रूप से व्यष्टीकृत हो जाता है।

पुस्तक संख्या तथा संग्रह संख्या के निर्माण के लिए भिन्न-भिन्न विधियों का प्रयोग होता है। इन विधियों में से किसी एक का अनुसरण करना संबंधित पुस्तकालय की इच्छा पर छोड़ दिया जाता है। यदि संभव हो तो पुस्तकालय स्वयं अपनी विधि या नीति निर्धारित कर सकते हैं।

NOTES

क्रियाकलाप

- (1) अपने पुस्तकालय या अन्य पुस्तकालयों, जिनमें आप गए हों, के विभिन्न संग्रहों की सूची बनाएँ।
- (2) कुछ पुस्तकालयों में जाएँ और पुस्तक संख्या एवं संग्रह संख्या निर्धारण के लिए जो नीतियाँ तथा विधियाँ प्रयोग में लाई हैं, उन्हें ध्यानपूर्वक देखें।

4.4 उद्देश्य तथा कार्य

अब तक हमने वर्गीकरण के अर्थ का अध्ययन किया है। हमने आह्वान संख्या के का भी अध्ययन किया है। अब हम भली-भाँति समझना चाहेंगे कि पुस्तकालय में प्रलेखों का वर्गीकरण कर तथा उनको सुनियोजित तरीके से व्यवस्थापन कर क्या प्राप्त किया जाता है।

सूचना क्रांति के इस युग में विभिन्न प्रकार के प्रलेखों के अधिग्रहण तथा व्यवस्थापन में पुस्तकालयों की भूमिका के बारे में कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। सेवा-प्रदायक संख्या होने के कारण पुस्तकालयों द्वारा प्रलेखों का अधिग्रहण उपयोग के लिए किया जाता है। अधिग्रहीत सामग्री का व्यवस्थापन सुनियोजित तरीके से होना चाहिए जिससे पाठकों की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को शीघ्रतापूर्वक पूरा किया जा सके।

अनुभाग 2.2.3 तथा 2.2.5 में आपको यह बताया गया है कि एक पुस्तकालय में प्रलेखों का व्यवस्थापन यदि विषय के स्थान पर किसी अन्य विधि से किया जाता है तो वह व्यवस्थापन अधिकतम पाठकों, जो सामान्य रूप से अपनी विषय सामग्री के लिए पुस्तकालय में आते हैं, आते हैं, की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सहायक नहीं होता। दूसरे शब्दों में, प्रलेखों का वर्गीकरण एवं व्यवस्थापन वर्ण्य विषय (Subject Content) के आधार पर होना चाहिए।

हम सूचना क्रांति के साक्षी हैं। प्रलेखों का विभिन्न भाषाओं में विभिन्न विषयों पर विभिन्न स्वरूपों में प्रकाशन होता है। पुस्तकालय सदा ही पुस्तकों का अधिग्रहण करते रहे हैं और उनको संग्रह में जोड़ते रहे हैं। इसलिए एक सक्रिय पुस्तकालय का संग्रह प्रतिवर्ष बढ़ता ही रहता है। रंगनाथन ने सक्रिय एवं प्रभावी पुस्तकालयों की तुलना वर्धनशील जैविक-तंत्र से की है। एक अवर्गीकृत पुस्तकालय में जब संग्रह हजारों और लाखों की संख्या में बढ़ जाता है तो पुस्तकालय कर्मचारियों को पाठक द्वारा वांछित विशिष्ट प्रलेख पर हाथ रखना कठिन हो जाएगा। अतः पाठकों के विषय-उपागम को सतृप्त करने के लिए संग्रह का आवश्यक रूप से विषय के द्वारा वर्गीकरण होना चाहिए।

उन पुस्तकालयों में जहाँ पर संग्रह का व्यवस्थापन परिग्रहण संख्या या लेखक या आख्या के आधार पर किया जाता है, विषयानुसार नहीं, वहाँ संपूर्ण संग्रह में एक ही विषय की पुस्तकें बिखरी हुई मिलेंगी। यहाँ तक कि विषय के आधार पर भी यदि पुस्तकों का वर्णमाला क्रम से व्यवस्थापन है तो भी अनुक्रम सहायक नहीं होगा और असंबंधित सामग्री एक साथ आ जाएगी। निम्नलिखित उदाहरण को देखें:

Adult education

Agriculture

Algebra

Alloys

American history

Anthropology

Applied mechanics

Arithmetic

Astronomy

Atomic energy

Australian history

पुस्तकालय वर्गीकरण की
आवश्यकता तथा उद्देश्य

NOTES

वर्ण आधारित अनुक्रम से, जैसा कि अपर्युक्त उदाहरण में दिखाया गया है, तार्किक रूप से परस्पर संबंधित विषय एक-दूसरे से पृथक् हो जाते हैं। एक सुनियोजित व्यवस्थापन से ही संबंधित विषय के संग्रह को एक फिलिएटरी अनुक्रम में रखा जा सकता है। इस के लिए हमें पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति की आवश्यकता होती है। यहाँ डेसिमल क्लैसिफिकेशन के आधार पर प्रलेखों के व्यवस्थापन का उदाहरण दिया गया है जो कि अर्थशास्त्र के विभिन्न पक्षों के संग्रह को सुनियोजित ढंग से एक ही स्थान पर ले आता है:

| | | |
|-----|---|-------------------|
| 330 | Economics explained | by R.L. Helbroner |
| 331 | The economies of work and pay | by Albert Reas |
| 332 | Essentials of finance | by R.G. Jones |
| 333 | The economics of natural resources | by R. Leconber |
| 334 | Cooperative housing | by M. Digby |
| 335 | Socialism without the state | by E. Lurd |
| 336 | The fiscal system of Hong Kong | by H.C.Y. Ho |
| 337 | Buklding Europe : Britain's partners in EEC | by K.J. Twitchelt |
| 338 | Production economics | by M. Fuss |
| 339 | Macroeconomics | by J.B. Beare |

उपरिलिखित प्रत्येक वर्ग के अंतर्गत व्यवस्थापन अंतिम एवं सूक्ष्म रूप से पूर्ण किया गया है। जैसे:

| | |
|-----------|-----------------------|
| 330 | Social sciences |
| 330 | Economics |
| 332 | Financial economics |
| 332.1 | Banks and banking |
| 332.11 | Central banks |
| 332.11095 | Reserve Bank of India |

पुस्तकालयों में विभिन्न प्रकार के प्रलेखों का भंडारण भिन्न-भिन्न उद्देश्यों से किया जाता है। विभिन्न प्रकार के प्रलेखों का सुनियोजित व्यवस्थापन प्राप्त करने में वर्गीकरण सहायता करता है।

बड़े पुस्तकालयों में संग्रह को विभिन्न अनुभागों या विभागों में अलग-अलग रखा जाता है। पुस्तकालय संग्रह के कुशलतापूर्वक एवं प्रभावी ढंग से उपयोग के लिए तथा विभिन्न प्रकार के पाठकों को सुविधा प्रदान करने के लिए ऐसा किया जाता है। प्रत्येक विभाग में संग्रह को वर्गीकृत व्यवस्थापन की आवश्यकता होती है। एक अवर्गीकृत संग्रह से कोई लाभ नहीं होना चाहे उसमें कितने ही मार्गदर्शक क्यों नें लगे हों, क्योंकि पाठक अपने प्रलेख को पाने में अपने मूल्यवाय समय को नष्ट करते हुए अपने-आप को पुस्तकों के महासागर में खोया हुआ महसूस करेगा। यह ठीक ही कहा गया है कि एक अवर्गीकृत पुस्तकालय में एक पुस्तक को खोजना एक घास के ढेर में सुई को खोजने के समान कठिन है। इसके विपरीत, सुनियोजित व्यवस्थापन प्रलेख को प्राप्त करने में बिना समय नष्ट किए पाठकों की सहायता करता है। इससे पुस्तकालय कर्मचारियों के समय की बचत होती है जिसका उपयोग पाठकों के लाभ के लिए व्यक्तिगत संदर्भ सेवा प्रदान करने के लिए किया जा सकता है। इस प्रकार सुनियोजित व्यवस्थापन अस्तव्यस्तता में से क्रमबद्धता उत्पन्न करता है।

NOTES

यह पुस्तकालय में एक विषय पर उपलब्ध समस्त प्रलेखों का सर्वतोदशी दृश्य प्रदान करता है। फिलिएटरी अनुक्रम पाठकों को केवल अपने प्रलेखों को प्राप्त करने में सहूलियत ही नहीं प्रदान करता वदन् उनको संग्रह की शक्ति एवं कमियों में भी भिन्न कराता है। प्रलेखों के सुनियोजित व्यवस्थापन के माध्यम से रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित पुस्तकालय विज्ञान के द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ सूत्रों को, अर्थात् *Every reader his/ her document, eEvery document its reader* तथा *Save the time of the reader* पुस्तकालयों में व्यवहार में लाया जा सकता है। प्रथम और पंचम सूत्र, अर्थात् *Books are for use* तथा *A library is a growing organism* भी पुस्तकालयों में सुनियोजित वर्गीकरण की सिफारिश करते हैं।

प्रलेखों का फलकों पर व्यवस्थापन वर्धमान जटिलता के क्रम में होता है, अर्थात् सामान्य से विशिष्ट की ओर। कोलन क्लैसिफिकेशन अपूपा नमूने पर प्रलेखोंका व्यवस्थापन करने में समक्ष है। ऐसा व्यवस्थापन शिक्षाशास्त्रीय क्रम में होता है, अर्थात् यह स्वयं-शिक्षाप्रद है तथा उस विषय की प्रगति को उसके विकासवादी क्रम में प्रदर्शित करता है।

इस उप अनुभाग में किए गए विवेचन के आधार पर पुस्तकालय वर्गीकरण के कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है:

- (i) प्रलेखों के सुनियोजित क्रम से व्यवस्थापन में पुस्तकालय वर्गीकरण सहायता प्रदान करता है। यह पाठकों तथा पुस्तकालय कर्मचारियों के लिए भी अधिकतम सुविधाजनक है। यह संबंधित विषयों को अति सन्निकट लाता है। इसे हेनरी बिलिस (Henry Biliss) ने *सहव्यवस्थापन (Collocation)* कहा है।
- (ii) पुस्तकालय-संग्रह चाहे कितना ही बड़ हो, यह एक पाठक द्वारा वांछित किसी भी विषय के किसी भी प्रलेख की पहचान तथा उसके स्थान का निर्धारण करने में मदद करता है। प्रलेखों को उनके स्थान से पुनर्प्राप्त किया जा सकता है तथा पुनः उन्हें मूल स्थान पर वापस रखा जा सकता है। इस प्रकार प्रलेखों के स्थान-निर्धारण, अगम-निर्गम तथा प्रतिस्थापन को यह यंत्रीकृत रूप से संपन्न करता है।
- (iii) यह प्रलेखों को व्यवस्थित समूहों में व्यवस्थापित करने में सहायता करता है जैसे कि उन्हें निर्धारित खानों में रखा गया हो, और जब कोई नया प्रलेख पुस्तकालय के संग्रह में जोड़ा जाता है तो वर्गीकरण इन नवीन जोड़े गए प्रलेखों को उसी विषय के अन्य प्रलेखों के साथ उपयुक्त स्थान में व्यवस्थापित करता है।
- (iv) ज्ञान जगत् गत्यात्मक, सतत् निःसीम तथा सर्वदा वर्धनशील है। मानव ज्ञान में नवीन क्षेत्र या विषय लगातार जोड़े जा रहे हैं। जब पुस्तकालय संग्रह में किसी नवीन विषय का पहला प्रलेख जोड़ा जाता है तो उससे संबंधित पहले से विद्यमान विषयों के बीच अर्थात् अपने सगे-संबंधियों के बीच, संबंध के स्तर के आधार पर, उसे उपयुक्त स्थान अपने आप प्राप्त हो जाता है। अतः उपर्युक्त (ii), (iii) तथा (iv) बिंदुओं के अंतर्गत वर्णित कार्यों के व्यवस्थापन को यंत्रीकरण भी कहा जाता है।
- (v) यह पुस्तक प्रदर्शनों तथा प्रदर्शनियों के आयोजन में सहायक होता है। किसी दिए गए प्रकरण या विषय पर पुस्तक चर्चा, गोष्ठी, सम्मेलन और प्रदर्शनी आयोजित करने के विशेष उद्देश्य से मुख्य संग्रह के कुछ प्रलेखों के प्रत्याहरण की सहूलियत भी यह प्रदान करता है।

यह देय-आदेय पर विभिन्न विषयों के प्रलेखों के दैनिक आदान-प्रदान का रिकार्ड रखने में सहायक होता है। यह एक पुस्तकालय द्वारा ऋण पर जारी किए गए प्रलेखों की सांख्यिकी का संकलन करने में सहायक होता है जिससे विभिन्न विषयों के प्रलेखों की माँग तथा उनके उपयोग का स्तर प्रदर्शित होता है। इस प्रतिपुष्टि से विभिन्न विषयों के लिए बजट का आवंटन करने में सहायता मिलती है तथा पुस्तकालय की पुस्तक चयन नीति को एक दिशा मिलती है। इस प्रकार एकत्र की गई सांख्यिकी को पुस्तकालय के वार्षिक-प्रतिवेदन में शामिल किया जा सकता है।

- (vii) भंडार सत्यापन पुस्तकालय प्रशासन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पक्ष है। पुस्तकालय वर्गीकरण शेलफुलिफ्ट के माध्यम से ग्रंथ संग्रह का कुशल तथा संपूर्ण भंडार सत्यापन करने में सहायक होता है।

- (viii) यह पठन सूची के संकलन में सहायक होता है। यह विभिन्न स्तर के संदर्भ प्रश्नों का पक्ष-विश्लेषण करने में सहूलियत प्रदान करता है तथा अप्रत्या रूप से एक दक्ष संदर्भ सेवा में सहायक है।
- (ix) विषय संघ सूचियों एवं विषय सूचियों के निर्माण में भी यह सहायक होता है। पुस्तकालयों में आपसी सहायोग एवं संसाधन सहाभागिता में संघ सूचियाँ एक आवश्यक उपकरण मानी जाती है।
- (x) वर्गीकृत प्रसूचियों का निर्माण केवल वर्गीकरण पद्धतिसे ही संभव है। एक शोध पुस्तकालय में वर्गीकृत प्रसूची को अनुवर्ण प्रसूची की तुलना में अधिक पसंद किया जाता है।
- (xi) यह विषय-संलेखों को सुनियोजित रूप से प्राप्त करने में सहायक है। वर्ग संख्या के आधार पर विशिष्ट विषय शीर्षक प्राप्त करने हेतु विषय शीर्षक की वर्गात्मक सूची का उपयोग करने, अर्थात् श्रृंखला विधि में यह प्रसूचीकार की सहायता करता है।
- (xii) विषय शीर्षकों के निर्माण तथा पर्यायकोश (Thesaurus) के निर्माण में वर्गीकरण सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है।
- (xiii) यह पुस्तकालय कर्मचारियों, विशेषतः वर्गीकरणकारों, को ज्ञान जगत् की जटिलताओं से परिचित कराता है। तथा इन जटिलताओं को बोधगम्य बनाता है जो पुस्तकालयों में प्रलेखों के सुनियोजित व्यवस्थापन का आधार है।
- (xiv) आजकल ओपेक्स (OPACS : Online Public Access Catalogues) में वर्गीकरण के बहुत लाभ हैं। एक कंप्यूटरीकृत प्रसूची में, वर्ग संख्या क्षेत्र का उपयोग अन्य क्षेत्रों जैसे भाषा, तिथि, यहाँ तक विषय शीर्षक के संसर्ग में किया जा सकता है तथा तार्किक आपरेटर जैसे AND/OR/NOT या बूलियन लॉजिकल आपरेटर्स (Boolean Logical Operators) के साथ भी इसे उपयोग में लिया जा सकता है। वर्ग संख्या का उपयोग खोजों को व्यापक या संकीर्ण करने में भी किया जा सकता है। अन्य क्षेत्रों के संसर्ग से वर्ग संख्या द्वारा खोज सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली की निपुणता (पुनःप्राप्ति तथा सटीकता का अनुपात) बढ़ती है जिसका वर्गीकरण एक उपकरण है।
- (xv) यह प्रलेखों में निहित ज्ञान के अधिकतम उपयोग के लिए व्यवस्थापन का आधार है। यह ग्रंथपरक नियंत्रण तथा प्रलेखों की पुनर्प्राप्ति का दक्ष आधार है तथा पाठकों तथा पुस्तकालय कर्मचारियों के बहुत बड़े समय की बचत करने की युक्ति है। जैसा कि ह्यूम (Hulme) ने माना है कि "यह पुस्तकों में ज्ञान की खोज में समय की बचत की यंत्रीकृत युक्ति है"।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. पुस्तकालयों में प्रलेखों का व्यवस्थापन किन आधारों पर किया जाता है?
4. डॉ. रंगनाथन ने वर्गीकरण के अर्थ का क्या विवेचन किया है?

.....

.....

.....

.....

5. सार-संक्षेप

यह बहुत जरूरी है कि पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार के संग्रहों का वर्गीकरण तथा व्यवस्थापन एक सहायक अनुक्रम में उनके अधिकतम उपयोग के लिए होता चाहिए। इस इकाई में हमने विभिन्न प्रकार के संग्रहों तथा उनके व्यवस्थापन का निर्धारण करने वाले घटकों की विविचन की है। हमने प्रलेखों के लिए पाठकों के विभिन्न उपागमों जैसे लेखक, आख्या एवं विषय, तथा आजकल के पुस्तकालयों में विषय उपागम के महत्त्व की विवेचना की है। पुस्तकालय वर्गीकरण पुस्तकालयों में प्रलेखों के विषयानुसार व्यवस्थापन तथा प्रसूची संलेखों के व्यवस्थापन का उपकरण है।

NOTES

NOTES

'वर्गीकरण' पद के विभिन्न अर्थों या आशयों का विस्तृत विवेचन किया गया है तथा पुस्तकालय विज्ञान साहित्य में उपलब्ध पुस्तकालय वर्गीकरण की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाओं की चर्चा की गई है। डॉ. रंगनाथन की परिभाषा तथा उसके आशय को सविस्तार समझाया गया है। इस इकाई में पुस्तकालय वर्गीकरण के उद्देश्य एवं कार्य भी संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत किए गए हैं। इस प्रकार यह इकाई पुस्तकालय में पुस्तकालय वर्गीकरण की भूमिका को समझने में सहायक है। यथार्थ रूप में यह पुस्तकालय तथा सूचना विज्ञान का आधारभूत अध्ययन है।

6. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. प्रलेखों के संग्रहण, भंडारण तथा पुर्नप्राप्ति की समस्या निम्नलिखित घटकों के कारण जटिल हो गई है:

- विभिन्न प्रकार के प्रलेखों के उत्पादन में सतत वृद्धि, जिसे प्रचलित शब्दावली में "ज्ञान विस्फोट" (Knowledge explosion) या 'सूचना विस्फोट' (Information explosion) या "सूचना बाढ़" (Information flood) सूचना बूम या ब्लूम (Information boom or bloom) कहा जाता है।
- संसार की विभिन्न भाषाओं में प्रलेखों का प्रकाशन होना।
- प्रलेखों का विविध भौतिक आकारों में उत्पादन होना।
- विविध प्रकार के प्रलेखों में प्रस्तुत की गई विषय वस्तु के अंतर्विषय की प्रकृति एवं इसमें विद्यमान जटिलता।
- पुस्तकालय तथा प्रलेखों के लिए पाठकों का जटिल उपागम।

2. प्रलेखों का संग्रहण तथा भंडारण— सभ्यता के प्रारंभ से ही मानव ने मानव विचारों के अभिलेखों के संग्रहण तथा संरक्षण की आवश्यकता महसूस की है। पुस्तकें तथा अन्य ग्राफिक सामग्री मानव विचारों, कार्यों तथा उपलब्धियों का अभिलेख प्रस्तुत करती हैं तथा भविष्य की उपलब्धि के लिए आधार प्रदान कर सकती हैं। इस प्रकार समाज में उनके मूल्य को बढ़ा चढ़ा कर कहने की आवश्यकता नहीं। इन अभिलेखों का पुस्तकालयों में संग्रहण तथा संरक्षण वर्तमान तथा भावी पीढ़ी के हित को ध्यान में रखकर किया जाता है। इन अभिलेखों को जो विविधापूर्ण तथा अंतरविषयी है, सजातीय पद 'प्रलेख' (Document) से निर्देशित किया गया है।

3. जैसा कि पहले बताया जा चुका है, पुस्तकालयों में प्रलेखों का व्यवस्थापन जिल्द के रंगों, आकार, भाषा, प्रकाशन तिथि, परिग्रहण संख्या इत्यादि के आधार पर हो सकता है। लेकिन ये विधियाँ तथा असहायक हैं क्योंकि वे प्रलेखों के लेखक, आख्या या विषय सामग्री को पाठक के समक्ष नहीं ला सकतीं। आज खोजन पर भी बहुत की कम या नगण्य पुस्तकालय मिलेंगे जिन्होंने अपने संग्रह का व्यवस्थान रंग, आकार, प्रकाशन तिथि, या प्रकाशन के नाम के आधार पर किया हो। जब आकार में संग्रह बहुत छोटे थे तब इन अभिलेखों का उपयोग व्यवस्थापन के लिए किया जाना मुमकिन था।

कुछ ऐसे पुस्तकालय भी हैं जहाँ पर संग्रहों का व्यवस्थान परिग्रहण संख्या या क्रमांक के आधार पर किया जाता है। अन्य विधियाँ जिनके द्वारा प्रलेखों का आमतौर पर व्यवस्थान किया जाता है वे आख्या, लेखक या विषय पर आधारित हैं। इसका कारण यह है कि आधुनिक पुस्तकालयों में किसी विशिष्ट ग्रंथ के लिए पाठकोंका उपागम आख्या या लेखक या विषय के द्वारा होता है। सामान्यतया उपन्यासोंका व्यवस्थापन लेखक के अंतर्गत, पत्रिकाओं का आख्या के अंतर्गत एवं वैज्ञानिक तथा तथ्यात्मक साहित्य का विषय के अंतर्गत किया जाता है। कुछ पुस्तकालयों में कल्पनाशील साहित्य (belles letters)का व्यवस्थापन पहले भाषा के अंतर्गत और भाषा के अंतर्गत विधा के द्वारा तथा इसके बाद लेखक के अंतर्गत और यदि आवश्यक हुआ तो कृति संख्या के द्वारा किया जाता है।

4. डॉ. रंगनाथन ने *Prolegomena to Library Classification* (1967) में वर्गीकरण के अर्थ की बृहत् रूप से विवेचना की है। भौतिक पदार्थों के संबंध में विभाजन तथा सामूहिकीकरण वर्गीकरणों के दो प्रतिफल हैं। डॉ. रंगनाथन के अनुसार विभाजन में दो या अधिक समूहों में पदार्थों को छँटाना अंतर्निहित है। सामूहिकीकरण में इसके साथ-साथ निर्धारित अनुक्रम में इन समूहों का व्यवस्थापन किया जाता है। इसके आगे पुस्तकालय वर्गीकरण में वस्तुओं अर्थात् प्रलेखों का अनुक्रम द्वारा यंत्रिकृत कर दिया जाता है। जब एक नए ग्रंथ को पुस्तकालय में जोड़ा जाता है या उसका अधिग्रहण किया जाता है तो यह अंकन में प्रतिबिम्बित होता है।

NOTES

7. मुख्य शब्द

- अंकन (Notation)** : किसी वर्गीकरण पद्धति में वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाली क्रमबोधक संख्याओं की प्रणाली। इसके द्वारा अन्य प्रलेखों के बीच किसी प्रलेख को रखने का स्थान निश्चित किया जाता है।
- अभिलक्षण (Characteristics)** : एक ऐसा लक्षण, जिसके द्वारा वर्गीकरण में विभाजन के लिए वस्तुओं को एकत्र या पृथक किया जाता है।
- आह्वान संख्या (Call Number)** : यह एक ऐसी क्रमबोधक संख्या है जो एक पुस्तकालय के फलकों पर एक प्रलेख का स्थान निर्धारित करती है। वर्ग संख्या, पुस्तक संख्या तथा संग्रह संख्या को मिलाकर आह्वान संख्या का निर्माण होता है। प्रत्येक प्रलेख की एक अनन्य आह्वान संख्या होती है।
- कृत्रिम भाषा (Artificial Language)** : वर्ण्य विषय के आधार पर प्रलेखों के व्यवस्थापन के लिए पुस्तकालय वर्गीकरण में प्रयुक्त प्रतीक।
- गहनता (Intnsion)** : विषय की गूढ़ता।
- परिग्रहण संख्या (Accession Number)** : परिग्रहण पंजिका में पुस्तक के लिए दी गई भंडार प्रविष्टि संख्या। यह संख्या प्रलेख प्राप्ति के क्रम से क्रमिक रूप से दी जाती है।
- पुस्तक संख्या (Book Number)** : यह एक ऐसी क्रमबोधक संख्या है जो पुस्तकालय में एक विषय के अन्य प्रलेखों के बीच संबंधित प्रलेख के स्थान का निर्धारण करती है।
- प्रलेख (Document)** : विचारों के संचारण के लिए निर्मित कोई भी ग्राफिक रिकॉर्ड जिसे दीर्घ समय तक संरक्षित तथा एक स्थान से दूसरे स्थान तक संचारित किया जा सके।
- फलक सूची (Shelf List)** : पुस्तकालय में रखी पुस्तकों की ऐसी सूची जिसके संलेख संक्षिप्त होते हैं तथा सामान्यतः पत्रक रूप में उसी वर्गीकृत अनुक्रम में व्यवस्थित किए जाते हैं जिस अनुक्रम में प्रलेखों को फलकों पर रखा गया है।
- फिलिएटरी अनुक्रम (Filiatory Sequence)** : विषयों के संबंध के अनुसार प्रलेखों का अनुक्रम।
- वर्ग संख्या (Class Number)** : एक क्रमबोधक संख्या जो कि एक वर्गीकरण पद्धति में एक विषय का अन्य विषयों के मध्य स्थान निश्चित करती है।

NOTES

| | |
|--|---|
| वर्गीकरणकार (Classifier) | : किसी वर्गीकरण पद्धति का प्रयोग कर पुस्तकालय में प्रलेखों का वर्गीकरण करने वाला व्यक्ति। |
| वर्गीकरण प्रणाली प्रणेता (Classificationist) | : किसी वर्गीकरण पद्धति का निर्माता या प्रतिपादक। |
| विस्तार (Extension) | : विषय का विस्तार-क्षेत्र। |
| श्रेण्य ग्रंथ (Classics) | : चिर प्रतिष्ठ वाली कृति। |
| संग्रह संख्या (Collection Number) | : सामान्य संग्रह के अतिरिक्त किसी अन्य संग्रह (जहाँ प्रलेख रखे जाते हैं) को द्व्योतित करने वाले दो या अधिक संग्रह। |
| सहव्यवस्थापन (Collocation) | : एक वर्गीकरण पद्धति में अति संबंधित विषयों को सन्निकट रखना। व्यवस्थापन में विषय से संबंधित सभी प्रलेखों को एक साथ लाना। |
| स्थिर स्थान (Fixed Location) | : पुस्तक को शेल्फ संख्या या अवस्थिति सूचक अन्य किसी चिह्न से चिह्नित कर व्यवस्थापन की रीति, जिससे किसी प्रलेख का स्थान किसी विशिष्ट फलक पर हमेशा वही रहे। |

8. अभ्यास-प्रश्न

1. प्रलेखों के व्यवस्थापन के निर्धारक कारणों का विवरण दीजिए।
2. पुस्तकालयों में प्रलेखों के व्यवस्थापन की क्या प्रक्रिया है? स्पष्ट कीजिए।
3. प्रलेखों के लिए पाठकों के उपगमों की व्याख्या कीजिए।
4. वर्गीकरण का अर्थ स्पष्ट करते हुए पुस्तकालय वर्गीकरण को परिभाषित कीजिए।
5. वर्गीकरण के उद्देश्यों एवं कार्यों का वर्णन कीजिए।

9. संदर्भ ग्रन्थ सूची

- Krishan Kumar (1988). *Theory of Classification*. 4th ed. New Delhi: Vikas Publishing Chapter 1.
- Marcella. Rita and Newton, Robert (1996). *A new Manual of Classification*. New Delhi : Jaico Publishing. Chapters 1 and 6.
- Mills. J. (1996). *A modern outline of Library Classification*, Bombay : Asia Publishing. Chapter 1.
- Ohdedar, A.K. and B. Sengupta (1977). *Library Classification*. 2nd rev. ed. Calcutta : World Press. Chapter 1.

पुस्तकालय वर्गीकरण का सामान्य सिद्धान्त

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. पुस्तकालय वर्गीकरण का सिद्धांत
 - 3.1 सिद्धांत का महत्त्व
 - 3.2 सिद्धांत की आवश्यकता
 - 3.3 सिद्धांत का विकास
4. पुस्तकालय वर्गीकरण का विवरणात्मक सिद्धांत
 - 4.1 जी.डी. ब्राउन (1862-1914)
 - 4.2 ई.सी. रिचर्डसन (1860-1939)
 - 4.3 ई.डब्लू. ह्यूम (1859-1954)
 - 4.4 डब्लू सी.बी. सेयर्स (1881-1960)
 - 4.5 एच.ई. ब्लिस (1870-1955)
 - 4.6 एस.आर. रंगनाथन (1892-1972)
 - 4.7 क्लैसिफिकेशन रिसर्च ग्रुप (लंदन)
5. पुस्तकालय वर्गीकरण का गत्यात्मक सिद्धांत
 - 5.1 एस. आर. रंगनाथन
6. सार-संक्षेप
7. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
8. मुख्य शब्द
9. अभ्यास-प्रश्न
10. संदर्भ ग्रंथ सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन का अध्ययन करने के बाद आप निम्नलिखित बातों को समझ पाएँगे :

- पुस्तकालय वर्गीकरण के सामान्य सिद्धांत की आवश्यकता और महत्त्व;
- पुस्तकालय वर्गीकरण के विकास की दो अवस्थाओं - जैसे, अवस्था-1, विवरणात्मक सिद्धांत तथा अवस्था 2. गत्यात्मक सिद्धांत;
- सिद्धांतों के इस विकास की अवस्था—1. में ब्राउन, रिचर्डसन, ह्यूम, सेयर्स, ब्लिस तथा रंगनाथन और क्लैसिफिकेशन रिसर्च ग्रुप (CRG) का योगदान;
- अवस्था—2 के विकास में एकमात्र रंगनाथन का योगदान; तथा
- पुस्तकालय वर्गीकरण के सिद्धांत (Theory) में अभिधारणाओं (Postulates) सिद्धांतों (Principles) तथा उपसूत्रों (Canons) का स्थान।

2. परिचय

इस इकाई में पुस्तकालय वर्गीकरण के सामान्य सिद्धांत को संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। सिद्धांत से अभिप्राय ऐसे व्यवस्थित नियमों से है, जो किसी विषय में और आगे अन्वेषण करने के कार्य को तथा उसके विकास के लिए अधार प्रदान करते हैं। ये वदियमान परिदृश्यों की विवेचना करते हैं। सिद्धांत (Theory) समय के साथ-साथ विकास की प्रक्रिया से गुजरता रहता है तथा इसमें निरंतर परिवर्तन और परिष्कार होता रहता है। पुस्तकालय वर्गीकरण के सिद्धांत का विकास की सच्चाई भी यही है।

पुस्तकालय वर्गीकरण के सामान्य सिद्धांत के विकास की दो प्रमुख अवस्थाएँ हैं।

अवस्था—1 में, हम विवरणात्मक सिद्धांत के उद्भव को देखते हैं जो पुस्तकालय वर्गीकरण की पद्धतियों की अभिकल्पना तथा उनके उपयोग का निचोड़ है। दूसरी ओर, अवस्था—2 में, गत्यात्मक सिद्धांत का विकास है, जिससे वर्गीकरण पद्धतियों की अधिक विस्तार से अभिकल्पना करने में मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

अवस्था—1 में, जे.डी. ब्राउन ई.सी. रिचर्डसन, एडवर्ड ह्यूम, डब्लू. सी.बी. सेयर्स, एच.ई. ब्लिस तथा एस. आर. रंगनाथन जैसे मिष्ठावान विचारकों में से कुछ ने अपने लेखन कार्यों द्वारा तथा कुछ ने अपनी वर्गीकरण पद्धतियों द्वारा, पुस्तकालय वर्गीकरण के विवरणात्मक सिद्धांत का विकास में योगदान किया है। विवरणात्मक सिद्धांत ने, अवस्था—2 में गत्यात्मक सिद्धांतों के विकास के लिए आधार तैयार किया है। दूसरे शब्दों में, इन निष्ठावान विचारकों ने पुस्तकालय वर्गीकरण के सामान्य सिद्धांत के लिए आधारशिला प्रदान की है।

अवस्था—2 में हमारा ध्यान गत्यात्मक सिद्धांत के विकास की ओर जाता है। इसे गत्यात्मक इसलिए कहा गया है कि यह पुस्तकालय वर्गीकरण के लिए एक प्रविधि गढ़ने में समर्थ हुआ। रंगनाथन इस सिद्धांत के प्रमुख शिल्पी थे। उन्होंने उन आधारभूत नियमों, अभिधारणाओं उपसूत्रों तथा सिद्धांतों का प्रतिपादन किया, जिन्होंने पुस्तकालय वर्गीकरण सिद्धांत के विकास को सर्वथा नई दिशा प्रदान की। यह नया सिद्धांत ऐसी पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धतियों को अभिकल्पित करने तथा उनका मूल्यांकन करने में सहायक है, जो ज्ञान की वृद्धि एवं विकास से उत्पन्न चुनौतियों का सामना कर सकती हों। इस प्रकार रंगनाथन ने वर्गीकरण को, जो सहज ज्ञान पर आधारित था, उद्देश्यपरक विधियों पर आधारित विज्ञान के रूप में परिवर्तित कर दिया।

3. पुस्तकालय वर्गीकरण का सिद्धांत

पुस्तकालय वर्गीकरण के सिद्धांत का अध्ययन करने से पहले, यह आवश्यक है कि हम सिद्धांत विकास के महत्त्व को समझें। साथ ही, हमारे लिए यह भी आवश्यक है कि हम सिद्धांत को स्वीकार करें।

3.1 सिद्धांत का महत्त्व

सबसे पहले हमें यह जानना चाहिए कि सिद्धांत कैसे बनता है और विषय के विकास के लिए यह किस प्रकार महत्त्वपूर्ण है? सिद्धांत वस्तुतः व्यवस्थित नियमों के समूह को इंगित करता है, जो किसी विषय के विकास तथा उसमें और अधिक अनुसंधान करने का आधार प्रदान करते हैं। सिद्धांत विद्यमान परिदृश्य के

'क्या' और 'क्यों' की व्याख्या करता है। यह किसी विषय को विद्युत-विशेष (Discipline) के रूप में मान्य कराता है। यह एक विषय को वैज्ञानिक आधार, प्रतिष्ठा एवं सम्मान दिलाता है। एक विषय के विकास में इसका कितना महत्त्व है, इसके संबंध में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है।

3.2 सिद्धांत की आवश्यकता

यदि हम पुस्तकालय वर्गीकरण के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो पाएँगे कि इसके विकास की प्रारंभिक अवस्था में संपूर्ण ज्ञान जगत् के विषयों का ही इसके द्वारा वर्गीकरण करना संभव था और स्थूल वर्गीकरण से ही उस समय की आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती थी। ऐसा प्रतीत होता है कि ये वर्गीकरण पद्धतियाँ उस समय की अधिकांश आवश्यकताओं के अनुरूप निर्मित की गई थीं। इनका उद्देश्य उस समय की आवश्यकताओं को पूरा करना मात्र था, न कि किन्हीं ऐसे सिद्धांतों को ध्यान में रखना, जिन्हें बाद में समय की कसौटी पर परखा जा सके। इन पद्धतियों ने उस समय की तात्कालिक तथा अल्पकालीन समस्याओं को हल कर दिया, किन्तु कालांतर में उन विषयों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई जिनके आधार पर ज्ञान को विभाजित किया जाता है, परिणामस्वरूप विद्यमान पद्धतियाँ अपर्याप्त सिद्ध हुईं। इसके साथ ही प्रलेखों में निहित विषयों की जटिलताओं में भी वृद्धि हुई, जिसके कारण भी यह आवश्यक हो गया कि ज्ञान का सूक्ष्मता से वर्गीकरण किया जाए। इस जटिलता के कारण पुस्तकालय वर्गीकरण के एक ऐसे सिद्धांत की आवश्यकता महसूस हुई, जो ज्ञान की असीमित वृद्धि की चुनौती का सामना कर सके।

3.3 सिद्धांत का विकास

जीवन के किसी भी क्षेत्र में सिद्धांत से पहले व्यवहार आता है। जीवन की आवश्यकताएँ मानव को भौतिक एवं मानसिक दोनों स्तरों पर विविध प्रकार के साधनों का कामचलाऊ प्रबंध करने तथा उनको विकसित करने को प्रेरित करती है। इन कामचलाऊ साधनों के साथ काम करने के एक लम्बे अनुभव के बाद, इन साधनों को गहराई से समझने तथा उनको व्यवस्थित, समुन्नत, परिशुद्ध और विकसित रूप प्रदान करने के लिए एक सिद्धांत विकसित कर लिया जाता है। यही बात वर्गीकरण पर भी लागू होती है। ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धति के निर्माण होने के बाद के 50 वर्षों में रिचर्डसन एवं सेयर्स ने उस समय की ज्ञान पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन किया और वर्गीकरण के एक सिद्धांत का विकास किया। मोटे तौर पर यह एक "विवरणात्मक प्रतिपादन" तथा "व्याख्यात्मक स्पष्टीकरण" मात्र था। यह सिद्धांत (Theory) स्थिर था, गत्यात्मक नहीं। पारखी की पुस्तक 'लाइब्रेरी क्लैसिफिकेशन : इवोल्यूशन ऑफ ए डाइनेमिक थिअरी' (Library Classification : Evolution of a Dynamic Theory) के अनुसार उस समय के वर्गीकरण प्रणाली के प्रणेताओं ने अपनी पद्धतियों के निर्माण में जिन व्यावहारिक प्रक्रियाओं का अनुसरण किया, उनमें विवरणात्मक पक्ष पर अधिक बल दिया गया था तथा उन्हें ही वर्गीकरण पद्धतियों का प्रारूप तैयार करने का मापदंड समझा जाता था।

दूसरी ओर, 1949 के बाद रंगानान और उनके सहयोगियों ने धीरे-धीरे, पुस्तकालय वर्गीकरण के एक गत्यात्मक सिद्धांत को विकसित किया। गत्यात्मक सिद्धांत का प्रथम समेकित विवरण 1957 में रंगानान द्वारा रचित 'प्रोलेगोमेना टू लाइब्रेरी क्लैसिफिकेशन' (Prolegomena to Library Classification) में प्रकाशित हुआ। इसे पुनः 1962 में प्रलेखन शोध एवं प्रशिक्षण केंद्र एवं प्रशिक्षण केंद्र (DRTC : Documentation Research and Training Centre) की स्थापना के बाद परिष्कृत किया गया। वर्गीकरण सिद्धांत में इससे अधिक गहनता आई। तथा इसे और अधिक गत्यात्मक बनाने और पुस्तकों तथा आलेखों-दोनों का वर्गीकरण करने में सुविधा हुई। परिणामस्वरूप आलेखों के वर्गीकरण के लिए गहन वर्गीकरण अनुसूचियों निर्मित करने का कार्य सक्रियता से प्रगति करने लगा। ऐसे गत्यात्मक सिद्धांत की आवश्यकता स्पष्ट है, क्योंकि ऐसा सिद्धांत ही भविष्य में विषय वर्गीकरण के विकास में मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

4. पुस्तकालय वर्गीकरण का विवरणात्मक सिद्धांत

प्रारंभ में कोई सिद्धांत (Theory) नहीं था, केवल व्यावहारिक प्रक्रियाओं का ही अनुसरण किया जाता था। इन व्यावहारिक प्रक्रियाओं ने ही विवरणात्मक सिद्धांत को जन्म दिया। इस प्रकार, विवरणात्मक सिद्धांत

NOTES

NOTES

को पुस्तकालय वर्गीकरण के विकास की प्रथम अवस्था के रूप में माना जा सकता है। यह सिद्धांत विषय जगत् (ज्ञान के दायरे में समाविष्ट विषयों का समुच्चय) की उस समय की आवश्यकताओं को पूरा करने में समक्ष था। विवरणात्मक सिद्धांत उस समय उपलब्ध विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों के अनुसार प्रचलित व्यावहारिक प्रक्रियाओं आधारित था। विवरणात्मक सिद्धांत समकालीन पद्धतियों का आसवित रूप है, जिनका प्रभाव 1950 के दशक तक रहा। उससे पहले अभिकल्पित पद्धतियाँ उनके प्रतिपादकों की सहज बुद्धि अथवा उनकी नैसर्गिक प्रतिभा पर आधारित थीं, न कि किसी पदश्यपरक आधार पर किए गए पुस्तकालय वर्गीकरण के सिद्धांत पर।

उनके द्वारा प्रयुक्त तरीके अनुभवजन्य होते थे। विवरणात्मक सिद्धांत के विकास का श्रेय बाउन, रिचर्डसन, ह्यूम, सेयर्स, ब्लिस और रंगनाथन जैसे कुछ विद्वान व्यक्तियों को जाता है। 1898 से 1937 का समय इस सिद्धांत (Theory) के उद्भव एवं विकास का था। इन व्यक्तियों ने अपनी पद्धतियों तथा लेखन कार्यों के द्वारा पुस्तकालय वर्गीकरण के कुछ सिद्धांतों (Principles) का प्रतिपादन किया। इस सिद्धांतों ने वर्गीकरण के सामान्य सिद्धान्त (General Theory of Library Classification) के विकास में बहुत अधिक योगदान किया। इन महानुभावों के सिद्धांतों (Principles) और योगदान की संक्षिप्त रूपरेखा निम्नलिखित उपअनुभागों में दी जा रही है :

4.1. जे.डी. ब्राउन (1862-1914)

जे.डी. ब्राउन (J.D. Brown) एक आंगल पुस्तकालयाध्यक्ष थे, जिनका योगदान पुस्तकालय वर्गीकरण के सामान्य सिद्धांत में थोड़ा, किंतु महत्वपूर्ण था। उन्होंने तीन विभिन्न प्रकार की वर्गीकरण पद्धतियाँ प्रकाशित कीं। इन तीनों में से प्रथम का विकास सन् 1894 में, जे.एच. क्विन (J.H. Quinn) के संयुक्त लेखकत्व में हुआ और यह क्विन-ब्राउन पद्धति (Quinn-Brown Scheme) के नाम से जानी गई। इस पद्धति ने अधिक प्रभावित नहीं किया। तीन वर्ष बाद 1897 में ब्राउन ने एक अन्य पद्धति निर्मित की जिस 'एडजस्टेबल क्लैसिफिकेशन' (Adjustable Classification) के नाम से जाना जाता है। यह पद्धति भी उन दिनों अपर्याप्त सिद्ध हुई। सन् 1906 में ब्राउन ने अपनी सब्जेक्ट क्लैसिफिकेशन (kSubject Classification) पद्धति का प्रथम संस्करण प्रकाशित किया, जिसके कारण वे अधिक जाने जाते हैं इसका द्वितीय संस्करण 1914 में प्रकाशित हुआ था जे.डी. स्टेवार्ट (J.D. Stewart) संपादित तृतीय-संस्करण 1939 में प्रकाशित हुआ।

ब्राउन का सब्जेक्ट क्लैसिफिकेशन इस सिद्धांत पर आधारित था कि प्रत्येक विज्ञान तथा कला का उद्गम किसी निश्चित स्रोत से होता है। वस्तुओं का विकास-क्रम प्रथम दो घटकों पर आधारित था, जैसे—पदार्थ और बल। इन दोनों के आधार पर जीवन का उद्भव हुआ, कालान्तर में जीवन से मानव मस्तिष्क विकसित हुआ और मस्तिष्क के परिणामस्वरूप अभिलेखों का सृजन हुआ।

उपर्युक्त सिद्धांतों के अतिरिक्त ब्राउन ने दो अन्य सिद्धांतों का विकास किया। इन दो में से प्रथम उनका स्वयं का 'एक स्थान का सिद्धांत' (One Place Theory) था। इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक विषय के लिए पद्धति में केवल एक ही स्थान होता है चाहे इसके कितना ही पहलू तथा कितनी ही अभिव्यक्तियाँ क्यों न हों। उदाहरणार्थ—ब्राउन के अनुसार गुलाब के फूल को हम वनस्पति शास्त्र, बागवानी, इतिहास, भूगोल, सजावट की वस्तु, ग्रंथसूची इत्यादि विभिन्न दृष्टिकोणों से देख सकते हैं। ब्राउन के अनुसार गुलाब का फूल विषय मूर्त है जबकि इसके विविध दृष्टिकोण इसके पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका मत था कि किसी अध्ययनशील छत्र-छत्र की रूचि 'गुलाब' के फूल में निरंतर बनी रहती है, जबकि एक ग्रंथसूचीकार की रूचि केवल प्रसंगानुकूल होती है। इसलिए ब्राउन ने गुलाब के फूल को एक मूर्त अथवा विशिष्ट शीर्षक के अंतर्गत रखना उपयुक्त समझा। इसका अर्थ यह हुआ ब्राउन का ग्रंथ व्यवस्थापन विषयों के अनुसार नहीं था जैसा कि ड्युई डेसिमल क्लैसिफिकेशन (DDC) अथवा लाब्रेरी ऑफ कॉग्रेस क्लैसिफिकेशन (LCC) में था, अपितु वह प्रकरण के अनुसार प्रसंगों पर आधारित था। ब्राउन का हय एक प्रयोग था, जो असफल रहा।

एक अन्य सिद्धांत, जिसका ब्राउन ने समर्थन किया, वह था 'साइंस एण्ड इट्स एप्लीकेशन्स थ्योरी' (Science and its Applications Theory)। इस सिद्धांत के अनुसार 'वह प्रत्येक विषय को, उस विज्ञान

NOTES

के जितना समीप संभव हो सके, उतना समीप रखना चाहता था, जिससे उसका उद्भव हुआ है।' अतः गुलाब के फूल को वनस्पति शास्त्र में, पुस्तकालयों को पुस्तकालय विज्ञान में, कोयले को खनिज विज्ञान में, तथा व्यक्तियों को जीवनी के अंतर्गत रखा गया। सिद्धांत और व्यवहार का सिन्यास एक साथ होता है। इस सिद्धांत के परिणामस्वरूप, ब्राउन ने अपने आपको परंपराओं, भिन्नताओं तथा समूहीकरण से अलग रखा, क्योंकि इनका आधार मनमाना होता है, न कि वैज्ञानिक। उदाहरणार्थ उन्होंने शुद्ध विज्ञान और व्यावहारिक विज्ञान, ललित कलाओं और उपयोगी कलाओं, मुद्रा और मुद्राशास्त्र, वास्तुकला और भवन निर्माण, तथा वेशभूषा और पहनावे के मध्य अंतर नहीं किया।

उन्होंने अपनी सब्जेक्ट क्लैसिफिकेशन पद्धति में इन सिद्धांतों का पूरी निष्ठा के साथ अनुसरण किया।

4.2. ई.सी. रिचर्डसन (1860-1939)

ई.सी. रिचर्डसन (E.C. Richardson) हाईफोर्ड थियोलॉजिकल सेमीनरी, यू एस ए (Hartford Theological Seminary, USA) के प्रथम पुस्तकालयाध्यक्ष थे। बाद में उन्होंने प्रिंसटन विश्वविद्यालय पुस्तकालय के पुस्तकालयाध्यक्ष का पद ग्रहण किया। रिचर्डसन से प्रथम वर्गीकरण प्रणाली प्रणेता के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने पुस्तकालय वर्गीकरण के सिद्धांत को लिपिबद्ध करने के लिए सुनियोजित प्रयास किए। सन् 1910 में उन्होंने एक ग्रंथ 'क्लैसिफिकेशन : थैोरैटिकल' (Classification : Theoretical and Practical) प्रकाशित किया। यह वर्गीकरण की प्रथम पाठ्य पुस्तक थी, जिसने आगे चलकर डब्ल्यू.सी. बी सेयर्स को प्रभावित किया। इस कृति की प्रस्तावना में उन्होंने पुस्तकालय वर्गीकरण की पद्धति का प्रारूप तैयार करने के कार्य के मार्गदर्शन हेतु मूलभूत नियमों एवं सिद्धांतों (Basic Laws and Principles) को परिगणित किया था। ये सिद्धांत, जिन्हें वर्गीकरण का मानदण्ड (Criteria of Classification) कहते हैं, निम्नलिखित हैं :

वर्गीकरण को वस्तुओं के क्रम का अनुसरण करना चाहिए: वर्गों को ऐतिहासिक अनुक्रम में व्यवस्थित किया जाता चाहिए।

- (1) वर्गों का विभाजन सूक्ष्म होना चाहिए।
- (2) वस्तुओं को उनकी समानता एवं असमानता के आधार पर व्यवस्थित किया जाना चाहिए।
- (3) ग्रंथों का संग्रह उपयोगार्थ होता है, उन्हें उपयोगार्थ व्यवस्थित किया जाता है, इसीलिए उपयोग ही वर्गीकरण का उद्देश्य है।
- (4) वर्गीकरण पद्धति में अंकन का प्रावधान होना चाहिए। अंकन ऐसा होना चाहिए कि उसके अपरिमित विभाजन किए जा सकें। तदनुसार दशमलव आधारित मिश्रित प्रतीकों के उपयोग को अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए। अंकन को स्मृति सहायक विशेषताओं से युक्त होना चाहिए।

रिचर्डसन ने इस बात पर बल दिया कि 'प्रकृति' वस्तुएँ पहले से ही वर्गीकृत हैं; मानव को केवल वर्गीकरण का अनुक्रम खोजना है और उसे अभिलेखित करना है

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. पुस्तकालय वर्गीकरण के सिद्धान्त की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।
2. पुस्तकालय वर्गीकरण के विवरणात्मक सिद्धान्त का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

4.3. ई.डब्ल्यू. ह्यूम (1859-1954)

ई.डब्ल्यू. ह्यूम (E.W. Hulme), पेटेंट ऑफिस लाइब्रेरी, लंदन के पुस्तकालयाध्यक्ष थे।

NOTES

1911-12 में उन्होंने अपनी पुस्तक *प्रिंसिपल्स ऑफ बुक क्लैसिफिकेशन (Principles of Book Classification)*, को *लाइब्रेरी एसोसिएशन रिकॉर्ड (Library Association Record)* में प्रकाशित किया। उनके सिद्धांतों (Principles) ने ग्रंथ वर्गीकरण के बाद के सिद्धांतों (Later Theories of Book Classification) को प्रभावित किया। डब्ल्यू.सी.बी. सेयर्स के शब्दों में ह्यूम के योगदान ने "वर्तमान सिद्धांतों को, जो अधिक पूर्ण एवं संतोषजनक हैं, एक महत्त्वपूर्ण रूप प्रदान किया"।

ह्यूम के अनुसार सभी वर्गीकरणों को दो समूहों (श्रेणियों) में व्यवस्थित किया जा सकता है। जैसे :

- यांत्रिक; और
- दार्शनिक।

इस श्रेणीबद्धता के अनुसार ग्रंथ वर्गीकरण एक यांत्रिक प्रक्रिया। ह्यूम के ग्रंथ वर्गीकरण के सिद्धांत निर्मललिखित हैं:

- (1) ग्रंथ वर्गीकरण, साहित्य में पहले से ही विद्यमान विषय क्षेत्रों की स्थिति को अंकित करना है, तथा दार्शनिक अनुक्रम से समानता संयोगवश होती है, उसकी अनुरूपता की यथार्थपरकता की कोई गारंटी नहीं दी जा सकती है।
- (2) ग्रंथ वर्गीकरण पदार्थों का वर्गों में यांत्रिक समूहीकरण है।
- (3) साहित्य में वर्गों के विभाजन और समन्वयन को प्रमुख रूप से औपचारिक तथा अदार्शनिक आधारों पर निर्धारित किया जाता है।
- (4) वर्गीकरण, साहित्य समादेश (Literary Warrant) के सिद्धांत पर आधारित होना चाहिए।

ह्यूम का कहना है कि यंत्रवत् वर्गीकरण असमन्वित छोड़ दिया जाता है, जबकि ग्रंथ वर्गीकरण में वर्गों का व्यवस्थित समन्वयन किया जाता है। साहित्य समादेश के उनके सिद्धांत ने बाद के वर्गीकरण प्रणाली प्रणेताओं का ध्यान आकर्षित किया। ई.ए. सैवेज (E.A. Savage) (1877-1966) ने इस शब्द को पुनर्जीवित किया। ह्यूम ने 'ग्रंथों को ज्ञान के सामान्य संग्रह से चुने गए तथ्यों का साकार समुच्चय (Concrete aggregates) माना है।" साकार समुच्चय से ह्यूम का अभिप्राय है कि—जैसे 'विद्युत और चुंबक' विषय पर पुस्तकें उपलब्ध हों तो 'विद्युत और चुंबक' वर्ग को एक अंक प्रदान करने का साहित्य समादेश है। साहित्य समादेश का सरल तात्पर्य यह है कि पद्धति में किसी विषय को तब तक सूचीबद्ध नहीं किया जाना चाहिए, जब तक उस विषय पर थोड़ा बहुत साहित्य प्रकाशित नहीं हुआ हो, अथवा उस विषय पर इतना साहित्य उपलब्ध हो कि, उस विषय को, पद्धति में सम्मिलित करना न्यायसंगत प्रतीत हो।

ह्यूम के साहित्य समादेश के सिद्धांत ने *लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस क्लैसिफिकेशन (Library of Congress Classification)* को सबसे अधिक प्रभावित किया। रंगनाथन ने भी इस सिद्धांत को प्रयोग किया, किन्तु उस रूप में नहीं जिस रूप में ह्यूम ने इसका प्रयोग किया। रंगनाथन ने अनुसार जब किसी विशिष्ट विषय पर साहित्य की संख्या में वृद्धि हो जाए तो, पद्धति में समादेश का सिद्धांत कहता है कि—“विषयों को विषय की पंक्ति में अथवा एकलों को एकलों की पंक्ति में, प्रकाशित प्रलेखों की घटती हुई संख्या के क्रम में, अथवा उन पर प्रकाशित होने संभावना को दृष्टिपथ में रखते हुए व्यवस्थित किया जाना चाहिए, जब तक कि कोई अन्य अत्यधिक दुर्दानीय तथ्य इसको नियम विरुद्ध सिद्ध न कर दे”।

इसलिए यह आवश्यक है कि किसी नवीन विषय के विविध पहलुओं को इस प्रकार सूचीबद्ध किया जाए कि उन पहलुओं को प्राथमिकता के क्रम में पहलेस्थान पर रखा जाए, जिन पर प्रकाशित साहित्य की संख्या अधिक हो।

4.4 डब्लू.सी.बी. सेयर्स (1881-1960)

विलियम चार्ल्स बरविक सेयर्स (William Charles Berwick Sayers) एक आंग्ल पुस्तकालयाध्यक्ष और रंगनाथन के शिक्षक थे। वर्गीकरण सिद्धांत के विकास में उनका योगदान असाधारण है। उन्हें पुस्तकालय वर्गीकरण का प्रथम व्याकरणशास्त्री कहा जाता है। उन्हें अन्य सिद्धांतशास्त्रियों के सिद्धांतों की व्याख्या करने तथा उनको सुनियोजित करने के लिए उत्तरदायी माना जाता है।

यद्यपि उन्होंने किसी वर्गीकरण पद्धति का निर्माण नहीं किया तथा उन्होंने अपने सिद्धांत के माध्यम से दूसरों के लिए वर्गीकरण पद्धति अभिकल्पित करने का मार्ग प्रशस्त किया। ग्रंथ वर्गीकरण सिद्धांत पर उनका प्रथम ग्रंथ 'कैनन्स ऑफ क्लैसिफिकेशन' (Canons of Classification) शीर्षक के अंतर्गत 1915 में प्रकाशित हुआ। इस ग्रंथ में निहित सिद्धांतों की रूपरेखा का उन्होंने अपने अन्य तीन ग्रंथों में विस्तार प्रदान किया। ये हैं—*ग्रामर ऑफ क्लैसिफिकेशन (Grammar of Classification)* (संस्करण 2, 1915; संस्करण 4, 1935), *इंट्रोडक्शन टू लाइब्रेरी क्लैसिफिकेशन (Introduction to Library Classification)* (संस्करण 1, 1918; संस्करण 9, 1958) और *मैन्यूअल ऑफ लाइब्रेरी क्लैसिफिकेशन (Manual of Library Classification)* (संस्करण 1, 1926, संस्करण 3, 1995; संस्करण 4, 1967 तथा संस्करण 5, 1975, जिसे आर्थर माल्टबी (Rebert Notwton) ने 1994 में संशोधित किया है।

सेयर्स के वर्गीकरण के उपसूत्र—सेयर्स ने अपने वर्गीकरण सिद्धांत (Theory of Classification) का सरलीकरण, 29 सिद्धांतों (Principles) का लल्लेख करते हुए किया है। सेयर्स ने इन्हें उपसूत्र (Canons) कहा, जिसका अर्थ है नियम, विनियम, मानक परीक्षण अथवा वर्गीकरण की कसौटी। इन 29 उपसूत्रों को निम्नलिखित 6 श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :

| | |
|----------------------------------|---|
| परिभाषा के उपसूत्र | 6 |
| विभाजन के उपसूत्र | 7 |
| पदों के उपसूत्र | 4 |
| ग्रंथ वर्गीकरण के उपसूत्र | 4 |
| अंकन के उपसूत्र | 5 |
| ग्रंथ वर्गीकरण पद्धति के उपसूत्र | 3 |

इनीक विवेचना नीचे की जा रही है :

परिभाषा (Definition) : वर्गीकरण एक मानसिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा वस्तुओं और विचारों को उनकी समानता के आधार पर समूहों में रखा जाता है। समानताक को, जो सृष्टि की वस्तुओं और विचारों में विद्यमान रहती है, वर्गीकरण के संदर्भ में अभिलक्षण कहते हैं। एक **अभिलक्षण (Characteristic)**, वर्गीकरण के विभाजन तथा समूहीकरण का आधार होता है। वर्गीकरण पद्धति में वर्गों को एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। यह क्रम ज्ञान वर्गीकरण के सिद्धांत पर आधारित होता है।

विभाजन (Division) : विभाजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा वस्तुओं को उनकी समानता की मात्रा के अनुसार एक साथ सम्मिलित तथा असमानता की मात्रा के अनुसार एक-दूसरे से पृथक् किया जाता है। किसी वस्तु को विभाजित करने के लिए चुनी गई समानता अथवा अभिलक्षण प्राकृतिक अथवा कृत्रिम हो सकते हैं। प्राकृतिक अभिलक्षण किसी वस्तु में अंतर्निहित गुण होता है अतः वह उसके अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण होता है। वस्तुओं के समूहों में कृत्रिम अभिलक्षण हो सकते हैं। उदाहरणार्थ—वस्त्रों का रंग एक कृत्रिम अभिलक्षण है। विभाजन की प्रक्रिया अधिकतर विस्तार और कमतर गहनता से; कमतर विस्तार और अधिकतर गहनता की ओर बढ़नी चाहिए। विभाजन की प्रक्रिया, क्रमिक रूप से, सामान्य से विशिष्ट की ओर अग्रसर होनी चाहिए। जिन अभिलक्षणों का उपयोग किया जाए, उन्हें विभाजन के प्रत्येक चरण पर सुसंगत होना चाहिए।

NOTES

NOTES

पद (Term) : एक वर्गीकरण पद्धति, शाब्दिक पदों का प्रयोग करते हुए ज्ञान का कथन है। किसी वर्ग के नामकरण के लिए किसी पद का प्रयोग किया जाता है। यह एक शब्द अथवा एक वाक्यांश हो सकता है। किसी वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त पदों का सुस्पष्ट होना चाहिए तथा चाहे उनका प्रयोग जहाँ या जब भी हो उन्हें एक की अनन्य अर्थ को अभिव्यक्त करना चाहिए। वर्गीकरण पद्धति में आलोचनात्मक पदों का प्रयोग बिलकुल नहीं किया जाना चाहिए।

ग्रंथ वर्गीकरण (Book Classification) : ग्रंथ वर्गीकरण, ग्रंथों को विषयानुसार अथवा उनके रूप (Form) के अनुसार तार्किक अनुक्रम में व्यवस्थित करने की एक विधि है। इसमें पहले से विद्यमान विषयों के वर्गों को अस्तव्यस्त किए बिना, किसी भी नवीन विषय को ग्रहण करने की क्षमता होनी चाहिए।

ग्रंथ वर्गीकरण पद्धति में निम्नलिखित का समावेश होना चाहिए :

- एक सामान्य वर्ग;
- विधा वर्ग—जैसे, कविता, उपन्यास, नाटक इत्यादि;
- रूप—जिनमें विषयों को सिद्धांत, इतिहास, शब्दकोश इत्यादि के रूप में प्रस्तुत किया जाता है
- एक अंकन; और
- एक अनुक्रमणी।

अंकन (Notation) : एक वर्गीकरण पद्धति में, वर्गों के नामों का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतीक चिह्न अंकन कहलाते हैं। अंकन को संक्षिप्त, सरल, लचीला तथा स्मृति सहायक गुणों से युक्त होना चाहिए।

ग्रंथ वर्गीकरण पद्धतियाँ (Book Classification Schemes) : एक वर्गीकरण पद्धति की अनुसूचियाँ स्तंभाकार होनी चाहिए, जिसमें विषयों का व्यवस्थापन उनकी वरीयता के अनुक्रम में हो। पद्धति में इस बात का उल्लेख आवश्यक है कि उसका उपयोग प्रकाशित किया जाए। पद्धति के संशोधन के लिए उपयुक्त तंत्र होना चाहिए, जिससे उसे अद्यतन बनाये रखा जा सके तथा ज्ञान के नये विकासों को उसमें समाविष्ट किया जा सके।

4.5 एच.ई. ब्लिस (1970-1955)

हैनी इवेलिन ब्लिस (Henry Evelyn Bliss) ने अपना संपूर्ण सक्रिय जीवन पुस्तकालय विज्ञान की कला और विज्ञान के होने अध्ययन में लगा दिया। पुस्तकालय पत्रिकाओं में अपने लेखों के योगदान के अलावा उनके द्वारा प्रतिपादित नियमों और सिद्धांतों को उनकी प्रथम कृति '*ऑर्गनाइजेशन ऑफ नॉलेज एण्ड दि सिस्टम ऑफ साइंस*' (*Organisation of Knowledge and the System of Science*) (1929), में विस्तार प्रदान किया गया। इस कृति में उन्होंने ग्रंथपरक वर्गीकरण में अध्ययन के लिए वैज्ञानिक, दार्शनिक एवं तार्किक धरातल तैयार किया। ज्ञान वर्गीकरण के सिद्धांत पर यह कृति आधाभूत पाठ्य पुस्तकों में से एक समझी जाती है। उन्होंने अपेक्षाकृत अधिक स्थायी, वैज्ञानिक दृष्टि से मान्य और सुसंगत वर्गीकरण पद्धति की आधारशिला रखी। उन्होंने पुस्तकालय वर्गीकरण के सिद्धांत पर एक अन्य मूलभूत ग्रंथ भी प्रकाशित किया जिसका शीर्षक था—'*ऑर्गनाइजेशन ऑफ इन लाइब्रेरिज एण्ड दि सब्जेक्ट अप्रोच टू बुक्स*' (*Organisation of Knowledge in Libraries and the Subject Approach to Books*) (1933, द्वितीय संस्करण 1939)। उनकी कृति ने पुस्तकालयाध्यक्षता को एक विद्यत विषय के रूप में प्रतिष्ठापित करने में सहायता की।

उपर्युक्त दो मूलभूत कृतियों के द्वारा हमें वर्गीकरण के आधारभूत सिद्धांतों (Fundamental Principles) की जानकारी प्राप्त होती है। ब्लिस ने बाद में इनका प्रयोग अपनी '*सिस्टम ऑफ बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन*' (*System of Bibliographic Classification*) (BC) नामक प्रणाली में किया। इसकी रूपरेखा सर्वप्रथम 1935 में प्रकाशित हुई।

ब्लिस द्वारा प्रतिपादित वर्गीकरण की मूलभूत अवधारणाओं को मोटे रूप में इस प्रकार श्रेणीबद्ध किया जा सकता है :

- (1) सहमति
- (2) अधीनता
- (3) विन्यास
- (4) वैकल्पिक अवस्थिति
- (5) अंकन

इन अवधारणाओं की संक्षिप्त चर्चा नीचे की गई है:

सहमति (Consensus) : ब्लिस की दृष्टि में ग्रंथ वर्गीकरण मूलरूप से ज्ञान वर्गीकरण है। उन्होंने अनुभव किया कि मानव ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के व्यवस्थापन में विशेषज्ञों के बीच यथेष्ट सहमति या आम राय विद्यमान है। इसे उन्होंने वैज्ञानिक और शैक्षिक सहमति (Scientific and Educational Consensus) का नाम दिया। मानव ज्ञान की वृद्धि का संगठन और विकास, विज्ञान और शिक्षा की प्रक्रिया के द्वारा हुआ है। सहमति शब्द उस सापेक्ष सहमति को सूचित करता है जो ज्ञान के प्रमुख वर्गों, उनके क्षेत्रों, व्यवस्थापन के क्रमों तथा उनके आवश्यक संबंधों के पक्ष में प्राप्त किए जाते हैं। उनका विश्वास था कि मुख्य वर्गों का प्राकृतिक अनुक्रम उनके इस सहमति के अनुक्रम के काफी नजदीक था। उन्होंने अनुभव किया कि पुस्तकालय वर्गीकरण इस सहमति को जितनी अधिक समीपता से प्रदर्शित करेगा वह उतना ही अधिक स्थायी, स्थिर, टिकाऊ लचीला तथा कार्यक्षम होगा।

अधीनस्थता (Subordination) : ब्लिस के अनुसार एक वर्गीकरण पद्धति को दो प्रकार की अधीनस्थता स्वीकार करनी चाहिए, जैसे:

- (1) विशिष्ट को सामान्य के अधीन रखना, और
- (2) विशिष्टता के आधार पर क्रमस्थापन।

विशिष्ट को सामान्य के अधीन रखना (Subordination of the Special to the General) इसे घटते हुए विस्तार का सिद्धांत (Principle of Decreasing Extension) भी कहा गया है। एक वर्गीकरण पद्धति में विषयों का व्यवस्थापन उनके घटते हुए विस्तार के सिद्धांत पर आधारित होना चाहिए ताकि एक वर्गीकरण पद्धति में विशिष्ट विषय सामान्य विषय का अनुसरण करें। विषयों का अनुक्रम सामान्य से विशिष्ट की ओर होना चाहिए।

विशिष्टता के आधार पर क्रमस्थापन (Gradation by Speciality) : यह अवधारणा दार्शनिक विशिष्टता के आधार पर क्रमस्थापन पर आधारित है। क्रमस्थापन का सिद्धांत समान स्तर के प्रकरणों की श्रृंखला को किसी बुद्धिसंगत में व्यवस्थित करने के लिए बनाया गया है। सिद्धांत यह है कि कुछ विषयों का अस्तित्व दूसरों द्वारा किए कार्यों अथवा अनुसंधानों पर निर्भर होता है, ऐसी स्थिति में आश्रित विषय को, उस विषय के बाद रखा जाना चाहिए, जिस पर वह आश्रित है। इसे निर्भरता का सिद्धांत (Principle of Dependency) के नाम से जाना जाता है। उदाहरणार्थ, प्राकृतिक विज्ञानों में भौतिकशास्त्र पहले आता है, क्योंकि यह प्राकृतिक घटनाओं के आधारभूत से संबंधित है। रसायनशास्त्र के अनुसंधानों पर निर्भर करते हैं और इसीलिए रसायनशास्त्र को भौतिकशास्त्र के बाद रखा जाता है। ब्लिस का दावा है कि "विशिष्टता के आधार पर क्रमस्थापन वर्गीकरण का मात्र मनमाना आधार नहीं है, अपितु प्रत्येक प्रक्रिया के लिए एक निवार्य सिद्धांत है।" इस प्रकार वर्गों का अनुक्रम होगा:

- सामान्य को सामान्य की तरह प्रस्तुत करना
- सामान्य को विशिष्ट की तरह प्रस्तुत करना
- विशिष्ट को सामान्य की तरह प्रस्तुत करना
- विशिष्ट को विशिष्ट की तरह प्रस्तुत करना

NOTES

NOTES

संस्थिति (Collocation) : यह उपर्युक्त दानों सिद्धांतों से उत्पन्न सिद्धांत है। ब्लिस के अनुसार संस्थिति का अर्थ है 'अत्यधिक समीप्य वाले विषयों को साथ-साथ रखना'। रंगनाथन ने इसे फिलिएटरी अनुक्रम (Filiatory Sequence) नाम दिया है। अधीनता के सिद्धांत और विशिष्टता के आधार पर क्रमस्थापन, स्थूल विषय क्षेत्रों अथवा विषयों का अनुक्रम निश्चित करने में सहायक है, जबकि विषयों के अंतर्गत, प्रत्येक विषय का अनुक्रम घटते हुए विस्तार के सिद्धांत के आधार पर निश्चित होता है। एक विषय के अंतर्गत पंक्तियों का अनुक्रम विभिन्न प्रकार के क्रमों द्वारा निश्चित होता है। यह भी आवश्यक है कि अत्यधिक समीप का संबंध रखने वाले एक विषय को एक साथ व्यवस्थित किया जाए। इसलिए ब्लिस ने अपनी 'बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन' (Bibliographic Classification) में भाषाशास्त्र को साहित्य के साथ, इन दोनों के अत्यधिक घनिष्ठ संबंधों के कारण रखा है। इसी प्रकार शिक्षा को मनोविज्ञान के साथ और रसायन प्रौद्योगिकी को रसायन शास्त्र के साथ संस्थित किया है। संस्थिति का संबंध सामान्यतः वर्गों से है। किंतु इसका संबंध अधीनस्थ वर्गों से भी हो सकता है। ब्लिस ने समाजशास्त्र को मानव विज्ञान तथा मानव विज्ञान को जीव विज्ञान के अधीन रखा है।

वैकल्पिक अवस्थितियाँ (Alternative Location) : एक वर्गीकरण पद्धति को विशिष्ट संग्रह की विभिन्न अपेक्षाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए। इसलिए पुस्तकालय यदि चाहें तो, तार्किक अनुक्रम से सुव्यवस्थित अनुक्रमों बदल सकते हैं। एक पद्धति को यदि अधिकाधिक उपयोगी बनाना है तो उसे व्यावहारिक सुविधा हेतु तार्किक अनुक्रम को अपनाना चाहिए ताकि वह विभिन्न दृष्टिकोणों वाले पाठकों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। ज्ञान के अपरिवर्तनीय तथा अनुकूलनीय अनुक्रम में ब्लिस विश्वास नहीं रखते थे। ब्लिस ने व्यावहारिक सुविधा के सिद्धांत की पूर्ति हेतु वैकल्पिक अवस्थिति और उसकी व्यावहारिक प्रक्रिया का इस एकमात्र पद्धति में जान बूझकर प्रावधान किया था। यद्यपि यह कुछ सीमा तक सहमति के सिद्धांत के प्रतिकूल है।

अंकन में इस प्रकार का प्रावधान किया गया है जिसके द्वारा कपिपय प्रसंगों को दूसरे स्थान पर खिसकाया जा सके। उदाहरणार्थ—धर्मशास्त्र (Theology) को मुख्य वर्ग P धर्म (Religion) से खिसका कर वर्ग AJ में दर्शनशास्त्र (Philosophy) के बाद रखा गया है। प्रौद्योगिकियों जैसे—वैमानिकी (Aeronautics) या जहाज निर्माण (Ship Building) अनुप्रयुक्त भौतिकशास्त्र (Applied Physics) से खिसका कर उपयोगी कलाओं (Useful Arts) के अंतर्गत तथा अंतरराष्ट्रीय कानून (International Law) को राजनीतिशास्त्र (Political Science) अथवा कानून (Law) के अधीन रखा है। इसी प्रकार आर्थिक इतिहास (Economic History) को सामान्य इतिहास (General History) के बाद लाया गया है।

इस सिद्धांत में लचीलापन है, जिसकी आवश्यकता सभी वर्गीकरणकारों को अनेक समस्याओं को हल करने के लिए थी। किन्तु साथ ही इससे यह भी सिद्ध होता कि विषयों का अनुक्रम निश्चित करने में पूर्ण सहमति नहीं है।

अंकन (Notation) : ब्लिस ने अंकन की तनी महत्वपूर्ण विशेषताओं को स्वीकार किया है ये हैं:

- इसे सहसंबद्ध तथा घटते हुए क्रम में होना चाहिए।
- इसे सरल और संक्षिप्त होना चाहिए। अर्थात् अंकन को यथासंभव सरल होना चाहिए। उन्होंने मितव्ययिता की दृष्टि से, एक वर्ग संख्या को तीन से चार अकों तक सीमित रखने का सुझाव भी दिया था।
- इसमें संश्लेषणात्मकता का गुण होना चाहिए। ऐसा करने से मुद्रण में मितव्ययिता और अनुसूची की संरचना में सरलता आएगी। साथ ही इसका उपयोग सुविधाजनक रहेगा।

ब्लिस ने सहविस्तृत वर्ग संख्या निर्मित करने के लक्ष्य को, सामान्य और विशिष्ट व्यवस्थित अनुसूचियों का प्रावधान करके प्राप्त कर लिया।

4.6 एस.आर. रंगनाथन (1892-1979)

रंगनाथन 1924 ही से निरंतर वर्गीकरण का अपना सिद्धांत (Theory) विकसित कर रहे थे। *प्रोलोगोमेना टू लाइब्रेरी क्लैसिफिकेशन (Prolegomena t Library Classification)*, 1937 के प्रथम संस्करण में उन्होंने एक एकीकृत सिद्धांत दिया, जो मुख्य रूप से विवरणात्मक तथा तुलनात्मक था तथा जिसका आधार उस समय की प्रचलित वर्गीकरण पद्धतियाँ थीं। पिछले अनुभागों में वर्णित पहले के वर्गीकरण प्रणाली प्रणेताओं द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को विस्तार देते हुए डॉ. रंगनाथन उनसे आगे निकल गए। उन्होंने एक सबसे लंबी सूची उन नियामक सिद्धांतों (Normative Principles) की दी जिन्हें उन्होंने आधारभूत सूत्रों (Fundamental Laws), अभिधारणाएँ (Postulates), सिद्धांत (Principles) और उपसूत्र (Canons) नाम दिया और एक विशिष्ट पारिभाषि शब्दावली विकसित की, जिसे *प्रोलोगोमेना* के प्रथम संस्करण में देखा जा सकता है। पुस्तकालय वर्गीकरण के सामान्य सिद्धांत के विकास की, सही अर्थों में, यह दूसरी अवस्था थी। उनका सिद्धांत आज पुस्तकालय वर्गीकरण के सामान्य सिद्धांत का पर्याय बन गया है। उनके

सिद्धांत की विस्तृत व्याख्या इस इकाई के अनुभाग 3.4 में की गई है।

4.7 क्लैसिफिकेशन रिसर्च ग्रुप (लंदन)

क्लैसिफिकेशन रिसर्च ग्रुप (CRG: Classification Research Group), लंदन की स्थापना 1952 में रॉयल सोसायटी साइंटिफिक इन्फॉर्मेशन कॉन्फ्रेंस (Royal Society Scientific Information Conference) 1948 के बाद, तथा प्रतिष्ठित वैज्ञानिक जे.डी. बर्नल (J.D. Bernal) के सुझावों के परिणामस्वरूप हुई। यह एक ऐसे असंबद्ध स्वयंसेवकों का संघ है जो अपने कार्यों के अतिरिक्त, वर्गीकरण कार्य में भी संलग्न रहना चाहते हैं। इन लोगों की लंदन में निरंतर सभाएँ हुआ करती हैं। 1996 तक इन्होंने 308 सभाएँ कर लीं थीं। इसके संस्थापक सदस्यों में डी.जे. फोस्केट (D.J. Foskett), बर्नार्ड पामर (Bernard Palmer) (1910-1979), बी.सी. विकरी (B.C. Vickery) और ए.जे. वेल्स (A.J. Wells) (1911-1994) रंगनाथन के कार्यों से अत्यधिक प्रभावित थे। इनमें से अधिकांश विशिष्ट, औद्योगिक तथा शैक्षिक पुस्तकालयों से संबंधित थे। इन्हें अपने गहन और श्रमसाध्य अध्ययन से इस बात का विश्वास हो गया था कि अभी तक प्रकाशित वर्गीकरण पद्धतियों में से कोई भी पद्धति न तो व्यवस्थापन के लिए और न ही विस्तृत विवरण प्रदान करने के लिए संतोषजनक है।

इस शोध समूह ने रंगनाथन के पक्ष विश्लेषण (Facet Analysis) की विधि का तो समर्थन किया, किंतु उनका इस दृष्टिकोण को स्वीकार नहीं किया कि श्रेणियों की संख्या सीमा पाँच ही होगी। उन्होंने अपनी श्रेणियों का सत्ता, गुणधर्म और याकलाप (Entities, Properties Activities) जैसे नाम दिए। फिर भी उन्होंने रंगनाथन के गत्यात्मक सिद्धांत के एक सुदृढ़ आधार पाया। उन्होंने *लाइब्रेरी एसोसिएशन रिकार्ड (Library Association Record)*, 1955 नामक पत्रिका में एक घोषणापत्र का प्रकाशन किया, जिसमें सूचना पुनर्प्राप्ति की सभी विधियों के आधार रूप में, पक्षात्मक वर्गीकरण (Faceted Classification) की आवश्यकता पर बल दिया था।

बी.सी. विकरी ने पक्षात्मक वर्गीकरण निर्मित करने की विधियों पर हम लघु पुस्तिका लिखी। वर्गीकरण शोध समूह के सदस्यों ने विशिष्ट विषयों के लिए अनेक पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धतियाँ अभिकल्पित कीं, जिनमें हीरा प्रौद्योगिकी से भूमि विज्ञान, संगीत से शिक्षा तक के विषय शामिल थे। ऐसी पद्धतियों को अभिकल्पित करने में जो अनुभव प्राप्त हुआ, उससे यह विश्वास हो गया कि पुस्तकालय वर्गीकरण के लिए नये सिद्धांतों की खोज ही अपयुक्त तरीका है। यद्यपि इस समूह ने सामान्य वर्गीकरण की किसी नवीन प्रणाली का प्रणयन नहीं किया था, तथापि वर्गीकरण तकनीकों के विकास में उनके अंशदान विविध और नवीन परिवर्तन लाने वाले थे। एक विशिष्ट सदस्या कुमारी बारबरा कायल (Miss Barbara Kyle) को मुख्य वर्गों की आवश्यकता को स्वीकार न करने में थोड़ी सफलता मिली। एक अन्य सदस्य जे.ई.एल. फेराडेन (J.E.L. Farradane) (1906-1989) ने पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति निर्मित करने में, 'ऑपरेटर्स' के साथ संबंध परक विश्लेषण के विचार को सम्मिलित किया। बाद में समूह के एक सदस्य ने 'थीअरी ऑफ इन्ट्रेग्रेटिव

NOTES

लेवलस' (Theory of Integrative Levels) को विकसित किया जिसके द्वारा सत्ताओं को उनकी जटिलताओं के बढ़ते हुए समुच्चय के आधार पर व्यवस्थित किया गया। उनके कार्य को प्रसिद्ध मिली और 1957 में डोकिंग (इंग्लैण्ड) में वर्गीकरण शोध पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में इस पर विस्तार से विचार विमर्श हुआ। इनके कार्य को प्रतिष्ठापित करने वाला एक अन्य प्रकाशन *सेयर्स मेमोरियल वॉल्यूम (Sayers Memorial Volume)* (लंदन लाइब्रेरी एसोशिएशन) (1961) था, जिसका संपादन डी.जे. फोस्केट और बी.आई. पामर ने किया था। वर्तमान में, क्लैसिफिकेशन रिसर्च ग्रुप की सभाओं में *बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन (BC2)* की भविष्य में प्रकाशित होने वाली संशोधित अनुसूचियों पर विचार-विमर्श के लिए अपना ध्यान केन्द्रित किया गया है। इनका प्रमुख व्यावहारिक कार्य प्रेसिस (PRECIS) है, जिसे डेरिक ऑस्टिन (Derek Austin) द्वारा सूत्रबद्ध किया गया है, जिसका अभिगम वर्गीकरणमूलक है। इस प्रिजर्व्ड कॉन्टेक्ट इण्डेक्सिंग सिस्टम (Precis : Preserved Context Indexing System) ने 1971 में *ब्रिटिश नेशनल बिब्लियोग्राफी* में रंगनाथन की श्रृंखला प्रक्रिया को प्रतिस्थापित कर उसका स्थान ले लिया क्योंकि यह प्रणाली स्वचालित ग्रंथसूचियों के संकलन कार्य के लिए अधिक उपयुक्त थी।

- (1) ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन की अनुक्रमणी देखें और पता करें कि इस पद्धति में गुलाब के विभिन्न पहलुओं को एक साथ रखा गया है अथवा नहीं ?
- (2) सेयर्स द्वारा बताये गए उत्तम अंकन के गुणों से आप परिचित हो चुके हैं। इन गुणों की उपस्थिति डी डी सी, यू डी डी तथा पद्धतियों में किस सीमा तक है, बताएँ।

5. पुस्तकालय वर्गीकरण का गत्यात्मक सिद्धांत

आर.एस. पारच (R.S. Parkhi) के अनुसार गत्यात्मक सिद्धांत (Dynamic Theory) 'पुस्तकालय वर्गीकरण का ऐसा सिद्धांत है, जिसके द्वारा पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति के निर्माण एवं अभिकल्प की विधि गढ़ी जा सकती है'। इसे पुस्तकालय वर्गीकरण के सामान्य सिद्धान्त के विकास की द्वितीय अवस्था समझा जाता है। यह सिद्धांत नवीन विषयों को, और पहले से ज्ञात विषयों को उनके उपयुक्त स्थानों पर पूर्व निर्धारित अनुक्रम को अस्तव्यस्त किए बिना, वर्गीकरण पद्धति में व्यवस्थित करने में सक्षम है। इनका दृष्टिकोण भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप है।

पुस्तकालय वर्गीकरण के गत्यात्मक सिद्धांत का विकास रंगनाथन द्वारा 1948 से 1955के मध्य किया गया तथा सर्वप्रथम *प्रोलेगोमेना टू क्लैसिफिकेशन (1957)* में प्रकाशित किया गया। इस सिद्धांत का अधिक विकसित रूप *प्रोलेगोमेना* के तृतीय संस्करण में 1967 में प्रकाशित हुआ।

गत्यात्मक सिद्धांत ने पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धतियों को अभिकल्पित करने की एक शक्तिशाली एवं स्थायी विधि प्रदान की है। इस सिद्धांत ने वर्गीकरण प्रणाली के प्रणेतियों को ऐसी वर्गीकरण पद्धतियों अभिकल्पित करने में सहायता की जो अधिक लम्बे समय तक चलने वाली हों तथा ज्ञान जगत् में हो रहे विकासों के साथ कदम मिलाकर चलने की क्षमता रखती हों।

पुस्तकालय वर्गीकरण के गत्यात्मक सिद्धांत का प्रतिपादन तीन धरातलों की पहचान तथा पृथक्करण पर आधारित है—वैचारिक धरातल, शाब्दिक धरातल और आंकिक धरातल (Idea Plane, Verbal Plane and Notational Plane)।

इससे पहले, आंकिक धरातल पर अंकन की सीमित क्षमता के कारण, शाब्दिक धरातल पर स्वतंत्र रूप से काम करने में बाधा आती थी। आंकिक धरातल को इस कार्य के लिए परिष्कृत नहीं किया गया था। यहाँ तक कि इसके प्रति अनिच्छ थी तथा इस ओर ध्यान देने के प्रति विरोध भी व्यक्त किया जाता था।

शाब्दिक धरातल पर कुछ लोकप्रिय पदों के भिन्नार्थकों व समानार्थकों के प्रयोग से वैचारिक धरातल पर भ्रांति उत्पन्न हुई। अतः कार्य के तीन धरातलों में पृथक्करण से वैचारिक धरातल पर सबसे पहले कार्य करना संभव हुआ और ऐसी आवश्यकता अनुभव की गई कि इसे बिना किसी रुकावट के विकसित होने की छूट प्रदान की जाए। 1963 तक गत्यात्मक सिद्धांत को और भी परिष्कृत किया गया और कुछ नई बातें जोड़ी गईं, जो इस प्रकार हैं :

NOTES

- (i) पदार्थ पक्ष की अभिव्यक्ति के लिए पदार्थ-गुण (Pronerty) एकलों और पदार्थ-सामग्री (Matter-Material) एकलों की पहचान की गई। इसके परिणामस्वरूप, कुछ एकल—जिन्हें कुछ वर्षों पूर्व समस्या अनुसूचियों (Problem Schedules) में विवश होकर सम्मिलित कर लिया गया था, किंतु बाद में उनका नाम विवश होकर 'ऊर्जा अनुसूचियाँ' (Energy Schedules) रख दिया गया था—सही अर्थों में पदार्थ-गुणधर्म एकल (Matter-Property Isolates) थे।
- (ii) प्रथम व्यक्तित्व एकल संख्या से पहले संकेतक अंक कॉमा (,) का प्रयोग करने के निर्देश।
- (iii) आंकिक धरातल पर पंक्ति की क्षमता में वृद्धि करने के लिए रोमन लघु अक्षरों को पूर्वस्थापक गुण (Anteriorising quality) से वंचित कर दिया गया। साथ ही अंक शून्य (0) को अंक 'z' और 'I' के बीच, अपने प्राकृतिक क्रमबोध मान (Natural Ordinal Value) के अधार पर पुनर्स्थापित किया गया।
- (iv) T से Z तक के अंकों को रिक्तक अंक (Emptying Digits) की अभिधारणा से संपन्न कर, पंक्ति में किसी स्थान पर अंतर्वेशन को संभव बनाना।
- (v) इस सिद्धांत ने वैचारिक धरातल में सहायक अनुक्रम के 18 सिद्धांतों (Principles) का प्रतिपादन किया और भित्ति-चित्र सिद्धांत (Wall-Picture Principle) जैसे प्रभावशाली सिद्धांत के आधार पर पक्षों और एकलों को सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करने को संभव बनाया।

सुविचारित रीति से भली-भाँति विकसित गहनतर तथा बेहतर गत्यात्मक सिद्धांत के इन निष्कर्षों को कोलन क्लैसिफिकेशन के तृतीय पाठ्यांतर (7वाँ संस्करण) में समाविष्ट किया गया जिसके फलस्वरूप यह वर्गीकरण पद्धति अब सही अर्थों में एक पूर्णतः मुक्त पक्षीय वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति का रूप धारण कर चुकी है।

इस प्रकार रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित आधारभूत नियमों, उपसूत्रों और सिद्धांतों ने गत्यात्मक सिद्धांत के विकास में महती योगदान किया है।

5.1 एस.आर. रंगनाथन

एस.आर. रंगनाथन, वर्गीकरण सिद्धांत के आमूल परिवर्तन परिवर्तन के कारक थे। उन्होंने कुछ ऐसी आधाभूत विचारधाराएँ तथा धारणाएँ प्रस्तुत की जो वर्गीकरण सिद्धांत के विकास का आधार बनीं। उन्होंने सदैव इस बात पर बल दिया कि पुस्तकालयों में वर्गीकरण, पुस्तकालय विज्ञान के सूत्रों के अनुरूप किया जाना चाहिए। एक वर्गीकरण पद्धति में वर्गों का व्यवस्थापन पक्ष विश्लेषण तथा मूलभूत श्रेणियों पर आधारित अत्यधिक सहायक तथा फिलिएटरी (Filiatory) अनुक्रम में होना चाहिए। इसके लिए उन्होंने जोरदार प्रयास किए। परिगणना पर पहले से प्रचलित वर्गीकरण पद्धतियों को उन्होंने पूर्णतः अस्वीकार कर दिया। अपने द्वारा प्रतिपादित पुस्तकालय वर्गीकरण के नियमों, उपसूत्रों तथा सिद्धांतों को उन्होंने स्व-रचित ग्रंथ *प्रोलेगोमेन टू लाइब्रेरी क्लैसिफिकेशन* में प्रस्तुत किया। पुस्तकालय वर्गीकरण के सिद्धांत पर यह एक श्रेष्ठ ग्रंथ माना जाता है।

ज्ञान जगत् के विषयों की स्थिति का मानचित्रण : रंगनाथन ने बहुआयामी ज्ञान को एक आयामी ज्ञान के रूप में परिवर्तित करने की समस्या को भली प्रकार समझा लिया था। वर्गीकरण पद्धतियों को अतिभक्तिलिप्त करने में वर्गीकरण प्रणाली प्रणेताओं के समक्ष यह एक मूलभूत तथा चिरस्थायी समस्या थी। रंगनाथन ने इस समस्या के न्यायोचित समाधान के लिए वर्गीकरण के सामान्य सिद्धांत का प्रतिपादन किया जो मूलभूत नियमों, पुस्तकालय विज्ञान के सूत्रों, उपसूत्रों, सिद्धांतों तथा अभिधारणाओं पर आधारित था। इन नियमों उपसूत्रों तथा सिद्धांतों की सहायता से ज्ञान जगत् का मानचित्रण सफलतापूर्वक किया जा सकता है। आगे के पृष्ठों में इन नियमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है:

NOTES

आधारभूत सूत्र (Basic Laws) : रंगनाथन ने 6 आधारभूत नियम निरूपित किए हैं जो निम्नलिखित हैं:

- (1) व्याख्या का सूत्र (Law of Interpretation)
- (2) निष्पक्षता का सूत्र (Law of Impartiality)
- (3) प्रतिसाम्यता का सूत्र (Law of Symmetry)
- (4) मितव्ययिता का सूत्र (Law of Parsimony)
- (5) स्थान वैभिन्य का सूत्र (Law of Local Variation)
- (6) परासरण का सूत्र (Law of Osmosis)

ये आधारभूत सूत्र सामान्यतः वैचारिक प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। इनकी आवश्यकत उस समय होती है जब दो या दो से अधिक पुस्तकालय विज्ञान के सूत्रों (Laws of Library Science) या वर्गीकरण के उपसूत्रों में टकराव होता है अथवा समान रूप से मान्य एक से अधिक निर्णयों को व्यक्त करने की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

पुस्तकालय विज्ञान के सूत्र (Laws of Library Science) : रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित पुस्तकालय विज्ञान के पंच सूत्र निम्नलिखित हैं :

- (1) ग्रंथ उपयोगार्थ हैं। (Books are for use.)
- (2) प्रत्येक पाठक को उसका ग्रंथ मिले। (Every reader his/her book.)
- (3) प्रत्येक ग्रंथ को उसका पाठक मिले। (Every book its reader.)
- (4) पाठक का समय बचाएँ। (Save the time of reader.)
- (5) पुस्तकालय एक वर्धनशील जीव संरचना है। (A library is a growing organism.)

इन सूत्रों को 1928 में प्रतिपादित किया था तथा इन्हें सर्वप्रथम ग्रंथ के रूप में *दी फाइव लॉज ऑफ लाइब्रेरी साइंस (The Five Laws of Library Science)* (1931) में प्रकाशित किया। इन सूत्रों का प्रभाव पुस्तकालय कार्यपणाली पर पड़ा। इनकी आवश्यकता तब होती है जब पुस्तकालय वर्गीकरण के दो या दो से अधिक सूत्रों या उपसूत्रों के बीच टकराव जैसी अथवा समान रूप से मान्य एक से अधिक निर्णयों को व्यक्त करने की स्थिति उत्पन्न हो जाए। ये नियम पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान की प्रत्येक शाखा के लिए उपयोगी हैं।

पक्षों के लिए अभिधारणा (Postulates for Facets) : पुस्तकालय वर्गीकरण सिद्धान्त के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण योगदान पक्ष विश्लेषण और मूलभूत श्रेणियों से संबंधित अभिधारणाओं का प्रतिपादन है।

मूलभूत श्रेणियाँ (Fundamental Categories) : कए विषय की अभिव्यक्ति किसी एक या सभी मूलभूत श्रेणियों में हो सकती है। रंगनाथन की अभिधारणा के अनुसार पाँच और केवल पाँच मूलभूत श्रेणियाँ होती हैं इनके नाम काल (Time), स्थान (Space), ऊर्जा (Energy), पदार्थ (Matter) और व्यक्तित्व (Personality) हैं। इन्हें संक्षेप में PMEST कहा जाता है।

पक्ष अनुक्रम (Facet Sequence) : पाँच मूलभूत श्रेणियों को जब मूर्तता के घटत हुए क्रम के अनुसार व्यवस्थित किया जाता है तो इनका अनुक्रम PMEST होगा।

ऊर्जा आवर्तन (Rounds of Energy) : रंगनाथन की अभिधारणा के अनुसार 'मूलभूत श्रेणी ऊर्जा का प्रकटीकरण (Manifestation) सिी एक ही विषय में एक से अधिक बार हो सकता है'। ऊर्जा के प्रकटीकरण को ऊर्जा के आवर्तन कहा जाता है। इसी प्रकार मूलभूत श्रेणी व्यक्तित्व और पदार्थ भी अपना प्रकटीकरण आवर्तन 1, आवर्तन 2 इत्यादि के रूप में कर सकते हैं।

स्तर (Levels) : रंगनाथन की एक और अभिधारणा, स्तर की अभिधारणा है। इसके अनुसार मूलभूत श्रेणियाँ व्यक्तित्व एवं पदार्थ किसी एक विषय में उसके एक आवर्तन में एक से अधिक बार अभिव्यक्त हो सकती है। एक मूलभूत श्रेणी का प्रथम प्रकटीकरण उसके आवर्तन में उसका प्रथम स्तर कहलाता है।

स्थान और काल दोनों अपने को अंतिम आवर्तन में अभिव्यक्त करते हैं।

पक्ष अनुक्रम के सिद्धांत (Principles of Facet Sequence) : रंगनाथन ने पक्ष अनुक्रम के चार सिद्धांत प्रतिपादित किए हैं। ये निम्नलिखित हैं:

- (1) भित्ति—चित्र सिद्धांत (Wall-picture Principle)
- (2) समग्र-अंग सिद्धांत (Whole-Organ Principle)
- (3) काऊ-कॉफ सिद्धांत (Cow-Calf Principle)
- (4) क्रिया वस्तु-क्रिया-कर्ता-उपकरण सिद्धांत (Actand Action-Actor-Tool Principle)

ये सिद्धांत एक यौगिक विषय में प्रयुक्त पक्षों के अनुक्रम को निश्चित करने में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

सहायक अनुक्रम के सिद्धांत (Principles of Helpful Sequence) : एक पंक्ति के एकलों में सहायक अनुक्रम प्राप्त करने के उद्देश्य से रंगनाथन ने सहायक अनुक्रम के 8 सिद्धांत प्रतिपादित किए हैं। ये हैं :

- (1) कालक्रम में उत्तरवर्तिता का सिद्धांत (Principle of Later-in-Time)
- (2) विकासक्रम में उत्तरवर्तिता का सिद्धांत (Principle of Later-in-Evolution)
- (3) स्थानीय समीपता का सिद्धांत (Principle of Spatial Contiguity)

3.1 खड़ी रेखा पर स्थित वर्गों के लिए सिद्धांत (Principle for Entities along a Vertical Line):

- 3.1.1 तल से ऊपर की ओर का सिद्धांत (Principle of Bottom Upwards)
- 3.1.2 ऊपर से तल की ओर का सिद्धांत (Principle of Top Downwards)

3.2 आड़ी रेखा पर स्थित वर्गों के लिए सिद्धांत (Principle for Entities along a Horizontal Line):

- 3.2.1 बाई ओर से दाई ओर का सिद्धांत (Principle of Left to Right)
- 3.2.2 दाई ओर से बाई ओर का सिद्धांत (Principle of Right to Left)

3.3 चतुर्ल रेखा पर स्थित वर्गों के लिए सिद्धांत (Principles of Entities along a Circular Line):

- 3.3.1 घड़ी की सुई की दिशा का सिद्धांत (Principle of Counter-Clockwise Direction)

3.4 वृत्त के अर्धव्यास पर स्थित वर्गों के लिए सिद्धांत (Principle for Entities along a Radial Line):

- 3.4.1 परिधि से केंद्र की ओर का सिद्धांत (Principle of Centre to Periphery)
- 3.4.2 केंद्र से परिधि की ओर का सिद्धांत (Principle of Periphery to Centre)

3.5 एक स्थल से वर्गों की दूरी का सिद्धांत (Principle of Away-from-Position)

- (4) परिमाण, मात्रा या संख्या का सिद्धांत (Principles for Quantitative Measure)

4.1 परिमाण वृद्धि का सिद्धांत (Principle of Increasing Quantity)

4.2 परिमाण ह्रास का सिद्धांत (Principle of Decreasing Quantity)

(5) जटिलता वृद्धि का सिद्धांत (Principle of Increasing Complexity)

(6) प्रामाणिक अनुक्रम का सिद्धांत (Canonical Sequence)

(7) साहित्य समादेश का सिद्धांत (Principle of Literary Warrant)

(8) वर्णानुक्रम का सिद्धांत (Principle of Alphabetical Sequence)

वर्गीकरण के उपसूत्र (Canons of Classification) : सेयर्स द्वार मूलरूप से प्रतिपादित वर्गीकरण की अवधारणा को रंगनाथन ने पूर्णतः एक नई दिशा प्रदान की। रंगनाथन ने 43 उपसूत्रों को सूत्रबद्ध किया है, जिन्हें उन्होंने तीन धरातलों में विभाजित किया है:

- (i) वैचारिक धरातल के लिए उपसूत्र (Canons for Idae Plane) (15)
- (ii) शाब्दिक धरातल के लिए उपसूत्र (Canons for Verbal Plane) (4)
- (iii) अंकन धरातल के लिए उपसूत्र (Canons for Notational Plane) (24)

NOTES

NOTES

उपर्युक्त उपसूत्र समस्त आधारभूत नियमों तथा पुस्तकालय विज्ञान के सूत्रों के साथ पूर्ण अनुरूपता रखते हैं। पुस्तकालय वर्गीकरण

पद्धति की संरचना में प्रायः इनकी आवश्यकता का अनुभव किया जाता है। अब हम इन तीन प्रकार के उपसूत्रों का संक्षिप्त विवेचन करेंगे:

वैचारिक धरातल के लिए उपसूत्र (Canons for Idea Plane) (15) : वैचारिक धरातल के 15 उपसूत्रों को पुनः निम्नलिखित रूप में समूहबद्ध किया है:

- (i) अभिलक्षणों के लिए उपसूत्र (Canons for Characteristics)
- (ii) अभिलक्षणों की उत्तरवर्तिता के लिए उपसूत्र (Canons for Succession of Characteristics)
- (iii) पंक्ति के लिए उपसूत्र (Canons for Array)
- (iv) श्रृंखला के लिए उपसूत्र (Canons for Chain)
- (v) फिलिएटरी अनुक्रम के लिए उपसूत्र (Canons for Filiatory Sequence)

अभिलक्षणों से संबंधित चारों उपसूत्र ज्ञान के विभाजन की प्रक्रिया से संबंधित हैं। विभाजन के लिए जिन अभिलक्षणों का चयन किया जाए उन्हें ऐसा होना चाहिए जिनके द्वारा किसी वर्ग को दो भागों में विभाजित किया जा सके; जिन्हें आसानी से निर्धारित किया जा सके; जो औचित्यपूर्ण हों; और जिनमें स्थायित्व हो। अभिलक्षणों की उत्तरवर्तिता के लिए प्रतिपादित तीन उपसूत्र, ज्ञान को विभाजित करने की प्रक्रिया में, एक से अधिक अभिलक्षणों के प्रयोग से संबंधित हैं तथा ये उपसूत्र निर्धारित करते हैं कि ऐसे अभिलक्षणों को किस अनुक्रम में व्यवस्थित किया जाए। पंक्ति (समकक्ष वर्गों) के चार उपसूत्र यह निर्धारित करते हैं कि एक पंक्ति के अंतर्गत आने वाले सभी वर्गों को उस पंक्ति में समाविष्ट कर लिया जाना चाहिए किंतु ये पंक्ति आपस में अनन्य भी होने चाहिए, साथ ही इनके बीच का अनुक्रम सहायक और सुसंगत होना चाहिए। श्रृंखला (अधीनस्थ वर्गों) के लिए निर्धारित दो उपसूत्र ज्ञान के विभाजन की उस प्रक्रिया से संबंधित हैं, जिसमें विभाजन का क्रम सामान्य से विशिष्ट की ओर होता है और इसे सावधानीपूर्वक लागू किया जाना चाहिए। फिलिएटरी अनुक्रम के दो उपसूत्र बताते हैं कि एक पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति को समकक्ष और अधीनस्थ दोनों वर्गों की स्पष्ट रूप से पहचान कर लेनी चाहिए और उन्हें आपस में उनकी पारस्परिक सम्बद्धता को दृष्टिगत रखते हुए व्यवस्थित किया जाना चाहिए।

शाब्दिक धरातल के लिए उपसूत्र (Canons for Verbal Plane) (4) : एक वर्गीकरण पद्धति में शाब्दिक धरातल से संबंधित चार उपसूत्रों का संबंध भाषा और शब्दावली संबंधी पहलुओं से है एक वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त शब्दावली में उस प्रसंग को स्पष्ट रूप से सूचित किया जाना चाहिए, जिस संदर्भ के लिए उस विशिष्ट पद का प्रयोग किया गया है, साथ ही उस पद में और कौन-कौन से पहलू सम्मिलित किए जा सकते हैं, यह भी स्पष्ट होना चाहिए। जो पद अवधारणाओं को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त किए जाएँ उन्हें प्रचलित होना चाहिए तथा आलोचनात्मक नहीं होना चाहिए।

ये चार उपसूत्र हैं:

- (i) संदर्भ का उपसूत्र (Canon of Context)
- (ii) परिगणना का उपसूत्र (Canon of Enumeration)
- (iii) प्रचलन का उपसूत्र (Canon of Currency)
- (iv) अल्पभाषिता का उपसूत्र (Canon of Reticence)

अंकन धरातल के लिए उपसूत्र (Canons for Notational Plane) (24) इन्हें पुनः निम्नलिखित प्रकार से समूहबद्ध किया गया है:

- (i) आधारभूत उपसूत्र (Basic Canons) - 12
- (ii) स्मृति सहायक उपसूत्र (Mnemonics) - 5

(iii) वर्धनशील जगत् उपसूत्र (Growing Universe) - 4

(iv) ग्रंथ वर्गीकरण उपसूत्र (Book Clasificatio) - 3

पुस्तकालय वर्गीकरण का
सामान्य सिद्धान्त

NOTES

अंकन का अर्थ एक वर्गीकरण पद्धति में वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले क्रमसूचक प्रतीकों की व्यवस्था से है। आधारभूत उपसूत्र जो संख्या में 12 हैं, की आवश्यकता वर्ग संख्याओं को भिन्नार्थी एवं समानार्थी से मुक्त कराना है। इन उपसूत्रों के अनुसार अंकन को वर्गों में पदानुक्रम को प्रदर्शित करना चाहिए। अंकन का आधार मिश्रित अथवा विशुद्ध हो सकता है। आधारभूत उपसूत्र, अंकन की इन दोनों ही प्रजातियों में से प्रत्येक की सापेक्ष क्षमता की विवेचना करते हैं। अंकन पक्षात्मक और अपक्षात्मक हो सकता है। उपसूत्र दोनों प्रजातियों के सापेक्ष गुणों का भी उल्लेख करते हैं। वर्ग संख्या सहविस्तृत अथवा असहविस्तृत होनी चाहिए। इन उपसूत्रों के माध्यम से इन दोनों प्रकार के अंकों के निहितार्थों की व्याख्या की गई है। स्मृति सहायक के लिए प्रस्तावित पाँच प्रकार के उपसूत्र विभिन्न प्रकार की स्मृति सहायक विधियों की आवश्यकताओं का उल्लेख करते हैं। इनके नाम हैं :

- आनुवर्णिक स्मृति सहायक (Alphabetical Mnemonics)
- सूचीबद्ध स्मृति सहायक (Scheduled Mnemonics)
- सुनियोजित स्मृति सहायक (Systematic Mnemonics), और
- मौलिक स्मृति सहायक (Seminal Mnemonics)

वर्धनशील जगत् के चार उपसूत्र एक वर्गीकरण पद्धति की सीमा में आने वाले, नवीन प्रादुर्भूत वर्गों को माविष्ट करने की अंकन पद्धति की क्षमता से संबंधित हैं।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. वर्गीकरण के मानदण्ड कौन-कौन से हैं?
4. ह्यूम के ग्रन्थ वर्गीकरण के सिद्धान्तों का उल्लेख कीजिए।

रंगनाथन पंक्ति और श्रृंखला में किसी अंकन पद्धति की इस प्रकार की क्षमता को पंक्ति में ग्राह्यता (Hospitality in Array) और श्रृंखला में ग्राह्यता (Hospitality in Chain) नाम देते हैं। अंकन पद्धति में इस प्रकार की क्षमता होनी चाहिए कि वह ज्ञान जगत् के निरंतर विकास से उत्पन्न नवीन वर्गों को, एक पंक्ति अथवा श्रृंखला के प्रारंभ में, अथवा अंत में, अथवा मध्य में स्थान दे सके। किसी वर्ग पंक्ति में नवीन वर्गों के इस प्रकार के समयोजन को बहिर्वेशन (Extrapolation) (प्रारंभ में अथवा अंत में) और अंतर्वेशन (Interpolation) (मध्य में) भी कहते हैं।

ग्रंथ वर्गीकरण के लिए तीन उपसूत्र हैं। ये उपसूत्र एक वर्गीकरण पद्धति में पुस्तक संख्या और संग्रह संख्या निर्मित करने के प्रावधानों से संबंधित हैं। इन तीनों तत्त्वों का अनुक्रम वर्ग संख्या, पुस्तक संख्या और संग्रह संख्या होगा। इन तीनों से आहवास संख्या निर्मिता होती है।

अभिधारणाओं, उपसूत्रों और सिद्धांतों की भूमिका (Role of Postulates, Canons and Principles): अभिधारणाएँ वैचारिक धरातल पर कार्य करने की प्रक्रिया को आधार प्रदान व्यवस्थित करने का कार्य करते हैं। इस प्रकार सूत्रों, अभिधारणाओं, उपसूत्रों और सिद्धांतों ने पुस्तकालय वर्गीकरण के गत्यात्मक सिद्धांत की ठोस आधारशिला रखी है।

NOTES

इन सभी को पिछले पृष्ठों में सूचीबद्ध किया जा चुका है। इन सिद्धांतों के प्रयोग का प्रचुर मात्रा में प्रमाण कोलन क्लैसिफिकेशन

पद्धति के चतुर्थ संस्करण (1952) के प्रकाशन के बाद से ही इसने मुक्त पक्षात्मक पद्धति का स्वरूप ग्रहण कर लिया है, जो उन नियमों, अभिधारणाओं, उपसूत्रों तथा सिद्धांतों पर आधारित है, जिनका विवेचन पूर्व के पृष्ठों में किया जा चुका है। चतुर्थ संस्करण से पहले, कोलन क्लैसिफिकेशन एक अपरिवर्तनीय पक्षात्मक पद्धति थी।

वर्गीकरण के सामान्य सिद्धांत के विकास में रंगनाथन का योगदान आधारभूत, विलक्षण तथा अतुलनीय है। पक्षा विश्लेषण और मूलभूत श्रेणियों की उनकी अवधारणा को व्यापक समर्थन मिला। परिणामस्वरूप रंगनाथन के ग्रंथ *प्रोलेगोमेना टू लाइब्रेरी क्लैसिफिकेशन* (1967) में तथा उनके अन्य ग्रंथों में निरूपित अवधारणाओं और सिद्धांतों का प्रयोग करते हुए, वर्गीकरण की अनेक विशिष्ट पद्धतियाँ अभिकल्पित की गई हैं।

6. सार-संक्षेप

सिद्धांत (Theory) से अभिप्राय ऐसे व्यवस्थित लिपिबद्ध सिद्धांतों (Principles) से है, जो किसी विषय पर भी यह बात लागू होती है। पुस्तकालय वर्गीकरण के सामान्य सिद्धांत के विकास की दो अवस्थाएँ हैं।

प्रथम अवस्था में, विवरणात्मक सिद्धांत का प्रादुर्भाव हुआ। इसका आधार उस समय की प्रचलित वर्गीकरण पद्धतियों में प्रयुक्त व्यावहारिक प्रक्रियाएँ थीं। विवरणात्मक सिद्धांत का प्रादुर्भाव ब्राउन, रिचर्डसन, ह्यूम, सेयर्स, ब्लिस, रंगनाथन और सी आर जी के सदस्यों के योगदान तथा प्रयासों का परिणाम था। इन विद्वानों ने अपने लेखन कार्यों से तथा इनमें से कुछ ने अपनी पद्धतियों के माध्यम से कतिपय आधारभूत सिद्धांतों और उपसूत्रों का प्रतिपादन किया, जिनसे पद्धतियों का प्रारूप तैयार करने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

द्वितीय अवस्था में, हम वर्गीकरण के गत्यात्मक सिद्धांत के प्रादुर्भाव को देखते हैं, जिसके द्वारा पद्धतियों को अधिक विस्तार एवं परिशुद्धता से अभिकल्पित करने के लिए विधियों की रूपरेखा बनाना संभव हुआ। रंगनाथन ही प्रमुख रूप से गत्यात्मक सिद्धांत की उत्पत्ति एवं विकास के लिए उत्तरदायी थे। रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित पुस्तकालय वर्गीकरण के सूत्रों, आधारभूत सूत्रों, उपसूत्रों, अभिधारणाओं तथा सिद्धांतों को संक्षिप्त सरल रूप में पूर्वगामी अनुभाग में प्रस्तुत किया गया है।

इस अध्याय के अध्ययन क उपरांत आप पुस्तकालय वर्गीकरण के सामान्य सिद्धांत की आवश्यकता को समझ गए होंगे। साथ ही ब्राउन, रिचर्डसन, ह्यूम, सेयर्स, ब्लिस और रंगनाथन जैसे विद्वानों द्वारा इस सिद्धांत के विकास में किए गए योगदानों संबंध में भी आप जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। अब आप ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन यूनिवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन और कोलन क्लैसिफिकेशन नामक वर्गीकरण की इन तीन पद्धतियों के विषय को अधिक अच्छी प्रकार समझ सकेंगे। इकाई 4 में हम इस बात का अध्ययन करेंगे कि इन तीनों पद्धतियों में ज्ञान के समस्त विषयों का मानचित्रण किस प्रकार से किया गया है।

7. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. **सिद्धांत की आवश्यकता :** यदि हम पुस्तकालय वर्गीकरण के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो पाएँगे कि इसके विकास की प्रारंभिक अवस्था में संपूर्ण ज्ञान जगत् के विषयों का ही इसके द्वारा वर्गीकरण करना संभव था और स्थूल वर्गीकरण से ही उस समय की आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती थी। ऐसा प्रतीत होता है कि ये वर्गीकरण पद्धतियाँ उस समय की अधिकांश आवश्यकताओं के अनुरूप निर्मित की गई थीं। इनका उद्देश्य उस समय की आवश्यकताओं को पूरा करना मात्र था, न कि किन्हीं ऐसे सिद्धांतों को ध्यान में रखना, जिन्हें बाद में समय की कसौटी पर परखा जा सके। इन पद्धतियों ने उस समय की तात्कालिक तथा अल्पकालीन समस्याओं को हल कर दिया, किन्तु कालांतर में उन विषयों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई जिनके आधार पर ज्ञान को विभाजित किया जाता है, परिणामस्वरूप विद्यमान पद्धतियाँ अपर्याप्त सिद्ध हुई। इसक साथ ही प्रलेखों में निहित विषयों की जटिलताओं में भी वृद्धि हुई, जिसके

NOTES

कारण भी यह आवश्यक हो गया कि ज्ञान का सूक्ष्मता से वर्गीकरण किया जाए। इस जटिलता के कारण पुस्तकालय वर्गीकरण के एक ऐसे सिद्धांत की आवश्यकता महसूस हुई, जो ज्ञान की असीमित वृद्धि की चुनौती का सामना कर सके।

2. प्रारंभ में कोई सिद्धांत (Theory) नहीं था, केवल व्यावहारिक प्रक्रियाओं का ही अनुसरण किया जाता था। इन व्यावहारिक प्रक्रियाओं ने ही विवरणात्मक सिद्धांत को जन्म दिया। इस प्रकार, विवरणात्मक सिद्धांत को पुस्तकालय वर्गीकरण के विकास की प्रथम अवस्था के रूप में माना जा सकता है। यह सिद्धांत विषय जगत् (ज्ञान के दायरे में समाविष्ट विषयों का समुच्चय) की उस समय की आवश्यकताओं को पूरा करने में समक्ष था। विवरणात्मक सिद्धांत उस समय उपलब्ध विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों के अनुसार प्रचलित व्यावहारिक प्रक्रियाओं आधारित था। विवरणात्मक सिद्धांत समकालीन पद्धतियों का आसक्ति रूप है, जिनका प्रभाव 1950 के दशक तक रहा। उससे पहले अभिकल्पित पद्धतियाँ उनके प्रतिपादकों की सहज बुद्धि अथवा उनकी नैसर्गिक प्रतिभा पर आधारित थीं, न कि किसी पद्धत्यपरक आधार पर किए गए पुस्तकालय वर्गीकरण के सिद्धांत पर।

उनके द्वारा प्रयुक्त तरीके अनुभवजन्य होते थे। विवरणात्मक सिद्धांत के विकास का श्रेय बांउन, रिचर्डसन, ह्यूम, सेयर्स, ब्लिस और रंगनाथन जैसे कुछ विद्वान व्यक्तियों को जाता है। 1898 से 1937 का समय इस सिद्धांत (Theory) के उद्भव एवं विकास का था। इन व्यक्तियों ने अपनी पद्धतियों तथा लेखन कार्यों के द्वारा पुस्तकालय वर्गीकरण के कुछ सिद्धांतों (Principles) का प्रतिपादन किया। इस सिद्धांतों ने वर्गीकरण के सामान्य सिद्धान्त (General Theory of Library Classification) के विकास में बहुत अधिक योगदान किया।

3. ये सिद्धांत, जिन्हें वर्गीकरण का मानदण्ड (Criteria of Classification) कहते हैं, निम्नलिखित हैं: वर्गीकरण को वस्तुओं के क्रम का अनुसरण करना चाहिए: वर्गों को ऐतिहासिक अनुक्रम में व्यवस्थित किया जाता चाहिए।

- (1) वर्गों का विभाजन सूक्ष्म होना चाहिए।
- (2) वस्तुओं को उनकी समानता एवं असमानता के आधार पर व्यवस्थित किया जाना चाहिए।
- (3) ग्रंथों का संग्रह उपयोगार्थ होता है, उन्हें उपयोगार्थ व्यवस्थित किया जाता है, इसीलिए उपयोग ही वर्गीकरण का उद्देश्य है।
- (4) वर्गीकरण पद्धति में अंकन का प्रावधान होना चाहिए। अंकन ऐसा होना चाहिए कि उसके अपरिमित विभाजन किए जा सकें। तदनुसार दशमलव आधारित मिश्रित प्रतीकों के उपयोग को अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए। अंकन को स्मृति सहायक विशेषताओं से युक्त होना चाहिए।

4. ह्यूम के ग्रंथ वर्गीकरण के सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

- (1) ग्रंथ वर्गीकरण, साहित्य में पहले से ही विद्यमान विषय क्षेत्रों की स्थिति को अंकित करना है, तथा दार्शनिक अनुक्रम से समानता संयोगवश होती है, उसकी अनुरूपता की यथार्थपरकता की कोई गारंटी नहीं दी जा सकती है।
- (2) ग्रंथ वर्गीकरण पदार्थों का वर्गों में यांत्रिक समूहीकरण है।
- (3) साहित्य में वर्गों के विभाजन और समन्वयन को प्रमुख रूप से औपचारिक तथा अदार्शनिक आधारों पर निर्धारित किया जाता है।
- (4) वर्गीकरण, साहित्य समादेश (Literary Warrant) के सिद्धांत पर आधारित होना चाहिए।

8. मुख्य शब्द

अंकन (Notation)

: एक वर्गीकरण पद्धति में वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले क्रमदर्शक प्रतीकों की व्यवस्था।

NOTES

| | |
|---|--|
| अधीनस्थता (Subordination) | : एक वर्गीकरण पद्धति में विषयों का व्यवस्थापन उनके विस्तार के हास के अनुसार करना। |
| अभिलक्षण (characteristic) | : एक ऐसा गुण जिसके आधार पर वर्गीकरण करते समय, विचारधाराओं एवं वस्तुओं को समूहों में एकत्र किया जाता है अथवा विभाजित किया जाता है। |
| असहविस्तृता (Non-Co-extensiveness) | : एक वर्ग संख्या की असहविस्तृता से अभिप्राय संबंधित प्रलेख में निहित विषय की प्रत्येक प्रासंगिक विशेषता को अभिव्यक्त न करने वाला होना है। |
| आह्वान संख्या (Call Number) | : प्रतीक चिहनों की ऐसी श्रृंखला, जिसके द्वारा एक प्रलेख को पुस्तकालय के फलकों पर विशिष्ट स्थान प्राप्त होता है। |
| उपसूत्र (Canons) | : वर्गीकरण के सिद्धांत, जिनका सेयर्स ने सर्वप्रथम इस रूप में प्रयोग किया तथा जिन्हें रंगनाथन ने परिष्कृत किया। |
| कृत्रिम अभिलक्षण (Artificial characteristics) | : ऐसा गुण, जो किसी समूह में सामान्य रूप से पाया जाता हो। जैसे — मनुष्य में रंग और लम्बाई एक कृत्रिम अभिलक्षण है। |
| गहन वर्गीकरण (Close Classification) | : यह विस्तृत वर्गीकरण (Broad Classification) के विपरीत है तथा एक वर्गीकरण पद्धति में प्रमुख विभाजनों के अंतर्गत विषयों के सूक्ष्म उपविभाजनों की व्यवस्था है। रंगनाथन ने इसे गहन वर्गीकरण कहा है। |
| ज्ञान जगत् (Universe of Knowledge) | : मानव समाज द्वारा सुरक्षित ज्ञान की समष्टि। |
| नैसर्गिक अभिलक्षण (Natural characteristic) | : वर्गीकरण की जाने वाली वस्तुओं में पाई जाने वाली ऐसी विशेषता, जिसे वस्तु से पृथक नहीं किया जा सकता हो। |
| पंक्ति (Array) | : केवल एक अभिलक्षण का प्रयोग करते हुए ज्ञान जगत् से समकक्ष वर्गों की पंक्तियों को प्राप्त करना। समकक्ष वर्गों का समूह। |
| परिगणना (Enumeration) | : भूत, वर्तमान तथा अनुमानित भविष्य के विषयों को सूचीबद्ध करना। |
| फिलिएटरी अनुक्रम (filiatory Sequence) | : विषयों के पारस्परिक संबंधों के आधार पर उनका अनुक्रम सुनिश्चित करना। |
| मिश्रित अंकन (Mixed Notation) | : संयुक्त आधार वाली अंकन पद्धति अथवा दो या दो से अधिक प्रजातियों के प्रतीकों से निर्मित अंकन। |

NOTES

- वर्गीकरण प्रणाली प्रणेता (Classificationist)** : वह व्यक्ति जो वर्गीकरण पद्धति का अभिकल्पन तथा प्रतिपादन करता है।
- विस्तृत वर्गीकरण (Broad Classification)** : एक वर्गीकरण पद्धति में विषयों का व्यवस्थापन मोटेतौर पर या सामान्य विभाजन पर आधारित होना, जिसमें कम से कम उपविभाजन हों।
- वैकल्पिक स्थान (Alternative Location)** : एक वर्गीकरण पद्धति में व्यावहारिक सुविधा के लिए किसी तार्किक अनुक्रम को अपनाने का प्रावधान। एक पद्धति में एक विषय के लिए दो वैकल्पिक स्थानों की व्यवस्था।
- श्रृंखला (Chain)** : वह अनुक्रम या पदानुक्रम जिसमें व्यापक वर्ग तथा अधीनस्थ वर्गों की श्रृंखला को शामिल किया जाता है।
- संस्थिति (Collocation)** : परस्पर संबंधित विषयों को पास-पास (साथ-साथ) रखना।
- सहमति (Consensus)** : ज्ञान की प्रमुख शाखाएँ कौन सी हैं? उनका क्षेत्र क्या है? उनके बीच संबंध क्या है? इत्यादि के विषय में सापेक्षिक सहमति देना।
- सहविस्तृता (Co-extensiveness)** : एक वर्ग संख्या की सहविस्तृता से अभिप्राय संबंधित प्रलेख में निहित विषय की प्रत्येक प्रांसंगिक विशेषता की अभिव्यक्ति से है।
- साहित्य समादेश (Literary Warrant)** : किसी विषय पर प्रकाशित अथवा प्रकाशित होने की संभावना वाले साहित्य के आधार पर विषयों का अनुक्रम सुनिश्चित करने के लिए बनाया गया सिद्धान्त।
- स्मृति सहायक (Mnemonics)** : याद रखने में सहायक। स्मृति सहायक अंकों से अभिप्राय ऐसे प्रतीक अथवा प्रतीकों के प्रयोग से है जो किसी निश्चित अवधारणा का प्रतिनिधित्व सुसंगत रूप से सभी वर्गों में, जहाँ-जहाँ उस विचार का प्रयोग हुआ है, वहाँ-वहाँ उसी एक सुनिश्चित अंकन के द्वारा करते हों।

9. अभ्यास-प्रश्न

1. पुस्तकालय वर्गीकरण सिद्धान्त के महत्त्व का प्रतिपादन कीजिए।
2. पुस्तकालय वर्गीकरण सिद्धान्त की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।
3. पुस्तकालय वर्गीकरण सिद्धान्त के विकास-क्रम का विवेचन कीजिए।
4. जे.डी. ब्राउन द्वारा प्रकाशित पुस्तकालय वर्गीकरण की तीन पद्धतियों की व्याख्या कीजिए।
5. सेयर्स के वर्गीकरण के उपसूत्रों की विवेचना कीजिए।

10. संदर्भ ग्रंथ सूची

Bliss, H.E. (1929). *Organization of knowledge of the System of Sciences*. New York : Holt,

NOTES

- Bliss, H.E. (1933). *Organization of Knowledge in Libraries and the Subject Approach to Books*. New York. H.W. Wilson. (Ed 2; 1939).
- Bliss, H.E. (1935). *System of Bibliographic Classification*. New York : H.W. Wilson.
- Brown, James Duff (1998). *Mamal of Library Classification and Shelf Arrangement*. London : Library Supply Company.
- Brown, J.D. (1906). *Subject Classification*. London : Library Supply Co.
- Brown, J.D. (1939). *Subject Classification*. 3rd ed. London : Grafton.
- Foskett, D.J. (1971). Classification Research Group. 1952-1968. In : Kent Allan (et al.) (eds.) *Encyclopedia of Library and Information Science*. New York : Marcell Dekker. Vol 5 pp. 141-145.
- Foskett, D.J. and Paimer, B.I. (eds.) (eds.) (1961). *The Sayers Memorial Volume*. London : Library Association.
- Hulme, E. Wyndham (1911-12). Principles of Book Classification. *Library Association Record*. 13-14.
- Krishan Kumar (1996). *Theory of Classification*. New Delhi : Vikas Publishing House. Chapters 5-11.
- Marcella, Rita and Newton, Robert (1994). *A New Mamal of Classification*. Aldershot, UK: Gower. Chapter 3.
- Parkhi, R.S. (1972). *Library Cloassification: Evolution of a Dynamic Theory*. New Delhi: Vikas Publishing House. Chapters F-R.
- Ranganatha, S.R. (1931). *Five Laws of Library Science*. Madras : Madras Library Association.
- Ranganathan S.R. (1967). *Prolegomena to Library Classification*. 3rd ed Bangalore: Sarada Ranganathan Endowment for Library Science. Chapters D-L.
- Richardwon, Ernest Cushing (1901). *Classification : Theoretical and Practical*. New York : Scribner. (Ed2; 1912. Ed ; 1930
- Andre deutsch. Chapters 9 and 17 - 19.
- Sayers, W.C.B (1915). *Canons of Classification*. London: Grafton.
- Sayers, W.C.B. (1935). *Grammar of Classification*. 4th ed. London : Grafton (Ed 2; 1915).
- Sayers, W.C.B (1918). *Introduction to Library Classification*. London: Grafton (Ed 2; 1922 Ed 3; 1929, Ed 4: 1935, Ed 5: 1938, Ed ; 1943, Ed 7: 1946, Ed 8; 1958).
- Steward, J.D. (1950). Brown's Subject Classification. *Rev Documentation*. 18, 56-53.
- शर्मा, पाण्डेय एस.के. (1996) सरलीकृत पुस्तकालय वर्गीकरण सिद्धान्त। दिल्ली : ज्ञान गंगा।

पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धतियों की प्रजातियाँ

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. पुस्तकालय वर्गीकरण की प्रजातियाँ
 - 3.1 परिगणनात्मक वर्गीकरण
 - 3.2 लगभग परिगणनात्मक वर्गीकरण
 - 3.3 लगभग पक्षात्मक वर्गीकरण
 - 3.4 पूर्ण पक्षात्मक वर्गीकरण
 - 3.5 विकासवादी प्रवृत्तियाँ
 - 3.6 परिगणनात्मक और पक्षात्मक वर्गीकरणों का तुलनात्मक अध्ययन
4. कुछ प्रमुख वर्गीकरण पद्धतियाँ
 - 4.1 ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन (डी डी सी)
 - 4.2 यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन (यू डी डी)
 - 4.3 कोलन क्लैसिफिकेशन (सी सी)
 - 4.4 लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस क्लैसिफिकेशन (एल सी)
 - 4.5 बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन (बी सी)
 - 4.6 ब्रॉड सिस्टम ऑफ आर्डरिंग (बी एस ओ)
5. गहन अनुसूचियाँ
6. सार-संक्षेप
7. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
8. मुख्य शब्द
9. अभ्यास-प्रश्न
10. ग्रंथ सूची

NOTES

1. अध्याय के उद्देश्य

इस अध्याय में आपका परिचय पुस्तकालय वर्गीकरण की विभिन्न प्रजातियों से कराया जाएगा। साथ ही विगत 125 वर्षों में विकसित अनेक सामान्य और विशिष्ट प्रकार की प्रमुख पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धतियों के विषय में भी आप जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इस अध्याय का अध्ययन करने के बाद आप :

- पुस्तकालय वर्गीकरण की विभिन्न प्रजातियों के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, जिनका उपयोग आज ज्ञान को व्यवस्थित करने के लिए किया जा सकता है;
- पुस्तकालय वर्गीकरण की विभिन्न प्रजातियों की अभिलक्षणात्मक विशेषताओं, सीमाओं और समस्याओं के बारे में समझ सकेंगे; तथा
- सामान्य और विशिष्ट प्रकार की प्रमुख वर्गीकरण प्रणालियों से परिचित हो पाएँगे।

2. परिचय

आधुनिक पुस्तकालय वर्गीकरण के इतिहास का शुभारंभ संयुक्त राज्य अमरीका में 1876 में, ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के प्रकाशन के साथ हुआ। इसके बाद से अनेक पुस्तकालयाध्यक्षों ने विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोणों को अपनाते हुए तथा तकनीकों का प्रयोग करते हुए, अनेक प्रकार की वर्गीकरण पद्धतियाँ विकसित करने का प्रयास किया। इनमें सी.ए. कटर ने अपनी एक्सपैसिव क्लैसिफिकेशन (EC, 1879) पद्धति में अनेक प्रकार के अंकों का प्रयोग किया। एक ब्रिटिश पुस्तकालयाध्यक्ष, जेम्स डफ ब्राउन ने अपनी सबजेक्ट क्लैसिफिकेशन (SC, 1906) पद्धति में ज्ञान को व्यवस्थित करने के लिए एक पृथक् प्रकार की युक्ति अपनायी। दूसरी ओर यूनिवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन (UDC, 1905) पद्धति इस दिशा में एक मील का पत्थर साबित हुई है। पुस्तकालय वर्गीकरण के इतिहास में रंगनाथन की कोलन क्लैसिफिकेशन (CC, 1933) ने पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धतियों के निर्माण को एक नया मोड़ दिया। रंगनाथन का दृष्टिकोण दूसरों से सर्वथा भिन्न था। उन्होंने अपनी पद्धति को पक्षात्मक पद्धति कहा। ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धति के अलावा लगभग आधा दर्जन सामान्य वर्गीकरण पद्धतियाँ प्रचलन में हैं। रंगनाथन की प्रोलेगोमेना टू लाइब्रेरी क्लैसिफिकेशन (तृतीय संस्करण, खंड 1, 1967) इन वर्गीकरण पद्धतियों को पाँच प्रकार की प्रजातियों में विभाजित करती है:

- परिणनात्मक वर्गीकरण (Enumerative Classification);
- लगभग परिणनात्मक वर्गीकरण (Almost-Enumerative Classification);
- लगभग पक्षात्मक वर्गीकरण (Almost-Faceted Classification)
- अनम्य पक्षात्मक वर्गीकरण (Rigidly-Faceted Classification)—अर्थात् पूर्व निर्धारित पक्षों के आधार पर वर्गीकरण; और
- मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण (Freely Faceted Classification)—अर्थात् अभिधारणाओं और सिद्धांतों द्वारा निर्देशित वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण (Analytico-Synthetic Classification Guided by Postulates and Principles)।

3. पुस्तकालय वर्गीकरण की प्रजातियाँ

“विषयों के वर्गीकरण के लिए पद्धतियों के क्रमिक विकास की सामान्य दिशा परिणनात्मक से वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक की ओर अग्रसर हुई है, जो अभिधारणाओं और सिद्धांतों पर आधारित है”। आगे क अनुभागों में वर्गीकरण की इन विभिन्न प्रजातियों के अभिलक्षणात्मक गुणों, सीमाओं इत्यादि का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

3.1 परिणनात्मक वर्गीकरण

“परिणना” का शाब्दिक अर्थ सूचीबद्ध करना अथवा गणना करना है। “वर्गीकरण की परिणनात्मक पद्धति में अनिवार्य रूप से एक अनुसूची होती है जिसमें भूत, वर्तमान तथा संभावित भविष्य के समस्त

विषयों को परिगणित किया गया होता है।" इसका अर्थ यह है कि विभिन्न विषयों की वर्ग संख्याओं को अनुसूची में परिगणित कर दिया जाता है। वर्ग संख्या निर्मित करने के लिए इसमें पृथक् से सामान्य एकलों की कोई संपूरक अनुसूची नहीं होती। वर्गीकरण की इस प्रकार की प्रजाति का एक अच्छा उदाहरण लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस क्लैसिफिकेशन (LC) पद्धति है। यह 11,300 पृष्ठों की एक बृहत् अनुसूची है जो खंडों में विभक्त है। इसमें वर्ग संख्याओं के संश्लेषण का कोई प्रावधान नहीं है।

उदाहरणार्थ:

| | | | |
|-----|-------------------------|------|-----------------|
| HA | Statistics | HB | Economic theory |
| HAI | Statistical periodicals | HB9 | Periodicals |
| HA9 | Statistics conferences | HB21 | Conferences |

इस प्रजाति की एक अन्य पद्धति राइडर्स इंटरनेशनल क्लैसिफिकेशन (RIC : Rider's International Classification) (1961) है। इसकी वृहत् अनुसूची में लगभग 18,000 विषयों को परिगणित किया गया है जिनका प्रतिनिधित्व तीन बड़े रोमन अक्षरों से किया गया है। इस पद्धति में वर्ग संख्याएँ निर्मित करना संभव नहीं है।

परिणामस्वरूप, नये विषयों को पद्धति में स्थान देना संभव नहीं है। इसलिए वर्गीकरणकार को अनेक विषयों लिए एक ही वर्ग संख्या देने के लिए बाध्य होना पड़ता है। इस प्रकार, अनेक विषयों के ग्रंथों का प्रतिनिधित्व एक ही वर्ग संख्या के द्वारा होने के कारण ऐसे ग्रंथों के व्यवस्थापन में 'थोड़ी बहुत अव्यवस्था' (Chaos-in-Little) पैदा हो सकती है। इस प्रकार इस पद्धति में लचीलापन (Resilience) नितांत सीमित है।

3.2 लगभग परिणामात्मक वर्गीकरण

वर्गीकरण की, लगभग परिणामात्मक पद्धति की अनुसूची बृहदाकार होती है, जिसमें भूता, वर्तमान तथा संभावित भविष्य के अधिकांश विषयों को परिगणित किया गया होता है। इसके अलावा सामान्य एकलों की कुछ अनुसूचियाँ होती हैं। अधिकांश प्रलेखों की बनी बनाई वर्ग संख्याएँ दी हुई होती हैं, जबकि कुछ वर्ग संख्याओं में संपूरक अनुसूची की सहायता से प्राथमिक स्तर पर संश्लेषण किया जा सकता है। इस प्रजाति की वर्गीकरण पद्धति का एक उदाहरण इंग्लैंड के जे.डी. ब्राउन (1862-1914) की सब्जेक्ट क्लैसिफिकेशन (SC, 1906) नामक वर्गीकरण पद्धति है।

इस पद्धति में विषयों की एक मुख्य अनुसूची दी गई है। इसमें प्रमुख रूप से यौगिक विषय हैं; जिन्हें वर्णों/अक्षरों के द्वारा दर्शाया गया है; तथा वर्णों को अंकों द्वारा विभाजित किया गया है। इस पद्धति में ब्राउन ने सामान्य रूप से प्रयोग में लाई जाने वाली उप विभाजनों की एक तालिका का प्रावधान भी किया है, जिसे उन्होंने कैटेगोरिकल टेबुल (Categorical Table) कहा है। यह तालिका रूपों (Forms) और अन्य उपविभाजनों की एक ऐसी सूची है, जिसे अनुसूची के किसी भी वर्ग के साथ प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रकार इस पद्धति में अंकों का संश्लेषण सीमित है। ये हैं:

- 0 Generally
- 00 Catalogues, Lists
- 1 Bibliography
- 2 Encyclopaedia
- 10 History

इसकी मुख्य और संपूरक अनुसूचियाँ काफी बृहदाकार हैं; किंतु उतनी नहीं जितनी लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस क्लैसिफिकेशन की अथवा राइडर्स इंटरनेशनल क्लैसिफिकेशन की। ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन भी एक लगभग परिणामात्मक वर्गीकरण पद्धति है, यद्यपि अनुसूचियों के अलावा इसमें मानक उपविभाजनों की दो तालिकाएँ और एक भौगोलिक तालिका भी दी गई है। अनुसूची में दिए गए 'के सामान विभाजित करें' (Divide like) निर्देशों के माध्यम से इस पद्धति में सीमित मात्रा में संश्लेषण भी संभव है। एकल पक्षों

NOTES

के प्रावधान के बावजूद इसकी वर्ग संख्याएँ एक खंडीय (Monolithic) हैं। ऐसा इसलिए है कि एकल पक्षों के लिए प्रयुक्त योजक अंक भी उसी प्रजाति के हैं, जिस प्रजाति के सारगर्भित अंकों से वर्ग संख्याएँ निर्मित हैं। तथापि वर्ग संख्याओं में प्रयुक्त प्रत्येक तीन अंकों के बाद नेत्रों को आराम देने के लिए कुछ स्थान रिक्त छोड़ दिया गया है। डी डी सी का सतरहावाँ संस्करण (Ed. 17) इस बात का साक्षी है कि ज्ञान जगत् में नवोदित विषयों को 'सामान्य पुस्तकालयों' में उपयुक्त स्थान देना एक समस्या बन गई थी; इसलिए इसने पक्षात्मक वर्गीकरण का एक अप्रत्यक्ष तरीका अपनाया।

ऐसी पद्धतियाँ, ज्ञान जगत् के सभी दिशाओं में बढ़ते हुए असीमित एवं प्रचंड दबाव को सहन करने में समक्ष नहीं होती। ब्राउन की सबजेक्ट क्लैसिफिकेशन अब एक मृतप्राय पद्धति है जबकि ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन ने अपने अठारहवें संस्करण (Ed. 18, 1971) से सात प्रकार की सहायक सारणियों की सहायता से वर्ग संख्याएँ निर्मित करने की क्षमता में काफी वृद्धि कर ली है। रंगनाथन का मानना है कि यह पक्षात्मक वर्गीकरण की ओर बढ़ने का एक परोक्ष तरीका है। किंतु यह सब पर्याप्त नहीं है। ऐसी पद्धतियाँ आज के युग में गतावधिक हो चुकी हैं।

3.3 लगभग पक्षात्मक वर्गीकरण

वर्गीकरण की विभिन्न प्रजातियों के विकास क्रम की पंक्ति में लगभग पक्षात्मक वर्गीकरण का स्थान, लगभग परिगणनात्मक वर्गीकरण और मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण के बीच का है। ऐसी प्रजातियों की एक बृहत् अनुसूची होती है, जिसमें भूत, वर्तमान और संभावित भविष्य से संबंधित मूल, यौगिक, यहाँ तक कि मिश्रित विषय भी सम्मिलित होते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ अनुसूचियाँ सामान्य एकलों की और कुछ अनुसूचियाँ विशिष्ट एकलों की होती हैं। इसमें मुख्य अनुसूची के अंकों के साथ, सामान्य तथा विशिष्ट एकलों को जोड़ने के लिए, कुछ संकेतक अंकों या योजक चिह्नों का भी प्रावधान है। ये संकेतक अंक अनुसूचियों में प्रयुक्त, सारगर्भित तंत्रों से भिन्न होते हैं। इस प्रकार की वर्गीकरण पद्धतियों के उदाहरण यूनिवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन (1905-1994+) और बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन का प्रथम संस्करण (BCI) (1940-1953) हैं। इन पद्धतियों में, यद्यपि अधिकांश वर्ग संख्याएँ बनी बनाई होती हैं, फिर भी बहुत सी वर्ग संख्याओं को सहायक तालिकाओं की सहायता से संश्लेषित करके निर्मित किया जा सकता है। बनी बनाई वर्ग संख्याएँ बहुखंडीय (Polythetic) होती हैं और उनकी संरचना अधिकतर पारदर्शी होती है। अनुसूचियाँ तुलनात्मक दृष्टि से लघु आकार की हैं, किंतु मुख्य अनुसूचियाँ फिर भी बृहदाकार हैं। अनुसूचियों के संपूरक के रूप में अनेक अतिरिक्त तालिकाएँ हैं, जिसे वर्ग संख्याओं की संश्लेषण क्षमता में कई गुना वृद्धि हो गई है। बहुखंडीय होने के कारण इसके पक्षों को आंतरिक विस्तार प्रदान किया जा सकता है। इस पद्धति में 'कुछ एकल पक्षों के प्रयोग का तथा वर्ग संख्याओं को कोलन (:) तथा दूसरे प्रकारके चिह्नों की सहायता से जोड़ने का प्रावधान है, किंतु ऐसा तय किया जाता है जब अनुसूची की एकल संख्याओं से वांछित परिणाम नहीं निकल पाते हों। इस प्रकार यूनियवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धति ज्ञान जगत् में नवोदित विषयों के कारण उत्पन्न दबाव के प्रति पूर्णरूपेण लचीली (Resilient) सिद्ध हुई है।' इसी प्रकार बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन का लचीलापन यूनिवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन के लचीलेपन से तुलनीय है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. वर्गीकरण की परिणामात्मक पद्धति का परिचय दीजिए।
2. लगभग पक्षात्मक वर्गीकरण का आशय स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3.4 पूर्ण पक्षात्मक वर्गीकरण

किसी पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति में केवल मूल वर्गों, विशिष्ट एकलों और सामान्य एकलों की अनुसूचियों का प्रावधान होता है। इसके आलावा विद्यमान एकलों को तीक्ष्णता प्रदान करने तथा नये एकलों का निर्माण करने के लिए कुछ युक्तियों का प्रावधान होता है। अनुसूचियाँ लघु आकार की होती हैं, अतः इनमें यौगिक और मिश्रित विषयों को परिगणित नहीं किया जाता, न ही इन विषयों के लिए बनी बनाई वर्ग संख्याएँ उपलब्ध होती हैं; अपितु संबंधित पद्धति में विशेष रूप से निर्धारित नियमों (व्याकरण) के अनुसार इनकी वर्ग संख्याओं का प्रत्येक बार संश्लेषण करना पड़ता है। विषयों की इस प्रकार से बनाई गई वर्ग संख्याएँ बहुखंडीय होती हैं तथा इनी संरचना इस प्रकार होती है कि इनके पक्षों को स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है। वर्गीकरण पद्धतियों के विकास में, पक्षात्मक पद्धतियाँ सबसे नवीन हैं और बहुआयामी ज्ञान की चुनौती का सामना करने में बेहतर रूप से सक्षम हैं। ये दो प्रकार की होती हैं:

- अनम्य पक्षात्मक वर्गीकरण
- मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण

अनम्य पक्षात्मक वर्गीकरण

पक्षात्मक वर्गीकरण के विकास की यह प्रथम अवस्था है। एक अनम्य पक्षात्मक वर्गीकरण में विभिन्न पक्षों और उनके उद्धरण का क्रम पूर्व निश्चित होता है और उनका पक्ष—परिसूत्र भी पूर्व निर्धारित होता है। किसी पक्षा को छोड़ा नहीं जा सकता। कोलन क्लैसिफिकेशन के प्रथम तीन संस्करण (क्रमशः 1933, 1939 और 1950) अनम्य पक्षात्मक माने जाते हैं क्योंकि इनमें प्रत्येक मूलवर्ग के लिए एक पक्ष-परिसूत्र दिया गया था। वर्ग संख्या में अनेक पक्षों की अस्तव्यस्तता के कारण यह पहचानना थोड़ा सा कठिन होता था कि किसी विषय का कौन—सा पक्ष सि मूलभूत श्रेणी से संबंध रखता है। यह समस्या इसलिए थी क्योंकि सभी पक्षों के लिए एक ही योजन चिह्न (:) का प्रावधान था। बीच के किसी पक्ष के अनुपस्थित होने की स्थिति में भी उस पक्षा के लिए (:) योजन चिह्न लगाना आवश्यक था। उदाहरणार्थ :

D 66 : 121 :: 4 Design of Electrical Generator

उपर्युक्त विषय में केवल अंग पक्षा (Part Facet) अनुपस्थित है। पक्ष-परिसूत्र में इस पक्ष का स्थान मध्य में आता है। इसलिए द्वितीयक कार्य संख्या (Secondary Work Number) के तुरंत बाद तथा यांत्रिक समस्य अंक के पहले प्रयुक्त कोलन के तुरंत पूर्व, एक और कोलन (:) लगाने की आवश्यकता पड़ी। इसलिए उक्त वर्ग संख्या में एक के बाद दूसरे कोलन का प्रयोग किया गया है। इससे वर्ग संख्या थोड़ी भद्दी और बेढंगी अवश्य दिखती है। इसका अर्थ यह हुआ कि इस प्रकार के वर्गीकरण में पक्षों का प्रयोग पूर्व निर्धारित होता है। इसके अतिरिक्त नये पक्षों को जोड़ने का कार्य भी थोड़ा कठिन होता है।

मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण

पुस्तकालय वर्गीकरण के विकास की यह अंतिम अवस्था है। मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण, अभिधारणाओं और सिद्धांतों पर आधारित होता है तथा इसमें 'मूल विषय के साथ प्रयुक्त यौगिक विषयों के लिए कोई अपरिवर्तनीय, पूर्व निर्धारित पक्ष-परिसूत्र नहीं होता'। चूंकि ऐसी पद्धति विश्लेषण और संश्लेषण पर आधारित होती है, अतः प्रत्येक विषय ही अपना पक्ष-परिसूत्र निर्धारित करता है। पक्ष-परिसूत्र मुक्त होता है। चूंकि इस प्रकार के वर्गीकरण में पक्षों का विश्लेषण और संश्लेषण किया जाता है और पक्षों का अनुक्रम सुनिश्चित करने के लिए अभिधारणाएँ और सिद्धांत मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, अतः इसका एक दूसरा नाम वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण (Analytico Synthetic Classification) भी है। कोलन क्लैसिफिकेशन के चतुर्थ संस्करण (1952) से छठवें संस्करण (1960) तक के संस्करण मुक्त पक्षात्मक मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण के उदाहरण हैं। इस प्रकार की प्रजाति का एक अन्य उदाहरण जे. मिल्स संशोधित बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन का द्वितीय संस्करण (BC-2) (1977) है। वस्तुतः ऐसी प्रजाति में असीमित लचीलापन होता है। इसकी वर्ग संख्याएँ सहविस्तृत, संक्षिप्त तथा परिष्कृत होती हैं। कुछ विद्वान इन्हें लगभग मुक्त

NOTES

NOTES

पक्षात्मक वर्गीकरण मानते हैं क्योंकि इनमें एक यौगिक विषय में प्रयुक्त होने वाले पृथक-पृथक पक्षों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के संकेतक अंकों का प्रयोग करके, साथ ही पक्षों की तथा उनके अनुक्रम की कठोर अपरिवर्तनशीलता को, जो यौगिक विषयों में होती है, आवर्तन एवं स्तर की अभिधारणाओं ने दूर कर दिया है। अतः कुछ विद्वान इससे लगभग मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण मानते हैं। फिर भी एक आवर्तन में प्रयुक्त होने वाले पक्ष के स्तरों में अपरिवर्तनशीलता विद्यमान है।

किन्तु सेक्टर अंकन की सहायता से, पक्षों के स्तरों की संख्या और एक आवर्तन में उनके अनुक्रम की अनम्यता को, जो कोलन क्लैसिफिकेशन के छठवें संस्करण तक विद्यमान थी, इसके सातवें संस्करण में दूर कर दिया गया, क्योंकि यह माना जाता है कि यौगिक विषय में पक्ष होते हैं न कि किसी मूल विषय में। अतः किसी मूल विषय के साथ मेल खाने की संभावना रखने वाले यौगिक विषयों के लिए, पक्षों के पूर्व निर्धारित होने की अवधारणा को अस्वीकार कर दिया गया है। इसलिए इसे मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति कहा गया है। रंगनाथन की कोलन क्लैसिफिकेशन पद्धति अभिधारणाओं तथा सिद्धांतों से मार्गदर्शन प्राप्त एक मुक्त पक्षात्मक वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण का अच्छा उदाहरण है।

3.5 विकासवादी प्रवृत्तियाँ

पुस्तकालय वर्गीकरण का सामान्य सिद्धांत और उसके परिणामस्वरूप वर्गीकरण पद्धतियों का विकास, दोनों ही निरंतर परिवर्तन की अवस्था में रहे हैं। परिवर्तन द्रुतगामी एवं क्रमिक रहा है। विकास की प्रवृत्तियों का प्रवाह वर्गीकरण की परिणामात्मक संपूर्णतः मुक्त पक्षात्मक पद्धतियों की ओर रहा है। इनके मध्य बाधा डालने वाली असंस्थाएँ लगभग पक्षात्मक, अनम्य पक्षात्मक और लगभग मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धतियाँ थीं।

कुछ इतिहासकार इन पद्धतियों को परिणामात्मक अर्थात् ऐसी परिणामात्मक प्रणाली के साथ जोड़ते हैं, जिसके साथ पक्षात्मक संरचना जुड़ी हुई हो (जैसा कि यू डी सी और डी डी सी के 18वें—21वें संस्करणों में देखने को मिलता है)। यद्यपि अधिकांश सिद्धांतशास्त्री इन्हें सामान्यतः दो मूल प्रजातियों में विभाजित करते हैं, यथा परिणामात्मक और पक्षात्मक। इनी सुस्पष्ट विशेषताएँ, गुणों एवं दोषों का तुलनात्मक अध्ययन प्रायः किया जाता है।

3.6 परिणामात्मक और पक्षात्मक वर्गीकरणों का तुलनात्मक अध्ययन

परिणामात्मक

1. यह मूल, यौगिक और कुछ मिश्रित विषयों की एक व्यवस्थित सूची होती है। इसमें भूत, वर्तमान तथा संभाव्य भविष्य के विषयों को सम्मिलित किया जाता है। अर्थात् इसमें सभी वर्ग संख्याएँ बनी बनाई होती हैं।
2. विकास के क्रम में, यह वर्गीकरण प्रजातियों में सबसे पहली है। लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस क्लैसिफिकेशन इस प्रजाति का एक सबसे अच्छा नमूना है।
3. यह भूतकाल के विषयों का वर्गीकरण है तथा सूचना संसाधन एवं व्यवस्थापन के क्षेत्र में आधुनिक समय में हो रही क्रांति से उत्पन्न चुनौती का सामना करने में समक्ष नहीं है।
4. परिणामात्मक पद्धति के सामान्यतः कोई स्पष्ट सिद्धांत और मार्ग निर्देशक मापदण्ड नहीं होते। अतः इस प्रकार की प्रजाति नये विषयों को स्थान प्रदान नहीं कर सकती। इसकी संरचना अपरिवर्तनीय होती है तथा यह शीघ्र ही पुरानी और गतावधिक हो जाती है।
5. इसका अंकन सरल और वर्ग संख्याएँ एक खंडीय होती हैं।
6. इसकी अनुसूचियाँ लंबी होती हैं। इस पद्धति का प्रारूप बनाना कठिन है, लेकिन इसका उपयोग सरल है।
7. अनुक्रमणी अनिवार्य है।

पक्षात्मक

इसमें यौगिक एवं मिश्रित विषयों की किसी भी प्रकार की वर्ग संख्याएँ बनी बनाई नहीं मिलती हैं। यह मूल विषयों तथा उनके विशिष्ट एकलों और कुछ सामान्य एकलों की एक सूची होती है।

वर्गीकरण पद्धतियों के विकास की यह नवीनतम अवस्था है। रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित कोलन क्लैसिफिकेशन इस प्रजाति का सबसे अच्छा उदाहरण है।

यह वर्तमान और निकट भविष्य के विषयों का वर्गीकरण है और सूचना-क्रांति की चुनौतियों का सामना करने में पूर्ण रूप से सक्षम है। इसकी वर्ग संख्याएँ सहविस्तृत होती हैं।

पक्षात्मक पद्धति स्पष्ट सिद्धांत (Theory) पर आधारित होती है। अभिधारणाएँ और सिद्धांत (Postulates and Principles) इसे मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इन्हें मार्गदर्शक सिद्धांतों (Guiding Principles) के कारण यह नये विषयों को स्थान प्रदान कर सकती है। इसमें अत्यंत लचीलापन होता है। इसीलिए इसमें स्थायित्व होता है और इसे आसानी से अद्यतन बनाए रखा जा सकता है।

इसका अंकन मिश्रित होता है और अनेक बार जटिल प्रतीत होता है। इसकी वर्ग संख्याएँ बहुखंडीय होती हैं।

अनुसूचियाँ छोटी होती हैं, अतः इस पद्धति का अभिकल्पन आसान होता है, लेकिन इन्हें उपयोग में लाना अपेक्षाकृत जटिल होता है।

अनुसूची छोटी होने के कारण अनुक्रमणी का उपयोग कम किया जाता है।

4. कुछ प्रमुख वर्गीकरण पद्धतियाँ

मुख्यतः 1876 से, सामान्य तथा विशिष्ट वर्गीकरण पद्धतियों में तीव्र गति से विकास हुआ है। किसी सामान्य वर्गीकरण पद्धति का प्रारूप ज्ञान के समस्त क्षेत्रों के लिए बनाया जाता है। ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन, सी.ए. कटर की एक्सपैन्सिव क्लैसिफिकेशन तथा कोलन क्लैसिफिकेशन ऐसी पद्धतियों के उदाहरण हैं।

इसके विपरीत एक विशिष्ट वर्गीकरण पद्धति एक अति विस्तृत और विषयों को सूक्ष्म रूप से विभाजित करने वाली वर्गीकरण पद्धति होती है जिसे ज्ञान के छोटे क्षेत्रों जैसे—सामाजिक विज्ञान अथवा अर्थशास्त्र औ यहाँ तक कि बैंकिंग जैसे विषयों के लिए विकसित किया जा सकता है। इस प्रकार की अनेक वर्गीकरण पद्धतियाँ हैं। इस इकाई में हम कुछ वर्गीकरण पद्धतियों का संक्षिप्त अध्ययन करेंगे। इनमें कुछ वर्गीकरण पद्धतियों की चर्चा और विवेचना इस पाठ्यक्रम (BLIS-03) के खंड 4 में की गई है।

4.1 ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन (डी डी सी)

ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धति की परिकल्पना मेल्विल ड्यूई ने की थी। इसे प्रथम बार 1986 में प्रकाशित किया गया। अब तक इसके 21 संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इसके प्रणेता मेल्विल ड्यूई (1851-1931) को सच्चे अर्थों में आधुनिक

पुस्तकालयाध्यक्षता का जनक माना जाता है। यह प्रथम विद्या-विशेष अभिमुखी (Discipline oriented) वर्गीकरण पद्धति है। इससे दशमलव अंकों का प्रयोग संपूर्ण ज्ञान को दस मुख्य वर्गों में विभाजित करने के लिए किया गया है। मुख्य वर्गों के विभाजन पदानुक्रम और सूक्ष्म हैं। 21वें संस्करण में सात सहायक तालिकाएँ हैं, जो मुख्य अनुसूचियों के दो खंडों (001/999) के लिए संपूरक का कार्य करती हैं। इसका ग्रंथपरक विवरण इस प्रकार है:

Dewey, Melvil : *Decimal Classification and Relative Index*. Ed 21. edited by Joan S. Mitchell. Albany, N. Y : Forest Press/OCLC, 1996 4 Volumes

छोटे पुस्तकालयों के लिए इसका लघु संस्करण प्रकाशित किया गया है। इसका वर्तमान लघु संस्करण, 13 वें संस्करण (1997) है, जो एक खंड में है।

NOTES

NOTES

अधिकता वर्ग संख्याएँ परिगणित हैं, और अब अनेक वर्ग संख्याओं '...में जोड़िए' निर्देशों (ad to instructions) और सात सहायक सारणियों की सहायता से विस्तार प्रदान किया जा सकता है।

यह अत्यधिक लोकप्रिय वर्गीकरण पद्धति है। इसे 135 देशों के लगभग 2,00,000 पुस्तकालय उपयोग में ला रहे हैं। इसका अनुवाद 35 भाषाओं में हो चुका है। इसे प्रकाशनाधीन-प्रसूचीकरण (CIP: Cataloguing-in-Publication) डेटा और 'मार्क' (MARC)रिकार्ड्स में लाया जा रहा है। डी. डी. सी पर सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव 21 जुलाई 1988 के कंप्यूटर टेप में देखा जा सकता है, जिसमें इसके 20वें संस्करण का प्रकाशन कार्य प्रारंभ करने के लिए इसके संपूर्ण मूलपाठ के कंप्यूटर टेप पर मैसाच्यूसेट की एक फर्म को दे दिया गया था। इस प्रकार ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धति ऑनलाइन युग में प्रवेश कर चुकी है। इसकी संपादकीय नीति समिति (Editorial Policy Committee) वर्गीकरण के विकास को निरंतर गति प्रदान करती रहेगी और ऐसी नीतियों का सुझाव देती रहेगी जो ऑनलाइन सूचना संग्रह और पुनर्प्राप्ति की दृष्टि से इससे और अधिक ग्राह्य और अनुकूल बनाने में सहायक हो सकें। यह CD-ROM पर पहले से ही उपलब्ध है (Dewey for Windows, 1996)।

4.2 यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन (यू डी सी)

ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन को आधार बनाते हुए यूनिवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धति का विकास 1895 में पॉल ऑटलेट और हेनरी फॉण्टेन ने किया। इसके प्रयासों से जिस पद्धति का प्रकाशन हुआ उसे मैनुअल डू रिपरटोरे यूनिवर्सल बिब्लियोग्राफिक (Manuel do Repertoire Unieversel Bibliographique) नाम दिया गया। यह लगभग पक्षात्मक पद्धति थी, जिसमें परिगणनात्मक वर्गीकरण को बपनाते हुए संश्लेषण की भी अनुमति दी गई थी। यह एक ग्रंथात्मक वर्गीकरण है, जो तीन संस्करणों में उपलब्ध है:

| | |
|-------------------|-------------------------------|
| पूर्ण संस्करण | 2,21,000 पद |
| मध्यम संस्करण | 70,000 (पूर्ण संस्करण का 30%) |
| संक्षिप्त संस्करण | 20,000 (पूर्ण संस्करण का 10%) |

इसका अँगरेजी भाषा का संस्करण ब्रिटिश स्टैंडर्ड इस्टीमेट ने BS : 1000 के रूप में प्रकाशित किया है। इस पद्धति को अब एक कांसेटियम (Consortium) ने अंगीकृत किया है, जिसके सदस्य इंग्लैंड, स्पेन, बेल्जियम, जापान, फ्रांस तथा स्वयं एफ आइ डी (FID) हैं। यह रितर संशाधित होती रहती है, और इसके संशोधन इसके वार्षिक बुलेटिन एक्सटेंशन एण्ड करेक्शंस टू यू डी सी (Extensions and Corrections to UDC) में घोषित किए जाते हैं। आजकल इस पद्धति का पुनर्निर्माण मुक्त पक्षात्मक पद्धति के रूप में किया जा रहा है।

4.3 कोलन क्लैसिफिकेशन (सी सी)

इसकी परिकल्पना एस.आर. रंगनाथन ने की थी। इसे प्रथम बार 1993 में मद्रास पुस्तकालय संघ ने प्रकाशित किया। कोलन क्लैसिफिकेशन ने पुस्तकालय सिद्धांत और व्यवहार के क्षेत्र में क्रांति ला दी। यह मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण है जो वर्गीकरण के सामान्य सिद्धांत के अनुरूप है तथा यह अभिधारणाओं एवं सिद्धांतों पर आधारित है। इस पद्धति की मुख्य संरचना का आधार इसके मूल विषयों की अनुसूचियों और पाँच मूलभूत श्रेणियाँ—व्यक्तित्व, पदार्थ, ऊर्जा, स्थान तथा काल से संबंधित एकलों को अनुसूचियाँ हैं। वैचारिक, शाब्दिक और अंकन तीन धरातलों की पहचान के बाद, वर्गीकरण का कार्य वस्तुपरक बना गया है। आज भी यह एक वैश्लेषी—संश्लेषणात्मक वर्गीकरण का सर्वोत्तम एवं दोषरहित उदाहरण है।

कोलन क्लैसिफिकेशन का सातवाँ संस्करण (1987) प्रकाशित हो चुका है। यद्यपि इसने वर्गीकरण के क्षेत्र को एक महत्वपूर्ण दिशा प्रदान की है तथापि इसे बहुतायत से उपयोग में नहीं लाया जा रहा है। इसका जटिल मिश्रित अंकन इसके उपयोग एवं लोकप्रियता में बाधक रहा है। किंतु इसमें प्रयुक्त युक्तियों तथा सिद्धांतों ने

NOTES

दूसरी वर्गीकरण पद्धतियों को प्रभावित किया है। इनमें डी डी सी, बी सी तथा यू डी सी के संशोधित संस्करण प्रमुख हैं। इसके अलावा, जिन अनेक नई पद्धतियों की परिकल्पना पर इसका प्रभाव पड़ा है, उनमें ब्रॉड सिस्टम ऑफ आर्डरिंग (BSO) प्रमुख है। क्लैसिफिकेशन रिसर्च ग्रुप (CGR) के सदस्यों ने इसकी विधियों का उपयोग अनेक विशिष्ट वर्गीकरण पद्धतियों का प्रारूप तैयार करने में किया है।

4.4 लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस क्लैसिफिकेशन (एल सी)

लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस क्लैसिफिकेशन विशुद्ध परिणामात्मक वर्गीकरण पद्धति है। यह समस्त वर्गीकरण पद्धतियों में सबसे

अधिक बृहदाकार है। इसके 45 खंड हैं। इसके 21 वर्ग हैं जो 29 भागों में विभाजित हैं। यह साहित्य समादेश की अवधारणा पर आधारित है। इसके मुख्य वर्गों को वर्णों से निर्दिष्ट किया गया है:

| | |
|--|--|
| A सामान्य वर्ग (Generalia) | N संगीत (Music) |
| B दर्शन एवं धर्मशास्त्र (Philosophy and Religion) | P भाषाविज्ञान और साहित्य (Languages and Literature) |
| C इतिहास (History) | Q विज्ञान (Science) |
| G भूगोल (Geography) | R आयुर्विज्ञान (Medicine) |
| H सामाजिक विज्ञान (Social Sciences) | S कृषि (Agriculture) |
| J राजनीतिशास्त्र (Political Science) | T प्रौद्योगिकी (Technology) |
| K विविधशास्त्र (Law) | U सैन्य विज्ञान (Military Science) |
| L शिक्षा (Education) | V नौसेना विज्ञान (Naval Science) |
| M संगीत (Music) | Z पुस्तकालय विज्ञान और ग्रंथसूची (Library Science & Bibliography) |

I, O, W, X, Y वर्णों को अभी तक रिक्त रखा गया है। आगे क विभाजनों को पुनः वर्णों से निर्दिष्ट किया गया है :

| | |
|-----------------------------|-----------------------------|
| Q विज्ञान (Science) | QC भौतिकी (Physics) |
| QA गणित (Mathematics) | QD रसायनशास्त्र (Chemistry) |
| QB खगोल शास्त्र (Astronomy) | |

इसके आगे के उप विभाजनों को संख्याओं से निर्दिष्ट किया गया है:

| | |
|---------|----------------------|
| QD | |
| 71-142 | Analytical Chemistry |
| 156-197 | Inorganic Chemistry |
| 241-44 | Organic Chemistry |

इसमें वर्णात्मक स्मृति सहायकों का आगे के उप-विभाजनों के लिए बार-बार प्रयोग किया गया है:

| | |
|-----------|-------------------|
| QD171 | Metals |
| QD172 | By group A/2 |
| QD172.M4 | Magnesium Group |
| QD172.P8 | Platinum Group |
| QD 182.R2 | Rare Earth Metals |

वर्ग और संख्यांक M4, P8 और R2 कोकटर की सरलीकृत लेखक सूचक तालिका से लिया गया है। अनेक बार वर्ग संख्याओं में प्रकाशन वर्षों को भी सम्मिलित कर लिया जाता है :

The Economic Way of Thikking by Paul T Helyne

NOTES

HB 171.5. H46 190

इसकी वर्ग संख्याएँ, जो आह्वान संख्याएँ हैं, लंबी होती है।

यह एक बृहदाकार पद्धति है, जो केवल फलक व्यवस्थापन के लिए ही उपयुक्त है। यह ग्रंथों को प्रतीक चिह्न प्रदान करके उनका स्थान निर्धारित करने वाली पद्धति है। परिणामात्मक होने के कारण इसमें उपयुक्त स्थानों पर नये विषयों का समायोजन करना एक जटिल कार्य है। पद्धति में ग्राह्यता के लिए मात्र एक विधि, रिक्त स्थान युक्ति (Gap device) का प्रयोग किया गया है।

उपयोग

यह तीन विशाल वर्गीकरण पद्धतियों में से एक है। अन्य दो पद्धतियाँ डी डी सी और यू डी सी हैं। लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस क्लैसिफिकेशन का प्रयोग विश्व के सबसे बड़े पुस्तकालय लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस (यू एस ए) में हो रहा है। सन् 1999 तक इस पुस्तकालय में 11.8 करोड़ प्रलेखों का संग्रह था। इसके अलावा इसका उपयोग यू एस ए के ही 60% शोध पुस्तकालयों तथा 50% महाविद्यालय पुस्तकालयों में हो रहा है। इसका उपयोग अफ्रीक, एशिया और यूरोप के कुछ विशाल पुस्तकालयों में भी हो रहा है। लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस क्लैसिफिकेशन की वर्ग संख्याएँ सी आई पी डेटा (CIP Data) और मार्क रिकार्ड्स (Mark Records) पर भी उपलब्ध है। यह पद्धति अन्य केंद्रीकृत एजेंसियों द्वारा भी उपयोग में लाई जा रही है। इसका उपयोग ऑनलाइन सूचियों के लिए भी किया जा रहा है। इसे भारी संस्थगत समर्थन प्राप्त होने के कारण इसका भविष्य असंदिग्ध है।

4.5 बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन (बी सी)

बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन का प्रारूप 1940-53 के दौरान एच.ई. ब्लिस (1870-1955) ने तैयार किया है। ब्लिस सिटी कॉलेज, न्यूयार्क के पुस्तकालयाध्य थे। अपने अपना संपूर्ण जीवन वर्गीकरण विषय के अध्ययन में लगा दिया था। जब इसकी पद्धति अंतिम रूप से 1953 में प्रकाशित हुई तब इसमें अनेक प्रशंसनीय विशेषताएँ थीं, किंतु इस पद्धति का उपयोग अधिक नहीं हो सका। इसके दिवतीय संस्करण को बीसी2 के नाम से जाना जाता है। इसे यूनाइटेड किंगडम में, जे. मिल्स द्वारा तैयार किया गया था। यह सामान्य वर्गीकरण पद्धतियों में, सबसे अधिक वैज्ञानिक पद्धति है और पक्षात्मक वर्गीकरण का एक अच्छा नमूना प्रस्तुत करती है।

Mills, J. (et al) (1977). *Bliss Bibliographic Classification*. 2nd 3d. London Butterworths.

मुख्य वर्ग और अंकन

| | |
|--|---|
| Q दर्शन, गणित इत्यादि (Philosophy, Mathematics, etc.) | Q समाज कल्याण (Social Welfare) |
| B/G भौतिकी, प्राकृतिक विज्ञान (Physics, Natural Sciences) | R राजनीति शास्त्र (POLitical Science) |
| H मानव, मानवशास्त्र (Man., Anthropology) | S विधि (Law) |
| I मनोविज्ञान (Psychology) | T अर्थशास्त्र (Economics) |
| J शिक्षा (Education) | U प्रौद्योगिकी (Technology) |
| | V ललित कलाएँ (Fine arts) |
| | W भाषा विज्ञान और साहित्य (Languages and Literature) |

K सामाजिक विज्ञान
(Social Sciences)

Z धर्म (विकल्प P)
(Religion (Alternative P))

पुस्तकालय वर्गीकरण
पद्धतियों की प्रजातियाँ

P धर्म (विकल्प Z)
(Religion (Alternative Z))

NOTES

इसके अलावा अंकोंके संश्लेषण के लिए 6 सहायक तालिकाएँ दी गई हैं:

- (1) सामान्य उपविभाजन (Common Subdivisions)
- (2) व्यक्ति (Persons)
- (3) स्थान (Places)
- (4) भाषा (Languages)
- (5) प्रजाति समूह (Ethnic groups)
- (6) समयावधि (Periods of time)

विशिष्ट लक्षण

- (1) इसके मुख्य वर्गों का अनुक्रम सुनियोजित है। इसका आधार ब्लिस की 'वैज्ञानिक और शैक्षिक सहमति' की विचारधारा से है।
- (2) स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप कुछ मुख्य वर्गों को वैकल्पिक स्थान प्रदान किए गए हैं। उदाहरणार्थ—धर्म (Religion) को या तो P के अंतर्गत या Z के अंतर्गत रखा जा सकता है। इसी प्रकार आर्थिक इतिहास को या तो सामान्य इतिहास के साथ या अर्थशास्त्र के साथ रखा जा सकता है।

अंकन

इसका अंकन प्रशंसनीय है। यह जटिलता में संतुलित है। यह तर्कसंगत रूप में मिश्रित, सरल, सूक्ष्म किंतु प्रभावती है। यह पूर्वव्यापी (Retroactive) है अर्थात् इसे पीछे की ओर से जोड़ा जा सकता है :

JK Curriculum
JN Secondary education
JNK Secondary school curriculum

पद्धति का केवल कुछ भाग ही प्रकाशित किया गया है, जबकि दूसरे भागों के प्रकाशन का कार्य प्रगति पर है। धनाभाव एवं मानव संसाधनों के अभाव के कारण इस कार्य की गति धीमी है।

उपयोग

यह अभी बहुत लोकप्रिय नहीं है। यू के, आस्ट्रेलिया और अफ्रीका के लगभग 90 पुस्तकालय इसका उपयोग कर रहे हैं। तकनीकी दृष्टि से आधुनिक और उत्कृष्ट वर्गीकरण पद्धति होने के कारण इसका भविष्य उज्ज्वल है।

4.6 ब्रॉड सिस्टम ऑफ आर्डरिंग (बी एस ओ)

यूनेस्को को 1971 में युनिसिस्ट (UNISIST) प्रोग्राम के लिए एक परिवर्तनपरक भाषा (Switching Language) की आवश्यकता थी। ऐसी भाषा के लिए कार्य की शुरुआत यूरोपियन प्रोजेक्ट के एक भाग के रूप में 1972 में हुई। बूडापेस्ट में 1972 में आयोजित एक बैठक के बाद इंटरनेशनल ऑफ डॉक्युमेंटेशन (FID) ने एक नया कार्यकारी समूह FID/SRC (Subject Field Reference Code) स्थापित किया जिसका कार्यक्षेत्र 'ज्ञान के समस्त क्षेत्रों के लिए सूचना तंत्रों के मध्य आपसी संबंध एवं सहयोग स्थापित करना था। इसके लिए एक ऐसी विस्तृत विषय आर्डरिंग प्रणाली का प्रारूप तैयार करना और विकसित करना

NOTES

था, जिसका उपयोग हस्तचालित प्रणाली और यांत्रिकी सूचना तंत्रों में किया जा सके।' इसका प्रथम प्रारूप इरिक जे. कोट्स और जी. ए. लॉयड ने तैयार किया। तृतीय संस्करण 1978 में एफ आई डी (FID) द्वारा प्रकाशित किया गया।

Coates, Eric J. (et al), (1978). *Broad System of Ordering (BSO) : Schedule and Index* 3rd ed. The Hague : FID.p.198.

इसके प्रमुख विषय क्षेत्रों की रूपरेखा इस प्रकार है :

| | |
|---|---|
| 100 सामान्य ज्ञान (Knowledge in general) | 500 मानविकी सांस्कृतिक एवं सामाजिक विज्ञान (Humanities, Cultural and Social Science) |
| 200 विज्ञान और प्रौद्योगिकी (Science and Technology) | 600/890 प्रौद्योगिकी (Technology) |
| 300 जीव विज्ञान (Life Science) | 910 भाषा, भाषाविज्ञान, और साहित्य (Language, Linguistics and Literature) |
| 460 शिक्षा (Education) | 940 कलाएँ (Arts) |
| 480 मनोरंजन एवं खेलकूद (Sports and Games) | 970 धर्म (Religion) |

मूलरूप में इसमें केवल 4000 विस्तृत उपविभाजन थे, जिन्हें अब विस्तार प्रदान कर 12000 की दिया गया है। इसमें अतिरिक्त स्थान और काल उपविभाजनों की पृथक्-पृथक् अनुसूचियाँ हैं। इसका अंकन न केवल दशांसी है अपितु शतांशी (100 भागों में विभाजित) और सहस्रांशी (1000 भागों में विभाजित) भी हैं। इसमें संख्याओं का संश्लेषण संभव है।

केवल दो विराम चिह्नों '-' (Hyphen) और ',' (Comma) का प्रयोग किया गया है।

उदाहरणार्थ :

580-112 Philosophy of Economics

395,60 Environmental Pollution

उपयोग

इसकी अभिकल्पना एक परिवर्तनपरक भाषा के रूप में की गई थी। अर्थात् एक मध्यस्थ अथवा परिवर्तन की भाषा के रूप में, जिसके द्वारा सूचनास को, एक अनुक्रमणीकरण तथा से दूसरी भाषा में परिवर्तित किया जा सके, अभिकल्पित है। इसका अर्थ है कि इसकी परिकल्पना सूचना केंद्रों को वर्गीकृत करने के लिए की गई थी, न कि प्रलेखों को। किंतु इसका अभीष्ट उद्देश्य के बावजूद इसका उपयोग कुद पुस्तकालयों के शैल्फ वर्गीकरण के लिए किया जा रहा है इसे खोज नीति के निरूपण एवं उसे रुपांतरित करने में सहायक के रूप में उपयोगी पाया गया है।

ब्रॉड सिस्टम ऑर्डरिंग (डी एस ओ) आज एमएस—डॉस (MS-DOS) के परिवेश में कंप्यूटर डिस्क पर उपलब्ध है। इसका प्रतिलिप्यधिकार नवनिर्मित बी बस ओ पैनल लिमिटेड के निर्देशक ई.जे. कोट्स के पास है।

5. गहन अनुसूचियाँ

गहन अनुसूची एक विशिष्ट वर्गीकरण पद्धति भी कहा गया है। गहन अथवा विशिष्ट वर्गीकरण अनुसूचियाँ, सूक्ष्म साहित्य क्षेत्रों जैसे—पत्रिका आलेखों, लघु शोधप्रबंधों, रिपोर्ट्स, स्टेण्डर्स इत्यादि सूक्ष्म विषयों को वर्गीकृत करने के लिए विस्तृत पद्धतियाँ होती हैं। अमुद्रित संचार माध्यमों जैसे—मानचित्रों, इलेक्ट्रॉनिक प्रलेखों, माइक्रोफॉर्म्स, फोटोग्राफ्स इत्यादि के लिए भी इनका प्रयोग किया जा सकता है। बहुत-सी गहन

NOTES

अनुसूचियाँ संगीत, लोक प्रशासन, वनविद्या, व्यावसायिक सुरक्षा, लेखन, यांत्रिकी, बागवानी, सिविल इंजीनियरिंग तथा वास्तुकला जैसे विषयों पर भी उपलब्ध है।

इस बात पर विवाद है कि क्या हमें वास्तवमें विशिष्ट अनुसूचियाँ की आवश्यकता है? रंगनाथन का मत था कि सामान्य वर्गीकरण को ही इतना विस्तृत बनाया जा सकता है कि वह सामान्य वर्गीकरण तथा विशिष्ट वर्गीकरण दोनों पद्धतियों की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। वे कहा करते थे कि उनकी कोलन क्लैसिफिकेशन पद्धति एक हाथी की सूँड के समान है, जो एक तिनके अथवा पूरे पेड़ को समान रूप से उठा सकती है। कुछ सामान्य पद्धतियों जैसे—यूनिवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन—(यू डी सी) और लाइब्रेरी ऑफ कॉंग्रेस क्लैसिफिकेशन (एल सी) ने विभिन्न वर्गों के लिए लघु पुस्तिकाएँ प्रकाशित की हैं। यद्यपि ये सामान्य पुस्तकालयों के लिए हैं तथापि ये इतनी विस्तृत हैं कि इन्हें विशिष्ट अनुसूचियों के रूप में भी उपयोग में लाया जा सकता है।

जो कुछ भी हो, अनेक प्रकार की ज्ञात ओर अज्ञात विशिष्ट वर्गीकरण पद्धतियाँ विद्यमान हैं। ऐसी अनेक पद्धतियों को मुख्यतः क्लैसिफिकेशन रिसर्च ग्रुप (CRG), लंदन और प्रलेखन शोध एवं प्रशिक्षण केंद्र (DRTC), बंगलोर द्वारा तैयार किया गया है। प्रलेखन शोध एवं प्रशिक्षण केंद्र, बंगलोर द्वारा तैयार की गई विशिष्ट अनुसूचियाँ कोलन क्लैसिफिकेशन की सामान्य अनुसूचियों के आधार पर ही तैयार की गई हैं अर्थात् ये सामान्य अनुसूचियों का विस्तारित रूप प्रस्तुत करती हैं।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. यूनिवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन का परिचय दीजिए।

4. कोलन क्लैसिफिकेशन का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

6. सार-संक्षेप

पुस्तकालय वर्गीकरण की प्रथम आधुनिक पद्धति अर्थात् ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के 1876 में प्रकाशन के बाद अनेक सामान्य वर्गीकरण पद्धतियों का विकास हुआ। रंगनाथन ने इन्हें पाँच प्रजातियों में विभाजित किया है, जिनमें नाम हैं—परिगणनात्मक, लगभग परिगणनात्मक, लगभग पक्षात्मक, अनम्भ पक्षात्मक और मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धतियाँ। प्रजातियों की श्रृंखला इस बात पर निर्भर करती है कि परिगणन किस सीमा तक है अथवा इनमें मुख्य अनुसूचियों तथा विशिष्ट एवं सामान्य एकलों की सहायता से संश्लेषण का प्रावधान किस सीमा तक है। लाइब्रेरी ऑफ कॉंग्रेस क्लैसिफिकेशन अथवा ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के प्रारंभिक संस्करण परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति के उदाहरण हैं। कोलन क्लैसिफिकेशन के चतुर्थ संस्करण (1952) के बाद के संस्करण मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण के उदाहरण हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से यह विकास परिगणनात्मक से पक्षात्मक वर्गीकरण की ओर हुआ है। यह कहना सही होगा कि पुस्तकालय वर्गीकरण का भविष्य वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक प्रकृति वाली पक्षात्मक पद्धतियों के साथ सुनिश्चित है।

सामान्य वर्गीकरण पद्धतियों में ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन प्रथम बार 1876 में प्रकाशित हुई। इसकी परिकल्पना मैल्विल ड्यूई ने की थी। इसका 21 वाँ संस्करण 1996 में प्रकाशित हो चुका है। इस पद्धति को 135 देशों के 2 लाख पुस्तकालय उपयोग में ला रहे हैं। यह अत्यधिक लोकप्रिय पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति है। यू डी सी डी डी सी पर आधारित वर्गीकरण पद्धति है। इसकी परिकल्पना सूक्ष्म साहित्य को वर्गीकृत करने के लिए एक ग्रंथात्मक वर्गीकरण के रूप में की गई थी। यह संपूर्ण मध्यम और संक्षिप्त तीन प्रकार के संस्करणों में उपलब्ध है। इसका उपयोग पूरे विश्व में लगभग एक लाख पुस्तकालय और सूचना केंद्र कर रहे

NOTES

हैं। कोलन क्लैसिफिकेशन पद्धति की परिकल्पना 1933 में एस.आर. रंगनाथन की थी। इन्हें भारत में पुस्तकालय विज्ञान और पुस्तकालय आंदोलन का जनक कहा जाता है। इसका सातवाँ संस्करण 1987में प्रकाशित हो चुका है। यह मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण का एक नमूना है, जिसका सैद्धांतिक आधार सृदृढ़ है। इसका अंकन जटिल है जिका आधार मिश्रित है। दूसरी और, लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस क्लैसिफिकेशन को लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस, यू एस ए के लिए निर्मित किया गया था। इसके 45 खंड हैं, जिसमें 11,000 से अधिक पृष्ठ हैं। यह एक परिगणनात्मक वर्गीकरण है जिसमें 21 मुख्य वर्ग हैं। इसका अंकन मिश्रित है। यद्यपि इसका सैद्धांतिक आधार सृदृढ़ नहीं है, तथापि यह यू एस के बड़े पुस्तकालयों में लोकप्रिय है। बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन की परिकल्पना 1940-1953 में यू एस ए में एच.ई. बिलस ने की थी। इसके द्वितीय संस्करण का 1977 से, अंशतः संशोधन यू के के जे. मिल्स द्वारा किया जा रहा है। रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित पक्ष विश्लेषण की आधुनिक विधियों पर आधारित होने के कारण, यह अत्यधिक वैज्ञानिक वर्गीकरण पद्धति समझी जाती है। इसे लगभग 90 पुस्तकालयों में उपयोग में लाया जा रहा है। बॉड सिस्टम ऑफ आर्डरिंग (BSO) की परिकल्पना 1977 में एक परिवर्तनपरक भाषा के रूप में की गई थी। कुछ पुस्तकालय इसका उपयोग शेल्फ व्यवस्था के लिए कर रहे हैं।

विशिष्ट वर्गीकरण पद्धतियों गहन वर्गीकरण के लिए होती हैं। अर्थात् ये सूक्ष्म साहित्य को वर्गीकृत करने के लिए होती हैं। विशिष्ट पद्धतियों का उपयोग विशिष्ट प्रकार के साहित्य जैसे—माइक्रोफार्मस अथवा बाल साहित्य के लिए भी किया जा सकता है। कुछ पुस्तकालयाध्यक्षों का मत है कि विशिष्ट वर्गीकरण पद्धतियों की आवश्यकता नहीं है। उनका कहना है कि सामान्य वर्गीकरण पद्धतियों को प्रारूप ही इस प्रकार बनाया जाय कि वे ही दोनों उद्देश्यों को पूरा लें। दूसरे शब्दों में एक विशिष्ट वर्गीकरण पद्धति सामान्य वर्गीकरण पद्धति के किसी भाग का विस्तारित रूप हो सकती है। विशिष्ट वर्गीकरण पद्धतियाँ, क्लैसिफिकेशन रिसर्च ग्रुप (लंदन) और प्रलेखन शोध एवं प्रशिक्षण केंद्र (बंगलोर) तथा अनेक अन्य व्यक्तियों एवं संस्थाओं द्वारा अभिकल्पित की जा रही हैं।

7. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. "परिगणना" का शाब्दिक अर्थ सूचीबद्ध करना अथवा गणना करना है। "वर्गीकरण की परिगणनात्मक पद्धति में अनिवार्य रूप से एक अनुसूची होती है जिसमें भूत, वर्तमान तथा संभावित भविष्य के समस्त विषयों को परिगणित किया गया होता है।" इसका अर्थ यह है कि विभिन्न विषयों की वर्ग संख्याओं को अनुसूची में परिगणित कर दिया जाता है। वर्ग संख्या निर्मित करने के लिए इसमें पृथक् से सामान्य एकलों की कोई संपूरक अनुसूची नहीं होती। वर्गीकरण की इस प्रकार की प्रजाति का एक अच्छा उदाहरण लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस क्लैसिफिकेशन (LC) पद्धति है। यह 11,300 पृष्ठों की एक बृहत् अनुसूची है जो खंडों में विभक्त है। इसमें वर्ग संख्याओं के संश्लेषण का कोई प्रावधान नहीं है।

उदाहरणार्थ:

| | | | |
|-----|-------------------------|------|-----------------|
| HA | Statistics | HB | Economic theory |
| HAI | Statistical periodicals | HB9 | Periodicals |
| HA9 | Statistics conferences | HB21 | Conferences |

2. वर्गीकरण की विभिन्न प्रजातियों के विकास क्रम की पंक्ति में लगभग पक्षात्मक वर्गीकरण का स्थान, लगभग परिगणनात्मक वर्गीकरण और मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण के बीच का है। ऐसी प्रजातियों की एक बृहत् अनुसूची होती है, जिसमें भूत, वर्तमान और संभावित भविष्य से संबंधित मूल, यौगिक, यहाँ तक कि मिश्रित विषय भी सम्मिलित होते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ अनुसूचियाँ सामान्य एकलों की और कुछ अनुसूचियाँ विशिष्ट एकलों की होती हैं। इसमें मुख्य अनुसूची के अंकों के साथ, सामान्य तथा विशिष्ट एकलों को जोड़ने के लिए, कुछ संकेतक अंकों या योजक चिहनों का भी प्रावधान है। ये संकेतक अंक अनुसूचियों में प्रयुक्त, सारगर्भित तंत्रों से भिन्न होते हैं। इस प्रकार की वर्गीकरण पद्धतियों के उदाहरण यूनिवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन (1905-1994+) और बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन का प्रथम संस्करण (BCI) (1940-1953) हैं। इन पद्धतियों में, यद्यपि अधिकांश वर्ग संख्याएँ बनी

NOTES

बनाई होती हैं, फिर भी बहुत सी वर्ग संख्याओं को सहायक तालिकाओं की सहायता से संश्लेषित करके निर्मित किया जा सकता है। बनी बनाई वर्ग संख्याएँ बहुखंडीय (Polythetic) होती हैं और उनकी संरचना अधिकतर पारदर्शी होती है। अनुसूचियाँ तुलनात्मक दृष्टि से लघु आकार की हैं, किंतु मुख्य अनुसूचियाँ फिर भी बृहदाकार हैं। अनुसूचियों के संपूरक के रूप में अनेक अतिरिक्त तालिकाएँ हैं, जिसे वर्ग संख्याओं की संश्लेषण क्षमता में कई गुना वृद्धि हो गई है। बहुखंडीय होने के कारण इसके पक्षों को आंतरिक विस्तार प्रदान किया जा सकता है। इस पद्धति में 'कुछ एकल पक्षों के प्रयोग का तथा वर्ग संख्याओं को कोलन (:) तथा दूसरे प्रकारके चिहनों की सहायता से जोड़ने का प्रावधान है, किंतु ऐसा तय किया जाता है जब अनुसूची की एकल संख्याओं से वांछित परिणाम नहीं निकल पाते हों। इस प्रकार यूनियवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धति ज्ञान जगत् में नवोदित विषयों के कारण उत्पन्न दबाव के प्रति पूर्णरूपेण लचीली (Resilient) सिद्ध हुई है।' इसी प्रकार बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन का लचीलापन यूनियवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन के लचीलेपन से तुलनीय है।

3. यूनियवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन (यू डी सी) : ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन को आधार बनाते हुए यूनियवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धति का विकास 1895 में पॉल ऑटलेट और हेनरी फॉण्टेन ने किया। इसके प्रयासों से जिस पद्धति का प्रकाशन हुआ उसे मैनुअल डू रिपरटोरे यूनियवर्सल बिब्लियोग्राफिक (Manual do Repertoire Unieversel Bibliographique) नाम दिया गया। यह लगभग पक्षात्मक पद्धति थी, जिसमें परिगणनात्मक वर्गीकरण को अपनाते हुए संश्लेषण की भी अनुमति दी गई थी। यह एक ग्रंथात्मक वर्गीकरण है, जो तीन संस्कारणों में उपलब्ध है:

| | |
|-------------------|-------------------------------|
| पूर्ण संस्करण | 2,2,1,000 पद |
| मध्यम संस्करण | 70,000 (पूर्ण संस्करण का 30%) |
| संक्षिप्त संस्करण | 20,000 (पूर्ण संस्करण का 10%) |

इसका अँगरेजी भाषा का संस्करण ब्रिटिश स्टैंडर्ड इस्टीमेट ने BS : 1000 के रूप में प्रकाशित किया है। इस पद्धति को अब एक कांसेटियम (Consortium) ने अंगीकृत किया है, जिसके सदस्य इंग्लैंड, स्पेन, बेल्जियम, जापान, फ्रांस तथा स्वयं एफ आइ डी (FID) हैं। यह रितर संशाधित होती रहती है, और इसके संशोधन इसके वार्षिक बुलेटिन एक्सटेंशन एण्ड करेक्शंस टू यू डी सी (Extensions and Corrections to UDC) में घोषित किए जाते हैं। आजकल इस पद्धति का पुनर्निर्माण मुक्त पक्षात्मक पद्धति के रूप में किया जा रहा है।

4. कोलन क्लैसिफिकेशन (सी सी) : इसकी परिकल्पना एस.आर. रंगनाथन ने की थी। इसे प्रथम बार 1993 में मद्रास पुस्तकालय संघ ने प्रकाशित किया। कोलन क्लैसिफिकेशन ने पुस्तकालय सिद्धांत और व्यवहार के क्षेत्र में क्रांति ला दी। यह मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण है जो वर्गीकरण के सामान्य सिद्धांत के अनुरूप है तथा यह अधिधारणाओं एवं सिद्धांतों पर आधारित है। इस पद्धति की मुख्य संरचना का आधार इसके मूल विषयों की अनुसूचियाँ और पाँच मूलभूत श्रेणियाँ—व्यक्तित्व, पदार्थ, ऊर्जा, स्थान तथा काल से संबंधित एकलों को अनुसूचियाँ हैं। वैचारिक, शाब्दिक और अंकन तीन धरातलों की पहचान के बाद, वर्गीकरण का कार्य वस्तुपरक बना गया है। आज भी यह एक वैश्लेषी—संश्लेषणात्मक वर्गीकरण का सर्वोत्तम एवं दोषरहित उदाहरण है।

कोलन क्लैसिफिकेशन का सातवाँ संस्करण (1987) प्रकाशित हो चुका है। यद्यपि इसने वर्गीकरण के क्षेत्र को एक महत्वपूर्ण दिशा प्रदान की है तथापि इसे बहुतायत से उपयोग में नहीं लाया जा रहा है। इसका जटिल मिश्रित अंकन इसके उपयोग एवं लोकप्रियता में बाधक रहा है। किंतु इसमें प्रयुक्त युक्तियों तथा सिद्धांतों ने दूसरी वर्गीकरण पद्धतियों को प्रभावित किया है। इनमें डी डी सी, बी सी तथा यू डी सी के संशाधित संस्करण प्रमुख हैं। इसके अलावा, जिन अनेक नई पद्धतियों की परिकल्पना पर इसका प्रभाव पड़ा है, उनमें ब्रॉड सिस्टम ऑफ आर्डरिंग (BSO) प्रमुख है। क्लैसिफिकेशन रिसर्च ग्रुप (CGR) के सदस्यों ने इसकी विधियों का उपयोग अनेक विशिष्ट वर्गीकरण पद्धतियों का प्रारूप तैयार करने में किया है।

NOTES

8. मुख्य शब्द

वैश्लेषी-संश्लेषणत्मक वर्गीकरण
(Analytico-Synthetic Classification)

: अभिधारणाओं और सिद्धांतों पर आधारित मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण। इसमें विषयों का विश्लेषण कर, फिर योजक चिहनों द्वारा संश्लेषण किया जाता है। इसमें एक मूल विषय के अंतर्गत आने वाले यौगिक विषयों के लिए कोई अनम्य पूर्व निर्धारित पक्ष-परिसूत्र नहीं होता।

सामान्य सहायक (Common Auxiliaries) :

वर्ग संख्याएँ निर्मित करने के लिए मुख्य अनुसूचियों के साथ-साथ उपयोग में लाई जाने वाली संपूरक की अनुसूचियाँ। पक्षात्मक वर्गीकरण में ऐसी अनेक अनुसूचियाँ होती हैं। इस प्रकार के सहायकों के उदाहरणों में, रूप विभाजनों, भौगोलिक विभाजन, काल विभाजनों, भाषाओं तथा पदार्थों इत्यादि की पृथक तालिकाएँ आती हैं।

9. अभ्यास-प्रश्न

1. पुस्तकालय वर्गीकरण की विविध प्रजातियों की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।
2. परिगणनात्मक एवं पक्षात्मक वर्गीकरण का तुलनात्मक विवरण दीजिए।
3. ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन एवं लाइब्रेरी ऑफ क्लासीफिकेशन का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
4. बिब्लियोग्राफी क्लैसिफिकेशन की विशेषताएँ बातइए।
5. गहन अथवा विशिष्ट वर्गीकरण अनुसूचियों के प्रयोग एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालिये।

10. संदर्भ ग्रंथ सूची

Chan, Lois Mai (1994), *Cataloguing and Classification : An Introduction, 2nd ed, New York : Mc Graw Hill. pp. 269 – 399*

Hunterl Eric J. (1988). *Classification Made Simple, Aldershot, UK : Gower, Chapter 12-13.*

Husian, Shabahat (1993), *Library Classification : Facts and Analysis. New Delhi. Tata McGraw-Hill. pp 272-277.*

Ranganathan, S.R. (1967). *A Descriptive Account of the Colon Classification. Bombay : Asia Publishing.*

Ranganathan S.R. (1989), *Prolegomena to Library Classification. 3rd ed. Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science. pp. 94 – 110.*

शर्मा, पाण्डेय एस. के (1996)। सरलीकृत वर्गीकरण सिद्धांत। दिल्ली : ज्ञान गंगा।

विषयों के सम्बन्ध में जानकारी

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्याय के उद्देश्य
2. परिचय
3. विषय जगत्
 - 3.1 पुस्तकालय विज्ञान के सूत्रों के परिप्रेक्ष्य में विषय जगत्
2. विषय निर्माण की विधियों
4. विषयों के अध्ययन की विधि
 - 4.1 विषयों के सरल और कठिन पक्षों को समझना
5. सार-संक्षेप
6. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
7. मुख्य शब्द
8. अभ्यास प्रश्न
9. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य :

इस अध्याय में आपको जिस विषय से परिचित कराएँगे वह है 'विषय जगत् : संरचना, विकास और विषयों के अध्ययन के लिए प्रयुक्त विधियाँ'। इस अध्याय का अध्ययन करने के बाद आप :

- विषय जगत् की संरचना और विकास के बारे में पूर्ण रूप से समझ सकेंगे;

विषयों के अध्ययन के लिए प्रयुक्त विधियों से परिचित हो सकेंगे और उनके सम्बन्ध में गहन जानकारी प्राप्त कर सकेंगे; तथा

हैंडबुक के निर्माण के लिए इन विधियों का प्रयोग कर सकेंगे।

2. परिचय :

इस पाठ्यक्रम भी 1 में आपको पुस्तकालय वर्गीकरण के तत्त्वों के सम्बन्ध में जानकारी दी गई थी, जिसमें पुस्तकालय वर्गीकरण जैसे वैज्ञानिक विषय में, तकनीकी शब्दावली का महत्त्व पदों का अर्थ तथा पुस्तकालय वर्गीकरण के विद्घांत और अभ्यास में इनके प्रयोग की विवेचना की गई थी।

इस पाठ्यक्रम की इकाई 2 का उद्देश्य, आपको वर्गीकरण के सामान्य विद्घांत से परिचित करना है, साथ ही यह बताना है कि वर्गीकरण की विभिन्न पद्धतियों में विषय जगत् का मानचित्रण किस प्रकार किया गया है। प्रस्तुत इकाई (इकाई 5) में विषयों और उनके अध्ययन के लिए प्रयुक्त विधियों की चर्चा की गई है। इसके प्रथम भाग में, जैसा कि इसके नाम से ही विदित होता है, विषय जगत् की विशेषताओं, विशेषतः विषयों के निर्माण से सम्बन्धित विधियों पर प्रकाश डाला गया है; जबकि बाद वाले भाग में उन सुविचारित विधियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है, जिनका अनुसरण नवीन विषयों की जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता है, जो सम्बन्धित पाठकों को आवश्यक सूचना सहायता प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो सके। इस विधि में प्रलेखों के माध्यम से विषयों का व्यवस्थित अध्ययन, वर्गीकरण पद्धतियों का उपयोग, वर्गीकरण पद्धतियों की परिकल्पना और विकास तथा अन्य विधियाँ सम्मिलित हैं, जो पुस्तकालय एवं सूचना कर्मियों को विषयों के सरल और कठिन पक्षों में सहायक हो सकती हैं।

3. विषय जगत्

सार रूप में, पुस्तकालय सेवा का सम्बन्ध, समाज में रहने वाले व्यक्तियों और समूहों के लिए प्रलेखों में निहित ज्ञान की पुनर्प्राप्ति तथा प्रसार करना है। इसलिए पुस्तकालय सेवाओं के मूल्यों को प्रभावित करने वाले दो प्रमुख मानदण्ड हैं :

पाठक जगत्; और

विषय जगत्।

पाठकों को दी जाने वाली सेवाओं में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए, ऐसी विधियाँ एवं तकनीक को अपनाना और उनका अनिवार्य हो जाता है जो प्रलेखों में निहित विषयों के वर्गीकरण के कार्य के सरल बनाने में सहायक हों। इस प्रकार, उनके द्वारा ज्ञान की पुनर्प्राप्ति और पुस्तकालय विज्ञान के सूत्रों के अनुरूप सेवा प्रदान करने में सहायता मिलती है। किन्तु ऐसा तभी सम्भव है, जब पुस्तकालय विान विषय, उपर्युक्त प्रत्येक मानदण्ड के मूल्यों में हो रहे परिवर्तनों की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने आपको विकसित करता रहे।

आगे के अनुभागों में हम पुस्तकालय विान में सम्बन्धित मानदण्डों में से एक मानदण्ड, विषय जगत् के सम्बन्ध में विचार करेंगे :

3. 1. पुस्तकालय विज्ञान के सूत्रों के परिप्रेक्ष्य में विषय जगत्

सूचना व्यवसायियों के लिए विषय जगत् की संरचना और विकास का अध्ययन करना आवश्यक है, इसे पुस्तकालय विज्ञान के पंच सूत्रों के अनिवार्य निहितार्थ के रूप में व्यक्त किया जा सकता है।

पुस्तकालय विज्ञान के प्रथम सूत्र के निहितार्थ समझाइए।

प्रथम सूत्र और उसके निहितार्थ :

प्रथम सूत्र है—'पुस्तकों उपयोग के लिए हैं'। यहाँ 'पुस्तक' पद एक सजातीय पद है जो सभी प्रकार के प्रलेखों को निर्दिष्ट करने के लिए उपयोग में लाया जाता है, इनमें स्वयं पुस्तकें, पत्रिकाएँ, तकनीकी प्रतिवेदन, पेटेन्स, विनिर्देशन, अपारंपरिक और मेटा प्रलेख (Meta Documents) शामिल हैं। प्रलेख एक त्रयी है जिसके निम्नलिखित संघटक हैं :

- (i) आत्मा—निहित ज्ञान है;
- (ii) सूक्ष्म शरीर—ज्ञान की अभिव्यक्ति और भाषा है; और
- (iii) स्थूल शरीर—प्रलेख का भौतिक आकार है।

दूसरी ओर, 'उपयोग' पद से अभिप्राय व्यवस्थित अभिव्यक्त और प्रलेखों में निहित ज्ञान का आवश्यक रूप से उपयोग है। इसका तात्पर्य इन विषयों से है जिनकी जानकारी प्रलेखों में दी गई है और जिनका उपयोग पाठकों द्वारा किया जाता है। ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रलेख के सूक्ष्म शरीर का होना आवश्यक है, और यह ज्ञान की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है साथ ही प्रलेख का स्थूल शरीर निहित ज्ञान को, सभी स्थानों एवं सभी कालों में प्रसारित करने का एक सुविधाजनक माध्यम है। इस प्रकार प्रलेख पुनर्प्राप्ति प्रणाली (document retrieval system) अनिवार्यतः 'विषय' के वर्गीकरण तथा उसकी खोज, पुनर्प्राप्ति और सेपा से सम्बन्धित है।

विषय को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है : विचारों का ऐसा सुव्यवस्थित एवं सुसंबद्ध पिंड, जिसका विस्तार एवं जिसकी गहराई किसी सामान्य व्यक्ति की अभिरूचिके क्षेत्र से सुसंगत हो और उसकी बौद्धिक क्षमता तथा अपरिहार्य विशेषज्ञता के अंतर्गत सुविधानुकूल रूप से समाहित हो सके।

निहितार्थ

प्रथम सूत्र की संतुष्टि के लिए प्रलेखों तथा मुख्य संलेखों का व्यवस्थापन, प्रमुख रूप से, प्रलेखों में निहित विषयों की विशेषताओं पर आधारित होना चाहिए। इसलिए सफल वर्गीकरण, शोध तथा विषयों की पुनर्प्राप्ति और पाठक सेवाओं के लिए, इन विशेषताओं का अध्ययन परमावश्यक है।

इसके अतिरिक्त 'उपयोग' का मापदण्ड विशेष महत्त्व रखता है। इसलिए यदि पाठकों की आवश्यकताएँ भिन्न-भिन्न हैं तो उन्हें समझ लेना उपयोगी रहेगा। ऐसा करने पर विषयों के मध्य कुछ घनिष्ठ सम्बन्धों और कुछ भिन्नताओं की पहचान हो सकेगी।

पुस्तकालय विज्ञान के द्वितीय सूत्र का निहितार्थ क्या है ?

द्वितीय सूत्र और उसका निहितार्थ

द्वितीय सूत्र, 'प्रत्येक पाठक को उसका ग्रन्थ मिले', का अभिप्राय है कि प्रलेखों का वर्गीकरण एवं व्यवस्थापन तथा उनके मुख्य संलेखों का निर्माण इस प्रकार किया जाए कि वे पाठक की अभिरूचि के उपयुक्त प्रलेखों को एक स्थान पर ला सकें, साथ ही उन्हें उनके पारस्परिक सम्बद्धता के घटते हुए क्रम में व्यवस्थित कर सकें। दूसरे शब्दों में, प्रलेखों और उनके लिए निर्मित संलेखों के व्यवस्थापन में अपूपा पैटर्न (APUPA Pattern) (असंबद्ध : Alien, उपच्छया : Penumbral, प्रच्छया : Umbral, उपच्छया : Penumbral, असंबद्ध : Alien) का अनुपालन वांछनीय है।

NOTES

NOTES

तृतीय सूत्र और उसका निहितार्थ

तृतीय सूत्र, 'प्रत्येक ग्रन्थ को उसका पाठक मिले', का आशय है कि प्रलेखों की पुनर्प्राप्ति के समय, पाठक द्वारा वांछित कोई भी प्रलेख, पाठक द्वारा खोजे जाने पर उसके दृष्टिपथ में आने से वंचित नहीं रहना चाहिए। विषय जगत् की संरचना और विकास के अध्ययन से यह पता चलता है कि पुस्तकालय विज्ञान की कोई अकेली विधि इस सूत्र को संतुष्ट नहीं कर सकती। इसके लिए अनेक उपकरणों और विधियों का साथ-साथ अथवा एक के बाद एक प्रयोग बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक पाठकों की अभिरूचियों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

चतुर्थ सूत्र और उसका निहितार्थ

चतुर्थ सूत्र, 'पाठक और कर्मचारियों का समय बचाएँ' का आशय है :

- (अ) पाठक की बौद्धिक और मानसिक अंतःशक्ति को, उसकी आवश्यकताओं का ठीक-ठीक पता लगाकर और अतिशीघ्र पुनर्प्राप्ति के द्वारा, संरक्षित रखा जाना; और
- (ब) पुनर्प्राप्ति एवं सेवा कार्यों को अत्यधिक मितव्ययी तरीकों से सम्पन्न किया जाना।

चतुर्थ सूत्र को संतुष्ट करने के लिए आवश्यक है

- (अ) विषय जगत् के प्रत्येक घटक तथा सभी घटकों के अभिलक्षणों की पहचान करने के लिए विषय जगत् का विश्लेषण करना; और
- (ब) प्रलेख पुनर्प्राप्ति प्रणाली की रूपरेखा एवं विकास के लिए एक विधि निर्मित करना, जिसके द्वारा, निष्कर्षों को कार्य रूप में परिणत किया जा सके।

प्रस्तुत संदर्भ में किए गए कार्य और किए जाने वाले कार्य विषय जगत् के घटकों/अभिलक्षणों से सम्बन्धित हैं।

पंचम सूत्र और उसका निहितार्थ

पंचम सूत्र, 'पुस्तकालय एक वर्धनशील जीव—संरचना है', का अर्थ है कि विषय जगत् निरंतर वर्धनशील है और इसीलिए पुस्तकालय विज्ञान भी वर्धनशील है। इसलिए पुस्तकालयों के विकास के पैटर्न और इसकी वृद्धि की विभिन्न अवस्थाओं की संरचना के विभिन्न प्रतिमानों का ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन करना, विषय निर्माण की विधियों को समझने में सहायक होगा। ऐसा करने पर प्रभावी सूचना पुनर्प्राप्ति और वितरण के लिए परिष्कृत तकनीकों/साधनों को विकसित करना सम्भव होगा।

अभी तक के वितरण से यह स्पष्ट होता है विषय जगत् की संरचना और उसके विकास के एक पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा किए गए अध्ययन को पुस्तकालय विज्ञान के पंच सूत्रों के आवश्यक निहितार्थ के रूप में समझा जा सकता है।

3. 2. विषय निर्माण की विधियाँ

विषय जगत् में प्रत्येक विषय को अनन्य सहविस्तृत रूप में प्रस्तुत करने के लिए वर्गीकरण प्रणाली प्रणेता को विषय जगत् के उन लवणों का पता लगाना होता है जो पुस्तकालय वर्गीकरण को प्रभावित करते हैं; अर्थात् उसे यह जानना होता है कि विषय जगत् उग्ररूप से निरंतर गतिशील, अनन्त, बहुरूपी एवं बहुआयामी है तथा विषय निर्माण की विभिन्न विधियाँ होती हैं। उपर्युक्त लक्षण स्वयं स्पष्ट हैं, किन्तु 'विषय निर्माण की विधियाँ' एक जटिल अवधारणा है, अतः प्रस्तुत अनुभाग में इसकी विस्तृत विवेचना प्रस्तुत की जा रही है।

विषय निर्माण की जिन विधियों की पहचान की गई है, वे निम्नलिखित हैं :

विषयों के सम्बन्ध
में जानकारी

स्तरीकरण (Lamination)

शिथिल समुच्चय (Loose assemblage)

विखंडन (Fission)

विलयन (Fusion)

आसवन (Distillation)

समूहन (Clustering)

संकुलन (Agglomeration)

NOTES

स्तरीकरण

स्तरीकरण का निर्माण एक पक्ष पर दूसरे पक्ष को रखने से होता है। जिस प्रकार डबलरोटी के एक टुकड़े पर सब्जी की पतली परत लगाकर उस पर दूसरा टुकड़ा रखकर सैंडविच बनाते हैं, उसी प्रकार विषय निर्माण की इस प्रक्रिया में भी, एक या अधिक एकल पक्षों को एक दूसरे के ऊपर के रूप में रख दिया जाता है। रंगनाथन के अनुसार 'जब मूल परत, एक मूल विषय हो और दूसरी परतें एक या अधिक एकल विचार हों, तो एक यौगिक विषय का निर्माण होता है'। स्तरीकरण दो प्रकार का होता है :

स्तरीकरण 1 : इस विधि में, एक मूल पक्ष पर, एक अथवा अधिक एकल पक्षों का स्तरीकरण किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप यौगिक विषय निर्मित होते हैं।

उदाहरण : (1) Anatomy of the human body

मूल पक्ष = Medicine

एकल पक्ष = Human body, Anatomy

[P]

[MP]

(2) Treatment of diseases of plant

मूल पक्ष = Botany

एकल पक्ष = Plants, Diseases, Treatment

[P]

[MP]

[E]

स्तरीकरण 2 : इस विधि में, एक यौगिक पक्ष के, दो या अधिक उप पक्षों को एक दूसरे के ऊपर रखा जाता है। ऐसे विषयों को पहले मुख्य-इतर मूल विषय (Non-main basic subjects) नाम दिया गया था, जिसके संघटक आतिथेय मुख्य विषय (Host main subject) थे। बाद वाले संघटकों में प्रामाणिक / विशिष्ट / पर्यावरण / प्रणाली संघटक थे।

उदाहरणार्थ- 'Ayurvedic system of medicine' एक मुख्य-इतर मूल विषय है। इस उदाहरण में—

Medicine आतिथेय मुख्य विषय है; और

Ayurvedic System एक प्रणाली संघटक है।

NOTES

| मौलिक | संशोधित पदावली |
|---|---|
| मुख्य-इतर मूल विषय (Non-main Basic Subjects) | प्राथमिक-इतर मूल विषय (Non-Primary Basic Subjects) |
| प्रामाणिक मूल विषय (Canonical Basic Subject) | द्वितीयक मूल विषय (Secondary Basic Subjects) |
| यौगिक मूल विषय (Compound Basic Subjects) | यौगिक मूल विषय Compound Basic Subjects) |

अन्य उदाहरण :

| | | |
|-------------|---|---------------------------------------|
| Medicine | = | आतिथेय मुख्य विषय (Hist main subject) |
| Child | = | विशिष्ट संघटक (Special component) |
| Mathematics | = | आतिथेय मुख्य विषय (Host main subject) |
| Geometry | = | प्रामाणिक संघटक (Canonical component) |

शिथिल समुच्चय क्या है ?

शिथिल समुच्चय

शिथिल समुच्चय दो या दो से अधिक :

(अ) विषयों (मूल अथवा यौगिक); तथा

(ब) एकल विचारों (एक ही पक्ष के अथवा किसी एक पक्ष की पंक्ति के) का एकत्रीकरण है।

समुच्चय का प्रयोग किसी समूह के संघटकों के मध्य, किसी एक या अन्य संभावित सम्बन्धों को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप मिश्रित विषय अथवा एक जटिल एकल विचार अथवा एक जटिल पंक्ति एकल विचार, जहाँ जैसी स्थिति हो, का निर्माण होता है।

शिथिल समुच्चय तीन प्रकार के हो सकते हैं। ये हैं—शिथिल समुच्चय प्रकार—1, प्रकार—2 और प्रकार—3।

शिथिल समुच्चय प्रकार -1 : इस प्रकार के समुच्चय में दो अथवा विषयों—सरल अथवा यौगिक—के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। इसे 'अंतर विषय दशा सम्बन्ध' कहा जाता है। ये निम्नलिखित पाँच प्रकार के हो सकते हैं :

सामान्य; झुकाव वाले; तुलना; अंतर और प्रभाव प्रदर्शित करने वाले। यहाँ मिश्रित विषयों के कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं :

- (1) General relation between political science and economics (राजनीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र में सामान्य सम्बन्ध)
- (2) Statistics for librarians (इतिहास पर भूगोल का प्रभाव) .

शिथिल समुच्चय प्रकार -2 : यदि एक मुख्य वर्ग की अनुसूची के किसी एक पक्ष के ही दो या अधिक एकलों के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध प्रदर्शित किया जाता है तो इस प्रकार का सम्बन्ध 'अंतः दशा सम्बन्ध' कहलाता है। इससे जटिल पंक्ति एकलों का निर्माण होता है।

उदाहरण :

- (1) Influence of Buddhism on Christianity (ईसाई धर्म पर बौद्ध धर्म का प्रभाव)
(2) Difference between Lemuroidea and Anthroupoidea (लूम्यूरॉयडिया और ऐंथ्रोपॉयडिया में अंतर)

NOTES

शिशिल समुच्चय प्रकार -3 : मुख्य वर्ग के किसी एक ही पक्ष के दो या अधिक अधीनस्थ एकलों के मध्य जब पारस्परिक सम्बन्ध प्रदर्शित किया जाता है तो वह 'अतः पंक्ति दशा सम्बन्ध' कहलाता है। इससे जटिल पंक्ति एकलों का निर्माण होता है।

प्रामाणिक मूल विषय (Canonical Basic Subject) : ये किसी मुख्य विषय के परंपरागत विभाजन को प्रदर्शित करते हैं। इन परंपरागत विभाजनों को 'प्रामाणिक संघटक' पद से निर्दिष्ट किया जाता है।

उदाहरण :

- C3 Sound
C4 Heat
C5 Radiation

विशिष्ट मूल विषय (Special Basic Subject) : यह किसी मूल विषय (MS) का विभाजन होता है। इसमें अध्ययन के विषय को किसी विशिष्ट तरीके से सीमित कर दिया जाता है तथा इस प्रक्रिया में किसी भी पूर्वस्थापक सामान्य एकल अथवा किसी अन्य एकल विचार का उपयोग नहीं किया जाता है। इस विशिष्ट विभाजन को मुख्य के संघटक पद द्वारा सूचित किया जाता है। सामान्यतः विशिष्ट मूल विषय की वर्ग संख्या को परिगणनात्मक विधि के द्वारा प्राप्त किया जाता है।

उदाहरण :

- L-9C Child medicine (बाल रोग चिकित्सा)
L-9E Geriatrics (जरा रोग चिकित्सा)
L-9F Female medicine (स्त्री रोग चिकित्सा)

पर्यावरण पर आधारित मूल विषय (Environmented Basic Subject) : यह मुख्य विषय के उप विभाजन को दर्शाता है, जिसमें किसी मुख्य विषय के अध्ययन की सत्ता जैसे, वे सत्ताएँ जिनका उल्लेख पर्यावरण विभाजनों की अनुसूची में किया जाता है, सामान्योत्तर परिवेश के अंतर्गत आती हैं।

उदाहरण :

- D-9Uk2 Desert engineering
D-9Um7 Mountain engineering
D-9V4 War engineering

पद्धतिपरक मूल विषय (System Basic Subject) : यह मुख्य विषय अथवा विशयेतर मुख्य मूल विषय के विभाग को सूचित करता है, जिसे विशिष्ट पद्धति अथवा विचारधारा के आधार पर प्रतिपादित किया जाता है, कि जो वर्तमान में प्रसिद्ध है, उसके आधार पर।

उदाहरण :

- B2-N Boolean algebra
L-B Ayurvedic system Medicine
S-N Gestalt psychology

जब यौगिक मूल विषय में, सभी मुख्य-इतर संघटक (Non-main constituents) हों तो उनका अनुक्रम पद्धति संघटक, पर्यावरण संघटक, विशिष्ट संघटक तत्पश्चात् प्रामाणिक संघटक होना चाहिए।

उदाहरण :

NOTES

Medicine – Ayurvedic system – Tropical environment – Child

विखण्डन की प्रक्रिया का आशय स्पष्ट कीजिए।

विखंडन

किसी वर्गीकरण पद्धति में सम्मिलित किए गए प्राथमिक मूल विषयों (PBS: Primary Basic Subject) का पहला वर्ग, विषय जगत् के विभाजन / विखंडन (Fission) की प्रक्रिया का परिणाम है। विषय जगत् का यह विभाजन / विखंडन उसी प्रकार से होता है जिस प्रकार का विभाजन विषय विशेषज्ञ स्वयं अपनी-अपनी विशिष्टता के उपयुक्त सुविधाजनक क्षेत्रों का निर्माण करने के लिए करते हैं। इस प्राथमिक विभाजन के लिए जिस विशिष्ट अभिलक्षण का प्रयोग किया जाता है उसे पहचानना सम्भव नहीं है।

विखंडन को हम विभाजित करने, अथवा बाँटने अथवा खंडों में टुकड़े करने की प्रक्रिया मान सकते हैं। इस प्रक्रिया को अभी तक विच्छेदन (Dissection) पद से निर्दिष्ट किया जाता था। विच्छेदन से आशय किसी सत्ता को बाह्य क्रिया द्वारा खंडों में बाँटने अथवा टुकड़े करने इत्यादि से है, जबकि विखंडन, बाह्य साधन का प्रयोग किए बिना, विभाजन की एक आंतरिक प्रक्रिया है।

उदाहरण :

कोलन क्लैसिफिकेशन की प्रारम्भिक अनुसूचियों में, पारंपरिक प्राथमिक मूल विषयों (PBS : Primary Basic Subjects) को, विषय जगत् को सीधे विखंडित कर प्राप्त किया गया है। इस प्रकार के निम्नलिखित मोटे-मोटे समूहों को इस पद्धति में देखा जा सकता है :

- प्राकृतिक विज्ञानों से सम्बन्धित प्रारम्भिक मूल विषय
- उपयोगी कलाओं से सम्बन्धित प्रारम्भिक मूल विषय
- मानविकी से सम्बन्धित प्रारम्भिक मूल विषय
- सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्धित प्रारम्भिक मूल विषय

'विच्छेदन' पद का प्रयोग विखंडन को निर्दिष्ट करने के लिए उस समय किया जाता है, जब हम किसी एकल अथवा मूल विषय को पंक्तियों में विभाजित करने पर विचार करते हैं, जिसका परिणाम विखंडन होता है। (नीचे दी गई आकृति को देखें)

विखंडन

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|

दूसरी ओर, 'अनाच्छादन' (Denudation) पद का प्रयोग, विखंडन के लिए तक किया जाता है, जब हम विखंडन के बाद किसी एकल अथवा मूल विषय का एक और केवल एक ही उपविभाजन, करने पर विचार करते हैं; जिसका परिणाम विखंडन होता है। प्रोलेगोमेना में दी गई परिभाषा के अनुसार 'अनाच्छादन किसी एकल विचार अथवा मूल विषय के विस्तार का क्रमशः ह्रास और उसके आशय की गहनता में वृद्धि है। जैसे, हम किसी फल के छिलके को ज्यादा गहराई में छीलते हैं या कुआँ खोदते हैं।' जे. एच. शेरा (J. H. Shera) के शब्दों में 'अनाच्छादन का तात्पर्य शोध अथवा जाँच पड़ताल द्वारा ज्ञान के नए क्षेत्र के क्षरण अथवा विवस्त्रीकरण से है।'

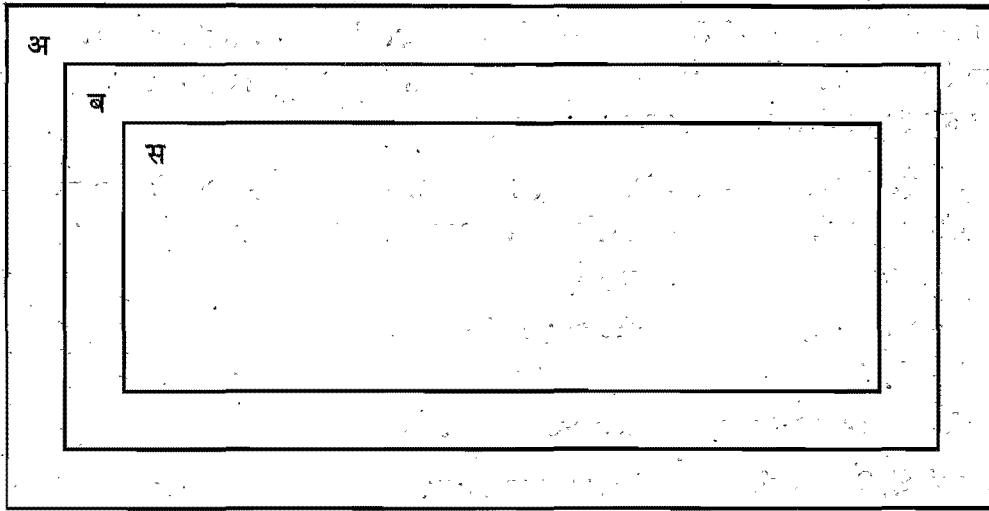
NOTES

उदाहरण : (नीचे दी गई आकृति देखिए)

Philosophy (दर्शन) (अ)

– Logic (तर्कशास्त्र) (ब)

– Deductive Logic (निगमनात्मक तर्कशास्त्र) (स)



स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. पुस्तकालय विज्ञान के प्रथम सूत्र के निहितार्थ समझाइये।
2. पुस्तकालय विज्ञान के द्वितीय सूत्र का निहितार्थ क्या है?

.....

.....

.....

.....

विलयन

अंतर-विषयात्मक शोध के संगठनों और शोध कार्यक्रमों की विशेषता है। इसके परिणामस्वरूप अंतर-विषयात्मक विशेषता वाले नए विचारों और नए विषयों का प्रादुर्भाव हुआ है। प्रायः एक अंतर-विषयात्मक विषय को, विद्यमान प्राथमिक मूल विषयों में से, एक से अधिक विषयों के साथ रखे जाने की आवश्यकता होती है। प्राथमिक मूल विषयों (Primary Basic Subject) के साथ रखे जाने वाले विषयों में प्रायः वह मूल सत्ता (Core entity) अंतर्विष्ट होती है जिसके लक्षणों की शोध दल द्वारा जाँच कर ली जाती है। हमें इस आतिथेय (Host) को पी बी एस—I (PBS-1 : Primary Basic Subject-1) कहना चाहिए। दूसरे पी बी एस के साथ जाने वाले विषय—पी बी एस—2 का सम्बन्ध, आतिथेय पी बी एस—1 के साथ जाने वाले

विषयों के साथ अनेक प्रकार से हो सकता है। उदाहरणार्थ दशा सम्बन्ध (जैसे—जीव विज्ञान में सांख्यिकी का प्रयोग)। कालांतर में, जैसे-जैसे विषय क्षेत्र का विकास होगा, उसी के साथ अंतर—विषयात्मक शोध के कारण, नवीन विचार उत्पन्न होंगे। जैसे—

NOTES

- (अ) वर्गीकरण प्रणाली प्रणेता को ऐसा लग सकता है कि नवीन विचारों को आसानी से एवं सहायक रूप में पूर्ण चयनित प्राथमिक मूल विषय—1 के साथ नहीं रखा जा सकता;
- (ब) ये नवीन विचार विशेषज्ञों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं; और
- (स) प्राथमिक मूल विषय 1 एवं 2 के साथ रखे जाने वाले विषयों के लिए प्रयोग में लिए जाने वाले नियामक सिद्धान्तों के अतिरिक्त, कुछ अन्य नियामक सिद्धान्तों के साथ एक नवीन विशिष्टता मूर्तरूप धारण कर लेती है।

इस चरण में वर्गीकरण प्रणाली प्रणेता विशेषज्ञता के नवीन क्षेत्र को ऐसे नवीन प्राथमिक मूल विषय के साथ रखना उपर्युक्त मान सकता है, जिसका उल्लेख सम्बन्धित वर्गीकरण पद्धति की पी बी एस की अनुसूची में नहीं हुआ है। ऐसे नवीन प्राथमिक मूल विषय (पी बी एस) के साथ रखे जाने वाले विषयों में आतिथेय पी बी एस 1 तथा 2 की अनुसूचियों से लिए गए एकल विचार हो सकते हैं और सकते हैं और साथ ही साथ नए विषय से सम्बन्धित विशिष्ट विचार भी हो सकते हैं। सरल शब्दों में, नवीन पी बी एस को आतिथेय पी बी एस 1 तथा 2 के संयोजन के रूप में समझा जा सकता है।

निर्माण की इस विधि को विलयन कहते हैं। विलयित प्राथमिक मूल विषय (Fused PBS) के कुछ उदाहरण, जिन्हें कोलन क्लैसिफिकेशन के सातवें में सम्मिलित किया गया है, नीचे दिए जा रहे हैं :

| | |
|-----------------------|---------------------------|
| Astrophysics | Biolinguistics |
| Astrochemistry | Sociolinguistics |
| Bio-physics | Educametry |
| Medical jurisprudence | Socio-cybemetics इत्यादि. |

दूसरे शब्दों में, विषय निर्माण की इस विधि में दो या अधिक प्राथमिक मूल विषय आपस में इस प्रकार विलयित हो जाते हैं कि दोनों में से प्रत्येक अपनी विशिष्ट पहचान इस अर्थ में खो देते हैं कि उनके साथ मिलकर यौगिक विषयों के निर्माण के लिए आवश्यक एकल विचारों की अनुसूची निरर्थक हो जाती है। बाउलडिंग (Boulding) के शब्दों में विषय निर्माण की यह विधि 'संकर विषय' (hybrid discipline) के समान समझी जा सकती है।

आसवन

विभिन्न मूल विषयों अथवा एक ही मूल विषय से खाने वाले, नाना प्रकार के यौगिक विषयों में किसी विषय के क्रियात्मक आविर्भाव के कारण, इस विधि के अनुसार एक विशुद्ध विषय विकसित हो जाता है जो एक प्राथमिक मूल विषय (PBS) होता है। इस विधि में प्राथमिक मूल विषय की उत्पत्ति आसवन (Distillation) द्वारा होती है। विषय निर्माण की इस विधि को बाउलडिंग द्वारा वर्णित "सामान्य विधि सहित बहु-संकर विधि" (Multi-hybrid with common methodology) के समान समझा जा सकता है। इस प्रकार आसवन दो प्रकार का हो सकता है। (प्रकार—1 और प्रकार—2)। प्रथम प्रकार में, एक नया प्राथमिक मूल विषय, आवश्यक रूप से विद्यया विशेष के सिद्धान्त को समाविष्ट करता है जो या तो प्रादुर्भूत हुआ है अथवा उस विचार (विचारों) से आसवित हुआ है, जिसका / जिनका सम्बन्ध विभिन्न मूल विषयों की व्यावहारिक क्रियाओं से रहा है। जो भी हो, यह ध्यान रखना होगा कि एक नए विशुद्ध विशेष के निर्माण के बाद भी, व्यावहारिक प्रक्रिया के रूप में जो विचार है वह बना रहे और उसे उसी रूप में समझा जाए अर्थात् सम्बन्धित विषय में उसका स्थान एक एकल विचार के रूप में होना चाहिए।

उदाहरण :

कोलन क्लैसिफिकेशन में

Management

(प्राथमिक मूल विषय (PBS)) 8

Management of University Library

2, J4 : 8

दूसरी ओर आसवन प्रकार—2 में केवल विशिष्ट मूल विषय से मेल खाने वाले विषयों में विचार उत्पन्न होता है तथा उस विचार का प्रवाह स्वीकार्य साहित्य समादेश के साथ एक नए विद्यया विशेष के निर्माण की ओर होता है और सम्भवतः उसके विकास का मार्गदर्शन करने के लिए कुछ सिद्धान्तों और अभिधारणाओं का प्रतिपादन कर दिया जाता है।

उदाहरण : Statistical Calculus, Microbiology, Anesthesiology, International Relations, Ergonomics, Forestry.

समूहन

विगत काल में, प्रलेख जगत् में यह एक सामान्य प्रवृत्ति थी कि सम्पूर्ण प्रलेख में निहित विषय के विस्तार को, सीमित रखा जाए। इसलिए उस समय यह सामान्य प्रवृत्ति बन गई थी कि किसी एक प्रलेख में ही विभिन्न मूल विषयों से सम्बन्धित यौगिक विषयों को शामिल न किया जाए; जब तक कि उसमें किन्हीं मिश्रित विषयों का समावेश न हो। ऐसे मिश्रित विषय, जो दशा सम्बन्धों के आधार पर निर्मित हुए हों, और ऐसे विषय जिनके एकल पक्षों का निर्माण विषय विधि के प्रयोग द्वारा हुआ हो अथवा एकलों को तीक्ष्णता प्रदान की गई हो, हो सकते हैं। हाल ही के वर्षों में, अंतर—विषयात्मक शोध के फलस्वरूप, प्रायः व्यावहारिक सुविधा की दृष्टि से इस बात की आवश्यकता का अनुभव किया गया है कि एक ही प्रलेख में, विभिन्न मूल विषयों के साथ मेल खाने वाले दो या अधिक यौगिक विषयों को एक साथ लाया जाए।

उदाहरणार्थ, अनुसंधान के कार्य को सुविधाजनक ढंग से व्यवस्थित करने के लिए, किसी एक परिघटना या सत्ता के अध्ययन में सम्मिलित प्राथमिक परिणाम एवं आँकड़ें जो विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत आने वाले कार्य से प्राप्त किए गए हैं, एक ही प्रलेख में, एक साथ लिए जा सकते हैं तथा उनका विवेचन पृथक् रूप से अर्थात् किसी वास्तविक अंगभूत विवेचन के बिना किया जा सकता है। विभिन्न विषय क्षेत्रों के अंतर्गत आने वाले कार्य का अनुवर्ती विवर्धन सम्बन्धित विषय के विशेषज्ञों द्वारा किया जा सकता है तथा इस कार्य द्वारा प्राप्त किए गए परिणाम पृथक् से प्रकाशित किए जा सकते हैं। वह प्रलेख जिसमें इन प्राथमिक परिणामों को समग्र रूप में एक संग्रह की तरह एक साथ लाया जाता है, एक ऐसे विषय क्षेत्र को प्रस्तुत करता है, जिसमें अध्ययन की वह अंगभूत सत्ता विद्यमान होती है, जो विभिन्न मूल विषयों से मेल खाने वाले विषयों में, विशेषज्ञों के योगदान या दृष्टिकोण या कार्य को परिलक्षित करती है। यह निरूपण ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी ग्रंथिल विचार (nodal idea) के चारों ओर अनेक विचारों का समूहन कर दिया गया हो। अर्थात् एक जैसी सत्ताओं का, उनके पारस्परिक सम्बन्धों अथवा उनकी एक साथ उपस्थिति अथवा उनके निरूपण या विवेचन की सुविधा के लिए एक समूह बना देना।

उदाहरण :

- (1) क्षेत्रीय अध्ययन—जिसमें समूह का केन्द्र कोई भौगोलिक क्षेत्र होता है। जैसे— Sinology (चीन से सम्बन्धित अध्ययन) Nippinology (जापान से सम्बन्धित अध्ययन)।

विषयों के सम्बन्ध
में जानकारी

NOTES

NOTES

- (2) बहुक्षेत्रीय व्यक्तियों का अध्ययन—अर्थात् जिसमें समूहन का केन्द्र बिन्दु एक बहुआयामी व्यक्तित्व वाला व्यक्ति होता है। जैसे—Gandhiana (गाँधीजी से सम्बन्धित अध्ययन)।
- (3) किसी परिघटना या सत्ता का अध्ययन—जिसमें सम्बन्धित सत्ता या परिघटना उस समूहन का केन्द्र बिन्दु होती है। जैसे—मृदा विज्ञान (Soil Science), धरातल विज्ञान (Surface Science)।

संकुलन

संकुलन को पूर्व में आंशिक परिज्ञान (Partial comprehension) के नाम से जाना जाता था। यह सत्ताओं को उनके घटकों में सम्बद्धता के बिना ही बड़े-बड़े समूहों में एक साथ एकत्र करने की प्रक्रिया है। यह संकुलित इकाई एक मूल विषय हो सकती है अथवा एकल विचार भी हो सकती है। एक वर्गीकरण प्रणाली के अनुसार यह संकुलन क्रमागत घटकों का हो सकता है अथवा अक्रमागत घटकों का भी हो सकता है।

कोलन क्लैसिफिकेशन में उदाहरण : प्राकृतिक विज्ञान, मानविकी, सामाजिक विज्ञान।

4. विषयों के अध्ययन की विधि

अभी तक, सूचना समेकन उत्पाद, पुस्तकालयों एवं सूचना केन्द्रों से प्राप्त प्रलेखों के आधार पर स्वयं विषय विशेषज्ञों द्वारा तैयार किए जाते थे। किन्तु पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति होने से, तथा विशेष रूप से सूचना के व्यवस्थापन एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति होने से, तथा विशेष रूप से सूचना के व्यवस्थापन और प्रसारण सम्बन्धी तकनीकों के विकसित होने से, पुस्तकालय और सूचना विज्ञान कर्मी अब इस दिशा में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। अधिक उपयोगी भूमिका निभाने के लिए निम्नलिखित पूर्वविक्षाओं को ध्यान में रखना उनके लिए आवश्यक होगा :

(अ) विषय के विभिन्न पहलुओं से परिचित होना;

(ब) पाठक द्वारा वांछित विषय सामग्री के बारे में जानकारी होना; और

(स) सूचना समेकन उत्पाद में सूचना के प्रस्तुतीकरण से सम्बन्धित सहायक विधियों का ज्ञान होना।

उपर्युक्त पूर्वापेक्षाओं में से प्रथम पूर्वापेक्षा पर यहाँ विस्तार से विवेचन किया जा रहा है।

4.1. विषयों के सरल और कठिन पक्षों को समझना

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान कर्मियों को जिन पृष्ठताओं / प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं, उनमें से अधिकांश, विषयों से सम्बन्धित होते हैं। ऐसी पृष्ठताओं को चाहे किसी भी रूप में प्रस्तुत क्यों न किया गया हो, उनका उत्तर अंततः पाठक की आवश्यकताओं के अनुरूप, प्रलेखों में निहित विषयों से खोजकर ही निकाला जाएगा। इसलिए पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान कर्मियों को उन विषयों से परिचित होना चाहिए, जिनकी उन्हें सर्वाधिक आवश्यकता होती है। पुस्तकालय कर्मी का विषयों से सम्बन्धित ज्ञान जितना गहन होगा, फलदायक सूचना सेवाएँ प्रदान करने में वह उतना ही अधिक सहायक होगा।

यह स्पष्ट है कि किसी भी एक व्यक्ति द्वारा सभी विषयों का ज्ञान अर्जित नहीं किया जा सकता। इतना अवश्य है कि एक व्यक्ति, जो किसी एक विषय का मूलभूत ज्ञान रखता है, और जिसे उसने स्नातक, स्नातकोत्तर स्तर पर अर्जित किया है, उस ज्ञान को वह अपने अनुभव के आधार पर, जैसे शोध करते हुए और / अथवा विषय का अध्यापन करते हुए, और अधिक बढ़ा सकता है। किन्तु एक पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान कर्मी अपने कार्य के साथ-साथ, अन्य विषयों में शोध कार्य नहीं कर सकता। इसके अलावा, किसी सूक्ष्म क्षेत्र में गहन विशिष्टता प्राप्त करना पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान कर्मियों के कार्य में अधिक उपयोगिता नहीं रखता। आवश्यकता इस बात की है कि वे व्यापक परिदृष्टि रखते हों, अर्थात् उन्हें उन विभिन्न विषयों के सरल और कठिन पक्षों का ज्ञान होना चाहिए, जिनका सम्बन्ध पाठकों को दी जाने वाली सेवाओं से होता है।

सामान्यतः एक पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान कर्मियों को, विषयों के सम्बन्ध में, जिस प्रकार का ज्ञान अर्जित करना चाहिए, उसका विशेष रूप से उल्लेख नीचे किया जा रहा है :

- (क) एक पूर्ण इकाई के रूप में विषय का विस्तार—क्षेत्र;
- (ख) विषय की प्रमुख शाखाएँ, प्रत्येक शाखा के उपविभाजन तथा इनमें प्रत्येक का विस्तार—क्षेत्र;
- (ग) सामान्यतः विषय से सम्बन्धित विचारों एवं विषय की शाखाओं के सम्बन्ध में उनका समूहन एवं विषय की प्रत्येक शाखा के अंतर्गत उपविभाजन;
- (घ) संघटक विचारों के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध तथा वे उपर्युक्त अभिलक्षण जिनके आधार पर उन्हें समूहों में विभाजित किया जा सकता है;
- (ङ) विषय के विकास से सम्बन्धित प्रमुख घटनाएँ, प्रमुख योगदाता और उनके योगदान;
- (च) विषय की विभिन्न शाखाओं में, प्रत्येक की यथास्थिति का वर्णन एवं प्रवृत्ति;
- (छ) एक विषय का दूसरे विषय के साथ पारस्परिक सम्बन्ध; और
- (ज) विभिन्न विषयों में से प्रत्येक की तकनीकी शब्दावली।

प्रलेखों के माध्यम से विषयों का सुसंबद्ध अध्ययन

प्रमुख विषय क्षेत्रों के सम्बन्ध में अध्ययन

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान कर्मियों को अपनी संस्था के कार्यों से सम्बन्धित प्रमुख विषय क्षेत्रों की पहचान कर लेनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, विषयों को प्रच्छया (Umbral) तथा उपच्छया (Penumbral) के आधार पर रूचि के क्रम में रखना सहायक रहेगा। किसी विषय का अध्ययन करते समय, पुस्तकालय कर्मियों को, इस प्रकार के उद्देश्यों को दृष्टिपथ में रखना चाहिए। इसका आशय यह है कि व्यक्ति को प्रलेखों के माध्यम से अध्ययन की ऐसी क्षमता विकसित कर लेनी चाहिए जिससे उनमें निहित विचारों में से, अपने लिए उपयोगी एवं उद्देश्यपूर्ण विचारों को बिना अधिक श्रम के, खोज कर निकाला जा सके।

अध्ययन के लिए प्रलेखों के प्रकार

विशिष्ट निहितार्थ के अंतर्गत, किसी विषय के व्यवस्थित अध्ययन के लिए, जिस प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता होती है, उसका उल्लेख किया जा चुका है। इस ज्ञान को अर्जित करने के लिए जिस प्रकार के प्रलेख सहायक हो सकते हैं, उनका उल्लेख नीचे किया जा रहा है :

- (क) परिभाषाओं और समानार्थक पदों के लिए, प्रामाणिक सामान्य शब्दकोश और तकनीकी पारिभाषिक शब्दावली।
- (ख) किसी विषय के क्षेत्र एवं उसके प्रमुख विभाजनों की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए सामान्य विश्वकोशों के लेख।
- (ग) विषय का गहन ज्ञान प्राप्त करने के लिए, सामान्य विश्वकोशों के स्थान पर, विशिष्ट विश्वकोश, जो विशेष रूप से उस विषय के लिए ही हों, यदि हैं तो।
- (घ) एक सुपरिचितकरण ग्रन्थ (orientation book)—जिसकी रचना विशेष रूप से सूक्ष्मदर्शिता के साथ और/ अथवा पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान कर्मियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर की गई हो।

NOTES

NOTES

- (इ) विषयों के विकास और ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में चेतना जाग्रत करने के लिए विषयों के इतिहास पर लिखे गए ग्रन्थ।
- (च) किसी विषय के विभिन्न विभाजनों के अंतर्गत आने वाले विचारों का गहन ज्ञान प्राप्त करने, उनके पारस्परिक सम्बन्धों को जानने, तथा विषयों का उनकी समग्रता में यथोचित परिदृश्य प्राप्त करने के लिए निर्दिष्ट विषय पर लिखे गए लेख।
- (छ) किसी विषय के अद्भ्यतन विकास और उसकी प्रवृत्तियाँ को जानने के लिए, उत्तम समीक्षात्मक लेख और प्रवृत्ति प्रतिवेदन।

सूचना संग्रहण तथा संगठन के लिए प्रोफॉर्मा

एक विषय के बारे में अध्ययन करते समय व्यवस्थित रूप से चयनित सूचना का रिकार्ड रखना उपयोगी सिद्ध होगा। इस कार्य के लिए एक व्यवस्थित प्रोफॉर्मा का उपयोग किया जा सकता है। ऐसे एक प्रोफॉर्मा का नमूना नीचे दिए गया है।

| क्रम संख्या | तात्पर्य |
|-------------|--|
| 0 | प्रस्तावना : 'विषयों के अध्ययन' पर परियोजना की योजना और उद्देश्य का विवरण; साथ ही अध्ययन के परिणामों को अद्भ्यतन बनाये रखने की आवश्यकता और विधि। |
| 1 | परिभाषा : किसी पद की परिभाषा सम्बन्धित विषय को निर्दिष्ट करती है। विभिन्न प्रामाणिक स्रोतों में परिभाषाएँ दी गई होती हैं। संकलित परिभाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन, उनकी समानता एवं भिन्नताओं को प्रदर्शित करने के लिए आवश्यक होता है। |
| 2 | पारिभाषिक शब्दावली का विकास : किसी पद की पारिभाषिक शब्दावली का विकास, विषय को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता है। साथ ही इसका प्रयोग प्रचलित पर्यायों और उन पर विभिन्न दृष्टिकोणों को निर्दिष्ट करने के लिए भी किया जाता है। सामान्यतः इसका प्रयोग ऐसे विषय के लिए होता है, जिसे विभिन्न कालों में भिन्न-भिन्न पदों के द्वारा द्वायोतित किया गया हो। उदाहरणार्थ—'पुस्तकालय विज्ञान' पद को ही लें। इसका प्रारम्भ 'पुस्तकालय इकोनॉमी' से हुआ। इसके बाद 'लाइब्रेरियनशिप' और अब इसे 'लाइब्रेरी साइंस' पद से निर्दिष्ट किया जाता है। |
| 3 | विस्तार-क्षेत्र : एक पूर्ण इकाई के रूप में विषय का सामान्य विस्तार-क्षेत्र। विषय के सामान्य विस्तार-क्षेत्र का अध्ययन निम्नलिखित उपशीर्षकों के अंतर्गत किया जा सकता है : 3.1. विभाजन और उपविभाजन : इसमें सम्बन्धित विषय के अंतर्गत अध्ययन किए जाने वाले सभी प्रकरणों को सम्मिलित किया जाता है। जैसे—प्राथमिक तौर पर उनके विभाजन और उपविभाजनों को। प्रस्तुत अनुभाग के सन्दर्भ में, पदों (जिसमें पर्यायवाची भी सम्मिलित हैं) के विभिन्न विस्तृत उपविभाजनों और उनके निकटतम उपविभाजनों का, उनकी परिभाषाओं और क्षेत्रों के साथ उल्लेख किया जाना है। विभाजनों और उपविभाजनों के लिए प्रतिनिधि पाठ्यपुस्तकों और निर्दिष्ट विषय पर |

NOTES

लिखे गए उच्च-कोटि के निबन्धों का, उनकी अंतर्वस्तु के विश्लेषण के आधार पर, चयन करना सुविधाजनक रहेगा। ऐसा करना विषय का वर्गीकरण करने के समान है, जिसका उद्देश्य अध्ययन, अध्यापन, ज्ञानार्जन इत्यादि है। परिभाषाओं को विभिन्न प्रकार के प्रामाणिक स्रोतों से संकलित किया जाना चाहिए।

3. 2. **अनुप्रयोग** : ऐसे प्रकरण, जिनके लिए सम्बन्धित विषय को, उनके विकास के लिए प्रयोग में लाया जाता है। उदाहरणार्थ—जब अध्ययन का विषय भौतिक शास्त्र हो तो अभियांत्रिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान इसके अनुप्रयोग के क्षेत्र होते हैं।
3. 3. **उपकरण विषय** : वे ऐसे विषय होते हैं जो सम्बन्धित विषय के विकास के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं। उदाहरणार्थ—जब रसायन शास्त्र अध्ययन का विषय होता है तो गणित, सांख्यिकी, भौतिकी इत्यादि को इसके विकास के लिए एक उपकरण विषय के रूप में प्रयोग में लाया जाता है।

4

वर्गीकरण : इस अनुभाग का उद्देश्य इस बात का पता लगाना है कि सम्बन्धित विषय तथा उसके विभाजनों और उप विभाजनों को वर्गीकरण की विभिन्न पद्धतियों—सामान्य एवं विशिष्ट में, किस प्रकार निरूपित किया गया है। सर्वप्रथम इस बात का पता लगाना लाभप्रद होगा कि सम्बन्धित विषय को सम्पूर्ण विषय जगत् में विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों के प्रणेताओं ने किस श्रेणी में रखना स्वीकार किया है। उदाहरणार्थ—रसायन शास्त्र विषय को, विषय जगत् में सर्वमान्य रूप से निम्नलिखित प्रकार से पहचाना गया है :

विषय जगत्

विज्ञान

प्राकृतिक विज्ञान

भौतिक विज्ञान

रसायन शास्त्र

उपर्युक्त उदाहरण में जिस प्रकार विषयों को दर्शाया गया है, उससे उनके मध्य उच्चस्थ-अधीनस्थ सम्बन्धों का पता चलता है। सम्बन्धित विषयों का प्रतिपादन विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों में किस प्रकार हुआ है, इसे निम्नलिखित उपशीर्षकों के अंतर्गत समझा जा सकता है :

4. 1. **विशिष्ट वर्गीकरण** : इस उप अनुभाग का उद्देश्य इस बात का पता लगाना है कि क्या विशेषज्ञों द्वारा किसी विशिष्ट विषय वर्गीकरण पद्धति का प्रारूप तैयार किया गया है, जो उन सत्ताओं को गहनता से समझने में सहायक हो सकती है जो उस सम्पूर्ण विषय अथवा उसके किसी विभाजन, अथवा उपविभाजन से सम्बन्ध रखती है। इसका उदाहरण भूविज्ञान, वनस्पतिशास्त्र, और प्राणि विज्ञान में वर्गिकी वर्गीकरण (Taxonomical Classification); और रसायन शास्त्र में कालक्रमिक तालिकाओं का प्रावधान किया जाना है। इस उप अनुभाग के लिए प्रायः अपेक्षाकृत स्थूल वर्गों की एक संक्षिप्त तालिका को परिचयात्मक टिप्पणी तथा पद्धति के संक्षिप्त परिचय के साथ दिया जाता है।

NOTES

4. 2. प्रलेख वर्गीकरण : इस उपविभाग का उद्देश्य यह देखना है कि वर्गीकरण पद्धतियों में तथा पर्यायकोशों और विषय शीर्षकों की सूची में विषयों का प्रतिपादन किस प्रकार हुआ है। ऐसी पद्धति का विस्तार-क्षेत्र सामान्य हो सकता है। जैसे—ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन, कोलन क्लैसिफिकेशन, अभियांत्रिकी और वैज्ञानिक पदों के थिसाफरस, समानांतर कोश इत्यादि। ऐसी पद्धति अपने विस्तार-क्षेत्र में विशिष्ट भी हो सकती है। उदाहरणार्थ—प्रलेखों की पैकेजिंग के लिए वर्गीकरण की अनुसूचियाँ और वर्णानुक्रमिक अनुक्रमणी; लंदन एज्युकेशन क्लैसिफिकेशन; इनिस (INIS) थिसॉरस; थिसॉरस ऑफ फेडरल एविएशन एजेंसी डिस्क्रेटर्स (यू एस ए) मेडिकल सब्जेक्ट हेडिंग्स ; मेश (MeSH); सब्जेक्ट हेडिंग्स फॉर इंजीनियरिंग (SHE) इत्यादि। इसके अलावा सम्बन्धित विषय पर यदि कोई अनुक्रमणीकरण अथवा सारांशीकरण पत्रिका है, तो सामान्यतः इनके लिए विशिष्ट प्रलेख वर्गीकरण पद्धति का प्रयोग ही उपर्युक्त रहेगा। पद्धति के उपयोग को ध्यान में रखते हुए ऐसी प्रत्येक पद्धति में से एक संक्षिप्त तालिका निकाल ली जाती है। जब पद्धति में वर्णानुक्रम भाग और वर्णानुक्रम भाग दोनों हों तो, सम्बन्धित विषय से उपर्युक्त सन्दर्भ ढूँढ निकालने के लिए दोनों भागों को देखना आवश्यक हो जाता है।

5

विषय का विकास : सम्बन्धित विषय के विकास का अध्ययन निम्नलिखित उप शीर्षकों के अंतर्गत किया जाता है :

5. 1. **प्रमुख घटनाएँ :** विषय के विकास से सम्बन्धित युगांतकारी घटनाओं के योदगान का उल्लेख आता है। इनके विस्तृत विभाजनों और उपविभाजनों के अंतर्गत इनका अध्ययन किया जाता है। प्रत्येक विभाजन अथवा उपविभाजन के अंतर्गत जहाँ उपर्युक्त लगे, प्रविष्टियों का व्यवस्थापन कालक्रमानुसार होगा। प्रत्येक प्रविष्टि में, जो यथासम्भव सुनिश्चित होनी चाहिए निम्नलिखित सूचनाएँ दी जाएँगी : क) वर्ष अथवा योगदान का काल जो यथासम्भव, सुनिश्चित हो; ख) योगदाता का नाम; ग) योगदाता के जीवन के सम्बन्ध में संक्षिप्त टिप्पणी; घ) योगदाता के सभी महत्वपूर्ण योगदान; और च) मूल प्रलेख का शीर्षक और प्रकाशन वर्ष—उसके सन्दर्भ स्रोत एवं उसमें उसके स्थान से सम्बन्धित सूचना, जहाँ, कहीं लागू हो, देते हुए।

5. 2. **शोध की प्रवृत्ति :** इससे अभिप्राय सम्बन्धित विषय में शोध की प्रवृत्ति (झुकाव) से है। इसे समीक्षाएँ प्रकाशित करने वाले प्रलेखों से तथा अनुक्रमणीकरण और सारांशीकरण पत्रिकाओं इत्यादि से संकलित किया जा सकता है। इसकी पृष्ठभूमि में यह विचारधारा है कि सम्बन्धित विषय के उन विशाल क्षेत्रों चिह्नित करना है, जिनमें शोध प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त ऐसा प्रयास करना है, जिससे सामान्य रूप से : (अ) सम्बन्धित विषय पर साहित्य की वृद्धि; और (ब) प्रलेखीय रिसाव की मात्रा और सम्बन्धित विषय में शोध परिणामों की सूचना के प्रसारण को सुनिश्चित किया जा सके।

5. 3. शिक्षा की प्रवृत्ति : सम्बन्धित विषय में शिक्षा की प्रवृत्ति। इस अनुभाग का आशय सम्बन्धित विषय में शिक्षा के विकास से है तथा उसके विभिन्न स्तरों जैसे स्नातक पूर्व, स्नातक, स्नातकोत्तर, शोध इत्यादि में हो रहे विकास से है।

NOTES

6

सूचना के स्रोत : इसमें सम्बन्धित विषय पर सूचना की उपलब्धता शामिल है। सूचना के तीन प्रकार के स्रोत सहज ही अभिज्ञेय हैं। ये हैं : (अ) प्रलेखीय स्रोत; (ब) संस्थागत स्रोत; और (स) मानवीय स्रोत। इस अनुभाग का आशय सम्बन्धित विषय पर सूचना के विभिन्न स्रोतों की जानकारी प्राप्त करना है। विभिन्न स्रोतों के सम्बन्ध में सूचना विभिन्न उपशीर्षकों के अंतर्गत संकलित की जाती है। इसके लिए विभिन्न मानक प्रोफॉर्मों का उपयोग किया जाता है। इन प्रोफॉर्मों के नमूने पृथक् से प्रस्तुत किए जाएँगे। सूचना के स्रोतों से सम्बन्धित प्रत्येक प्रविष्टि को एक मानक वर्गीकरण पद्धति के अनुसार वर्गीकृत किया जाना चाहिए।

प्रत्येक उप अनुभाग के अंतर्गत प्रविष्टियों का व्यवस्थापन, उपयोग में लाई जा रही पद्धति के अनुसार किया जाना चाहिए। सम्बन्धित विशिष्ट विषय के स्रोतों पर हमेशा तुरन्त निर्भर नहीं हो जाना चाहिए; अपितु इस अनुभाग के उप अनुभागों की दृष्टि से स्रोतों का निम्नलिखित विषयों पर होना आवश्यक है : (क) विशिष्ट विषय; (ख) विशिष्ट विषय से अधिक विस्तार वाले विषय; (ग) विशिष्ट विषय से कम विस्तार वाले विषय। उदाहरणार्थ—जब अध्ययन का विशिष्ट विषय 'रसायन शास्त्र' हो तो 'विज्ञान', 'भौतिक विज्ञान', 'रसायन विज्ञान' इत्यादि विषय अधिक विस्तार वाले विषय होंगे। पर 'अकार्बनिक रसायन शास्त्र', 'कार्बनिक रसायन शास्त्र', 'भौतिक रसायन शास्त्र' इत्यादि कम विस्तार वाले विषय होंगे।

6. 1. **प्रलेखीय स्रोत :** इस उप अनुभाग का उद्देश्य सम्बन्धित विषय पर सूचना के विविध प्रकार के प्रलेखीय स्रोतों की ओर ध्यान आकर्षित करना है। ऐसे स्रोत प्रमुख रूप से दो श्रेणियों के अंतर्गत रखे जा सकते हैं—(क) प्राथमिक, (ख) द्वितीयक। इन दोनों श्रेणियों में से प्रत्येक के अंतर्गत अनेक प्रकार के स्रोत सम्मिलित होते हैं। प्रारम्भ में यह आवश्यक होगा कि हम प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों के अंतर्गत आने वाले महत्वपूर्ण प्रलेखीय स्रोतों के चयन की ओर ध्यान दें। प्राथमिक श्रेणी के स्रोतों में, (क) उत्कृष्ट कोटि की पाठ्य पुस्तकें; (ख) किसी निर्दिष्ट विषय पर लिखे गए उन्नत कोटि के ग्रन्थ; और (ग) प्राथमिक समसामयिक प्रकाशन शामिल होंगे। द्वितीयक श्रेणी के स्रोतों में, (क) पारंपरिक सन्दर्भ ग्रन्थ जैसे—विश्वकोश, हैंडबुक, निर्देशिकाएँ, पारिभाषिक शब्दावली इत्यादि (ख) तदर्थ ग्रन्थसूचियाँ। (ग) अनुक्रमीकरण और सारांशीकरण पत्रिकाएँ (घ) समीक्षा प्रकाशित करने वाले प्रलेख (वार्षिक समीक्षाएँ, वार्षिक कार्यों की प्रगति के प्रतिवेदन) इत्यादि शामिल हैं। इस उप अनुभाग में ऐसी संस्थाओं की एक सूची (उनके पतों सहित) को जोड़ देना उपयोगी होगा जो सम्बन्धित विषय के प्रलेखों के प्रकाशन में विशिष्टता रखती हों।

NOTES

6. 2. **संस्थागत स्रोत** : इस उप अनुभाग का उद्देश्य सम्बन्धित विषय पर सूचना के विविध स्रोतों की ओर ध्यान आकर्षित करना है। इस अनुभाग के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सम्बन्धित विषय पर आयोजित सम्मेलनों और परियोजनाओं की ओर ध्यान देना होगा। इसकी पृष्ठभूमि में, उन संस्थाओं तथा उनके द्वारा आयोजित सम्मेलनों और परियोजनाओं की पहचान करना है जिन्होंने अपने शोध, शिक्षण तथा संगठन के माध्यम से विषय में विशिष्टता अर्जित की है। यह सूचना अन्य स्रोतों से शीघ्र उपलब्ध नहीं हो सकती। जहाँ तक सम्भव हो, चयन में निम्नलिखित तीन श्रेणियों की संस्थाओं को सम्मिलित किया जाना चाहिए—(क) अंतरराष्ट्रीय; (ख) राष्ट्रीय; और (ग) स्थानीय।

6. 3. **मानवीय स्रोत** : इस उप अनुभाग का उद्देश्य सम्बन्धित विषय पर मानवीय स्रोतों की जानकारी को प्राप्त करना है। इसके पीछे विषय से सम्बन्धित ऐसे विशेषज्ञों की पहचान करने का विचार है, जो जीवित हैं और जिन्हें उनकी शैक्षिक उपलब्धियों और अनुभवों के कारण, विशेषज्ञ के रूप में मान्यता प्रदान की जा चुकी है। ऐसे विशेषज्ञों से जब सम्पर्क किया जाता है तो वे विषय से सम्बन्धित ऐसी विशिष्ट सूचनाएँ देने की स्थिति में होते हैं, जो अन्य स्रोतों से शीघ्र प्राप्त नहीं की जा सकती। जहाँ तक व्यावहारिक हो, इसके लिए अंतरराष्ट्रीय राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर प्रसिद्ध प्राप्त जीवित व्यक्तियों का चयन किया जाना चाहिए।

7

सूचना हस्तांतरण प्रक्रियाएँ : इस अनुभाग का उद्देश्य इन बातों का पता लगाना है कि : (अ) किसी विषय पर सूचना के उपयोक्ताओं के मध्य सूचना हस्तांतरण की प्रक्रिया कैसी है ?; (ब) विषय में विशिष्टता अर्जित किए हुए व्यक्तियों का सूचना प्राप्ति सम्बन्धी व्यवहार कैसा है ?; और (स) विषय पर असामान्य सूचना प्रश्न क्या हैं ?

विषय के इन पहलुओं से सम्बन्धित सूचना प्रमुख रूप से उन प्रलेखों से संकलित की जाती है, जो प्रलेख इन पहलुओं के सम्बन्ध में सम्पूर्ण या उसके कुछ भाग के बारे में अथवा सम्बन्धित विषय को सम्मिलित करने वाले अधिक व्यापक विषय की जानकारी रखते हैं। जब किसी प्रकार का कोई विशिष्ट विवेचन उपलब्ध न हो तो सूचना हस्तांतरण प्रक्रियाओं और सूचना प्राप्ति व्यवहार पर सामान्य सूचना को ध्यान में रखा जाना चाहिए। विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में सूचना प्रश्नों को, दूसरे विषयों पर किए गए प्रश्नों के अनुरूप निर्मित करना पड़ सकता है, क्योंकि अधिकतर विषयों में इन्हें सहज ही प्राप्त नहीं किया जा सकता।

8

सारांश : सारांश, सम्बन्धित विषयों में से, निम्नलिखित में से किसी एक पहलू पर, अपना ध्यान केन्द्रित कर सकता है; (अ) प्राथमिक प्रलेखों की अभिवृद्धि पर शोध का प्रभाव; (ब) सूचना के द्वितीयक प्रलेखीय स्रोतों की पर्याप्तता अथवा अपर्याप्तता; (स) सूचना के स्रोतों तक भौतिक रूप से पहुँचने की समस्या; (द) सूचना के संगठन की समस्या; और (इ) विषय के किसी पहलू के सम्बन्ध में जो उसके अध्ययन क्षेत्र में आता हो, टिपपणी और सुझाव।

सन्दर्भ : इस अनुभाग का उद्देश्य उन प्रलेखों को सूचीबद्ध करना है जिनका उपयोग इस हैण्डबुक को संकलित करने में किया गया है इस अनुभाग के लिए, प्रत्येक प्रलेख की एक लघु प्रविष्टि तैयार की जानी है। प्रविष्टि का निर्माण व्यावहारिक सूचीकरण की किसी मानक संहिता के अनुसार किया जाना चाहिए। अधिकांश मामलों में, एक स्थूल प्रलेख (Macro-document) के लिए प्रविष्टि इस प्रकार से तैयार की जाती है :

NOTES

ATKINS (Kenneth R). Physics—once over—lightly 1972. यदि स्थूल प्रलेख के किसी विशिष्ट भाग का संदर्भ दिया गया है तो इसकी वास्तविक अवस्थिति को, अंतिम मद के रूप में, निम्नलिखित प्रकार से सम्मिलित किया जाना चाहिए : Part 2; अथवा Chap 3; अथवा Sec. 52; अथवा Page 20—28 इत्यादि। यह इस बात पर निर्भर करता है कि प्रलेख में किस प्रकार की जानकारी को देना उपयुक्त रहेगा। सामान्यतः एक सूक्ष्म प्रलेख (Micro-documents) के लिए प्रविष्टि निम्नलिखित प्रकार से तैयार की जाती है :

ROBERTSON (Andrew). Behaviour pattern of scientists and engineers in information seeking for problem-solving (Aslib Proceedings, 26; 1974; 184—90).

ऊपर दिए गए तरीकों से तैयार प्रविष्टियों को वर्णानुक्रमानुसार और संख्यांकित क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। प्रलेख की क्रम संख्या को मूलपाठ के उपर्युक्त अनुभाग में दर्शाना चाहिए ताकि जहाँ से सूचना संकलित की गई है, उस स्रोत की जानकारी प्राप्त हो सके। दूसरी ओर, अनुभाग संख्या को सम्बन्धित प्रविष्टि के एक भाग के रूप में दिया जाता है। परिणामस्वरूप सन्दर्भ अनुभाग में प्रविष्टि निम्नलिखित प्रकार से दिखाई देगी :

5 Sec 32 ATKINS (Kenneth R). Physics—once over—lightly. 1972.,
Chap 9.

अंतर्विषय और अनुक्रमणी

प्रत्यक्ष रूप से 'विषयों के अध्ययन' सम्बन्धी परियोजनाओं के लिए आवश्यक सूचना, सूचना के विद्यमान प्रलेखीय स्रोतों—प्राथमिकी और द्वितीयक दोनों से ही संकलित की जाती है। अधिकतर मामलों में जो तकनीक प्रयोग में लाई जाती है, वह 'सारांशीकरण' की तकनीक है। अर्थात् आवश्यक अंतर्विषयांशों का संक्षेप में सार प्रस्तुत करना। जब संकलित सूचना को निर्धारित प्रोफॉर्मा के अनुसार सुनियोजित कर लिया जाता है तो यह सम्बन्धित विषय के कुछ पहलुओं पर सूचना की एक लघु पुस्तिका का रूप ले लेती है जो व्यावसायिक सूचना कार्यों तथा सेवाओं के लिए आवश्यक समझी जाती है। इस लघु पुस्तिका को एक प्रभावी बाह्य स्मरणशक्ति के रूप में बदलना हो तो इसमें :

- (1) एक विस्तृत अंतर्विषयी सूची; और
- (2) एक उत्तम प्रकार की वर्णानुक्रम विषय अनुक्रमणी को भी शामिल कर दिया जाता है।

अंतर्विषयी सूची का निर्माण प्रोफॉर्मा में दिए गए शीर्षकों के अनुसार होगा। अनुक्रमणीकरण के लिए, अनुक्रमणीकरण की एक उपर्युक्त प्रक्रिया को अपनाया होगा। इसके लिए भारतीय मानदण्ड का प्रयोग करना अधिक लाभकारी सिद्ध होगा।

वर्गीकरण प्रणाली का उपयोगी

NOTES

पुस्तकालय में उपयोग में लिए जाने वाले उपकरणों और तकनीकों में से, वर्गीकरण तकनीक का सम्बन्ध प्रलेखों में निहित विषयों की व्याख्या करने तथा उनकी संरचना को समझने से है। यहाँ वर्गीकरण आवश्यक रूप से एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक विषय के संघटक विचारों को पहचानने, इन विचारों के बीच पारस्परिक सम्बन्धों की मात्रा को सुनिश्चित करने तथा इन विचारों को उस विषय के अधिकांश विशेषज्ञों द्वारा वरीय अनुक्रम में व्यवस्थित करने का कार्य भी किया जाता है।

संघटकों के ऐसे विश्लेषण और व्यवस्थापन को, यथासम्भव स्पष्ट रूप से वर्णित अभिधारणाओं और सिद्धान्तों द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे विषयों की संरचना का एक सुसंगत पैटर्न प्राप्त किया जा सके। वर्गीकरण पद्धति का उपयोग कुछ सहायक अभिधारणाओं और सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए। साथ ही इन्हें इस प्रकार परखा जाना चाहिए जिससे विभिन्न विषयों को तथा उनके संघटकों को विशेषज्ञों द्वारा पसन्द किए गए सहायक पैटर्न में व्यवस्थित किया जा सके। ऐसा करने से पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान कर्मियों को विषय को सहज ही समझने में सहायता मिलेगी और इस प्रकार अर्जित ज्ञान का उपयोग सूचना समेकित सेवा अभिकल्पित करने में किया जा सकेगा। इससे उपयोक्ताओं की विशिष्ट माँगों को संतुष्ट किया जा सकता है। निश्चय ही, ऐसा करने पर, पुस्तकालय कर्मी सहज ही धीरे-धीरे सम्बन्धित विषय की पारिभाषिक शब्दावली से अधिकाधिक परिचित हो जाएँगे।

वर्गीकरण पद्धति का अभिकल्पन और विकास

हाल ही के वर्षों में, विषय जगत् में तीव्र गति से हो रहे विकास तथा वृद्धि के कारण, वर्गीकरणकार को समय-समय पर वर्गीकरण प्रणाली प्रणेतता की थोड़ी बहुत भूमिका भी निभानी पड़ती है। किसी भी पद्धति के लिए विषय जगत् के भावी विकास का पूर्वानुमान लगाना और विकास के साथ उत्पन्न विषयों को पद्धति में समाविष्ट करना सम्भव नहीं है। इसलिए, एक वर्गीकरणकार के लिए भी वह आवश्यक हो जाता है कि वह वर्गीकरण पद्धति की क्षमता का विस्तार करने में सक्षम हो, जिससे ज्ञान के विकास के साथ उत्पन्न नए विषयों के लिए सहविस्तृत वर्ग संख्याएँ निर्मित की जा सकें और साथ ही उन्हें वर्ग अथवा संकेतक संख्याएँ भी प्रदान की जा सकें। इसलिए वर्तमान समय के प्रलेखों को वर्गीकृत करने के लिए केवल बनी बनाई वर्गीकरण पद्धति के उपयोग का ज्ञान ही आवश्यक नहीं है, अपितु वर्गीकरण पद्धति के आधार तथा उसके अभिकल्पन के लिए प्रयुक्त की गई विधि तथा वर्गीकरण पद्धति के विकास का ज्ञान होना भी आवश्यक है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. शिथिल समुच्चय क्या है?
4. विखण्डन की प्रक्रिया का आशय स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

अभिकल्पना के सोपान

प्रमुख सोपानों में विषय से सम्बन्धित उपर्युक्त प्रलेखों का क्रमिक रूप से अध्ययन शामिल है, जिससे विचारों, उसके पारस्परिक सम्बन्धों तथा संघटकों के संयोजन की विधियों तथा अधिकांश विषय विशेषज्ञों द्वारा पसन्द

किए गए संघटकों के अनुक्रम को पहचाना जा सके। वर्गीकरण पद्धति का प्रारूप तैयार करने में चाहे किसी भी आदर्श को क्यों न अपनाया गया हो, उसमें उपरिलिखित सोपान सम्मिलित होंगे ही।

विषयों के सम्बन्ध
में जानकारी

निष्कर्ष

यह स्पष्ट है कि एक वर्गीकरण पद्धति का अभिकल्पन और विकास, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान कर्मियों को, विषयों के बारे में सीखने, और उनमें से प्रत्येक के विकास के बारे में जानकारी रखते हुए, विषयों का ज्ञान प्राप्त करने, तथा कुछ सीमा तक, निकट भविष्य में होने वाले विकास की चुनौती का सामना करने का अच्छा अवसर प्रदान करता है।

अन्य विधियाँ

नीचे कुछ अन्य प्रकार के अवसरों और विधियों का उल्लेख किया जा रहा है, जिनके माध्यम से पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान कर्मी विषयों के सरल एवं कठिन पक्षों के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं :

- (क) पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान कर्मियों की आवश्यकताओं के अनुरूप समय-समय पर आयोजित, विषय विशेषज्ञों के व्याख्यानों एवं परिचर्चाओं में उपस्थित होकर तथा उनमें सहभागी बनकर;
- (ख) वर्गीकरण पद्धति को अभिकल्पित करते समय विषय विशेषों से सम्पर्क स्थापित करके;
- (ग) विषय विशेषज्ञों द्वारा दिए गए व्याख्यानों द्वारा तथा इनमें उपस्थित होकर आपसी विचार-विमर्श करके; एवं
- (घ) नए प्रवेशार्थियों के प्रवेश कार्यक्रमों में उपस्थित होकर। ये कार्यक्रम संस्थान में कार्यरत वरिष्ठ कर्मियों और अनेक बार संस्थान के बाहर के व्यक्तियों द्वारा दिए गए व्याख्यानों की श्रृंखला के रूप में होते हैं इनकी अवधि 3 से 6 माह तक ही होती है।

5. सार-संक्षेप

यह अध्याय आपको 'विषय जगत् : संरचना और विकास' विषय से परिचित कराती है। इसमें विषय जगत् के लक्षणों एवं अभिलक्षणों, और विशेष रूपसे विषय निर्माण की विधियों पर प्रकाश डाला गया है। इसके अलावा यह इकाई एक व्यवस्थित विधि को स्पष्ट करती है, जिसे पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान व्यवसायियों द्वारा उन विषयों को समझने के लिए अपनाया जा सकता है, जो उनके लिए नए हैं।

6. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. प्रथम सूत्र और उसके निहितार्थ : प्रथम सूत्र है—'पुस्तकों उपयोग के लिए हैं'। यहाँ 'पुस्तक' पद एक सजातीय पद है जो सभी प्रकार के प्रलेखों को निर्दिष्ट करने के लिए उपयोग में लाया जाता है, इनमें स्वयं पुस्तकें, पत्रिकाएँ, तकनीकी प्रतिवेदन, पेटेण्ट्स, विनिर्देशन, अपारंपरिक और मेटा प्रलेख (Meta Documents) शामिल हैं। प्रलेख एक त्रयी है जिसके निम्नलिखित संधटक हैं :

- (i) आत्मा—निहित ज्ञान है;
- (ii) सूक्ष्म शरीर—ज्ञान की अभिव्यक्ति और भाषा है; और
- (iii) स्थूल शरीर—प्रलेख का भौतिक आकार है।

दूसरी ओर, 'उपयोग' पद से अभिप्राय व्यवस्थित अभिव्यक्त और प्रलेखों में निहित ज्ञान का आवश्यक रूप से उपयोग है। इसका तात्पर्य इन विषयों से है जिनकी जानकारी प्रलेखों में दी गई है और जिनका उपयोग पाठकों द्वारा किया जाता है। ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रलेख के सूक्ष्म शरीर का होना आवश्यक है,

NOTES

NOTES

और यह ज्ञान की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है साथ ही प्रलेख का स्थूल शरीर निहित ज्ञान को, सभी स्थानों एवं सभी कालों में प्रसारित करने का एक सुविधाजनक माध्यम है। इस प्रकार प्रलेख पुनर्प्राप्ति प्रणाली (document retrieval system) अनिवार्यतः 'विषय' के वर्गीकरण तथा उसकी खोज, पुनर्प्राप्ति और सेवा से सम्बन्धित है।

2. **द्वितीय सूत्र और उसका निहितार्थ** : द्वितीय सूत्र, 'प्रत्येक पाठक को उसका ग्रन्थ मिले', का अभिप्राय है कि प्रलेखों का वर्गीकरण एवं व्यवस्थापन तथा उनके मुख्य संलेखों का निर्माण इस प्रकार किया जाए कि वे पाठक की अभिरूचि के उपयुक्त प्रलेखों को एक स्थान पर ला सकें, साथ ही उन्हें उनके पारस्परिक सम्बद्धता के घटते हुए क्रम में व्यवस्थित कर सकें। दूसरे शब्दों में, प्रलेखों और उनके लिए निर्मित संलेखों के व्यवस्थापन में अपूपा पैटर्न (APUPA Pattern) (असंबद्ध : Alien, उपच्छया : Penumbra, प्रच्छया : Umbral, उपच्छया : Penumbra, असंबद्ध : Alien) का अनुपालन वांछनीय है।

3. **शिथिल समुच्चय** : शिथिल समुच्चय दो या दो से अधिक :

(अ) विषयों (मूल अथवा यौगिक); तथा

(ब) एकल विचारों (एक ही पक्ष के अथवा किसी एक पक्ष की पंक्ति के) का एकत्रीकरण है।

समुच्चय का प्रयोग किसी समूह के संघटकों के मध्य, किसी एक या अन्य संभावित सम्बन्धों को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप मिश्रित विषय अथवा एक जटिल एकल विचार अथवा एक जटिल पंक्ति एकल विचार, जहाँ जैसी स्थिति हो, का निर्माण होता है।

4. **विखंडन** : किसी वर्गीकरण पद्धति में सम्मिलित किए गए प्राथमिक मूल विषयों (PBS: Primary Basic Subject) का पहला वर्ग, विषय जगत् के विभाजन / विखंडन (Fission) की प्रक्रिया का परिणाम है। विषय जगत् का यह विभाजन / विखंडन उसी प्रकार से होता है जिस प्रकार का विभाजन विषय विशेषज्ञ स्वयं अपनी-अपनी विशिष्टता के उपयुक्त सुविधाजनक क्षेत्रों का निर्माण करने के लिए करते हैं। इस प्राथमिक विभाजन के लिए जिस विशिष्ट अभिलक्षण का प्रयोग किया जाता है उसे पहचानना सम्भव नहीं है।

विखंडन को हम विभाजित करने, अथवा बाँटने अथवा खंडों में टुकड़े करने की प्रक्रिया मान सकते हैं। इस प्रक्रिया को अभी तक विच्छेदन (Dissection) पद से निर्दिष्ट किया जाता था। विच्छेदन से आशय किसी सत्ता को बाह्य क्रिया द्वारा खंडों में बाँटने अथवा टुकड़े करने इत्यादि से है, जबकि विखंडन, बाह्य साधन का प्रयोग किए बिना, विभाजन की एक आंतरिक प्रक्रिया है।

7. **मुख्य शब्द**

ज्ञान (Knowledge)

: मानव सभ्यता द्वारा संरक्षित विचारों की समष्टि अर्थात् विचार जगत् की समग्रता।

वर्गीकरण प्रणाली प्रणेता (Classificationist)

: किसी वर्गीकरण पद्धति को तैयार करने वाला व्यक्ति। वह व्यक्ति जो पुस्तकालय वर्गीकरण प्रणाली को तैयार करता या बनाता है।

वर्गीकरणकार (Classifier)

: किसी वर्गीकरण पद्धति की सहायता से प्रलेखों का वर्गीकरण करने वाला व्यक्ति।

विचार (Idea)

: तर्कशक्ति तथा बुद्धि के प्रयोग से परिमार्जित चिंतन, मनन, कल्पना इत्यादि का प्रतिफल; प्रत्यक्षण के चुनिंदा बोध, अथवा/और अंतर्प्रज्ञा द्वारा प्राप्त एवं सीधा स्मृति में संचयित बोध।

विषयों के सम्बन्ध
में जानकारी

सूचना (Information)

: आँकड़े—चाहे वे अंकों, ग्राफिक्स अथवा शब्दों के रूप में हों, जिन्हें इस प्रकार संगठित, व्यवस्थित और प्रस्तुत किया गया हो जिससे अंतर्निहित पैटर्न स्पष्ट हो सके। तापमान, आर्द्रता और वायुप्रवाह संबंधी प्रतिवेदन, सैकड़ों मौसम संबंधी केन्द्रों से एकत्र कर, जिनका कम्प्यूटर अनुरूपण किया जाता है, उसके बाद ये आँकड़े तूफान संबंधी प्रबल संभावनाओं की भविष्यवाणी को दर्शाते हैं। यह एक सूचना है।

NOTES

8. अभ्यास-प्रश्न

1. विषय निर्माण की विविध विधियों का वर्णन कीजिए।
2. विलयन एवं आसवन विधि का उदाहरण सहित विवरण दीजिए।
3. समूह एवं संकुलन की प्रक्रिया को उदाहरण सहित समझाइये।
4. विषयों के अध्ययन से आप क्या समझते हैं? इसकी विधि का विवेचन कीजिए।
5. अध्ययन के लिए प्रलेखों के प्रकार पर प्रकाश डालिए।

9. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Bavadekar, P.N. [et. al.] (1967). Rate of Development of the Universe of Subjects and the Design of Schemes for Classification. DRTC Annual Seminar. 5, Paper A.

Bhattacharya, G. (1975). Project on Study of Subjects. Library Science. 12, 65-79.

Bertalanffy, L. Van (1950). Outline of General Systems Theory. British Journal of Philosophy Science. 1, 134-165.

Boulding, K. E. (1968). General Systems Theory—The Skeleton of Science. In :

Buckley, W. (ed.) Modern Systems Research for Behavioral Scientist.

Chapter 1.

Lazlo, E. (1971). Systems Philosophy. Main Currents in Modern Thought. 28, 58.

Neelameghan, A. (1973). Basic Subjects : Special Issue. Library Science. 10, 149-221.

Neelameghan, A. (1976). Research on the Structure and Development of the Universe of Subjects. Library Science. 4, 336-355.

Neelameghan, A. (1972). Systems Approach in the Study of the Attributes of the Universe of Subjects. Library Science. 9, 445-472.

Ranganathan, S.R. (1967). Prolegomena to Library Classification. 3rd ed.

Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.

Ranganathan, S. (1987). Colon Classification. 7th Edited by M.A. Gopinath.

NOTES

Shera, J.H. (1966). Documentation and the Organisation of Knowledge. P. 61.

शर्मा, पाण्डेय एस. के . (1996)। सरलीकृत पुस्तकालय वर्गीकरण सिद्धान्त। दिल्ली : ज्ञान गंगा।

अभिधारणात्मक एवं प्रणालीगत उपागम

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्याय के उद्देश्य
2. परिचय
3. विषय का प्रतिनिधित्व
4. अभिधारणात्मक उपागम
 - 4.1 लाभ
 - 4.2 अभिधारणात्मक उपागम का अनुप्रयोग
 - 4.3 प्रायोगिक वर्गीकरण में अभिधारणात्मक उपागम
5. प्रणालीगत उपागम
 - 5.1 मूलभूत श्रेणियों के सन्दर्भ में प्रणालीगत उपागम
 - 5.2 प्रणालीगत उपागम के प्रायोगिक निहितार्थ
6. सार-संक्षेप
7. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों
8. मुख्य शब्द
9. अभ्यास प्रश्न
10. संदर्भ ग्रन्थ सूची।

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्याय में आपको वर्गीकरण के क्षेत्र में अभिधारणात्मक एवं प्रणालीगत उपागमों की जानकारी दी गई है। ये विधियाँ विषय विश्लेषण पर आधारित हैं, तथा पुस्तकालय में पुस्तक संग्रह को सुव्यवस्थित करने के लिए सुनिश्चित मार्गों का निरूपण करती हैं। इस अध्याय का अध्ययन करने के बाद आप :

- अभिधारणात्मक उपागम के अर्थ, आवश्यकता एवं लाभ को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे,
- पुस्तकालय वर्गीकरण के क्षेत्र में अभिधारणा के अनुप्रयोग की पूरी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, तथा प्रणालीगत उपागम की अवधारणा से परिचित हो सकेंगे एवं पुस्तकालय वर्गीकरण में इसके प्रायोगिक निहितार्थ से भिन्न हो सकेंगे।

2. परिचय

इस पाठ्यक्रम इकाई 2 में वर्गीकरण के सामान्य सिद्धान्त की जानकारी दी गई है, तथा इसके साथ ही यह भी बताया गया है कि विभिन्न पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धतियों जैसे ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन, यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन, एवं कोलन क्लैसिफिकेशन इत्यादि में विषय जगत् का मानचित्रण किस प्रकार से किया गया है। प्रस्तुत अध्याय आपको पुस्तकालय वर्गीकरण के क्षेत्र में अभिधारणात्मक एवं प्रणालीगत उपागमों की जानकारी दी गई है। अभिधारणात्मक उपागम, जैसा कि नाम से ही ज्ञात होता है, वर्गीकरण के सामान्य सिद्धान्त (General Theory of Library Classification) पर आधारित है जिसका निरूपण रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित नियामक सिद्धान्तों (Normative Principles) को आधार बनाकर किया गया है; जबकि प्रणालीगत उपागम बरतालॉफी (Bertalanffy) के "जनरल सिस्टम्स थियरी" पर आधारित है। प्रस्तुत इकाई में अभिधारणात्मक उपागम (Postulational approach) की आवश्यकता एवं उसके अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है; तथा पुस्तकालय वर्गीकरण में अभिधारणात्मक उपागम के अनुप्रयोग एवं उसकी उपयोगिता का विशेष उल्लेख किया गया है। यहाँ पर, विशेष रूप से, यह स्पष्ट समझाया गया है कि किस प्रकार से अभिधारणात्मक उपागम ज्ञान जगत् के बौद्धिक व्यवस्थापन के लिए एक सुव्यवस्थित पद्धति प्रस्तुत करता है तथा प्रायोगिक वर्गीकरण में अनुप्रयोग के लिए उपयोगी दिशा निर्देशों की आवश्यकता को भी पूरा करता है।

अभिधारणात्मक उपागम का स्पष्ट विवरण देने के बाद इस इकाई में मूलभूत श्रेणियों एवं पुस्तकालय वर्गीकरण के लिए उनके प्रायोगिक निहितार्थ के संदर्भ में 'प्रणालीगत उपागम' का विवेचन किया गया है।

3. विषय का प्रतिनिधित्व

सभी सूचना प्रणालियों में विषय के प्रतिनिधित्व को सूचना पुनः प्राप्ति का मुख्य आधार माना जाता है। किसी भी प्रलेख की विषय—वस्तु अथवा उसमें निहित विचारांश का प्रतिनिधित्व विविध रूपों में किया जा सकता है, जैसे विषय शीर्षक, विषय अनुक्रमणिका पद, वर्ग संख्या, डेटा संरचना एवं अन्य प्रकार के संक्षिप्त प्रतिरूपों (Surrogates) के रूप में। मुख्य रूप से यह कार्य सूचना प्रणाली में अभीष्ट सूचना तक पहुँचने के लिए किया जाता है। विषय प्रतिनिधित्व की इस प्रक्रिया में प्रत्येक की विषय—वस्तु का विश्लेषण उसके संघटक तत्वों में किया जाता है तथा इन संघटक तत्वों को एक अभीष्ट अनुक्रम या क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। इस प्रक्रिया में विषय—वस्तु के असीमित—आयामी विन्यास को उसी के समतुल्य पंक्तिबद्ध विन्यास में बदल दिया जाता है, अर्थात् इस प्रक्रिया के द्वारा प्रलेख में निहित गतिशील, निरंतर वर्धनशील, बहुआयामी एवं बहुपक्षीय ज्ञान का प्रतिनिधित्व या निरूपण एक पंक्तिबद्ध अनुक्रम में किया जाता है। इस प्रक्रिया में, स्पष्ट रूप से, किसी एक विषय क्षेत्र से सम्बन्धित प्रत्येक विषय के संघटक तत्वों को व्यवस्थित किया जाता है तथा विभिन्न विषय क्षेत्रों से सम्बन्धित सभी विषयों को आपस में ऐसे अनुक्रम में व्यवस्थित किया जाता है जो अधिकांश उपयोगताओं के लिए सहायक हों। इस प्रक्रिया में विषयों के बहुआयामी विन्यास

को एक पंक्ति में परिवर्तित या मानचित्रित करते समय यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि सभी विषयों का प्रत्येक पारस्परिक निकटतक सम्बन्ध अपरिवर्तनीय रूप से विद्वायमान रहे। अतः यह कहा जा सकता है कि विषय निरूपण की प्रक्रिया में मुख्यतः प्रलेख में निहित विषय—वस्तु के संघटक तत्वों का विश्लेषण किया जाता है, उनकी पहचान की जाती है एवं उनके पारस्परिक सम्बन्धों का निरूपण किया जाता है।

NOTES

विषयों की संरचना की प्रक्रिया में रंगनाथन ने अभिधारणात्मक उपागम विधि पर आधारित दृष्टिकोण को अपनाया है जबकि प्रणालीगत उपागम पर आधारित एक अन्य दृष्टिकोण भी इस कार्य में अपनाया जा सकता है। अनुवर्ती अनुच्छेदों में इन्हीं दोनों उपागमों का विस्तृत विवेचन किया गया है।

4. अभिधारणात्मक उपागम

पुस्तकालय में पुस्तकों को व्यवस्थित करने का सुविधाजनक तरीका तो यह है कि उन्हें एक पंक्तिबद्ध अनुक्रम में व्यवस्थित किया जाए। पुस्तकों विषयों का प्रतिनिधित्व करती हैं, अतः इसका यह परिणाम निकलता है कि भौतिक प्रतिबंधों के दबाव के कारण पुस्तकों को पंक्तिबद्ध क्रम में व्यवस्थित किया जाता है तथा पुस्तकों को पंक्तिबद्ध क्रम में रखने के फलस्वरूप विषयों को भी पंक्तिबद्ध क्रम में रखना पड़ता है। क्योंकि विषय एक गतिशील, निरंतर वर्धनशील, बहुआयामीज्ञान जगत् से सम्बन्ध रखते हैं, अतः इस कार्य में अनेक कठिनाईयाँ उत्पन्न होती हैं। वस्तुतः इसका अर्थ यह निकलता है कि एक पुस्तकालय में पुस्तकों को व्यवस्थित करने के लिए विषयों के वर्गीकरण के कार्य में, बहुआयामी ज्ञान जगत् में कुछ विषय बिन्दुओं की व्यवस्था को चिह्नित करके, इन विषय बिन्दुओं की व्यवस्था का एक पंक्ति में चित्रण अथवा परिवर्तन कर दिया जाता है; अर्थात् इस प्रक्रिया में बहुआयामी ज्ञान जगत् के क्षेत्र का एक आयामी स्थान में, उदाहरणार्थ, एक पंक्ति में चित्रण कर देना पड़ता है।

इस प्रकार, पुस्तकालय वर्गीकरण में यह समस्या उत्पन्न होती है कि विषयों के वर्गीकरण में कौन-कौन से अपरिवर्ती बिन्दुओं का चयन किया जाए इसके बाद यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि कौन-कौन से विषय ऐसे हैं जिनकी पारस्परिक निकटतम समीपता के सम्बन्ध इस मानचित्रण में अपरिवर्ती रखे जा सकें; क्योंकि विभिन्न विषयों में, एक अनिश्चित संख्या में, पारस्परिक निकटतम पड़ों के सम्बन्ध विद्यमान हो सकते हैं। इस प्रकार विषयों के मानचित्रण का कार्य अत्यधिक जटिल होता है।

भिन्न-भिन्न वर्गीकरण पद्धतियों में इस समस्या के भिन्न-भिन्न समाधान उपलब्ध हैं। रंगनाथन ने कुछ दिशा निर्देशों के माध्यम से मानचित्रण की इस समस्या को हल किया है। ये दिशा निर्देश पुस्तकालय वर्गीकरण में “अभिधारणात्मक उपागम” के नाम से जाने जाते हैं। इस विधि के अनुसार, किसी एक निश्चित क्षेत्र के लिए एक संक्रियात्मक विधि प्रस्तुत करने के लिए कुछ अभिधारणाएँ (दिशा निर्देश) निर्धारित की जा सकती हैं। यद्यपि इस प्रकार के अभिधारणात्मक उपागम को गणितीय अध्ययनों एवं दर्शन शास्त्र जैसे अन्य विषयों में अपनाया गया था, किन्तु रंगनाथन ने पुस्तकालय एवं ग्रन्थपरक वर्गीकरण के क्षेत्र में भी अभिधारणात्मक उपागम का अत्यंत सार्थक उपयोग किया है। रंगनाथन के अनुसार, “अभिधारणा वह उक्ति है जिसके लिए ‘सही’ या ‘गलत’ विशेषणों में से किसी का भी प्रयोग नहीं कर सकते, अपितु हम केवल यही कह सकते हैं कि जो अभिधारणाएँ हम निर्धारित करते हैं वे ‘सहायक’ अथवा ‘असहायक’ हैं”। इस प्रकार अभिधारणाएँ ऐसी पूर्वधारणाएँ हैं जो प्रलेखों के वर्गीकरण की प्रक्रिया को पूरा करने में सहायक होती हैं।

पुस्तकालय वर्गीकरण में अभिधारणात्मक उपागम का अनुप्रयोग इस विषय (वर्गीकरण) के अध्ययन एवं प्रयोग में विषयनिष्ठता का समावेश करता है। यह पुस्तकालय वर्गीकरण के अध्ययन एवं प्रयोग को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। अभिधारणात्मक उपागम के अनुप्रयोग के परिणामस्वरूप वर्गीकरण का विषय सरल एवं रोचक भी बन जाता है। वस्तुतः रंगनाथन के कथानानुसार अभिधारणाओं पर आधारित प्रायोगिक वर्गीकरण “अश्रुपात रहित वर्गीकरण” (Classification without tears) होता है। इसके अतिरिक्त, वर्गीकरण प्रणाली प्रणेता को, जो वर्गीकरण पद्धतियों की रूपरेखा तैयार करता है एवं उनको विकसित करता

NOTES

है, गुप्त संकटों (pitfalls) से बचने के लिए, अपने कार्य को इसी प्रकार के किसी उपागम पर आधारित करना चाहिए। इस प्रकार का उपागम अपनाकर वर्गीकरणकार वर्गीकरण के कार्य में लापरवाही पूर्ण दृष्टिकोण (hit-or-miss approach) अपनाने से बच सकता है। वास्तव में, इस उपागम की अभिधारणाएँ विभिन्न पद्धतियों की क्षमता एवं प्रभावशीलता की तुलना के कार्य में सहायक एवं उपयोगी सिद्ध होती हैं।

4. 1. लाभ

विशेष रूप से यह कहा जा सकता है कि अंतर्विषय विश्लेषण की प्रक्रिया में अभिधारणाओं का अनुप्रयोग, अंतिम रूप से निर्धारित विचारों को सहस्यक अनुक्रम में व्यवस्थित करने के लिए अत्यधिक उपयोगी है। अभिधारणात्मक उपागम को अपनाने के कुछ लाभ निम्नलिखित हैं :

अभिधारणाओं के अनुप्रयोग के द्वारा विचारों को ऐसा सुसंगत अनुक्रम प्रदान किया जा सकता है जो स्वीकार करने योग्य है,

अभिधारणाएँ प्रलेखों में निहित विषय वस्तु के विश्लेषण के लिए एक मैट्रिक्स (matrix) प्रदान करती हैं तथा कुछ मात्रा में प्रक्रिया को यंत्रवत् बनाने में भी सहायता प्रदान करती है,

इस मैट्रिक्स (अर्थात् विचारों को पंक्तियों एवं स्तंभों में व्यवस्थित करना) को अपनाने के फलस्वरूप जो ढाँचा प्राप्त होता है, उसके द्वारा विषय की वर्तमान संरचना को अस्तव्यस्त (भंग) किए बिना ही नवीन विचारों को उपयुक्त स्थान प्रदान करने की प्रक्रिया को लचीली बनाया जा सकता है। अर्थात् इसके द्वारा विचारों/अभिधारणाओं का उपयुक्त अंतर्निवेशन एवं बहिर्निवेशन आसान बना दिया जाता है; तथा

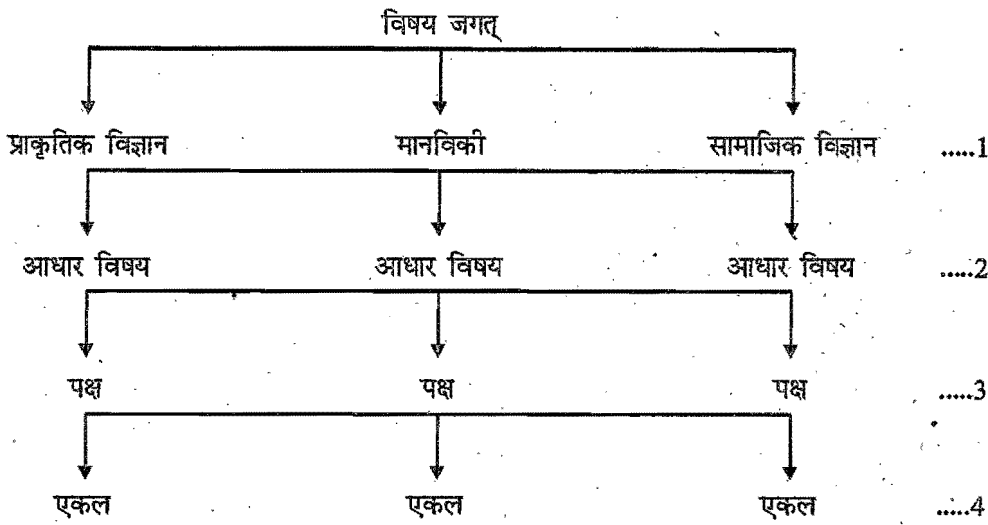
प्रायोगिक वर्गीकरण सुव्यवस्थित हो जाता है, एवं वर्गीकरण का कार्य अनेक व्यक्तियों द्वारा किए जाने पर भी वर्गीकरण प्रक्रिया में अधिकाधिक मात्रा में सुसंगतता सुनिश्चित की जा सकती है।

4. 2. अभिधारणात्मक उपागम का अनुप्रयोग

अभिधारणात्मक उपागम की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है कि यह वर्गीकरण प्रक्रिया के मार्ग में आने वाली संभावित भ्रांतियों का निवारण करने में सहायता प्रदान करता है इस विधि का अनुसरण करने पर हम किसी भी पूर्व-कल्पित दुर्बोध या अन्य विचारों, एवं तथ्यपरक अनुभवों के बंधन से मुक्त रहते हैं। कुछ अभिधारणाओं को मान लिया जाता है तथा उनके सभी निहितार्थ को सुनिश्चित कर लिया जाता है। अभिधारणाओं को बदल-बदल कर हम विभिन्न मॉडल प्राप्त कर सकते हैं; अर्थात् इन अभिधारणाओं की अनेक व्यवस्थाओं को आधार बनाकर हम अनेक मॉडल निर्धारित कर सकते हैं; तथा मॉडल निर्धारित करने की इस प्रक्रिया में हमें यह ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होती है कि अनुभव अथवा तथ्यों के दायरे में पहले से ही कोई अन्य मॉडल अस्तित्व में है अथवा नहीं। इसके बाद, हम किसी एक विशिष्ट मॉडल, जिसकी अभिधारणाएँ ज्ञान के उस क्षेत्र विशेष के लिए उपयोगी हों, का चयन कर सकते हैं। अतः रंगनाथन अंत में यह कहते हैं कि "यदि अभिधारणात्मक विधि को अपनाया जाता है तो वर्गीकरण को भी इस निपुणता का लीला मिलगो"। तदनुसार, रंगनाथन ने वर्गीकरण में वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाकर अनेक अभिधारणाओं को सूचीबद्ध किया है।

ज्ञान जगत् का मानचित्रण करते समय अथवा उसका चार्ट बनाते समय विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों में विभिन्न विधियों एवं दृष्टिकोण का अनुसरण किया गया है। रंगनाथन ने विषय जगत् का चार्ट बनाने का कार्य कुछ अभिधारणाओं को आधार बनाकर, सोपान—दी—सोपान, विधिपूर्वक एवं वैज्ञानिक तरीके से किया है। निम्नांकित चार्ट में विषय जगत् के विभाजन की प्रक्रिया को प्रदर्शित किया गया है :

NOTES



दूसरे चरण तक तो विषय जगत् के मानचित्रण की प्रक्रिया सभी वर्गीकरण पद्धतियों में समान है। तीसरे चरण से विभाजन की प्रक्रिया प्रत्येक पद्धति में भिन्न-भिन्न है। विभाजन की प्रक्रिया के तीसरे चरण में ही रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित अभिधारणात्मक उपागम का पूर्णरूप से प्रयोग किया गया है। उदाहरणार्थ, किसी भी यौगिक विषय के विभिन्न संघटक पक्षों का निर्धारण करने के लिए उन्होंने पाँच अभिधारणाओं का उल्लेख किया है—प्रथम पक्ष की अभिधारणा, मूर्तता की अभिधारणा, एक ही आवर्तन में पक्ष अनुक्रम की अभिधारणा, अंतिम आवर्तन में पक्ष अनुक्रम की अभिधारणा, स्तर एवं स्तर समूह की अभिधारणा इत्यादि।

इसके पश्चात् विभिन्न उपसूत्रों, सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है, जिनका उपयोग चौथे चरण में एकलों को सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करने के लिए किया जा सकता है इस प्रक्रिया के आधार पर वर्गीकरण के क्षेत्र में वैश्लेषी—संश्लेषणात्मक उपागम का प्रतिपादन हुआ है। इस प्रकार अभिधारणा उपागम ने, पुस्तकालय वर्गीकरण के सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक पक्ष का अनुसरण करने की प्रक्रिया को विवेचन एवं क्रिया की दृष्टि से स्पष्ट बनाकर वर्गीकरण के सिद्धान्तों में एक नया आयाम जोड़ दिया है।

रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित अभिधारणाओं का बोधगम्य एवं सुविस्तृत निरूपण उनकी माहन कृति प्रोलेगोमेना टू लाइब्रेरी क्लैसिफिकेशन (संस्करण 3, 1967) में किया गया है। विश्व भर में, पुस्तकालय वर्गीकरण के सामान्य सिद्धान्त के क्षेत्र में उनकी यह कृति एक मौलिक योगदान है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. विषय प्रतिनिधित्व का आशय स्पष्ट कीजिए।
2. अभिधारणात्मक उपागम के लाभ बताइये।

.....

.....

.....

.....

4. 3. प्रायोगिक वर्गीकरण में अभिधारणात्मक उपागम

अभिधारणाओं एवं सिद्धान्तों (Postulates and Principles) के मार्गदर्शन में वर्गीकरण के सामान्य सिद्धान्त (General Theory of Classification) का अनुसरण कर वर्गीकरणकार प्रायोगिक वर्गीकरण के कार्य को बिना किसी कठिनाई के आसानी से सम्पन्न कर सकता है। प्रायोगिक वर्गीकरण करते समय, मुख्य रूप से, प्रलेख में निहित विशिष्ट विषय की पहचान की जाती है तथा इसके बाद उसका अनुवाद वर्ग संख्या में किया

NOTES

जाता है। दूसरे शब्दों में, अनुवाद करने की इस प्रक्रिया में प्राकृतिक भाषा को वर्गीकरण की भाषा अर्थात् क्रमबोधक अंकों की भाषा में परिवर्तित किया जात है। रंगनाथन के मतानुसार अनुवाद की इस प्रक्रिया को आठ क्रमिक सोपानों में आसानी से पूरा किया जा सकता है, तथा अंतिम सोपान में परिणाम का प्रतिलोमक्रम में अनुवाद करके उसका सत्यापन किया जा सकता है। इन सोपानों का विवरण निम्न प्रकार से है :

सोपान 0 : अपरिष्कृत आख्या (Raw Title) : प्रलेख के आख्या—पृष्ठ से प्राप्त, प्रलेख के विषय को न्यूनाधिक मात्रा में अभिव्यक्त करने वाली आख्या अथवा यदि प्रलेख के आख्या—पृष्ठ पर विषय अबोधक (Fanciful) आख्या का उल्लेख हो तो वर्गीकरणकार द्वारा प्रदान की गई आख्या।

सोपान 1 : अभिव्यजक आख्या (Expressive Title) : अथवा 'पूर्ण आख्या' जिसमें प्रलेख में निहित विषय के सभी पक्षों / दृष्टिकोणों को अभिव्यक्त किया जाता है।

सोपान 2 : मूल मद आख्या (Kernel Title) : अभिव्यजक आख्या से सभी अनावश्यक शब्दों को हटाकर तथा प्रत्येक मूल पक्ष को उसके कर्ता कारक एकवचन रूप में बदल कर प्राप्त की गई आख्या।

सोपान 3 : विश्लेषित आख्या (Analysed Title) : मूल पदों में व्यक्त वह आख्या जहाँ प्रत्येक मूल पद के साथ वह प्रतीक चिह्न जोड़ दिया जाता है, जो उस मूल पद को अभिव्यक्त करने वाली मूलभूत श्रेणी को सूचित करता है।

सोपान 4 : परिवर्तित आख्या (Transformed Title) : विश्लेषित आख्या के मूल पदों को, उनके अनुक्रम को निर्धारित करने वाले सिद्धान्तों एवं अभिधारणाओं के आधार पर, पुनः व्यवस्थित करके प्राप्त आख्या।

सोपान 5 : मानक पदों में आख्या (Title in Standard Terms) : परिवर्तित आख्या के प्रत्येक मूल पद के स्थान पर वर्गीकरण पद्धतियों में उल्लिखित मानक पद अथवा समानार्थक मानक पद को रखकर प्राप्त की गई आख्या।

सोपान 6 : संकेन्द्रीय संख्या युक्त आख्या (Title in Focal Numbers) : मानक पदों की आख्या के प्रत्येक मानक मूल पद के स्थान पर, अधिमान्य वर्गीकरण पद्धति की अनुसूचियों में उल्लिखित मूल वर्ग संख्या अथवा एकल संख्या को, जो भी उपर्युक्त हो, रखकर प्राप्त की गई आख्या।

सोपान 7 : वर्ग संख्या (Class Number) : संकेन्द्रीय संख्या युक्त आख्या की प्रत्येक संकेन्द्रीय संख्या (Focal Number) के सामने तत्सम्बन्धी मूलभूत श्रेणी को व्यक्त करने वाले प्रतीक चिह्न को हटाकर, प्रत्येक संकेन्द्रीय संख्या के पूर्व अधिमान्य वर्गीकरण पद्धति के नियमों में निर्धारित उस योजक चिह्न को लगा दिया जाता है, जो अनुवर्ती एकल संख्या को सूचित करता है और इस प्रकार संश्लेषित क्रमबोधक वर्ग संख्या प्राप्त हो जाती है।

सोपान 8 : सत्यापन (Verification) : वर्ग संख्या के प्रत्येक अंक का प्राकृतिक भाषा में अर्थ लगाकर विषय का नाम निर्धारित करना तथा इस प्रकार उपलब्ध विषय की समानार्थकता की अपरिष्कृत / अभिव्यजक आख्या से जाँच करना।

निर्देश : यदि उपर्युक्त जाँच के बाद यह पता लगता है कि वर्ग संख्या की व्याख्या करने के पश्चात् उपलब्ध विषय का नाम सम्बन्धित प्रलेख की अपरिष्कृत / अभिव्यजक आख्या का समानार्थक नहीं है तो यह जान लेना चाहिए कि वर्गीकरण करते समय किसी न किसी चरण में गलती हो गई है। इस गलती का पता लगाकर उसका संशोधन कर देना चाहिए तथा उसका पुनः सत्यापन भी कर लेना चाहिए।

योगिक विषय के वर्गीकरण का उदाहरण :

यहाँ पर केवल कुछ ही सोपानों का प्रदर्शन किया गया है। स्पष्ट सोपानों को, विशेष रूप से सत्यापन से सम्बन्धित सोपान को, छोड़ दिया गया है।

अभिधारणात्मक एवं
प्रणालीगत उपागम

NOTES

- (0) अपरिष्कृत आख्या : Dry period Farming of Wheat
- (1) अभिव्यंजक आख्या : Dry period Farming of Wheat
- (2) मूल पदों में आख्या : Dry period, Farming, Wheat
- (3) विश्लेषित आख्या : Dry period [T] Farming (BC) Wheat [P]
- (4) परिवर्तित आख्या : Farming (BC) Wheat [P] Dry period [T]

कोलन क्लैसिफिकेशन

- (5) मानक पदों में आवख्या : Agriculture (BC) Wheat [P] Dry period [T]
- (6) संकेन्द्रीय संख्या युक्त आख्या : J (BC), 382[P] r [T]
- (7) वर्ग संख्या : J, 382'r.

5. प्रणालीगत उपागम

विषयों की संरचना करने के लिए रंगनाथन का दृष्टिकोण तो अभिधारणा पर आधारित है, जबकि फोस्केट (Foskett) (1980) एवं हेमलता अय्यर (1992) ने विषय संरचना में, व्यक्तिगत रूप से, प्रणालीगत उपागम की कसौटी को अपनाया है। अय्यर (1992) ने यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है कि रंगनाथन का निरपेक्ष—वाक्य विन्यास (Absolute Syntax), जो विषय की संरचना प्रदान करता है, अवधारणाओं के श्रेणीकरण की प्रक्रिया पर आधारित है तथा अवधारणाओं में पारस्परिक सम्बन्ध तीन प्रकार से स्थापित किया जा सकता है—अर्थात् कार्य—कारण; सम्भावनात्मक; तथा तीसरा एवं अत्यंत (आधुनिक) नवीन, प्रणालीगत (तन्त्र) उपागम जो किसी तन्त्र की अपने परिवेश के साथ परस्पर संबोधन की क्रिया से सम्बन्ध रखता है। जानने की इस विधि को वैश्लेषी—संश्लेषणात्मक विधि कहते हैं। इस विधि की प्रचालन प्रक्रिया की प्रचालन प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए इस विधि में किसी भी तंत्र के ढाँचे एवं उसके कार्यों को नियंत्रित करने वाले सम्पूर्ण उद्देश्य का ध्यान रखा जाता है। प्रणालीगत उपागम का स्वरूप पदानुक्रमिक है तथा इसमें विशिष्ट से सामान्य की ओर एवं इसके विपरीत सामान्य से विशिष्ट की ओर भी अग्रसर होना पड़ता है। यद्यपि संश्लेषण को विश्लेषण एवं कारण—कार्य सम्बन्ध से अलग नहीं किया जा सकता, तथापि इस उपागम में अपनाया गया दृष्टिकोण अपने आप में भिन्न है। उद्देश्य एवं उसकी पूर्ति को इस विधि में विशेष महत्व दिया जाता है। अतः यह स्पष्ट है कि उद्देश्य की पूर्ति की प्राथमिकताओं को इस विधि के अनुसार परमावश्यक माना जाता है। इस प्रकार उद्देश्यों के अनुसार किसी भी प्रणाली का प्रतिनिधित्व, उसके परिवेश सम्बन्धी दबाव, उसके पात्र, उनके उद्देश्य, प्रणाली के कार्य, तथा वे अंग जो इन कार्यों का संपादन करते हैं पदानुक्रम आकार में व्यवस्थित होते हैं।

फोस्केट की विचारधारा में भी जो बरतालॉफी के सामान्य प्रणालीगत सिद्धान्त (General Systems Theory) पर आधारित है, इसी से मिलती जुलती विचारधारा परिलक्षित होती है।

बरतालॉफी, केनेथ बाउलडिंग (Kenneth Boulding) एवं इरविन लॉजलो (Ervin Laszlo) के लेखों से यह ज्ञात होता है कि "प्रणाली" (System) सम्बन्धी अवधारणा उस सत्ता का परिचय देती है, जिसके लक्षणों की पहचान उसके अंगों के स्वरूप (प्रकृति) एवं उनके पारस्परिक सम्बन्धों के रूप में की जाती है; उदाहरणार्थ, एक साइकिल धातु, रबड़, प्लास्टिक इत्यादि के टुकड़ों के ढेर मात्र से अधिक कुछ और भी है; इन टुकड़ों में जो पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित किया जाता है वह इस ढेर को साइकिल की एक विशिष्ट आकृति प्रदान कर देता है, तथा यह आकृति साइकिल के रूप में पैडलों की चक्रीय गति को क्षितिजीय गति में परिवर्तित कर

NOTES

साइकिल पर सवार व्यक्ति को लेकर सड़क पर दौड़ने लगती है तथा इस प्रकार यह आकृति साइकिल को विशिष्ट काय करने के योग्य बनाती है। इसी प्रकार एक समिति व्यक्तियों के समूह से अधिक कुद और भी है। इसके अतिरिक्त, एक "प्रणाली" किसी वृहत्तर या उच्चतर श्रेणी के संगठन के किसी अन्य प्रणाली का संघटक भाग भी हो सकती है। इसी प्रकार, एक शब्द किसी निश्चित ढंग से व्यवस्थित अक्षरों की व्यवस्था है। एक वाक्य एक विशिष्ट अनुक्रम में प्रणालीबद्ध शब्दों की व्यवस्था है, तथा एक अनुच्छेद वाक्यों की एक प्रणाली है; एवं एक पुस्तक अनुच्छेदों की एक प्रणाली है, तथा एक पुस्तकालय ग्रन्थों की एक प्रणाली (System) है। इस प्रकार, इस वास्तविक दुनिया में, जहाँ प्रलेखन के लिए अनंत विषय उपलब्ध हैं, विभिन्न प्रणालियों का एक तन्त्र विद्यमान है जिसके अंग एवं अंगों के पारस्परिक सम्बन्ध जटिलता की वृद्धि के क्रम से व्यवस्थित है। वर्गीकरण पद्धतियों में यदि इस अवधारणा को प्रयोग में लाया जाए तो हमें व्यवस्थित प्रणाली उपलब्ध होगी जो डालबर्ग (Dahlberg) द्वारा प्रस्तुत पद्धति की रूपरेखा से अत्याधिक मेल खाती है। अपने अनुसंधान के आधार पर फोस्केट यह मानते हैं कि इस बात को सिद्ध करने के पर्याप्त साक्ष्य विद्यमान हैं कि सामान्य प्रणाली सिद्धान्त के साथ विश्लेषण अथवा वर्गीकरण का सम्बन्ध स्थापित करके हम सम्पूर्ण ज्ञान के क्षेत्र को व्यवस्थित कर सकते हैं।

5. 1. मूलभूत श्रेणियों के सन्दर्भ में प्रणालीगत उपागम

फोस्केट के अनुसार, प्रलेखों का सामान्य वर्गीकरण करते समय किसी भी प्रणाली को डी आर टी सी (DETC) की भाषा (शैली) में आधार या मूल विषय की संज्ञा दी जा सकती है; क्योंकि प्रणालियों का विश्लेषण भी पक्ष विश्लेषण के द्वारा किया जा सकता है। किसी भी प्रणाली का समग्र रूप उसका "व्यक्तित्व" कहलाता है, उसके संघटक भाग "अंग" कहलाते हैं तथा उनके पारस्परिक सम्बन्ध "पदार्थ" एवं "ऊर्जा"—जिसे फोस्केट ने 'ऊर्जा A' नाम दिया है—कहलाते हैं। प्रत्येक सिस्टम के, उसके परिवेश के साथ जो सम्बन्ध होते हैं उन्हें प्रक्रियाएँ, अर्थात् फोस्केट के अनुसार 'ऊर्जा B' कहते हैं। इस परिवेश के अन्य सिस्टम, जो मूल सिस्टम के साथ प्रतिक्रिया के साथ प्रतिक्रिया दिखाते हैं, उन्हें एजेंट अथवा रंगनाथन की स्वयं की भाषा में 'व्यक्तित्व पक्ष का द्वितीय आवर्तन' कहते हैं। निःसन्देह रंगनाथन द्वारा निर्धारित पदों को स्वीकार करना आवश्यक नहीं है; किन्तु इनका उल्लेख यहाँ पर इस बात को उदाहरण देकर, स्पष्ट करने के लिए किया गया है कि ब्लिस एवं ड्यूई के बाद वर्गीकरण के क्षेत्र में महान् योगदान देने वाले व्यक्ति की पद्धति के मापदंडों को प्रणालीगत सिद्धान्त कितने औचित्य के साथ पूरा करता है।

इस प्रकार अरर के मतानुसार भी किसी भी प्रणाली को अंगों एवं घटकों की भाषा में व्यक्त या जा सकता है। 'व्यक्तित्व' की परिभाषा देते हुए वे यह कहती हैं कि 'व्यक्तित्व' अपने परिवेश के साथ नियमित एवं विशिष्ट अनुक्रिया बनाए रखता है तथा इन अनुक्रियाओं में व्यक्ति के गुणधर्म परिलक्षित होते हैं। ये गुणधर्म स्थान एवं काल की परिस्थितियों से प्रभावित बाह्य—क्रिया के कारण बदल जाते हैं अथवा बदल दिए जाते हैं। इस प्रकार गुण, धर्म, क्रिया, स्थान एवं काल की धारणा का बोध होता है। इन सन्निहित श्रेणियों के विशिष्ट अर्थों का चित्रण और भी आगे किया जा सकता है।

5. 2. प्रणालीगत उपागम के प्रायोगिक निहितार्थ :

अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि प्रलेखों के वर्गीकरण के क्षेत्र में प्रणालीगत उपागम के प्रायोगिक निहितार्थ क्या हैं ? किसी भी वर्गीकरण पद्धति का मुख्य उद्देश्य प्रलेखों को एक ऐसे ढंग से सुव्यवस्थित करना होता है, जो प्रत्येक क्षेत्र के विशेषज्ञों के लिए सार्थक सिद्ध हो के। यह आवश्यक नहीं है कि यह व्यवस्था अनिवार्य रूप से उपयोगी सिद्ध हो; क्योंकि हर समय वही विशेषज्ञ अपनी अभीष्ट अध्ययन सामग्री को किसी अन्य दृष्टिकोण से खोजने का प्रयत्न कर सकता है; तथापि, जो भी व्यवस्था अपनाई जाए वह सार्थक प्रतीत होनी चाहिए; अर्थात् विशेषज्ञ को उस व्यवस्था के आधार को पहचानने में समर्थ होना चाहिए; दूसरे शब्दों में, विशेषज्ञ अपने ही विषय के दृष्टिकोण से ज्ञान के क्षेत्र को खोजने का प्रयास करते हैं, जबकि पुस्तकालयाध्यक्ष एवं सूचना व्यवसायी वर्गीकरण को सम्पूर्ण जगत् के परिप्रेष्य में समझने का प्रयास करते हैं। इस

प्रकार, प्रलेखों का वर्गीकरण करने की पद्धति को केवल विशिष्ट पद्धतियों का संग्रह मात्र ही नहीं होना चाहिए अपितु इससे कुछ और अधिक भी होना चाहिए। यदि यह असंबद्ध भागों का केवल एक ढेर मात्र ही होगी, तो यह अपने आप में एक पद्धति नहीं होगी।

प्रणाली सिद्धान्त के अनुसार, किसी भी तंत्र के विभिन्न अंगों (भागों) में पारस्परिक आंतरिक सम्बन्ध होना अनिवार्य है, यदि ये भाग (अंग) किसी ऐसी इकाई के संगठन का स्वरूप धारण करना चाहें जो किसी विशेष परिवेश में किसी एक पूर्ण समष्टि (Integral whole) के रूप में अपना अस्तित्व बनाए रखने में समर्थ हों। हमारे संदर्भ में, परिवेश का निर्माण, पुस्तकालय, उसके प्रलेखों एवं उसकी सेवाओं से होता है। वर्गीकरण करते समय पुस्तकालयाध्यक्ष का उद्देश्य यह होता है कि वह मानव जगत् को सम्मिलित करके, वास्तविक जगत् एवं प्राकृतिक जगत् में विद्यमान व्यवस्था और उसके सामंजस्य को प्रतिबिंबित एवं प्रदर्शित कर सके।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. अभिधारणात्मक उपागम विशेषता बताइये।
4. अनुवाद प्रक्रिया में प्रथम सोपानों का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

6. सार-संक्षेप

इस अध्याय में :

- (i) अभिधारणात्मक उपागम की जानकारी आपके लिए प्रस्तुत की गई है तथा इसके साथ ही पुस्तकालय वर्गीकरण में अभिधारणात्मक उपागम को अपनाने की आवश्यकता एवं उसकी उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला गया है;
- (ii) अभिधारणात्मक उपागम के अनुप्रयोग को स्पष्ट किया गया है तथा यह भी बताया गया है कि अभिधारणात्मक उपागम का अनुप्रयोग विचारों का एक ऐसा सुसंगत अनुक्रम प्रदान करता है, जो एकमात्र स्वीकार करने योग्य नमूने (पैटर्न) के अनुरूप सिद्ध होता है;
- (iii) प्रायोगिक वर्गीकरण के आठ सोपानों का विवेचन दृष्टांत युक्त उदाहरण देकर किया गया है; तथा
- (iv) मूलभूत श्रेणियों के संदर्भ में प्रणालीगत उपागम पर प्रकाश डाला गया है एवं पुस्तकालय वर्गीकरण के लिए उसके प्रायोगिक निहितार्थों का उल्लेख किया गया है।

7. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. सभी सूचना प्रणालियों में विषय के प्रतिनिधित्व को सूचना पुनः प्राप्ति का मुख्य आधार माना जाता है। किसी भी प्रलेख की विषय—वस्तु अथवा उसमें निहित विचारांश का प्रतिनिधित्व विविध रूपों में किया जा सकता है, जैसे विषय शीर्षक, विषय अनुक्रमणिका पद, वर्ग संख्या, डेटा संरचना एवं अन्य प्रकार के संक्षिप्त प्रतिरूपों (Surrogates) के रूप में। मुख्य रूप से यह कार्य सूचना प्रणाली में अभीष्ट सूचना तक पहुँचने के लिए किया जाता है। विषय प्रतिनिधित्व की इस प्रक्रिया में प्रत्येक की विषय—वस्तु का विश्लेषण उसके संघटक तत्वों में किया जाता है तथा इन संघटक तत्वों को एक अभीष्ट अनुक्रम या क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। इस प्रक्रिया में विषय—वस्तु के असीमित—आयामी विन्यास को उसी के समतुल्य पंक्तिबद्ध विन्यास में बदल दिया जाता है, अर्थात् इस प्रक्रिया के द्वारा प्रलेख में निहित

NOTES

गतिशील, निरंतर वर्धनशील, बहुआयामी एवं बहुपक्षीय ज्ञान का प्रतिनिधित्व या निरूपण एक पंक्तिबद्ध अनुक्रम में किया जाता है। इस प्रक्रिया में, स्पष्ट रूप से, किसी एक विषय क्षेत्र से सम्बन्धित प्रत्येक विषय के संघटक तत्वों को व्यवस्थित किया जाता है तथा विभिन्न विषय क्षेत्रों से सम्बन्धित सभी विषयों को आपस में ऐसे अनुक्रम में व्यवस्थित किया जाता है जो अधिकांश उपयोक्ताओं के लिए सहायक हों। इस प्रक्रिया में विषयों के बहुआयामी विन्यास को एक पंक्ति में परिवर्तित या मानचित्रित करते समय यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि सभी विषयों का प्रत्येक पारस्परिक निकटतक सम्बन्ध अपरिवर्तनीय रूप से विद्वायमान रहे। अतः यह कहा जा सकता है कि विषय निरूपण की प्रक्रिया में मुख्यतः प्रलेख में निहित विषय—वस्तु के संघटक तत्वों का विश्लेषण किया जाता है, उनकी पहचान की जाती है एवं उनके पारस्परिक सम्बन्धों का निरूपण किया जाता है।

- विशेष रूप से यह कहा जा सकता है कि अंतर्विषय विश्लेषण की प्रक्रिया में अभिधारणाओं का अनुप्रयोग, अंतिम रूप से निर्धारित विचारों को सहसयक अनुक्रम में व्यवस्थित करने के लिए अत्यधिक उपयोगी है। अभिधारणात्मक उपागम को अपनाने के कुछ लाभ निम्नलिखित हैं :

- अभिधारणाओं के अनुप्रयोग के द्वारा विचारों को ऐसा सुसंगत अनुक्रम प्रदान किया जा सकता है जो स्वीकार करने योग्य है,

अभिधारणाएँ प्रलेखों में निहित विषय वस्तु के विश्लेषण के लिए एक मैट्रिक्स (matrix) प्रदान करती हैं तथा कुछ मात्रा में प्रक्रिया को यंत्रवत् बनाने में भी सहायता प्रदान करती है,

इस मैट्रिक्स (अर्थात् विचारों को पंक्तियों एवं स्तंभों में व्यवस्थित करना) को अपनाने के फलस्वरूप जो ढाँचा प्राप्त होता है, उसके द्वारा विषय की वर्तमान संरचना को अस्तव्यस्त (भंग) किए बिना ही नवीन विचारों को उपर्युक्त स्थान प्रदान करने की प्रक्रिया को लचीली बनाया जा सकता है। अर्थात् इसके द्वारा विचारों/अभिधारणाओं का उपर्युक्त अंतर्निवेशन एवं बहिर्निवेशन आसान बना दिया जाता है; तथा

प्रायोगिक वर्गीकरण सुव्यवस्थित हो जाता है, एवं वर्गीकरण का कार्य अनेक व्यक्तियों द्वारा किए जाने पर भी वर्गीकरण प्रक्रिया में अधिकाधिक मात्रा में सुसंगतता सुनिश्चित की जा सकती है।

- अभिधारणात्मक उपागम की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है कि यह वर्गीकरण प्रक्रिया के मार्ग में आने वाली संभावित भ्रांतियों का निवारण करने में सहायता प्रदान करता है इस विधि का अनुसरण करने पर हम किसी भी पूर्व—कल्पित दुर्बोध या अन्य विचारों, एवं तथ्यपरक अनुभवों के बंधन से मुक्त रहते हैं। कुछ अभिधारणाओं को मान लिया जाता है तथा उनके सभी निहितार्थ को सुनिश्चित कर लिया जाता है। अभिधारणाओं को बदल-बदल कर हम विभिन्न मॉडल प्राप्त कर सकते हैं; अर्थात् इन अभिधारणाओं की अनेक व्यवस्थाओं को आधार बनाकर हम अनेक मॉडल निर्धारित कर सकते हैं; तथा मॉडल निर्धारित करने की इस प्रक्रिया में हमें यह ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होती है कि अनुभव अथवा तथ्यों के दायरे में पहले से ही कोई अन्य मॉडल अस्तित्व में है अथवा नहीं। इसके बाद, हम किसी एक विशिष्ट मॉडल, जिसकी अभिधारणाएँ ज्ञान के उस क्षेत्र विशेष के लिए उपयोगी हों, का चयन कर सकते हैं। अतः रंगनाथन अंत में यह कहते हैं कि "यदि अभिधारणात्मक विधि को अपनाया जाता है तो वर्गीकरण को भी इस निपुणता का लोभा मिलेगा"।
- सोपान 1 :** अभिव्यञ्जक आख्या (Expressive Title) : अथवा 'पूर्ण आख्या' जिसमें प्रलेख में निहित विषय के सभी पक्षों/दृष्टिकोणों को अभिव्यक्त किया जाता है।

सोपान 2 : मूल मद आख्या (Kernel Title) : अभिव्यञ्जक आख्या से सभी अनावश्यक शब्दों को हटाकर तथा प्रत्येक मूल पक्ष को उसके कर्ता कारक एकवचन रूप में बदल कर प्राप्त की गई आख्या।

सोपान 3 : विश्लेषित आख्या (Analysed Title) : मूल पदों में व्यक्त वह आख्या जहाँ प्रत्येक मूल पद के साथ वह प्रतीक चिह्न जोड़ दिया जाता है, जो उस मूल पद को अभिव्यक्त करने वाली मूलभूत श्रेणी को सूचित करता है।

अभिधारणात्मक एवं
प्रणालीगत उपागम

8. मुख्य शब्द

NOTES

अंतर्विषय विश्लेषण (Content Analysis)

: प्रलेखों के विषय-कथन के आधार पर प्रलेखों की विषय-वस्तु का विश्लेषण कर विषय के विभिन्न पक्षों की पहचान करना।

एकल (Isolate)

: किसी भी मूल विषय के साथ रखा गया उससे मेल रखने वाला एक विचार; उदाहरणार्थ, मूल विषय 'कृषि' में 'चावल की फसल' एक एकल है।

पक्ष (Facet)

: अभिलक्षणों के अनुप्रयोग द्वारा उपलब्ध एकल समूह; उदाहरणार्थ, रसायन शास्त्र में गंधक 'पदार्थ' पक्ष से संबंधित एकल है।

मूल विषय (Basic Subject)

: सामान्य अर्थ में परंपरागत विषय; कोलन क्लैसिफिकेशन में इससे संबंधित अभिधारणा के अनुसार, मूल विषय, मूल वर्ग, मूल पक्ष इत्यादि का प्रयोग पर्यायवाची पदों के रूप में किया गया है।

वर्गीकरण की अनुसूचियाँ (Schedules of Classification)

: किसी प्रतीक का उपयोग कर मूल वर्गों, उनके पक्षों, एकलों इत्यादि की सुनियोजित ढंग से व्यवस्थित सूचियाँ।

वर्गीकरण प्रणाली प्रणेता (Classificationist)

: विषयों के वर्गीकरण के लिए वर्गीकरण पद्धति का प्रतिपादन करने वाला व्यक्ति।

सहायक अनुक्रम (Helpful Order)

: विषयों, उनके पक्षों एवं एकलों का तर्कसंगत व्यवस्थापन जो पुस्तकालयों में निधानियों पर प्रलेखों के व्यवस्थापन एवं प्रदर्शन में सहायक होता है।

9. अभ्यास प्रश्न :

1. पुस्तकालय व वर्गीकरण में अभिधारणात्मक उपागम का वर्णन कीजिए ?
2. रंगनाथन के महानुसार अनुवाद प्रक्रिया में कितने सोपानों का प्रयोग किया जाता है ?
3. पुस्तकालय वर्गीकरण में प्रणालीगत उपागम का आशय स्पष्ट कीजिए ?
4. मूलभूत श्रेणियों के सन्दर्भ में प्रणालीगत उपागम का वर्णन कीजिए ?
5. प्रणालीगत उपागम के प्रायोगिक निहितार्थ को समझाइए ?

10. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Foskett, D.J. (1980). Systems Theory and its relevance to Documentary Classification. International Classification. 7, 2-5.

Iyer, Hemalata (1992). Subject Representation and Entropy. International Classification. 19, 15-18.

Krishan Kumār (1985). Theory of Classification. New Delhi: Vikas Publishing House. Chapter 15.

Ranganathan, S.R. (1965). A Descriptive Account of Colon Classification. Bombay: Asia Publishing House. Chapter D and F.

Ranganathan, S.R. (1962). Elements of Library Classification. 3rd ed. Bombay : Asia Publishing House. Chapter H.

Ranganathan, S.R. (1967). Prolegomena to Library Classification. 3rd ed.

Banagalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science. Chapter R.

NOTES

मूलभूत श्रेणियाँ, पक्ष विश्लेषण एवं पक्ष अनुक्रम

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. मूलभूत श्रेणियाँ
 - 3.1 मूलभूत श्रेणियाँ की अभिधारणा
 - 3.2 पाँच मूलभूत श्रेणियाँ
4. पक्ष विश्लेषण
 - 4.1 पक्ष विश्लेषण के प्रयोग द्वारा विषय विश्लेषण
 - 4.2 कोलन क्लैसिफिकेशन एवं पक्ष विश्लेषण
 - 4.3 ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन एवं पक्ष विश्लेषण
 - 4.4 यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन एवं पक्ष विश्लेषण
5. पक्ष अनुक्रम
 - 5.1 कोलन क्लैसिफिकेशन में पक्ष अनुक्रम
 - 5.2 ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन में पक्ष अनुक्रम
 - 5.3 यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन में पक्ष अनुक्रम
6. कुछ सामान्य टिप्पणियाँ
7. सार-संक्षेप
8. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों
9. मुख्य शब्द
10. अभ्यास प्रश्न
11. ग्रन्थ सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्याय में आपको मूलभूत श्रेणियों की अवधारणा की जानकारी दी गई है एवं पक्ष विश्लेषण तथा पक्ष अनुक्रम से सम्बन्ध तकनीक से आपका परिचय कराया गया है। अपने कार्य का दक्षता एवं प्रभावशाली ढंग से संपादन करने के लिए एक सूचना व्यवसायी को इन अवधारणाओं एवं तकनीकों, एवं पुस्तकालय वर्गीकरण में उनके अनुप्रयोग का ज्ञान होना अत्यावश्यक है। इस अध्याय का अध्ययन करने के बाद आत :

- मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे;

पाँच मूलभूत श्रेणियों : व्यक्तिगत पदार्थ, ऊर्जा, स्थान एवं काल की गहन एवं घनिष्ठ जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;

पक्ष विश्लेषण एवं पक्ष अनुक्रम की अवधारणा एवं तकनीक तथा पुस्तकालय में प्रलेखों के वर्गीकरण में उनके अनुप्रयोग की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, तथा

कोलन क्लैसिफिकेशन, ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन, एवं यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धतियों में पक्ष विश्लेषण एवं पक्ष अनुक्रम के अनुप्रयोग को उदाहरणों सहित समझ सकेंगे।

2. परिचय :

इस पाठ्यक्रम की इकाई 1 में आपको पुस्तकालय वर्गीकरण के तत्वों—आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली एवं ऐतिहासिक परिदृश्यों तथा पुस्तकालय वर्गीकरण की आवश्यकता एवं उद्देश्य—की जानकारी दी गई है। इकाई 2 में पुस्तकालय वर्गीकरण के सामान्य सिद्धान्त तथा ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन, यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन, एवं कोलन क्लैसिफिकेशन में विषयों का मानचित्रण (Mapping) किस प्रकार से किया है, इन सभी पहलुओं को स्पष्ट किया गया है। इस इकाई (इकाई 3) में पुस्तकालय वर्गीकरण के विभिन्न उपागमों से आपको परिचित कराया गया है।

इस इकाई 3 के अध्याय 6 में पुस्तकालय वर्गीकरण के क्षेत्र में अभिधारणात्मक उपागम एवं प्रणालीगत (Systems) उपागम के अनुप्रयोग की विस्तारपूर्वक व्याख्या की गई है। ये उपागम ज्ञान के बौद्धिक व्यवस्थापन के लिए एक सुनियोजित विधि प्रस्तुत करते हैं तथा प्रायोगिक वर्गीकरण में अनुप्रयोग के लिए उपयोगी दिशा निर्देशों की आवश्यकता पूरी करते हैं।

मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा की व्याख्या करने के पश्चात् इस अध्याय में रंगनाथन की पाँच मूलभूत श्रेणियों—व्यक्तित्व (Personality) [P], पदार्थ (Matter) [M], ऊर्जा [Energy] [E], स्थान (Space) [S], तथा काल [Time] [T] की व्याख्या की गई है। प्रत्येक मूलभूत श्रेणी को उदाहरण देकर स्पष्ट रूप से समझाया गया है।

पुस्तकालय में प्रलेखों का वर्गीकरण करते समय प्रलेखों में निहित विषय-वस्तु का तत्सम्बन्धी पक्षों में विश्लेषण किया जाता है। इसके बाद उन्हें एक निश्चित ढाँचे में उपर्युक्त स्थान देने के लिए रंगनाथन की पाँच मूलभूत श्रेणियों को प्रयोग में लाया जा सकता है, तथा इस प्रकार उनसे सम्बन्धित वर्ग संख्याएँ प्राप्त कर ली जाती हैं। रंगनाथन की मूलभूत श्रेणियों के प्रयोग सहित पक्ष विश्लेषण की इस विधि को उपर्युक्त उदाहरण देकर इस अध्याय में स्पष्ट किया गया है।

इसके अतिरिक्त, कोलन क्लैसिफिकेशन, ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन एवं यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धतियों में अपनाए गए पक्ष अनुक्रम (मौ) का विस्तृत विवरण भी दिया गया है।

3. मूलभूत श्रेणियाँ

विषय जगत् का मानचित्रण करने के लिए, वर्गीकरण की विभिन्न पद्धतियों में भिन्न-भिन्न विधियों एवं दृष्टिकोणों को अपनाया गया है। रंगनाथन ने कुछ निश्चित पूर्वधारणाओं, जिन्हें हम अभिधारणाएँ कहते हैं, पर

NOTES

आधारित एक सुनियोजित प्रक्रिया को अपनाया है। रंगनाथन द्वारा अपनाई गई विभाजन की प्रक्रिया के अनुसार प्रत्येक विषय का एक मूल पक्ष होता है, अर्थात् प्रमुख सन्दर्भ को सुनिश्चित करने वसला पक्ष। इस पक्ष को मूल विषय (Basic Subject) (BS) की अवधारणा / पद के रूप में प्रस्तुत किया जाता है तथा इन मूलभूत धारणाओं के लिए मूलभूत श्रेणियाँ (Fundamental Categories) पद का प्रयोग किया है। शब्दकोश का अवलोकन कर यदि इस यौगिक पद के दोनों संघटक पदों, 'Fundamental' (मूलभूत) एवं 'Category' (श्रेणी) में से प्रत्येक पद के अर्थ पर अलग-अलग विचार किया जाए एवं इसके बाद दोनों अर्थों को एक साथ जोड़ा जाए तो कोई भी व्यक्ति यह नहीं समझ सकेगा कि 'Fundamental Categories' (FC) क्या हैं। FC पद के दोनों संघटक शब्दों को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता तथा इस पद की परिभाषा केवल परिगणनात्मक रीति से ही की जा सकती है।

3. मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा

इस अभिधारणा (postulate) के अनुसार मूलभूत श्रेणियाँ पाँच और केवल पाँच ही होती हैं—जिन्हें काल (Time), स्थान (Space), ऊर्जा (Energy), पदार्थ (Matter) एवं व्यक्तित्व (Personality) कहा जाता है। इनकी व्याख्या करते हुए रंगनाथन ने इस बात पर बल दिया है कि ये पद एवं इनके द्वारा सूचित विचार पूर्णरूप से सम्बन्धित विषय के सन्दर्भ से जुड़े हुए हैं। संक्षिप्तता की दृष्टि से इन मूलभूत श्रेणियों का आद्याक्षरित नाम PMEST है।

मूल विषयों की पहचान करने के बाद मूल वर्गों से मूल खाने वाले एकल विचारों का विश्लेषण भी, वांछनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए, सुनियोजित एवं तर्कसंगत ढंग से किया जाता है। विभिन्न विषयों की जाँच करने पर यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक विषय के अपने ही विभिन्न पक्ष होते हैं तथा ये सभी पक्ष एक साथ मिलकर उस विषय का सुसंगत विवरण प्रस्तुत करते हैं। उदाहरणार्थ रसायन शास्त्र विषय के निम्नलिखित छः पदों पर विचार कीजिए :

| | | | |
|---------------|--------------|-------------------------|----------------------|
| 1. alcohol | (मद्यसार) | 1. Substance | (पदार्थ) |
| 2. liquid | (द्रव) | 2. State | (अवस्था) |
| 3. volatility | (वाष्पशीलता) | 3. Property | (गुणधर्म) |
| 4. combustion | (दहन) | 4. Reaction | (प्रतिक्रिया) |
| 5. analysis | (विश्लेषण) | 5. Operation | (प्रक्रिया) |
| 6. buratte | (मापन नलिका) | 6. Device for operation | (प्रक्रिया का उपकरण) |

उपर्युक्त उदाहरण से ज्ञात होता है कि बाएँ स्तम्भ में उल्लिखित प्रत्येक एकल पद दाएँ स्तम्भ (कालम) की सहसम्बन्धी श्रेणी से सम्बन्ध रखता है। यहाँ पदार्थ का अर्थ है सभी पदार्थ एवं अवस्था का अर्थ है सभी अवस्थाएँ। अतः इसका अर्थ यह निकलता है कि उपर्युक्त प्रत्येक पद विचारों की किसी एक श्रेणी को सूचित करता है एवं रसायन शास्त्र विषय के किसी एक पक्ष को व्यक्त करता है। वस्तुतः विचारों का इस प्रकार का व्यवस्थापन सभी विषयों में पाया जाता है। सारणी में इस विषय को उदाहरण देकर स्पष्ट किया गया है। इस सारणी में कुछ मूल विषयों की सूची दी गई है तथा प्रत्येक विषय के सामने क्रमशः तत्सम्बन्धी पक्षों के प्रकारों का उल्लेख किया गया है।

कोलन क्लैसिफिकेशन का प्रारूप तैयार करते समय रंगनाथन ने यह अनुभव किया कि यद्यपि विभिन्न विषयों में तत्सम्बन्धी विशिष्ट पक्ष पाए जाते हैं, फिर भी यदि इन पक्षों की गहन जाँच की जाए तो सभी पक्षों के मूल में विचारों की एकता दिखाई देती है। प्रत्येक विषय में विचारों का एक मूल समूह विद्यमान होता है जो उस विषय के अध्ययन के प्रत्येक पक्ष का केन्द्र बिन्दु होता है। विचारों की इस मौलिक एकता से प्रेरित होकर ही रंगनाथन ने मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा का प्रतिपादन किया।

NOTES

| मूलवर्ग 1 | 2 | पक्ष 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
|-------------------|--|---------------------------------------|----------------------------|----------------------------|-------------------------|-------------|
| पुस्तकालय विज्ञान | पुस्तकालय का प्रकार (अनुसंधान पुस्तकालय) | सामग्री (प्रलेख) | क्रियाकलाप (वर्गीकरण) | नगर (दिल्ली) | वर्ष (1997) | |
| रसायन शास्त्र | पदार्थ (तरल) | गुणधर्म (वाष्पशीलता) | प्रतिक्रिया (दहन) | विश्लेषण (प्रक्रिया) | उपकरण (मापन नलिका) | |
| वनस्पति शास्त्र | वनस्पतियों का प्राकृतिक वर्ग (स-पुष्पी पादप) | गुणधर्म (रंग, गंध) (आकृति विज्ञान) | संरचनात्मक अध्ययन | देश (भारत) | वर्ष (1986) | |
| कृषि विज्ञान | फसल (चावल) | गुणधर्म (प्रोटीन मात्रा) | प्रक्रिया (फसल काटना) | मशीनरी (ट्रैक्टर) | देश (बर्मा) | वर्ष (1985) |
| आयुर्विज्ञान | अंग (फेफड़े) | संरचनात्मक अध्ययन (शरीर रचना विज्ञान) | रोग (कैंसर) | उपचार (मुख्य द्वारा) | औषधि (स्ट्रेप्टोमाइसीन) | |
| शिक्षा शास्त्र | शिक्षार्थी (बालक) | अध्ययनशील विषय (गणित) | शिक्षण तकनीक (प्रश्नोत्तर) | उपस्कर (स्लाइड प्रोजेक्टर) | नगर (दिल्ली) | वर्ष (1987) |
| इतिहास | समुदाय (भारतीय) | क्रियाकलाप (स्वतंत्रता संग्राम) | अवधि (1910-1947) | - | - | - |
| समाज शास्त्र | सामाजिक वर्ग (श्रमिक वर्ग) | क्रियाकलाप (विवाह) | कल्याण कार्य (बाढ़ राहत) | देश (पाकिस्तान) | - | वर्ष (1987) |

नोट : प्रत्येक पक्ष के अंतर्गत कोष्ठक में उल्लिखित शब्द तत्सम्बन्धी पक्ष के एकल हैं।

3. 2. पाँच मूलभूत श्रेणियाँ

मूलभूत श्रेणियाँ पाँच और केवल पाँच ही होती हैं :

| | | |
|------------|---------------|-----|
| व्यक्तित्व | (Personality) | [P] |
| पदार्थ | (Matter) | [M] |
| ऊर्जा | (Energy) | [E] |
| स्थान | (Space) | [S] |
| काल | (Time) | [T] |

अब हम पुनः पाँच मूलभूत श्रेणियों की दृष्टि से सारणी 1 का अवलोकन करें। मूलभूत विषयों से मेल खाने वाला प्रत्येक पक्ष पाँच मूलभूत श्रेणियों में से किसी एक अथवा किसी दूसरी श्रेणी की अभिव्यक्ति हो सकता है।

NOTES

उदाहरणार्थ, आइए अब हम मूल विषय फर्नीचर निर्माण के सम्बन्ध में लकड़ी की मेज विषय पर विचार करें। यहाँ "मेज" अपने सुस्पष्ट आकार, आयतन, उपयोगिता इत्यादि के साथ एक मूल विचार को व्यक्त करती है जो उससे सम्बन्धित प्रत्येक अन्य विचार का केन्द्र है। अतः इसे फर्नीचर पक्ष का एक घटक मान लेना चाहिए और इस दृष्टि से यह P पक्ष माना जा सकता है। लकड़ी, जिससे इस मेज का निर्माण हुआ है, को M पक्ष की अभिव्यक्ति माना जा सकता है। वे प्रक्रियाएँ एवं गतिविधियाँ, जो इसे तैयार उत्पाद का रूप देने के लिए आवश्यक हैं, E पक्ष की अभिव्यक्ति मानी जा सकती हैं। यह मेज दिल्ली में IGNOU के परिसर में विद्यमान है अतः इसे स्थान अवधारणा का द्योतक माना जा सकता है और यह S पक्ष है तथा यह वहाँ पर 1997 में मौजूद है, जो T पक्ष का परिचायक है यद्यपि इस उदाहरण में विश्लेषण विधि को अत्यधिक सरलतासे प्रस्तुत किया गया है तथापि इसके द्वारा मूलभूत श्रेणियों से सम्बन्धित विचारों की अच्छी तरह से स्पष्ट व्याख्या की गई है। आइए अब हम मूलभूत श्रेणियों की विधिवत् व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास करें।

काल (Time) :

मूलभूत श्रेणी "काल" की पहचान बहुत आसानी से की जा सकती है। इसका प्रयोग प्रायः उसी अर्थ में किया जाता है, जिस अर्थ में सामान्यतः हम इस शब्द को समझते हैं। सामान्यतः काल एकल सहस्राब्दी, शताब्दी, दशक, वर्ष इत्यादि विचारों को व्यक्त करता है। एक अन्य प्रकार के काल एकल—जैसे, दिन तथा रात; ऋतुएँ—जैसे ग्रीष्म ऋतु; शीत ऋतु; वायुमण्डलीय लक्षणों पर आधारित काल—जैसे, आर्द्र, शुष्क, बरफीला, तूफानी इत्यादि को भी "काल" मूलभूत श्रेणी की अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाता है। काल तत्त्व को व्यक्त करने वाली आख्याओं के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

1997 में उच्च-चालकता (Superconductivity in 1997)

शीत ऋतु में गेहूँ की बुआई (Winter sowing of wheat)

रात्रि में रेल द्वारा यात्रा (Night journey by trains)

20वीं शताब्दी में प्रौद्योगिकी की प्रगति (Technological advances in the 20th century)

सहस्राब्दी में खगोल-विज्ञान का अध्ययन (Study of astronomy through the millennia)

सी.सी. यू. डी. सी. इत्यादि वर्गीकरण पद्धतियों में काल सूचक अनुसूचियों को "काल एकल" (Time Isolates) या "काल-क्रमिक विभाजन" (Chronological Divisions) या "लक्षणपूरक काल एकल" (Featured Time Isolates) के रूप में अलग से सूचीबद्ध किया गया है। इन सामान्य एकलों का अनेक विषयों में प्रयोग होता है।

स्थान (Space)

"काल" श्रेणी के बाद "स्थान" श्रेणी आती है। सामान्यतः स्थान श्रेणी की पहचान करने में कोई भी कठिनाई नहीं होती है तथा वर्गीकरण की अधिकांश पद्धतियों में इसका निरूपण किया गया है। स्थान श्रेणी का प्रयोग प्रायः उसी अर्थ में हुआ है जिस अर्थ में सामान्यतः इस शब्द को समझा जाता है। इस श्रेणी में भौगोलिक एकल विचारों—जैसे महाद्वीप, देश, राज्य, जिला, ताल्लुक, नगर, टाउन, ग्राम, जल क्षेत्र—संरचना एवं भू-आकृति से सम्बन्धित एकल विचारों—जैसे, महासागर एवं समुद्र, रेगिस्तान, घास के मैदान, वर्षा—प्रधान वन, पठार, पर्वत, नदियाँ नहर, जलवायु कटिबंध, उष्ण कटिबंध, जनसंख्या-समूह; अधिकृत क्षेत्र : जैसे, नगर, टाउन इत्यादि को सम्मिलित किया गया है तथा सभी को मूलभूत श्रेणी "स्थान" की अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाता है।

स्थान एकल को व्यक्त करने वाली आख्याओं के उदाहरण निम्नलिखित हैं :

NOTES

कनाडा में वस्त्र उद्योग (Textile industry in Canada)

भारत की पर्वतमालाएँ (Mountain ranges of India)

उष्ण कटिबंध क्षेत्र में वातानुकूलन (Airconditioning in the tropics)

गाँव में सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाएँ (Public library services in village)

हिन्द महासागर से सम्बन्धित राजनीतिक संघर्ष (Political conflicts relating to the Indian Ocean)

गंगा की सफाई परियोजना (The Ganga cleaning project)

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि मूलभूत श्रेणी "काल" एवं "स्थान" की अभिव्यक्ति को आसानी से समझा जा सकता है, तथा सामान्य: उनकी पहचान करने में किसी भी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। बहुत सी स्थितियाँ में तो प्रलेखों की आख्याओं के आधार पर ही उनकी पहचान की जा सकती है।

ऊर्जा (Energy)

सामान्यतः विभिन्न प्रकार की क्रियाओं को ही ऊर्जा की अभिव्यक्ति माना जाता है। ये क्रियाएँ गतिशील क्रियाओं की सूचक होती हैं जैसे, करते हुए, बदलते हुए, मूल्यांकन करते हुए, निर्धारण करते हुए, पूर्वानुमान करते हुए, विश्लेषण इत्यादि। क्रिया सभी प्रकार की सत्ताओं—जैसे सजीव, जड़, संकल्पनात्मक, बौद्धिक एवं अंतर्बोधनात्मक के बीच में हो सकती है, तथा उनके द्वारा भी की जा सकती है। "काल" अथवा "स्थान" श्रेणी की अपेक्षा "ऊर्जा" श्रेणी की पहचान करना कुछ अधिक कठिन है। वस्तुतः "ऊर्जा" एकल एवं "पदार्थ—गुणधर्म" (Matter Property) एकल की अभिव्यक्ति के बीच पारस्परिक भिन्नता का निर्णय करते समय मुख्यतः क्रिया से सम्बन्ध विचारों का स्पष्ट पता लगाने में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह अनुभव किया गया है कि "पदार्थ—गुणधर्म" श्रेणी की अभिव्यक्ति लक्षणों (विशेषताओं) के दो वर्गों के अनुसार हो सकती हैं एक तो, वह एकल विचार जो किसी स्थायी (स्थिर) लक्षण को सूचित करता है, अर्थात् क्रिया-सम्बन्ध लक्षण, जिससे कुछ विशेषता सूचक कार्य—सामान्य या विशिष्ट—करने का अथवा किसी सत्ता या तंत्र के आचरण का संकेत मिलता हो।

उदाहरणार्थ, "कार्य", "शरीर विज्ञान" एवं "नियंत्रण"। इस आधार पर "नियंत्रण"; जैसा एकल विचार "प्रबंधन" विषय के एक पक्ष के रूप में पाया जाता है; क्योंकि यह प्रबंधन के किसी एक कार्य का द्योतक है। किन्तु दूसरी ओर "नियंत्रण" एकल विचार जो "मानव शरीर की व्याधियों के नियंत्रण" विषय के एक पक्ष के रूप में पाया जाता है, "ऊर्जा" श्रेणी की अभिव्यक्ति माना जाता है। यहाँ "नियंत्रण" किसी प्रधान सत्ता (मूल सत्ता) के गतिशील लक्षण को व्यक्त करने वाले कार्य का सूचक नहीं है। इस प्रकार, यह "पदार्थ" श्रेणी की अभिव्यक्ति का द्योतक नहीं है।

ऊर्जा एकल के निम्नांकित उदाहरण हैं :

| | | |
|-------------------------|-------------------------|-----------------------|
| बनाना (Preparation) | केन्द्रीकरण (Focusing) | पृथक्करण (Separation) |
| सृजन (Generation) | अनुचिंतन (Reflection) | निदान (Diagnosis) |
| प्रचालन (Operating) | प्रकीर्णन (Scattering) | कर्षण (Extraction) |
| संग्रहण (Collecting) | विवेचन (Discussing) | आसवन (Distillation) |
| अन्वेषण (Investigation) | गरमाना (तापन) (Warming) | विलयन (Fusion) |

ऊर्जा एकलों से युक्त आख्याओं के निम्नांकित उदाहरण हैं :

सल्फ्यूरिक एसिड बनाना (Preparation of sulphuric acid)

अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं में ज्ञान का सृजन (Generation of knowledge in R&D laboratories)

मूलभूत श्रेणियाँ, पक्ष
विश्लेषण एवं पक्ष अनुक्रम

डीजल इंजन का प्रचालन (Operating diesel engines)

प्रकाश का प्रकीर्णन (Scattering of lights)

समुद्री खद्य का तापन (Warming of seafood)

पीने के पानी में क्लोरीन का आकलन (Estimation of chlorine in water for drinking)

पदार्थ (Matter)

'ऊर्जा' श्रेणी की अपेक्षा मूलभूत श्रेणी 'पदार्थ' (Matter) की पहचान करना और भी अधिक कठिन है। इसकी अभिव्यक्ति दो प्रकार से होती है; अर्थात् 'पदार्थ-सामग्री' (Matter-Material) एवं 'पदार्थ-गुणधर्म' (Matter Property)। वर्गीकरण के दृष्टिकोण से अवलोकन करने पर 'पदार्थ-सामग्री' श्रेणी का क्षेत्र एक छोर पर रासायनिक तत्वों या कच्चा माल से लेकर, दूसरे छोर पर तैयार माल (उत्पाद) तक फैला हुआ है। इन दोनों सिरों को मध्यवर्ती चरणों की एक श्रृंखला जोड़ती है। उदाहरणार्थ, वस्त्र निर्माण विषय के सम्बन्ध में रूई कच्चा माल है, जबकि वस्त्र एक तैयार माल। 'रूई का कपड़ा' मध्यवर्तीचरण है, जबकि 'रूई कृषि विषय के सन्दर्भ में फसल का अंतिम उत्पाद है।

रंगनाथन की विचारधारा के अनुसार वस्तुओं, व्यक्तियों इत्यादि के गुणधर्म को भी 'पदार्थ' श्रेणी की अभिव्यक्ति माना जाता है। 'विसंगति' (variance), 'तीव्रता' (intensity), तरंगदैर्घ्य, (wave length), 'ऊँचाई' (height), 'भार' (weight), 'आयतन' (volume), इत्यादि एकलों को भी पदार्थ श्रेणी की अभिव्यक्ति माना जाता है।

पदार्थ एकलों को प्रदर्शित करने वाली कुछ आख्याएँ निम्नलिखित हैं :

ठोस पदार्थ का घनत्व (Density of solid)

मुद्रण में रोशनाई की कोटि (प्रकार) (Ink quality in printing)

गद्दा निर्माण में रबड़ की कोटि (Rubber quality in the manufacture of mattresses)

उच्च-चालक का विद्युत प्रवाह प्रतिरोध (Electric current resistance of superconductors)

व्यक्तित्व (Personality)

मूलभूत श्रेणी 'व्यक्तित्व' की पहचान करना अत्यंत कठिन है। यह श्रेणी नितांत दुर्ग्राह्य है। अतः रंगनाथन ने किसी भी यौगिक विषय का पक्ष विश्लेषण करते समय व्यक्तित्व एकल की पहचान करने के लिए 'अवशेष विधि' (Method of Residues) को अपनाए की सलाह दी है। यदि किसी एकल के सम्बन्ध में यह आसानी से निर्धारित किया जा सके कि वह 'काल' या 'स्थान' या 'ऊर्जा' या 'पदार्थ' श्रेणी को व्यक्त नहीं करता तो उसे मूलभूत श्रेणी 'व्यक्तित्व' की अभिव्यक्ति मान लेना चाहिए। ऐसा इसलिए कहा गया है, क्योंकि मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा के अनुसार, 'पाँच और केवल पाँच' ही मूलभूत श्रेणियाँ होती हैं। तथापि, 'अवशेष विधि' के अनुप्रयोग को अचूक नहीं मान लेना चाहिये। फिर भी, अनुभवजन्य सहज-क्रिया द्वारा किसी भी एकल विचार में इस मूलभूत श्रेणी की अभिव्यक्ति की पहचान करना सम्भव होगा।

तथापि, बाद की प्रगति के आधार पर यह अनुभव किया गया कि सर्वप्रथम मूलभूत श्रेणी 'व्यक्तित्व' की पहचान करना उपयोगी है एवं उसके बाद ही अन्य मूलभूत श्रेणियों की पहचान करना उचित है। वर्गीकरण के क्षेत्र में गहन अनुसूचियों का रूपांकन करते समय यह अनुभव किया गया है किसी भी मूल विषय से मेल

NOTES

NOTES

खाने वाले यौगिक विषयों में मूल अवधारणा की पहचान करना सम्भव है; जैसे मनोविज्ञान में 'मानव मस्तिष्क' को, चिकित्सा शास्त्र में 'मानव शरीर' इत्यादि को। इस प्रकार की मूल अवधारणाओं को ही मूलभूत श्रेणी 'व्यक्तित्व' की अभिव्यक्ति माना जाता है। इस प्रकार की मूल अवधारणाओं के अनेक लक्षण हो सकते हैं। यह अवधारणा विभिन्न विचारों के अनुक्रम के ढाँचे को निर्धारित करने में सहायता प्रदान करती है। यह विभिन्न मूल विषयों से मेलखाने वाले विषयों के घनिष्ठ-सम्बन्धों की सापेक्ष मात्रा निर्धारित करने में सहायक है। मूल अवधारणाओं के बीच घनिष्ठ सम्बन्धों के परिप्रेक्ष्य में ही किसी संकल्पना को अधिक से अधिक महत्त्व देना पड़ेगा। ये मूल अवधारणाएँ मूलभूत श्रेणी 'व्यक्तित्व' की अभिव्यक्ति के रूप में अपनी भूमिका निभाते हुए किसी भी प्रणाली के प्रमुख अंगों का काम करती हैं। इस प्रकार, प्रमुख अंग के रूप में इस किसी भी प्रणाली के प्रमुख अंगों का काम करती हैं। इस प्रकार, प्रमुख अंग के रूप में इस मूल अवधारणा का पता लगाना ही मूलभूत श्रेणी 'व्यक्तित्व' की अभिव्यक्ति को पहचानने की सर्वश्रेष्ठ विधि है।

दूसरे शब्दों में, "व्यक्तित्व" किसी भी सम्पूर्ण विषय का, जो सह-सम्बन्धित विचारों का समूह होता है, केन्द्रीय (प्रमुख) अंग होता है। कृषि शास्त्र में "फसल", वनस्पति शास्त्र में "वनस्पतियों" का "प्राकृतिक वर्ग", प्राणिशास्त्र में "जीवन-जन्तु", इतिहास में "जन समुदाय", रसायन शास्त्र में "पदार्थ", एवं समाजशास्त्र में "सामाजिक वर्ग" मूलभूत श्रेणी "व्यक्तित्व" को जानने एवं समझने के लिए उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

व्यक्तित्व एकलों को व्यक्त करने वाली आख्याओं के उदाहरण हैं :

कार्बनिक यौगिकों का परिमाणात्मक विश्लेषण (Quantitative analysis of Organic Compounds)

इस्पात उद्योग का अर्थशास्त्रीय अध्ययन (Economics of Steel Industry)

हाइड्रोजन पैरोक्साइड में रूई का विरंजन (Cotton bleaching in hydrogen peroxide)

भारतीयों का इतिहास (History of Indian people)

फेफड़े का कैंसर (Cancer of Lung)

स्त्रियों के क्रोध का अध्ययन (Study of anger in Women)

उत्तर प्रदेश में गन्ने की पैदावार (Sugarcane yield in Uttar Pradesh)

4. पक्ष विश्लेषण

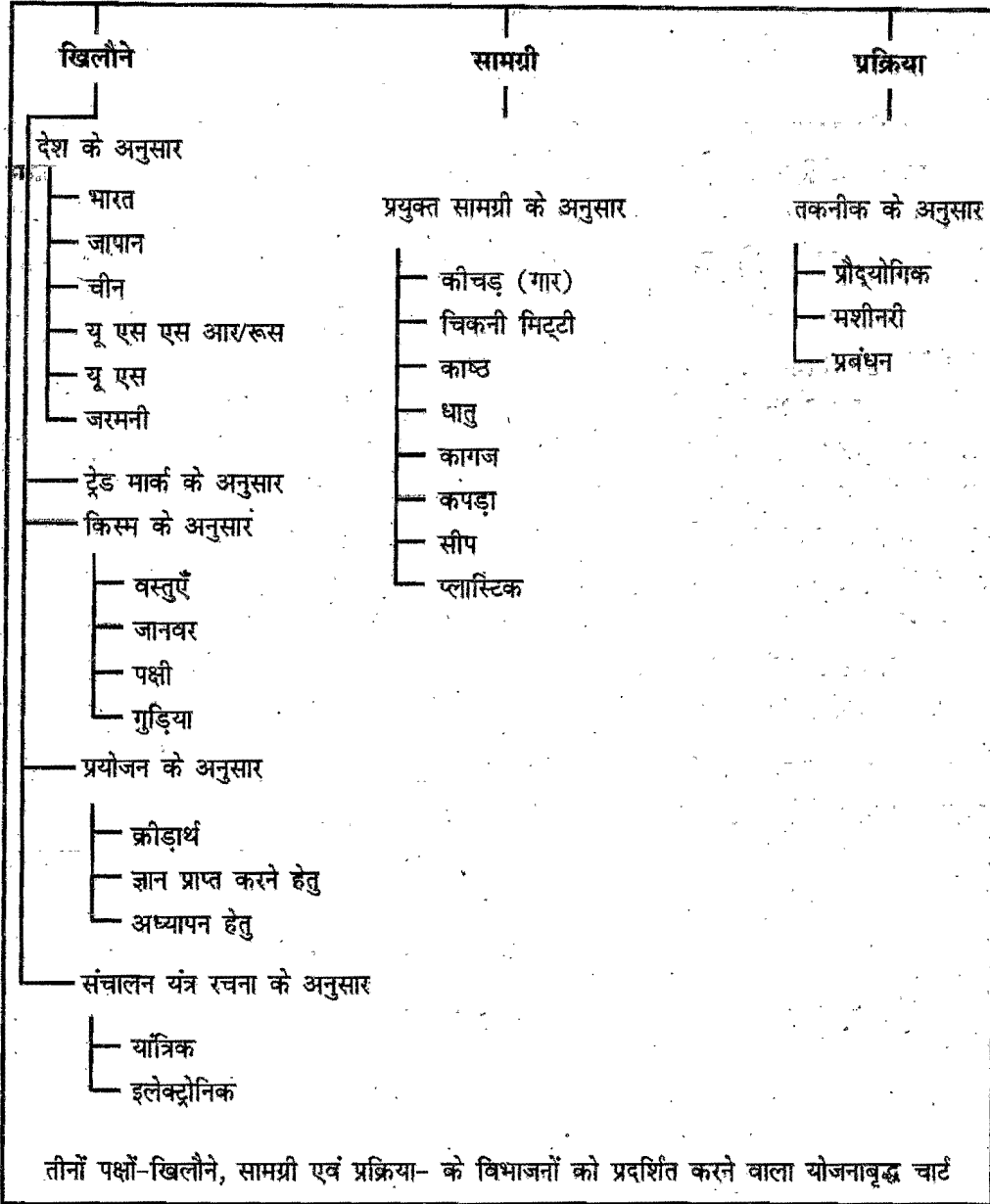
4. 1. पक्ष विश्लेषण के प्रयोग द्वारा विषय विश्लेषण

पक्ष किसी विषय का एक पहलू होता है। पक्ष विश्लेषण का अर्थ है किसी विषय का उसके विभिन्न पक्षों में विश्लेषण करना। किसी मूल वर्ग के विभाजनों का एक समुच्चय जो विशेषताओं की एक श्रृंखला के सुव्यवस्थित अनुप्रयोग द्वारा प्राप्त किया जाता है, उस मूल वर्ग का एक पक्ष होता है। किसी विषय का पक्ष विश्लेषण कर उसके संवर्गों के समुच्चयों का निर्माण किया जाता है। आइए, इस बिन्दु को एक उदाहरण देकर स्पष्ट करें। "खिलौना निर्माण" विषय का विश्लेषण करने पर हमें ज्ञात होता है कि "खिलौने" निर्माण-प्रक्रिया के अंतिम या मूलभूत उत्पाद हैं तथा इस विषय के एक पक्ष को व्यक्त करते हैं। "सामग्री", जिसका खिलौनों के निर्माण में उपयोग किया जाता है, एक अन्य पक्ष को सूचित करती है तथा —खिलौनों के निर्माण की प्रक्रिया" भी एक अन्य पक्ष को व्यक्त करती है। इस प्रकार "खिलौना" पक्ष अनेक वर्गों एवं उपवर्गों का समूह है। यही स्थिति "सामग्री" पक्ष एवं "प्रक्रिया" पक्ष की है। निम्नांकित चार्ट द्वारा इस विषय को और अधिक स्पष्ट किया गया है :

चार्ट : खिलौना निर्माण

मूलभूत श्रेणियाँ, पक्ष
विश्लेषण एवं पक्ष अनुक्रम

NOTES



उपर्युक्त चार्ट में हमने खिलौने को, विभिन्न विशेषताओं के अनुप्रयोग के आधार पर, अनेक उप-वर्गों में विभाजित किया है। इसी प्रकार खिलौनों के निर्माण में प्रयुक्त सामग्री को अनेक उपवर्गों में विभाजित किया है। इसी तरह खिलौनों के निर्माण की प्रक्रिया को भी अनेक उप-वर्गों में विभाजन करके प्रदर्शित किया है। इनमें से प्रत्येक उप-वर्ग को पुनः अगले उप-वर्गों में विभाजित किया जा सकता है एवं विभाजन की प्रक्रिया को उस बिन्दु तक निरंतर जारी रखा जा सकता है, जब तक अन्य कोई उप-विभाजन प्राप्त करना सम्भव न हो। इन सभी उप-वर्गों एवं उप-उप-वर्गों, तथा इन वर्गों में से प्रत्येक वर्ग की इकाईयों को एक सहायक अनुक्रम में सुनियोजित ढंग से व्यवस्थित किया जाता है तथा एक वर्गीकरण अनुसूची में प्रदर्शित कर दिया जाता है। यह अनुसूची, वर्गीकरण के लिए एक उपर्युक्त साधन बन जाती है।

उपर्युक्त उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि सभी विषयों को विभाजन के उद्देश्य के उपर्युक्त विशेषताओं का प्रयोग कर अपने-अपने पक्षों में विभाजित किया जा सकता है। हमें इस बिन्दु पर भी ध्यान देना चाहिए कि पक्ष विश्लेषण की प्रक्रिया किसी भी वर्गीकरण पद्धति पर अवलम्बित नहीं होती है, अर्थात् इस प्रक्रिया में किसी वर्गीकरण पद्धति को आधार नहीं बनाया जाता है। विषयों को अपने पक्षों में इस प्रकार विभाजित करने का उद्देश्य प्रलेखों का उनमें निहित विषय वस्तु के आधार पर वर्गीकरण करते समय, सहायक अनुक्रम स्थापित

करना होता है, ताकि प्रलेखों को पुस्तकालय की निधानियों पर, कैटलॉग एवं ग्रंथसूचियों में, तथा सूचना के संग्रहण एवं पुनः प्राप्ति के इसी प्रकार के अन्य स्रोतों में व्यवस्थित करने में सहायक अनुक्रम सुनिश्चित किया जा सके।

NOTES

इस प्रकार, रंगनाथन के अनुसार पक्ष विश्लेषण का अर्थ है "इस प्रायोजन (पक्ष विश्लेषण) के लिए निर्धारित अभिधारणाओं एवं सिद्धान्तों के अनुसार किसी विषय का उसके विभिन्न पक्षों में विश्लेषण करना"। पामर (Palmer) एवं वेल्स (Wells) के शब्दों में पक्ष विश्लेषण का अर्थ है "किसी विशिष्ट विषय का, विभिन्न विशेषताओं का प्रयोग करते हुए, पक्षों में विश्लेषण करना"।

पूर्ववर्ती वर्गीकरण पद्धतियों का स्वरूप परिगणनात्मक था जिनमें सम्पूर्ण विषय जगत् को वर्गों एवं उपवर्गों में सुनियोजित ढंग से विभाजित करके पूर्व निर्मित वर्ग संख्याएँ प्रदान की गई हैं। इसके विपरीत रंगनाथन ने पक्षात्मक दृष्टिकोण अपनाया एवं तदनुसार भूत, वर्तमान एवं पूर्वानुमानित भविष्य के सभी विषयों की परिगणना करने के बदले, सभी मूल अवधारणाओं या तत्वों या निरूपकों की परिगणना करना बेहतर समझा। इस विधि के अनुसार प्रलेखों का वर्गीकरण करते समय सम्बन्धित विषय-सरल, यौगिक, मिश्र-के स्वरूप को ध्यान में रखकर अवधारणाओं/निरूपकों का विश्लेषण किया जा सकता है, तत्पश्चात् उन्हें एक उपयुक्त ढंग से संश्लेषित कर एक ऐसी वर्ग संख्या का स्वरूप प्रदान किया जा सकता है जो प्रलेख में अभिव्यक्त विषय का निरूपण करती हो। यद्यपि वर्गीकरण पद्धतियों की रूपरेखा तैयार करते समय वर्गीकरण प्रणाली प्रणेतता तो पक्ष विश्लेषण प्रक्रिया को अपनाते ही हैं, किन्तु प्रलेखों का वर्गीकरण करते समय वर्गीकरणकार भी इस विधि को अपनाते रहते हैं।

आइए, अब हम कोलन क्लैसिफिकेशन (सी. सी) ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन (डी. डी. सी) एवं यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन (यू. डी. सी) पद्धतियों में पक्ष विश्लेषण के अनुप्रयोग पर विचार करें। इन वर्गीकरण पद्धतियों के विस्तृत अध्ययन के लिए आपको इस पाठ्यक्रम के खण्ड 4 का अवलोकन करने की सलाह दी जाती है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा को स्पष्ट कीजिए।
2. मूलभूत पाँच श्रेणियाँ कौन-कौन सी हैं?

.....

.....

.....

.....

4. 2. कोलन क्लैसिफिकेशन एवं पक्ष विश्लेषण

पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धतियों में से केवल कोलन क्लैसिफिकेशन में ही पक्ष विश्लेषण का सुस्पष्ट अनुप्रयोग पूर्णरूप से किया गया है। रंगनाथन ने विषयों का उनके पक्षों में यथातथ्य या संघन विश्लेषण करके ही मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा को विकसित किया है। वस्तुतः कोलन क्लैसिफिकेशन के प्रथम तीन संस्करणों में तो पी एम ई सस टी (PMEST) मूलभूत श्रेणियों को प्रमुख स्थान नहीं दिया गया था। इस इकाई के 7. 2. 1 अनुभाग में दी गई सारणी 1, जिससे मूल विषयों एवं तदनुकूल पक्षों के मैट्रिक्स को प्रस्तुत किया गया है, में विषयों का उसके पक्षों में विश्लेषण करके इस बात को समझाया गया है। विभिन्न विषयों में तदनुकूल पक्षों की किस्मों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने के बाद, रंगनाथन ने यह सिद्ध कर दिया कि उनमें स्पष्ट सतही आभासी भिन्नता विद्यमान रहते हुए भी, उन्हें पाँच मूलभूत श्रेणियों में समायोजित किया जा सकता है। सी सी (CC) के बाद के संस्करणों में प्रत्येक मूल विषय की अनुसूचियों का परिरूप तैयार करने के लिए मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा का प्रयोग किया गया है। सी सी को मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति माना गया है, क्योंकि इस पद्धति में विषयों के स्वरूप के आधार पर उनके पक्षों को निर्धारित किया जाता

है तथा ये पक्ष किसी पूर्व निर्धारित पक्ष संरचना पर आधारित नहीं होते अपितु अभिधारणाओं के ढाँचे में समायोजित किये जाते हैं। प्रत्येक वर्ग के एकलौं, सामान्य एकलौं, स्थान एवं काल एकलौं, भाषा एकलौं इत्यादि का परिगणना भी पक्ष विश्लेषण के सिद्धान्त का प्रयोग करके किया गया है।

“खिलौना निर्माण” विषय में रंगनाथन की मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा का प्रयोग करने पर हमें ज्ञात होता है कि :

- “खिलौना” व्यक्तित्व पक्ष की अभिव्यक्ति है,
- “सामग्री” पदार्थ पक्ष की अभिव्यक्ति है,
- “निर्माण” ऊर्जा पक्ष की अभिव्यक्ति है,
- “स्थान” एवं ‘काल’ आवश्यकतानुसार जोड़े जा सकते हैं।

यदि Treatment of lung disease in India in 1997 शीर्षक का विश्लेषण किया जाए तो हमें निम्नलिखित पक्षों का पता लगता है :

| | | |
|----------------|---|-------------------------|
| मूल विषय (BS) | : | आयुर्विज्ञान (Medicine) |
| व्यक्तित्व [P] | : | फेफड़े (Lung) |
| पदार्थ [MP] | : | बीमारी (Disease) |
| ऊर्जा [E] | : | उपचार (Treatment) |
| स्थान [S] | : | भारत (India) |
| समय [T] | : | 1997 |

4.3. ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन एवं पक्ष विश्लेषण

ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन वर्गीकरण पद्धति का परिरूप (डिजाइन) तैयार करने में पक्ष विश्लेषण के अव्यक्त (अंतर्निहित) प्रयोग का स्पष्ट संकेत मिलता है। डी डी सी (DDC) के 19वें संस्करण की संपादकीय प्रस्तापवना में यह व्यक्त किया गया है कि “डी डी सी के सभी वर्गों (002-029, 069, 079, 1-9, 090, 100-700) का व्यवस्थापन, यदि कोई भिन्न अनुक्रम निर्धारित नहीं किया गया हो तो, सर्वप्रथम सर्वाधिक विशिष्ट विद्या-विशेष (Discipline) एवं उसके अंतर्गत सर्वाधिक विशिष्ट विषय, तत्पश्चात् विशेष विवरण के क्षेत्र के अनुसार; इसके बाद, यदि अनुसूचियों में प्रावधान हो तो, काल के अनुसार, एवं तत्पश्चात् प्रस्तुतीकरण के स्वरूप के आधार पर किया गया है।” उदाहरणार्थ, टेक्सास के देशीय सर्प (Native snakes of Texas) ग्रन्थ का निम्नलिखित ढंग से वर्गीकरण किया जाता है :

| | | |
|---------------------------|--|----|
| विद्या-विशेष (Discipline) | विज्ञान (Science) | 5 |
| | प्राणिशास्त्र (Zoology) | 9 |
| | नृशंस मेरुदंडी जीव (Cold-blooded Vertebrates) | 7 |
| | रेंगने वाले जीव (Reptiles) | 9 |
| | सर्प (Snakes) | 6 |
| क्षेत्र (Area) | (भौगोलिक अवधारणा को प्रवर्तित करने वाला प्रतीक) | 09 |
| | उत्तरी अमेरिका (North America) | 7 |
| | दक्षिणी केन्द्रीय यू एस (South Central U.S.) | 6 |
| | टेक्सास (Texas) | 4 |

इस प्रकार 597,960 9764 वर्ग संख्या बनेगी।

“शेक्सपीयर की कृतियाँ” (Works of Shakespeare) का निम्नलिखित ढंग से वर्गीकरण किया जाता है:

| | | |
|---------------------------|----------------------|---|
| विद्या-विशेष (Discipline) | साहित्य (Literature) | 8 |
| भाषा (Language) | अँगरेजी (English) | 2 |

NOTES

| | | |
|--------------------|--|---|
| साहित्य रूप (Form) | नाटक (Drama) | 2 |
| काल (Period) | एलिजाबेथ काल (1558-1625) (Elizabethan Period) | 3 |
| कृतियाँ (Works) | शेक्सपीयर की कृतियाँ (Shakespeare's Works) | 3 |

NOTES

इस प्रकार 822.33 वर्ग संख्या बनेगी।

उपर्युक्त प्रथम उदाहरण में "टेक्सास के देशीय सर्प" ग्रन्थ के पक्षों का विभाजन इस प्रकार है : "विद्या-विशेष" विज्ञान है; "प्राणिशास्त्र" इस पक्ष का एक विभाजन है जो प्राणियों के प्राकृतिक वर्ग का निरूपण करने वाला "विषय" है; तथा "सर्प" प्राणियों के प्राकृतिक वर्ग पक्ष का एक एकल है; "क्षेत्र" स्थान पक्ष है एवं "टेक्सास" इस पक्ष का एकल है। दूसरे उदाहरण में "विद्या-विशेष", "भाषा", "स्वरूप", "काल" एवं "कृतियाँ" विभिन्न पक्ष हैं। यद्यपि डी डी सी की अनुसूचियों में पक्ष विश्लेषण की विधि का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता, तथापि उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि इस पद्धति की रूपरेखा तैयार करने में भी पक्ष विश्लेषण की विधि को आधार बनाया गया है। फिर भी इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि डी डी सी की अनुसूचियों में "पक्ष—एकलों" का परिगणन नहीं किया गया है, जबकि डी डी सी में "पक्ष—एकतों" का परिगणन स्पष्ट रूप से किया गया है। डी डी सी में केवल यौगिक विषय का निरूपण करने वाले "पक्ष—एकलों" के संयोजन को ही प्रदर्शित किया गया है। "मानक उपविभाजन" "भौगोलिक सारणी", कुछ विषयों में प्रयोग करने लायक "काल अनुसूचियाँ" इत्यादि का उल्लेख जिन्हें आवश्यकता पड़ने पर किसी भी वर्ग के साथ जोड़ा जा सकता है, अलग से किया गया है।

इसके अतिरिक्त, डी डी सी की अनुसूचियों में सब जगह अनुसूची में अन्य स्थान पर उल्लिखित विभाजनों को लेकर किसी एक विशिष्ट वर्ग का उप-विभाजन करने के लिए प्रचुर मात्रा में टिप्पणियाँ दी गई हैं। यह इस बात का सूचक है कि जिस समय भी आवश्यक हो किसी भी विषय में विश्लेषण के सिद्धान्त का प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरणार्थ : (इन सभी उदाहरणों का अध्ययन डी डी सी की अनुसूचियों को पास में रख कर करना पड़ेगा)।

(1) Jews in India (भारत में यहूदी)

इस आख्या का अनुवर्ती पक्षों में विश्लेषण किया जा सकता है : Social Stratification (सामाजिक स्तरीकरण) (305.6), Religious Group (धार्मिक समूह), Jew (यहूदी)। Social Stratification by Religious group (305.6) के अंतर्गत इस प्रकार टिप्पणी दी गई है : "Add to base number 305.6 the numbers following 2 in 'Persons' notation 21-29 from Table 7" (आधार वर्ग संख्या 305.6 के साथ सारणी 7 में उल्लिखित जन-सूचक अंकन 21-29 में से प्रथम अंक 7 को छोड़कर शेष संख्या को जोड़ें)।

सारणी 7 में यहूदियों की वर्ग संख्या 296 है। इस प्रकार अंतिम वर्ग संख्या है : 30.696.

(2) Migration of Birds (पक्षियों का प्रवजन)

इस आख्या का अनुवर्ती पक्षों में विश्लेषण किया जा सकता है : Bird (पक्षी), Migration (प्रवजन)।

598.21-28 के अंतर्गत उल्लिखित टिप्पणी (General Principles)-Birds के अंतर्गत यह निर्देश दिया गया है कि "Add to base number 598.2 the number following 591 in 591.1-591.8" (आधार वर्ग संख्या 598.2 के साथ अंकन 591.1-591.8 में से 591 को छोड़कर शेष अंकन को जोड़ें)। वहाँ पर प्रवजन की वर्ग संख्या 591.252 है। इस प्रकार अंतिम वर्ग संख्या है : 598.252 5.

(3) Sacred places of Jainism (जैन धर्म के धार्मिक स्थान)

इस आख्या का अनुवर्ती पक्षों में विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है : Jainism (जैन धर्म), Sacred places (धार्मिक स्थान)।

294.41-48 के अंतर्गत टिप्पणी है : "Add to base number 294.4 the number s following 291 in 291.1-291.8" (आधार संख्या 294.4 के साथ अंकन 291.1-291.8 में से 291 को छोड़कर शेष अंकन को जोड़ें) यहाँ पर पवित्र स्थानों की वर्ग संख्या 291/35 है। इस प्रकार अंतिम वर्ग संख्या है—294.435.

उपर्युक्त उदाहरणों में पक्ष विश्लेषण एवं संश्लेषण का स्पष्ट संकेत मिलता है।

4. 4. यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन एवं पक्ष विश्लेषण

यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन में डी डी सी की मूल संरचना को अपनाया गया; किन्तु इसमें अपना ही दर्शन, अपनी ही नीतियाँ एवं अपने ही सिद्धान्त विकसित कर लिए गए हैं। यू डी सी (UDC) की पक्ष संरचना डी डी सी की अपेक्षा बहुत अधिक सुस्पष्ट है। इसके कुछ पक्षात्मक लक्षणों का उल्लेख निम्नांकित है :

- (i) स्थान, जाति एवं राष्ट्रियता, काल दृष्टिकोण इत्यादि से सम्बन्धित सामान्य सहायक;
- (ii) दो या दो अधिक पक्षों को जोड़ने के लिए पक्ष संकेतक कोलन (:), दीर्घ कोष्ठक [], दोहरा कोलन (::);
- (iii) किसी निश्चित मूलवर्ग के उपर्युक्त पक्षों को प्रवर्तित करने के लिए विशिष्ट पक्ष संकेतकों के साथ विशिष्ट सहायक;
- (iv) किसी भी वर्ग में अनुप्रयोग के लिए पक्ष विभाजन की उपलब्धता, जहाँ इस प्रकार का विभाजन करने की आवश्यकता हो। यह प्रावधान डी डी सी के प्रावधान के साथ कुछ-कुछ मेल खाता है।

सामान्य सहायकों एवं विशिष्ट सहायकों के अनुप्रयोग से सम्बन्धित कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं (जो शब्द मोटे अक्षरों में हैं वे सम्बन्धित सामान्य सहायक को सूचित करते हैं) :

Common Auxiliaries (सामान्य सहायक) :

| | |
|-------------------------------------|---|
| Place, Race & Nationality | Coal Mining in India . (भारत में कोयला खनन) (स्थान, जाति एवं राष्ट्रियता) |
| | The Sociological Importance of Kinship among the Jews . (यहूदियों में रिश्तेदारी का समाजशास्त्रीय महत्व) |
| Time (काल) | Superconductivity Research in 1980s . (1980 के दशक में उच्च चालकता के क्षेत्र में अनुसंधान) |
| Points of View (दृष्टिकोण) | Nuclear Reactors for power production form the environment point of view . (पर्यावरण के दृष्टिकोण से ऊर्जा उत्पादन के लिए न्यूक्लियर रियेक्टर) |
| Special Auxiliaries (विशिष्ट सहायक) | Electric switch mechanisms Sodium chloride |

इनके लिए विशिष्ट पक्ष संकेतक प्रयोग में लाए जाते हैं।

इन उदाहरणों का अध्ययन यू डी सी की अनुसूचियों के साथ करना चाहिए।

NOTES

NOTES

5. पक्ष अनुक्रम :

अब तक हमने विषयों का उनके पक्षों में विश्लेषण कर विश्लेषण प्रक्रिया को अच्छी तरह से समझाने का प्रयत्न किया है। किन्तु इस प्रकार के विश्लेषण का उद्देश्य विभिन्न पक्षों को एक वांछित क्रम में संश्लेषित करना भी होता है, ताकि यह क्रम प्रलेखों के भण्डारण एवं उनकी पुनः प्राप्ति के लिए सहायक सिद्ध हो। अतः विभिन्न पक्षों के संश्लेषण में एक क्रम स्थापित करना ही विश्लेषण का अंतिम उद्देश्य है। इस यथातथ्य विश्लेषण के बिना संश्लेषण में तर्क संगत क्रम स्थापित करना कठिन हो जाता है वस्तुतः पक्ष विश्लेषण एवं पक्ष संश्लेषण एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, तथा दोनों ही एक दूसरे की सार्थकता को सिद्ध करते हैं।

अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि विभिन्न पक्षों का अनुक्रम क्या होना चाहिए ? क्या कोई ऐसी एकमात्र व्यवस्था उपलब्ध है, जिसके अनुसार पक्षों का ऐसा अनुक्रम स्थापित किया जा सके जो प्रलेखों के संग्रहण एवं पुनः प्राप्ति के प्रयोजन के लिए अत्याधिक सहायक हो ?

'खिलौना निर्माण' उदाहरण में हमने तीन पक्षों, अर्थात् खिलौना (A), सामग्री (B), एवं प्रक्रिया (C), की पहचान की है। इन तीन पक्षों को निम्नलिखित छः प्रकार से व्यवस्थित किया जा सकता है :

- | | |
|---|-----|
| (i) खिलौना, सामग्री, प्रक्रिया (Toys, Materials, Process) | ABC |
| (ii) खिलौना, प्रक्रिया, सामग्री | ACB |
| (iii) सामग्री, खिलौना, प्रक्रिया | BAC |
| (iv) सामग्री, प्रक्रिया, खिलौना | BCA |
| (v) प्रक्रिया खिलौना, सामग्री | CAB |
| (vi) प्रक्रिया, सामग्री खिलौना | CBA |

यदि हमारे समक्ष केवल दो ही पक्ष हों तो उन्हें केवल दो प्रकार से व्यवस्थित किया जा सकता है, अर्थात् AB या BA. यदि हमारे समक्ष तीन पक्ष हों तो (जैसा कि उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है) उन्हें छः प्रकार से व्यवस्थित किया जा सकता है। (यदि हमारे समक्ष चार पक्ष हों तो, उन्हें 24 प्रकार से व्यवस्थित किया जा सकता है। यदि पाँच पक्ष हों तो, उन्हें 120 प्रकार से व्यवस्थित किया जा सकता है। अतः यह स्पष्ट है कि विभिन्न उपलब्ध विकल्पों में से हम केवल एक विकल्प का ही चयन कर सकते हैं, क्योंकि हम सभी विकल्पों को एक साथ नहीं अपना सकते। अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि अनेक उपलब्ध विकल्पों में से किसी एक क्रम का चयन कैसे करें।

अगले अनुभाग में हम यह अध्ययन करेंगे कि सी सी, डी डी सी एवं यू डी सी में इस समस्या का समाधान किस प्रकार से किया गया है।

5.1. कोलन क्लैसिफिकेशन में पक्ष अनुक्रम

किसी भी यौगिक विषय में उपलब्ध विभिन्न पक्षों को निर्धारित करने के पश्चात् उन्हें एक सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करना चाहिए। इस प्रयोजन के लिए रंगनाथन ने पाँच अभिधारणाओं का प्रतिपादन किया है। ये अभिधारणाएँ निम्नलिखित हैं :

- (i) प्रथम पक्ष की अभिधारणा (Postulate of First Facet)
- (ii) मूर्तता की अभिधारणा (Postulate of Concreteness)

- (iii) एक ही आवर्तन में पक्ष अनुक्रम की अभिधारणा (Postulate of Facet Sequence within a Round)
- (iv) अंतिम आवर्तन में पक्ष अनुक्रम की अभिधारणा (Postulate of Facet Sequence with the Last Round)
- (v) स्तर एवं स्तर समूह की अभिधारणा (Postulate of Level and level-Cluster)

NOTES

(i) प्रथम पक्ष की अभिधारणा

एक यौगिक विषय में मूल पक्ष को प्रथम पक्ष का स्थान मिलना चाहिए।

इकाई 6 में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि प्रत्येक यौगिक विषय में एक मूल पक्ष होना चाहिए तथा एक या अधिक एकल पक्ष। इन सभी पक्षों में सहायक अनुक्रम स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि एक मूल पक्ष से मेल खाने वाले सभी यौगिक विषयों को एक साथ व्यवस्थित किया जाना चाहिए। अतः एक यौगिक विषय के सभी पक्षों में मूल पक्ष को प्रथम स्थान मिलना चाहिए।

उदाहरणार्थ, Treatment of Lung Cancer (फेफड़े के कैंसर का उपचार)। इस उदाहरण में, मूल पक्ष Medicine (आयुर्विज्ञान) अंतर्निहित है। इस यौगिक विषय के अन्य एकल पक्ष निम्नलिखित हैं :

Treatment (उपचार) [E] Lung (फेफड़ा) [P] Cancer (कैंसर) [M]

उपर्युक्त अभिधारणा के अनुसार इन पक्षों का अनुक्रम इस प्रकार है :

Medicine (आयुर्विज्ञान) (BF), Lung (फेफड़ा) [P], Cancer (कैंसर) [M], Treatment (उपचार) [E]

इस समय यहाँ पर यह उल्लेख करना उचित है कि प्रलेख की आख्या में मूल पक्ष का संकेत या तो सुस्पष्ट, या अंतर्निहित या अनुपस्थित हो सकता है। आख्या में मूल पक्ष का कोई भी संकेत न होने पर, सूचना व्यवसायी को प्रलेख के अंतर्विषय पृष्ठ / या सम्पूर्ण प्रलेख को पढ़कर मूल विषय का निर्धारण कर लेना चाहिए।

(ii) मूर्तता की अभिधारणा

इस अभिधारणा के अनुसार, "पाँच मूलभूत श्रेणियों का उनकी मूर्तता के हिस के अनुसार विश्लेषण करने पर, उनका अनुक्रम PMEST होगा"। मूलभूत श्रेणियों का, उनकी सापेक्ष मूर्तता के अनुसार, यह अनुक्रम अधिकांश के उपागम के अनुकूल है। निम्नलिखित शीर्षकों पर विचार करें :

(क) Library Science in the 1980s (1980 के दशक में पुस्तकालय विज्ञान) : यहाँ मूल विषय (BS) एवं काल [T] का अलग-अलग उल्लेख है।

(ख) Lit ary Science in India in the 1980s (1980 के दशक में भारत में पुस्तकालय विज्ञान) : यहाँ मूल विषय (BS), काल [T] एवं स्थान [S] का अलग-अलग उल्लेख है।

(ग) Library Classification in India in the 1980s (1980 के दशक में भारत में पुस्तकालय वर्गीकरण) : यहाँ मूल विषय (BS), काल (T) स्थान [S] एवं ऊर्जा [E] का अलग-अलग उल्लेख है।

(घ) Classification of microfirms in India in the 1980s (1980 के दशक में भारत में माइक्रोफॉर्म का वर्गीकरण) : यहाँ मूल विषय (BS), काल [T] स्थान [S] ऊर्जा [E] एवं पदार्थ [M] का अलग-अलग उल्लेख है।

NOTES

(इ) Classification of microfirms in special libraries in India in 1980s (1980 के दशक में भारत में माइक्रोफॉर्मस का विशिष्ट पुस्तकालयों में वर्गीकरण) : यहाँ मूल विषय (BS), व्यक्तित्व [P] पदार्थ [M] ऊर्जा [E] स्थान [S] एवं काल [T] का अलग-अलग उल्लेख है।

उपर्युक्त आख्याओं से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि इनमें उल्लिखित विभिन्न पक्ष सामान्य से विशिष्ट की ओर अग्रसर होते हैं। शीर्षक (क) में "1980 के दशक में पुस्तकालय विज्ञान" के सभी पहलुओं पर विचार किया गया है। तथापि, शीर्षक (इ) में एक विशिष्ट क्षेत्र, अर्थात् "1980 के दशक में भारत में माइक्रोफॉर्मस का विशिष्ट पुस्तकालयों में वर्गीकरण" पर विचार किया गया है। दूसरे शब्दों में, ज्यों ही हम (क) से (इ) की ओर नीचे चलते हैं, इनमें उल्लिखित पक्ष बढ़ती हुई मात्रा में मूर्तता धारण करते जा रहे हैं तथा मूर्तता के आरोही क्रम में अग्रसर होते हैं। तदनुसार, यदि मूलभूत श्रेणियों का अनुक्रम P से T की ओर चलकर निर्धारित करते हैं तो यह मूर्ततासाह के अनुसार होता है; अथवा यदि हम T से P ओर चलते हैं तो यह मूर्तता वृद्धि के अनुसार होता है। सामान्य से विशिष्ट की ओर अग्रसर होने वाली यह व्यवस्था विषयों के बौद्धिक व्यवस्थापन के लिए उपर्युक्त है, तथा अधिकांश उपयोक्ताओं के लिए संतोषजनक होगी।

(iii) एक ही आवर्तन में पक्ष अनुक्रम की अभिधारणा

किसी भी यौगिक विषय में पक्षों के किसी एक आवर्तन में जहाँ व्यक्तित्व, पदार्थ, ऊर्जा मूलभूत। श्रेणियों में से प्रत्येक अथवा किसी एक का आवर्तन केवल एक बार हो तो उन्हें व्यक्तित्व पक्ष, पदार्थ एवं ऊर्जा पक्ष के अनुक्रम में व्यवस्थित किया जाना चाहिए।

| विषय | पक्ष अनुक्रम |
|--|---|
| (1) चावल के पौधे की बीमारी की रोकथाम (Prevention of Diseases in Rice Plant) | कृषि शास्त्र (Agriculture) (BF) चावल का पौधा (Rice Plant) [IP1] |
| (2) फेफड़े के कैंसर का उपचार (Treatment of Lung Cancer) | आयुर्विज्ञान (Medicine) (BF) फेफड़े (Lung) [IP1] कैंसर (Cancer) [IMI] उपचार (Treatment) [IE] |

(iv) अंतिम आवर्तन में पक्ष अनुक्रम की अभिधारणा

किसी भी यौगिक विषय के पक्षों के अंतिम आवर्तन में, जहाँ ऊर्जा को छोड़कर प्रत्येक मूलभूत श्रेणी का आवर्तन केवल एक बार हो तो इन पक्षों को Personality Facet, Matter Facet, Energy Facet, Space Facet, Time Facet के अनुक्रम में व्यवस्थित किया जाना चाहिए।

उपर्युक्त अभिधारणा का निहितार्थ यह है कि मूलभूत श्रेणियों का एक से अधिक बार आवर्तन हो सकता है। अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि "आवर्तन किसे कहते हैं?" पक्षों के रूप में मूलभूत श्रेणियों की एक से अधिक बार अभिव्यक्ति को स्पष्ट करने के उद्देश्य से रंगनाथन ने 'आवर्तन' एवं 'स्तर' की अभिधारणाओं का प्रतिपादन किया है। आवर्तन की अभिधारणा के अनुसार "मूलभूत श्रेणी ऊर्जा की एक ही विषय में एक से अधिक बार अभिव्यक्ति हो सकती है"। इसकी प्रथम अभिव्यक्ति तीन मूलभूत श्रेणियों व्यक्तित्व, पदार्थ तथा ऊर्जा की अभिव्यक्ति के प्रथम आवर्तन को पूरा करती है। इसकी द्वितीय अभिव्यक्ति इनके दूसरे आवर्तन को पूरा करती है इत्यादि।

इसी प्रकार, मूलभूत श्रेणियों-व्यक्तित्व एवं पदार्थ-की अभिव्यक्ति भी प्रथम आवर्तन एवं द्वितीय आवर्तन इत्यादि में हो सकती है।

'व्यक्तित्व' एवं 'पदार्थ' जिस आवर्तन से सम्बन्ध रखते हैं उस आधार पर इन्हें [1P], [2P], [1M], [2M] इत्यादि प्रतीकों द्वारा निरूपित किया जाता है।

तथापि, मूलभूत श्रेणियों-स्थान एवं काल की अभिव्यक्ति किसी भी विषय के आवर्तनों में से केवल अंतिम आवर्तन में ही होती है।

NOTES

उदाहरण : Assessment of ultra-violet treatment of bone cancer in Karnataka in 1997 (कर्नाटक में 1997 में हड्डियों के कैंसर का पराबैंगनी उपचार का मूल्यांकन)

मूल विषय, मूलभूत श्रेणियों, आवर्तन, स्तर इत्यादि की अभिधारणाओं का प्रयोग करके यदि इस आख्या का विश्लेषण किया जाए तो हमें निम्नलिखित पक्ष अनुक्रम प्राप्त होता है।

Medicine (आयुर्विज्ञान) [BF]; Bone (हड्डी) [1P]; Cancer (कैंसर) [IM]; Treatment (उपचार) [1E]; Ultra-violet Ray (पराबैंगनी किरण) [2P]; Assessment (मूल्यांकन) [2E]; Karnataka (कर्नाटक) [S]; 1997 [T].

निर्देश : यद्यपि इस अनुक्रम में मूलभूत श्रेणी 'व्यक्तित्व' का [1P] के रूप में दो बार, 'पदार्थ' का [1M] के रूप में एक बार एवं 'ऊर्जा' का [1E] व [2E] के रूप में दो बार आवर्तन हुआ है; किन्तु 'स्थान' एवं काल का क्रमशः [S] व [T] के रूप में केवल एक बार ही प्रयोग हुआ है। इस स्थिति को ध्यान में रखकर यह उल्लेख करना उचित होगा कि वर्गीकरण के सामान्य सिद्धान्त के क्षेत्र में 'स्पेसियेटर' (Speciator) की आवधारणा को अपनाने के बाद, मूलभूत श्रेणी 'ऊर्जा' को विशिष्टता प्रदान करना भी अपना लिया गया। सामान्य रूप से इसका यह परिणाम निकला कि जहाँ तक मूलभूत श्रेणी 'व्यक्तित्व' एवं 'पदार्थ' का सम्बन्ध है आवर्तन की अवधारणा को छोड़ दिया जाए। अतः अब [2P], [2M], [3P], [3M] इत्यादि को [1E], [2E] के आवर्तन के आधार पर मूलभूत श्रेणी 'ऊर्जा' के 'स्पेसियेटर' के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। तथापि, कुछ विशेष परिस्थिति में इनका स्वतंत्र आवर्तन भी सम्भव है। उदाहरणार्थ, उपचार के प्रासंगिक प्रभाव (Side effect of treatment) विचार का [2M] के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

(v) स्तर की अभिधारणा

इस अभिधारणा के अनुसार "मूलभूत श्रेणी 'व्यक्तित्व' एवं 'पदार्थ' की अभिव्यक्ति किसी भी विषय के उसी एक आवर्तन में एक से अधिक बार हो सकती है; तथा इसी प्रकार 'स्थान' एवं 'काल' की अभिव्यक्ति अंतिम आवर्तन में। मूलभूत श्रेणी की प्रथम अभिव्यक्ति को "स्तर 1" के रूप में जाना जाता है तथा उसी आवर्तन में इसी प्रकार की द्वितीय अभिव्यक्ति 'स्तर 2' के रूप में"।

स्तर समूह की अभिधारणा

इस अभिधारणा के अनुसार "एक यौगिक विषय के पक्षों के एक ही आवर्तन में उसी मूलभूत श्रेणी के विभिन्न स्तरों के पक्ष एक साथ रखे जाने चाहिए"।

(क) शेक्सपीयर के हैमलेट का आलोचनात्मक अध्ययन (Criticism of Shakespeare's Hamlet);

(ख) हिन्दू कानून में सम्पत्ति (Hindu law of property);

(ग) फूलधारी पौधों के पत्तों की बीमारियाँ एवं रसायन छिड़काव द्वारा उनका उपचार (Diseases of leaves of flowering plants and their treatment by chemical spray);

(घ) कुर्ते का डिजाइन तैयार करने के लिए सूती कपड़ों की गुणवत्ता (Quality of cotton fabrics for designing shirts)।

NOTES

उपर्युक्त उदाहरणों में एकलों का एक समूह दिखाई देता है, जिन्हें मूलभूत श्रेणी 'व्यक्तित्व' की 'अभिव्यक्ति' माना जा सकता है। प्रथम शीर्षक में 'अँगरेजी', 'नाटक', 'शेक्सपीयर' एवं 'हैमलेट' व्यक्तित्व पक्ष की अभिव्यक्तियाँ मानी जाती हैं, तथा 'आलोचना' ऊर्जा एकल है। व्यक्तित्व पक्ष के एकलों का अनुक्रम 'भित्ति चित्र' सिद्धान्त के अनुसार रखा जाना चाहिए। 'भित्ति चित्र' सिद्धान्त के अनुसार पक्षों का अनुक्रम 'भाषा' (language), 'स्वरूप' (form), 'लेखक' (author), एवं 'कृति' (work) होगा। दूसरे उदाहरण में, 'हिन्दू कानून' (Hindu law) के बाद 'सम्पत्ति' (Property) को रखा जाएगा क्योंकि दोनों ही व्यक्तित्व पक्ष की अभिव्यक्तियाँ हैं। तीसरे उदाहरण में मूलभूत श्रेणी 'व्यक्तित्व' के प्रथम आवर्तन के स्तरों के अनुक्रम में 'फूलधारी पौधों' (Flowering Plants) को प्रथम स्थान पर एवं उसके बाद 'पत्ते' (leaves) को रखा जाएगा। चौथे उदाहरण में 'गुणवत्ता' (quality) एवं 'सूती कपड़ा' (cotton fabrics) पदों को M [पदार्थ] की अभिव्यक्ति माना जा सकता है तथा इनका अनुक्रम होगा—'सूती कपड़ा' (cotton fabrics), 'गुणवत्ता' (Quality)।

“प्रलेखों का वर्गीकरण उनमें निहित विषय वस्तु के आधार पर पक्ष विश्लेषण एवं संश्लेषण की विधि को अपना कर किया जाना चाहिए। ऐसा करते समय हमें यह ध्यान रखना होगा कि प्रलेखों के संग्रहण एवं पुनः प्राप्ति के लिए सहायक एवं तर्कसंगत पदों का अनुक्रम स्थापित करना होता है तथा ऐसा अनुक्रम स्थापित करने में अभिधारणाएँ एवं सिद्धान्त सहायक सिद्ध होते हैं। अतः इस प्रक्रिया में हमें अभिधारणाओं एवं सिद्धान्तों का ठीक-ठीक एवं यथातथ्य प्रयोग करना चाहिए”। यह स्मरण रहे कि मूल वर्ग की पहचान करने के बाद ही मूलभूत श्रेणियों का प्रयोग लागू होगा। मूल वर्ग के बाद ही सभी पक्षपरक पदों को अपने-अपने क्रम में व्यवस्थित करना पड़ेगा।

पक्ष विश्लेषण एवं अनुक्रम निर्धारण से सम्बन्धित अभ्यासों के उदाहरण

पक्ष विश्लेषण एवं अनुक्रम निर्धारण से सम्बन्धित कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

यहाँ प्रत्येक आख्या का विश्लेषण किया गया है, विषय वस्तु का निरूपण करने वाले पदों को सुनिश्चित किया गया है, तत्पश्चात् इन पदों को उपर्युक्त अभिधारणाओं एवं सिद्धान्तों के अनुसार व्यवस्थित किया गया है।

(1) शेक्सपीयर के नाटक हैमलेट का आलोचनात्मक अध्ययन (Criticism of Shakespeare's Drama, Hamlet);

साहित्य (Literature), अँगरेजी (English), नाटक (Drama),

शेक्सपीयर (Shakespeare), हैमलेट (Hamlet), आलोचना (Criticism)

साहित्य (Literature) (BS) (मूल विषय)

अँगरेजी (English) [1P1]

नाटक (Drama) [1P2]

शेक्सपीयर (Shakespeare) [1P3]

हैमलेट (Hamlet) [1P4]

आलोचना (Criticism) [E]

(2) हिन्दू कानून में सम्पत्ति (Hindu law of property) :

कानून (Law), हिन्दू (Hindu), सम्पत्ति (Property)

कानून (Law) (BS) (मूल विषय)

हिन्दू (Hindu) [1P1]

सम्पत्ति (Property) [1P2]

(3) फूलधारी पौधों के पत्तों की बीमारियाँ एवं रसायन छिड़काव द्वारा उनका उपचार (Diseases of leaves of flowering plants and their treatment by chemical spray) :

वनस्पति शास्त्र (Botany), फूलधारी पौधे (Flowering plants),

पत्ते (Leaves), बीमारियाँ (Diseases), उपचार (Treatment)

वनस्पति शास्त्र (Botany) (BS) (मूल विषय)

फूलधारी पौधे (Flowering Plants) [1P1]

पत्ते (Leaves) [1P2]

बीमारियाँ (Diseases) [1MP1]

उपचार (Treatment) [1E]

NOTES

5. ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन में पक्ष अनुक्रम

जैसा कि इस इकाई में पहले उल्लेख किया जा चुका है, डी डी सी की अनुसूचियों में यौगिक विषयों के लिए किसी भी पक्ष अनुक्रम का विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया गया है। हालांकि इसमें पक्ष विश्लेषण के सिद्धान्त का अप्रत्यक्ष रूप से प्रयोग किया गया है, किन्तु प्रलेखों का वर्गीकरण करने के लिए सभी अनुसूचियों में सब जगह विस्तृत नियमों का उल्लेख अवश्य किया गया है तथा इन नियमों का अनुपालन करते समय पक्ष विश्लेषण एवं संश्लेषण का प्रयोग आवश्यक हो जाता है। आइये इस प्रक्रिया का अध्ययन करें।

कृषि एवं सम्बन्धित प्रौद्योगिकी को सर्वप्रथम फसल-उत्पादन के आधार पर तत्पश्चात् पौध क्षति, बीमारियाँ, पीड़क, जन्तुओं के आधार पर एवं इसके बाद निम्नांकित विधि से प्रत्येक फसल के अनुसार विभाजित किया गया है :

630 Agriculture and related Technologies (कृषि एवं सम्बन्धित प्रौद्योगिकी)

631 Crops and their production (फसल उत्पादन)

632 Plant injuries, diseases, pests (पौध क्षति, बीमारियाँ, पीड़क जन्तु)

633 Field crops (खेत की फसल)

634 Orchards, fruits, forestry (फलोद्यन, फल, बानिकी)

635 Garden crops (उद्यान फसल)

अब "Harvesting of Peaches" (आड़ू की फसल उगाना) विषय से सम्बन्धित प्रलेख को या तो Harvesting (फसल उगाना) को वरीयता देकर 631.55 के अंतर्गत या Peaches को वरीयता देकर 634.25 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है। किन्तु प्रलेख के विशिष्ट विषय पर विचार करने पर दोनों पक्षों-फसल विशेष एवं फसल उगाना-का संयोजन आवश्यक हो जाता है। 634.25 के अंतर्गत उल्लिखित नियम (Add as instructed under 633-635, अर्थात् 633-635 के अंतर्गत उल्लिखित निर्देश के अनुसार जोड़ें) में यह स्पष्ट रूप से सूचित किया गया है कि 631 के अंतर्गत Harvesting (फसल उगाना) को व्यक्त करने वाले उप-विभाजन 5 को निकाल कर फिर उसे 634.25 के साथ जोड़कर दोनों पक्षों का संयोजन किया जा सकता है। इन दोनों पक्षों के संयोजन के फलस्वरूप Harvesting of Peaches विषय को व्यक्त करने वाली वर्ग संख्या 634.255 प्राप्त हो जाती है। इस प्रकार अनुसूचियों में सब जगह विभिन्न पक्षों को योजक चिह्न के बिना ही सीधा जोड़ने अथवा शून्य (0) योजक चिह्न के साथ जोड़ने के नियमों का उल्लेख है। किन्तु इन पक्षों का उद्धरण क्रम इस पद्धति के द्वारा ही निर्धारित होता है, न कि अनिवार्य रूप से किसी निश्चित सिद्धान्त के आधार पर।

NOTES

यदि किसी स्थिति के लिए कोई नियम उपलब्ध न हो तो, अनुसूचियों में अनेक स्थानों पर निर्धारित नियमों के अतिरिक्त डी डी सी में एक उद्धरण का सुझाव मिलता है। इस सुझाव के अनुसार पक्ष एवं उनका अनुक्रम अथवा पक्षों का उद्धरण क्रमसूत्र का सुझाव मिलता है। इस सुझाव के अनुसार पक्ष एवं उनका अनुक्रम अथवा पक्षों का उद्धरण क्रम निम्नलिखित है :

वस्तुए (Things)

वस्तुओं के प्रकार (Kinds of things)

वस्तुओं के भाग (Parts of things)

सामग्री जिससे वस्तुओं, उनके प्रकारों एवं भागों का निर्माण होता है; वस्तुओं, उनके प्रकारों, भागों सामग्री के गुणधर्म, वस्तुओं, उनके प्रकारों, भागों, सामग्री से सम्बन्ध प्रक्रियाएँ; वस्तुओं, उनके प्रकारों, भागों अथवा सामग्री के विषय में संक्रिया, तथा इस संक्रिया को सम्पन्न करने वाले एजेंट। डी डी सी की सम्पादकीय प्रस्तावना के पृष्ठ 57 (डी डी सी, संस्करण 19, खण्ड 1, प्रस्तावना, सारणी) पर अनुच्छेद 8.55 उद्धरण क्रम के अंतर्गत नियम 4 के रूप में यह सुझाव दिया गया है। इस नियम में यह कहा गया है कि "इस उद्धरण क्रम सूत्र को, जो सामान्यतः तर्कसंगत तथा सहायक सिद्ध होगा, प्रयोग में लाएँ"।

5.3. यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन में पक्ष अनुक्रम

इस इकाई के अनुभाग 7.3.4 में हम यह बता चुके हैं कि "डी डी सी की अपेक्षा यू डी सी में और अधिक अनेक पक्षात्मक विशेषताएँ विद्यमान हैं। यद्यपि, यू डी सी में न तो इसकी प्रस्तावना में न ही इसके वर्गों की अनुसूचियों में कहीं भी किसी भी विशिष्ट उद्धरण क्रम अथवा पक्ष अनुक्रम का उल्लेख किया गया है, तथापि जैक मिल्स (Jack Mills) ने अपनी पुस्तक "गाइड टू यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन" (Guide to Universal Decimal Classification) में जिस उद्धरण क्रमको उपर्युक्त बताया है वह निम्नलिखित है:

वस्तुएँ, प्रकार, भाग (Things, Kinds, Parts)

सामग्री (Materials);

गुणधर्म (Property);

प्रक्रियाएँ (Processes);

संक्रियाएँ (Operations);

एजेंट (Agent)।

सामान्य एवं विशिष्ट सहायकों का अपने-अपने विशिष्ट पक्ष संकेतकों के साथ प्रयोग करके जहाँ कहीं भी आवश्यक हो, पक्ष संश्लेषण की प्रक्रिया को अपनाने का पूर्ण अवसर मिलता है।

विशेष रूप से सम्बन्ध सूचक चिहनों कोलन (:) दीर्घ कोष्ठक [] एवं दोहरे कोलन (::) की सहायता से पक्षों को जोड़ना सरल हो गया है। उदाहरणार्थ, Virus diseases of indoor plants (अंतरंग पौधों की वायरस जन्य बीमारियाँ) विषय में सम्बन्धित प्रलेख का वर्गीकरण करने के लिए अनुसूचियों में (Virus diseases) (वायरस जन्य बीमारियाँ) एवं Indoor Plants (अंतरंग पौधों) के लिए अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग वर्ग संख्याओं अर्थात् 635.91 एवं 632.38 का उल्लेख है। किन्तु इन दोनों वर्ग संख्याओं को सम्बन्धसूचक कोलन (:) की सहायता से एक साथ जोड़कर वर्ग संख्या 635.91:632.38 प्राप्त की जा सकती है। इसके विपरीत 'वायरस जन्य बीमारियाँ' को प्रथम पक्ष एवं 'अंतरंग पौधों' को द्वितीय पक्ष बनाकर यदि कोई पुस्तकालय इस क्रम को वरीयता प्रदान करना चाहे तो, प्रतिलोम क्रम में वर्ग संख्या 632.38:635.91 प्राप्त की जा सकती है किन्तु संयोजन के लिए दोहरा कोलन (::) का उपयोग किया जाता है तो प्रतिलोम क्रम विधि को नहीं अपनाया जा सकता।

NOTES

विभिन्न पक्षों के किसी विशिष्ट वरीय (अधिमान्य) क्रम को सूचित करने के लिए पक्ष संयोजक दीर्घ कोष्ठक [] का उपयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ, Indoor animones (animones एक प्रकार का घर में उगाया जाने वाला पौधा है) को 635.91:582.675.1 वर्ग संख्या प्रदान की जाती है (582.675.1 animones को व्यक्त करता है), किन्तु यदि कोई पुस्तकालय सामान्य शीर्षक Horticulture (उद्यान विज्ञान) के अंतर्गत किसी विशिष्ट पौधे से संबंध प्रत्येक पक्ष को एक साथ एकत्र करना चाहे तो वहाँ पौधा विशेष (यहाँ पर animones) को प्रधान पक्ष बनाकर गौण पक्ष 'Indoor' के साथ उपर्युक्त वर्ग संख्या को 635.91 [582.675.1] के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।

इस सिद्धान्त को पक्ष उद्धरण के लचीलापन (Flexibility in facet citation) के रूप में जाना जाता है। इसे यू डी सी की क्षमता के रूप में स्वीकार किया जाता है, किन्तु यदि यू डी सी का उपयोग करने वाले पुस्तकालय अलग-अलग पक्ष अनुक्रम को प्रयोग में लाना पसंद करें तो, इसे यू डी सी की अवांछनीय विशेषता भी समझा जा सकता है।

विशिष्ट सहायक भी पक्ष संयोजन का अवसर प्रदान करते हैं। यू डी सी में तीन प्रकार के विशिष्ट सहायक हैं, जो हाइफन (-) बिन्दु शून्य (.0) तथा एपोस्ट्रोफि (') पक्ष संकेतकों को प्रयोग में लाते हैं। हाइफन एवं बिन्दु शून्य का किसी निश्चित मूल वर्ग में उस वर्ग के उपयुक्त किसी विशिष्ट पक्ष को प्रवर्तित करने के लिए उपयोग किया जाता है।

| | | |
|----------|-----------|---|
| उदाहरण : | 62-31 | Reciprocating value gear parts |
| | 820-31 | English novels |
| | 621.3.066 | Electrical switch mechanism |
| | 66.066 | Clarification. etc., Chemical Engineering |

वर्तमान में, रसायन शास्त्र एवं इससे मिलते-जुलते विषयों में 'एपोस्ट्रोफि' का उपयोग कुछ भिन्न अभिप्राय से किया जाता है। इस विषयों में इसका उपयोग पदार्थ तत्वों के संश्लेषण को सूचित करने के लिए तथा इसके अलावा चिन्ह के रूप में भी किया जाता है।

| | | |
|----------|-----------|-----------------|
| उदाहरण : | 546.33 | Sodium |
| | 546.13 | Chlorine |
| | 546.33.13 | Sodium Chloride |

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. मूलभूत श्रेणी 'काल' का प्रयोग किस अर्थ में किया जाता है? उदाहरण सहित समझाइये।
4. मूलभूत श्रेणी ऊर्जा को उदाहरण सहित समझाइये।

.....

.....

.....

.....

6. कुछ सामान्य टिप्पणियाँ

पक्ष विश्लेषण एवं पक्ष अनुक्रम से संबंधित उपर्युक्त अध्ययन से हमें यह ज्ञात होता है कि 'कोलन क्लैसिफिकेशन' की अनुसूचियों में पक्ष संरचना का निर्धारण सुनिश्चित सैद्धान्तिक आधार पर किया जाता है। हालांकि यह सैद्धान्तिक आधार आलोचना का विषय बन सकता है (ऐसा बन भी चुका है), तथापि किसी सैद्धान्तिक आधार का विद्वान्मान होना अनिवार्य है, क्योंकि इसके अभाव में वर्गों के व्यवस्थापन के क्रम को

NOTES

त्रुटि रहित नहीं बनाया जा सकेगा। डी डी सी एवं यू डी सी में पक्ष विश्लेषण एवं संश्लेषण का उपयोग करने के लिए तदर्थ नियम बनाये गए हैं, किन्तु इन तदर्थ नियमों के आधार पर वर्गों का सर्वाधिक वांछनीय 'फिलियेटरी' (सह-सम्बन्धात्मक) अनुक्रम नहीं प्राप्त किया जा सकता। अपनी संरचना की कमियों को स्वीकार करते हुए, डी डी सी की नीति यह रही है कि इसकी संरचना में किसी ऐसे मूलभूत परिवर्तनों का समावेश न किया जाए, जिससे संसार भर में कई हजार पुस्तकालयों में इसका उपयोग खतरे में पड़ जाए। तथापि, जहाँ-जहाँ आवश्यक हुआ वहीं पक्ष विश्लेषण के नियमों का प्रावधान करके इस समस्या का सामना किया गया है। यू डी सी में यद्यपि पक्ष विश्लेषण की अधिक सुविधा उपलब्ध है किन्तु डी डी सी की संरचना को अनुकूल बनाने के फलस्वरूप कुछ कमियाँ अवश्य मौजूद हैं, जो यू डी सी के पक्ष विश्लेषण एवं संश्लेषण के सिद्धान्तों के उपयोग के क्षेत्र को सीमित कर देती हैं। आधुनिक काल में इन तीन वर्गीकरण पद्धतियों में पीढ़ियों का अंतराल बढ़ गया है। डी डी सी एवं यू डी सी में ग्रन्थपरक वर्गीकरण की विस्तारशील अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए कोई प्रबल या कठोर परिवर्तन करना सम्भव नहीं है। पुस्तकालय एवं ग्रन्थपरक वर्गीकरण के क्षेत्र में रंगनाथन ने जी सैद्धांतिक आधार प्रदान किया है उससे भविष्य की वर्गीकरण पद्धतियों को लाभ होगा।

7. सार-संक्षेप

इस अध्याय में :

- (i) रंगनाथन की पाँच मूलभूत श्रेणियों का सोदाहरण संक्षिप्त वर्णन किया गया है;
- (ii) पक्ष विश्लेषण एवं पक्ष अनुक्रम की अवधारणाओं एवं तकनीक की परिभाषा दी गई है, तथा पुस्तकालय में प्रलेखों के वर्गीकरण में उनके अनुप्रयोग की व्याख्या की गई है।
- (iii) पक्ष अनुक्रम की अभिधारणाओं एवं सिद्धान्तों को तथा सी सी; डी डी सी एवं यू डी सी में उनके अनुप्रयोग को स्पष्ट किया गया है।

8. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा : इस अभिधारणा (postulate) के अनुसार मूलभूत श्रेणियाँ पाँच और केवल पाँच ही होती हैं—जिन्हें काल (Time), स्थान (Space), ऊर्जा (Energy), पदार्थ (Matter) एवं व्यक्तित्व (Personality) कहा जाता है। इनकी व्याख्या करते हुए रंगनाथन ने इस बात पर बल दिया है कि ये पद एवं इनके द्वारा सूचित विचार पूर्णरूप से सम्बन्धित विषय के सन्दर्भ से जुड़े हुए हैं। संक्षिप्तता की दृष्टि से इन मूलभूत श्रेणियों का आद्याक्षरित नाम PMEST है।

मूल विषयों की पहचान करने के बाद मूल वर्गों से मूल खाने वाले एकल विचारों का विश्लेषण भी, वांछनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए, सुनियोजित एवं तर्कसंगत ढंग से किया जाता है। विभिन्न विषयों की जाँच करने पर यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक विषय के अपने ही विभिन्न पक्ष होते हैं तथा ये सभी पक्ष एक साथ मिलकर उस विषय का सुसंगत विवरण प्रस्तुत करते हैं। उदाहरणार्थ रसायन शास्त्र विषय के निम्नलिखित छः पदों पर विचार कीजिए :

| | | | |
|---------------|--------------|--------------|---------------|
| 1. alcohol | (मद्यसार) | 1. Substance | (पदार्थ) |
| 2. liquid | (द्रव) | 2. State | (अवस्था) |
| 3. volatility | (वाष्पशीलता) | 3. Property | (गुणधर्म) |
| 4. combustion | (दहन) | 4. Reaction | (प्रतिक्रिया) |

5. analysis (विश्लेषण) 5. Operation (प्रक्रिया)
6. buratte (मापन नलिका) 6. Device for operation (प्रक्रिया का उपकरण)

मूलभूत श्रेणियाँ, पक्ष
विश्लेषण एवं पक्ष अनुक्रम

2. मूलभूत श्रेणियाँ पाँच और केवल पाँच ही होती हैं :

| | | |
|------------|---------------|-----|
| व्यक्तित्व | (Personality) | [P] |
| पदार्थ | (Matter) | [M] |
| ऊर्जा | (Energy) | [E] |
| स्थान | (Space) | [S] |
| काल | (Time) | [T] |

3. मूलभूत श्रेणी "काल" की पहचान बहुत आसानी से की जा सकती है। इसका प्रयोग प्रायः उसी अर्थ में किया जाता है, जिस अर्थ में सामान्यतः हम इस शब्द को समझते हैं। सामान्यतः काल एकल सहस्राब्दी, शताब्दी, दशक, वर्ष इत्यादि विचारों को व्यक्त करता है। एक अन्य प्रकार के काल एकल—जैसे, दिन तथा रात; ऋतुएँ—जैसे ग्रीष्म ऋतु; शीत ऋतु; वायुमण्डलीय लक्षणों पर आधारित काल—जैसे, आर्द्र, शुष्क, बरफीला, तूफानी इत्यादि को भी "काल" मूलभूत श्रेणी की अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाता है। काल तत्व को व्यक्त करने वाली आख्याओं के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

1997 में उच्च-चालकता (Superconductivity in 1997)

शीत ऋतु में गेहूँ की बुआई (Winter sowing of wheat)

रात्रि में रेल द्वारा यात्रा (Night journey by trains)

20वीं शताब्दी में प्रौद्योगिकी की प्रगति (Technological advances in the 20th century)

सहस्राब्दी में खगोल-विज्ञान का अध्ययन (Study of astronomy through the millennia)

सी सी. यू डी सी इत्यादि वर्गीकरण पद्धतियों में काल सूचक अनुसूचियों को "काल एकल" (Time Isolates) या "काल-क्रमिक विभाजन" (Chronological Divisions) या "लक्षणपूरक काल एकल" (Featured Time Isolates) के रूप में अलग से सूचीबद्ध किया गया है। इन सामान्य एकलों का अनेक विषयों में प्रयोग होता है।

4. सामान्यतः विभिन्न प्रकार की क्रियाओं को ही ऊर्जा की अभिव्यक्ति माना जाता है। ये क्रियाएँ गतिशील क्रियाओं की सूचक होती हैं जैसे, करते हुए, बदलते हुए, मूल्यांकन करते हुए, निर्धारण करते हुए, पूर्वानुमान करते हुए, विश्लेषण इत्यादि। क्रिया सभी प्रकार की सत्ताओं—जैसे सजीव, जड़, संकल्पनात्मक, बौद्धिक एवं अंतर्बोध्यात्मक के बीच में हो सकती है, तथा उनके द्वारा भी की जा सकती है। "काल" अथवा "स्थान" श्रेणी की अपेक्षा "ऊर्जा" श्रेणी की पहचान करना कुछ अधिक कठिन है। वस्तुतः "ऊर्जा" एकल एवं "पदार्थ-गुणधर्म" (Matter Property) एकल की अभिव्यक्ति के बीच पारस्परिक भिन्नता का निर्णय करते समय मुख्यतः क्रिया से सम्बन्ध विचारों का स्पष्ट पता लगाने में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह अनुभव किया गया है कि "पदार्थ-गुणधर्म" श्रेणी की अभिव्यक्ति लक्षणों (विशेषताओं) के दो वर्गों के अनुसार हो सकती हैं एक तो, वह एकल विचार जो किसी स्थायी (स्थिर) लक्षण को सूचित करता है, अर्थात् क्रिया-सम्बन्ध लक्षण, जिससे कुछ विशेषता सूचक कार्य—सामान्य या विशिष्ट-करने का अथवा किसी सत्ता या तंत्र के आचरण का संकेत मिलता हो।

उदाहरणार्थ, "कार्य", "शरीर विज्ञान" एवं "नियंत्रण"। इस आधार पर "नियंत्रण"; जैसा एकल विचार "प्रबंधन" विषय के एक पक्ष के रूप में पाया जाता है; क्योंकि यह प्रबंधन के किसी एक कार्य

NOTES

NOTES

का द्योतक है। किन्तु दूसरी ओर "नियंत्रण" एकल विचार जो "मानव शरीर की व्याधियों के नियंत्रण" विषय के एक पक्ष के रूप में पाया जाता है, "ऊर्जा" श्रेणी की अभिव्यक्ति माना जाता है। यहाँ "नियंत्रण" किसी प्रधान सत्ता (मूल सत्ता) के गतिशील लक्षण को व्यक्त करने वाले कार्य का सूचक नहीं है। इस प्रकार, यह "पदार्थ" श्रेणी की अभिव्यक्ति का द्योतक नहीं है।

9. मुख्य शब्द

अंतर्वस्तु विश्लेषण (Content Analysis)

: विषय वितरण के आधार पर प्रलेखों में निहित विषय वस्तु का विश्लेषण कर विषय से संबंधित विभिन्न पक्षों की पहचान करना।

उद्धरण क्रम (Citation Order)

: किसी भी विषय के पक्षों का अनुक्रम निश्चित करने वाला क्रम (यह पक्ष अनुक्रम एवं पक्ष संश्लेषण का पर्यायवाची है)।

एकल (Isolate)

: वह एकल विचार जो किसी मूल विषय के साथ मेल खा सकता है।
उदाहरणतः कृषि विज्ञान में चावल का पौधा एक एकल है।

पक्ष (Facet)

: किसी विशेषता का अनुप्रयोग करके प्राप्त किया गया एकल समूह; उदाहरणार्थ रसायन शास्त्र में 'गंधक' पदार्थ पक्ष से संबंधित एक एकल है।

पक्ष विश्लेषण (Facet Analysis)

: प्रलेखों में निहित विषय वस्तु का उससे संबंधित पक्षों में विश्लेषण करना।

पक्ष संकेतक (Facet Indicator)

: दो पक्षों को जोड़ने वाला चिह्न। यह योजक चिह्न के नाम से भी जाना जाता है।

मानक उप-विभाजन (Standard Subdivisions)

: ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन में अंकों की एक सारणी जिसमें बार-बार पुनरावर्ती रूपों या निरूपण विधियों का उल्लेख है तथा जिन्हें किसी भी विषय अथवा विद्या विशेष के साथ प्रयोग में लाया जा सकता है। इन्हें अनुसूचियों में उल्लेखित किसी भी संख्या के साथ आवश्यकतानुसार जोड़ा जा सकता है।

NOTES

मूल विषय (Basic Subject)

: सामान्यतः परंपरागत विषयों को सूचित करता है। कोलन क्लासिफिकेशन में मूल विषय (पक्ष) की अभिधारणा का उल्लेख है जिसके अनुसार मूल विषय, मूल पक्ष, मूल वर्ग सभी पद पर्यायवाची हैं।

मैट्रिक्स (Matrix)

: पंक्तियों एवं स्तंभों के रूप में विचारों का आयताकार व्यवस्थान सारणी 1 में पक्षों को एक पंक्ति में तथा विषयों एवं तत्संबंधी पक्षों को एक स्तंभ के रूप में दिखाया गया है।

वर्गीकरण अनुसूचियाँ (Schedules of Classification)

: मूल वर्गों, उनके पक्षों, एकलों इत्यादि की सूचियाँ जिन्हें प्रतीक चिह्नों का उपयोग करके सुनियोजित ढंग से व्यवस्थित किया गया है।

वर्गीकरण प्रणाली प्रणेता (Schedules of Classification)

: वह व्यक्ति जो विषयों के वर्गीकरण हेतु एक वर्गीकरण प्रणाली का प्रतिपादन करता है।

सहायक (Auxiliary)

: अतिरिक्त पूरक।

सहायक क्रम (Helpful Order)

: विषयों, उनके पक्षों एवं एकलों का तर्क संगत व्यवस्थान जो पुस्तकालयों में निधानियों पर प्रलेखों को व्यवस्थित करने एवं प्रदर्शित करने में सहायक होता है।

10. अभ्यास प्रश्न

1. मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा की विस्तृत व्याख्या कीजिए ?
2. मूलभूत श्रेणी 'पदार्थ' एवं एवं 'कभित्व' की विवेचना कीजिए ?
3. पक्ष विश्लेषण के प्रयोग द्वारा विषय-विश्लेषण किस प्रकार किया जाता है ?
4. कोलन क्लासिफिकेशन में पक्ष-विश्लेषण की क्या उपयोगिता है ? स्पष्ट कीजिए।
5. पक्ष अनुक्रम की अवधारणा की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

11. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Dewey Decimal Classification and Relative Index. (1979). 19th ed. 3 Vol. Albany :

Lake Placid Education Foundation.

Foskett, A.C. (1982). Subject Approach to Information. 4th ed. Clive Bingley :

London, Chapters 2, 5, 6, 17 and 18.

NOTES

- Krishan Kumar (1985). Theory of Classification. New Delhi : Vikas.
- Ranganathan, S.R. (1988). Colon Classification. 7th ed. Edited by M.A. Gopinath. Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science. Chapter CP.
- Ranganathan, S.R. (1965). A Descriptive Account of the Colon Classification. Bombay: Asia Publishing House.
- Ranganathan, S.R. (1962). Elements of Library Classification. 3rd ed. Bombay : Asia Publishing House.

दशा सम्बन्ध एवं सामान्य एकल

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. मूल, यौगिक एवं मिश्रित विषय
4. दशा सम्बन्ध
 - 4.1 दशा सम्बन्धों की जातियाँ
 - 4.2 दशा सम्बन्धों के प्रकार
 - 4.3 वर्गीकरण पद्धतियों में दशा सम्बन्ध
5. सामान्य एकल
 - 5.1 सामान्य एकलों का अर्थ एवं उनकी आवश्यकता
 - 5.2 सामान्य एकलों का इतिहास
 - 5.3 सामान्य एकलों के प्रकार
 - 5.4 कोलन क्लैसिफिकेशन में सामान्य एकल
 - 5.5 ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन में सामान्य एकल
 - 5.6 यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन में सामान्य एकल
6. सार-संक्षेप
7. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
8. मुख्य शब्द
9. अभ्यास-प्रश्न
10. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

पूर्व के अध्यायों में अपने पुस्तकालय वर्गीकरण में अभिधारणा एवं प्रणाली अभिगमों; पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धतियों-अर्थात् कोलन क्लैसिफिकेशन, ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन, एवं यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन के सन्दर्भ में पक्षों के समान्यतः विश्लेषण एवं संश्लेषण के बारे में जानकारी प्राप्त की है। प्रस्तुत अध्याय में हम एक अन्य प्रकार के सम्बन्ध, जिसे दशा सम्बन्ध (Phase Relation) कहते हैं, से आपका परिचय करा रहे हैं। इस प्रकार का सम्बन्ध अंतरविषयी (Inter disciplinary) विषयों में पाया जाता है। यहाँ पर हम दशाओं की विभिन्न जातियों एवं विभिन्न प्रकार की दशाओं, दशा विश्लेषण एवं संश्लेषण के सिद्धान्तों एवं प्रक्रियाओं तथा उपर्युक्त तीन वर्गीकरण पद्धतियों के सन्दर्भ में उनके निरूपण का अध्ययन करेंगे। इसके अतिरिक्त, इस अध्याय में सामान्य एकलों तथा विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों में उनके उपयोग का भी वर्णन किया गया है।

इस अध्याय का अध्ययन करने के बाद आप :

- विषयों में विभिन्न जाति एवं प्रकार के दशा सम्बन्धों की पहचान कर सकेंगे; दशा विश्लेषण एवं संश्लेषण से सम्बन्धित सिद्धान्तों एवं प्रक्रियाओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे; दशा विश्लेषण एवं संश्लेषण की तकनीक का उपयोग कर दशा सम्बन्धों को प्रकट करने वाले प्रलेखों का वर्गीकरण कर सकेंगे; सामान्य एकलों के अभिप्राय को समझ सकेंगे तथा उनकी आवश्यकता का मूल्यांकन कर सकेंगे; तथा विभिन्न प्रकार के सामान्य एकलों की पहचान कर सी सी, डी डी सी एवं यू डी सी में उनके उपयोग के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

2. परिचय

निरंतर विस्तारशील ज्ञान जगत् के क्षेत्र में, विशेष रूप से, गत पचास वर्षों में जो अत्यधिक स्पष्ट विशेषता दृष्टिगोचर हुई है, वह है अंतरविषयी का आविर्भाव। इन नवागत विषयों के परिप्रेक्ष्य में इस प्रकार के प्रलेखों का वर्गीकरण करने तथा उनका संग्रहण एवं उनकी पुनः प्राप्ति के हेतु इन्हें सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करने के लिए, निःसंदेह, नवीनतम तकनीक की आवश्यकता होती है। रंगनाथन ने इन नवीन विषयों की संरचना की पहचान की तथा इनको मिश्रित विषय (Complex Subject) के नाम से जाना जाने लगा। दो विषयों के पारस्परिक सम्बन्ध को प्रदर्शित करने वाला विषय मिश्रित विषय होता है।

इस अध्याय में हम मिश्रित विषयों, जो मूल (Basic) अथवा यौगिक विषयों (Compound Subject) की दो दशाओं को व्यक्त करते हैं, के वर्गीकरण से सम्बन्धित सैद्धांतिक तत्त्वों एवं तकनीकों का अध्ययन करेंगे। पक्ष विश्लेषण एवं संश्लेषण के सदृश इस तकनीक को दशा विश्लेषण एवं संश्लेषण (Phase Analysis and Synthesis) के नाम से जाना जाता है।

हम कालेन क्लैसिफिकेशन के अनुसार इस प्रकार के प्रलेखों का वर्गीकरण करने के लिए विभिन्न जाति एवं प्रकार के दशा सम्बन्धों एवं सिद्धान्तों तथा प्रक्रियाओं का अध्ययन करेंगे। इसके साथ ही ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन, एवं यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन के अनुसार इसी प्रकार के प्रलेखों का वर्गीकरण करने के लिए निर्धारित नियमों तथा प्रक्रियाओं का भी अध्ययन करेंगे।

सर्वप्रथम हम मूल, यौगिक एक मिश्रित विषयों की पारस्परिक भिन्नता को स्पष्ट करेंगे; इसके बाद हम उस विधि का अध्ययन करेंगे जिसके अनुसार विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों में इस प्रकार के विषयों का निरूपण किया गया है।

इसके अतिरिक्त इस अध्याय में, हम विभिन्न प्रकार के सामान्य एकलों की आवश्यकता, उनके विकास एवं सी सी, डी डी सी एवं यू डी सी में उनके प्रयोग पर विशेष प्रकाश डालेंगे।

3. मूल, यौगिक एवं मिश्रित विषय

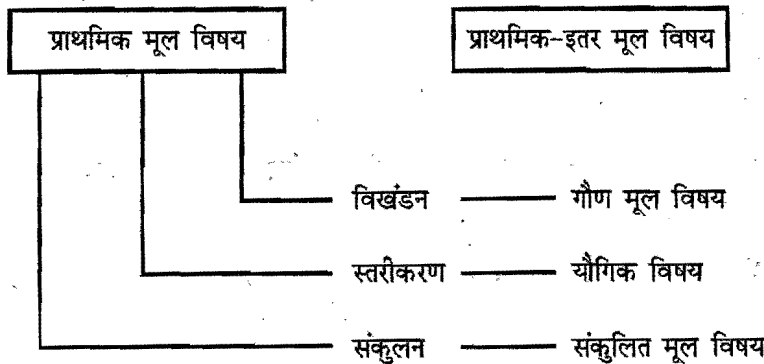
दशा विश्लेषण की धारणा की स्पष्ट जानकारी प्राप्त करने के लिए, सर्वप्रथम मूल विषय (BS: Basic Subject), यौगिक विषय (CdS: Compund Subject) एवं मिश्रित विषय (CxS: Complex Subject) की परिभाषाओं से परिचित होना लाभदायक होगा। मूल विषय वह विषय है :

- (क) जिसकी परिगणना मूल विषयों की अनुसूची में की गई है;
- (ख) जिसे किसी भी विद्यमान मूल विषय के यौगिक विषय के रूप में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता; अर्थात् वह विषय जिसके साथ कोई भी एकल विचार, उसके घटक के रूप में जुड़ा हुआ नहीं है;
- (ग) जो डॉ. रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक विधि की कुंडली (Spiral of Scientific Method) का एक पूरा चक्कर पर विकसित हुआ है। इसके अतिरिक्त, ये विषय निर्माण की विभिन्न विधियों को भी प्रदर्शित करते हैं (इस पाठ्यक्रम की इकाई 5 देखें);
- (घ) जिसके लिए विशिष्ट व्यक्तित्व, पदार्थ एवं ऊर्जा एकलों की अनुसूचियों का प्रावधान होना आवश्यक है;
- (ङ) जिसमें कुछ विशेषज्ञता विद्यमान है—जैसे शैक्षिक एवं-अथवा व्यावसायिक। इस विशेषज्ञता के सूचक निर्मांकित हैं :

इनसे सम्बन्धित व्यावसायिक संस्थाओं का विद्यमान होना,
इन पर कम-से-कम स्नातक स्तर तक शिक्षा दी जा रही हो,
इन पर सामयिक प्रकाशन प्रकाशित हो रहे हों,
इन से सम्बन्धित पूर्ण पुस्तकें उपलब्ध हों,

उदाहरणार्थ : गणित, अर्थशास्त्र, विधि।

मूल विषय अनेक प्रकार के होते हैं। मूल विषयों के निर्माण की विधियों एवं मूल विषय के प्रकारों के पारस्परिक सम्बन्ध का संक्षिप्त उल्लेख निम्नलिखित है :



सभी अन्य प्रकार के मूल विषयों के लिए प्राथमिक मूल विषय एक प्रमुख ढाँचा प्रस्तुत करते हैं।

यौगिक विषय—वह विषय जिसमें किसी एक मूल विषय के साथ एक या एक से अधिक एकल विचार घटक के रूप में जुड़े रहते हैं।

उदाहरणार्थ : Chemistry of alcohol—chemistry (मूल विषय) (BS), alcohol (एकल विचार) (1s1)।

Morphology of flowering plants—botany (मूल विषय) (BS), flowering plants (एकल विचार) (1s1), morphology (एकल विचार) (1s1)।

NOTES

NOTES

मिश्रित विषय : वह विषय, जिसकी रचना दो या दो से अधिक विषयों, मूल अथवा यौगिक, के संयोजन से होती है।

उदाहरण : General relation between economics and sociology

Economics for statisticians

Economics influenced by political factors

4. दशा सम्बन्ध

दशा सम्बन्ध का अर्थ है दो अथवा दो से अधिक—

(क) विषयों (मूल अथवा यौगिक), तथा

(ख) एकल विचारों (एक ही पक्ष से सम्बन्धित अथवा एक ही पंक्ति से सम्बन्धित एकल विचार) को एक साथ एकत्र करना।

इस प्रकार का संयोजन, समुच्चय के घटकों के बीच किसी एक या अन्य यथासम्भव सम्बन्धों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप मिश्रित विषय, मिश्रित एकल विचार अथवा मिश्रित पंक्ति एकल विचार (जैसी भी स्थिति हो) की रचना होती है। इस समुच्चय का प्रत्येक घटक क्रमशः एक "दशा" कहलाता है। इस समुच्चय में उनके (घटकों के) अनुक्रम के आधार पर उन्हें "दशा 1" एवं "दशा 2" के नाम से जाना जाता है।

4. 1. दशा सम्बन्धों की जातियाँ

दशा सम्बन्धों की तीन जातियाँ होती हैं। यह सम्बन्ध :

- (i) दो या दो से अधिक विषयों के बीच हो सकता है, इसे अंतर-विषय दशा सम्बन्ध (Inter-Subject Phase Relation) कहते हैं, अथवा
- (ii) पक्ष एकलों की उसी अनुसूची के अंतर्गत दो या दो से अधिक एकलों के बीच हो सकता है; इसे अंतःपक्ष दशा सम्बन्ध (Intra-Facet Phase Relation) कहते हैं, अथवा
- (iii) पंक्ति एकलों में से दो या दो से अधिक एकलों के बीच हो सकता है, इसे अंतःपंक्ति दशा सम्बन्ध (Intra-Array Phase Relation) कहते हैं।

अंतर-विषय दशा सम्बन्ध

जब दो विषयों के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध होता है तो वह अंतर-विषय दशा सम्बन्ध कहलाता है। निम्न आख्याओं पर विचार करें :

अर्थशास्त्रियों के लिए समाजशास्त्र (Sociology for economists)

पुस्तकालय प्रबंधन में सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical analysis in library management)

चावल की खेती के संवर्धन के लिए मौसम पूर्वानुमान (Weather forecasting for the cultivation of the rice crop)

प्रथम उदाहरण में दो मुख्य वर्गों : समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र को सम्मिलित किया गया है।

इस शीर्षक में विशिष्ट विषय 'समाजशास्त्र' है, जिसे 'अर्थशास्त्रियों' की विशेष आवश्यकताओं के अनुकूल बनाया गया है। द्वितीय उदाहरण में पुस्तकालयों के प्रबंधन में सांख्यिकीय विश्लेषण का प्रयोग एक उपकरण विषय के रूप में किया गया है। यहाँ 'पुस्तकालय विज्ञान' एवं 'सांख्यिकी' दो विषय सम्मिलित किए गए हैं। तीसरे उदाहरण में दो यौगिक विषय 'मौसम पूर्वानुमान' मौसम विज्ञान से तथा 'चावल की खेती' कृषि विज्ञान से सम्मिलित किए गए हैं।

अंत : पक्ष दशा सम्बन्ध

दशा सम्बन्ध एवं
सामान्य एकल

अंतःपक्ष दशा सम्बन्ध के अंतर्गत एक ही पक्ष के दो एकल विचारों का पारस्परिक सम्बन्ध व्यक्त होता है।
और इस प्रकार एक मिश्रित विषय की रचना हो जाती है। उदाहरणार्थ :

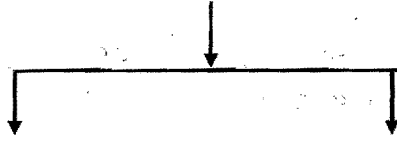
बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म का तुलनात्मक अध्ययन (Comparative study of Buddhism and Jainism)

लोकतंत्र एवं कुलीन तंत्र में अंतर (Difference between democracy and oligarchy)

ग्रामीण जनता पर अभिजात वर्ग का प्रभाव (Influence of aristocracy on rural folks)

प्रथम उदाहरण में धर्म पक्ष से सम्बन्धित दो धार्मिक विश्वासों का तुलनात्मक अध्ययन है। दूसरे उदाहरण में राजनीति शास्त्र के अंतर्गत 'राज्य के प्रकार' नामक पक्ष के दो एकल विचारों की पारस्परिक भिन्नता का अध्ययन किया गया है। तीसरे उदाहरण में, ग्रामीण जनता पर अभिजात वर्ग के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। ये दोनों एकल समाज शास्त्र के अंतर्गत 'सामाजिक समूह' नामक एक ही पक्ष से सम्बन्ध रखते हैं। निम्नलिखित रेखाचित्र (डायग्राम) में अंतःपक्ष दशा सम्बन्ध को प्रदर्शित किया गया है। तारांकन पारस्परिक सम्बन्धों को सूचित करता है।

धर्म (Religion)



पक्ष 1 (Fact 1)

धर्म (Religion)

वैदिक (Vedic)

हिन्दु धर्म (Hinduism)

जैन धर्म (Jainism)

बौद्ध धर्म (Buddhism)

इत्यादि (ctc.)

पक्ष 2 (Facet 2)

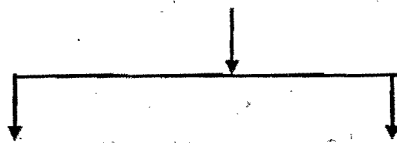
गुणधर्म (Property)

पुराण शास्त्र (Mythology)

धर्म विज्ञान (Theology)

धार्मिक रीति-प्रथाएँ (Religious Practices)

राजनीति शास्त्र (Political Science)



पक्ष 1 (Fact 1)

सरकार का स्वरूप

(Form of government)

राजतंत्र (Monarchy)

अभिजात तंत्र (Aristocracy)

कुलीन तंत्र (Oligarchy)

लोकतंत्र (Democracy)

इत्यादि (ctc.)

पक्ष 2 (Facet 2)

गुणधर्म (Property)

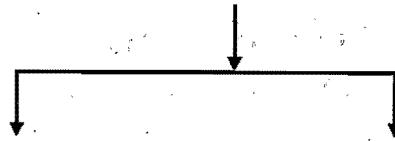
उद्भव (Origin)

स्वरूप (Nature)

कार्य (Function)

NOTES

NOTES



पक्ष 1 (Ract 1)

पक्ष 2 (Faquet 2)

सामाजिक वर्ग (Social Group)

गतिविधियाँ (Activities)

जनसंख्या समूह के अनुसार

(by population)

ग्रामीण (Rural)

नगरीय (Urban)

शहरी (City)

व्यवसाय के अनुसार (By occupation)

तकनीकी (Technical)

प्रबंधकीय (Managerial)

सामाजिक स्थिति के अनुसार (by social state)

अभिजात वर्ग (Aristocracy)

किसी 'दो दशा' युक्त विषय में वह संघटक जो विवरण के मुख्य केन्द्र बिन्दु का परिचायक है, उसका 'प्राथमिक दशा' (Primary Phase) के रूप में उल्लेख किया जाता है, दूसरा संघटक जो प्रथम दशा को स्पष्ट करता है वह 'गौण दशा' (Secondary Phase) का परिचायक है। इस उप-अनुभाग में उल्लिखित उदाहरणों में प्रथम एवं द्वितीय दशा को आसानी से पहचाना जा सकता है।

अंतःपंक्ति दशा सम्बन्ध

अंतःपंक्ति दशा सम्बन्ध के अंतर्गत किसी पक्ष की एक ही पंक्ति के दो एकल विचार आपस में सम्बन्धित होते हैं। इस प्रकार के जटिल विषयों के उदाहरण निम्नलिखित हैं :

- (1) ग्रामीण एवं नगरीय जीवन की तुलना (Comparision of rural and urban life)
- (2) डकैती एवं चोरी से सम्बन्धित कानूनों में अंतर (Difference between laws relating to dacoity and theft)
- (3) मनोविज्ञान में राजनीतिक रूप से अक्षम एवं सामाजिक रूप से अक्षम व्यक्तियों का पारस्परिक सम्बन्ध (The relationship between politically handicapped and socially handicapped persons in psychology)

उपर्युक्त उदाहरणों में एक निश्चित पक्ष की एक ही पंक्ति के एकलों का पारस्परिक सम्बन्ध व्यक्त किया गया। प्रथम उदाहरण में ग्रामीण एवं नगरीय एकल विचार समाज शास्त्र के अंतर्गत सामाजिक समूह पक्ष की एक ही पंक्ति से सम्बन्धित है। दूसरे उदाहरण में, डकैती एवं चोरी एकल विचार विधिपरक सत्ता पक्ष की एक ही पंक्ति से सम्बन्धित है। तीसरे पक्ष की एक ही पंक्ति से सम्बन्धित है।

4. 2. दशा सम्बन्धों के प्रकार

कोलन क्लैसिफिकेशन में छः प्रकार के दशा सम्बन्धों की पहचान की गई है। इनका, सम्बन्धित संकेतक चिह्न सहित, विवरण निम्नलिखित है :

NOTES

- सामान्य (General)
- झुकाव (Bias)
- तुलना (Comparison)
- भिन्नता (Difference)
- उपकरण (Tool)
- प्रभाव (Influence)

संकेतक चिह्नों की सरणी निम्नलिखित है :

| अंतःपंक्ति (Intra-array) | अंतःपक्ष (Intra-facet) | अंतर-विषय (Inter-Subject) | दशा सम्बन्ध का प्रकार (Kind of Phase Relation) |
|-----------------------------|---------------------------|------------------------------|---|
| t | j | a | सामान्य (General) |
| u | k | b | झुकाव (Bias) |
| v | m | c | तुलना (Comparison) |
| w | n | d | भिन्नता (Difference) |
| x | p | e | उपकरण (Tool) |
| y | r | g | प्रभाव (Influence) |

निम्नलिखित अनुच्छेदों में उपर्युक्त सम्बन्धों का उदाहरण सहित विवेचन किया गया है।

सामान्य दशा :

सामान्य दशा सम्बन्ध प्राथमिक एवं गौण दशाओं के मध्य प्रायः पूर्ण सम्बन्ध को व्यक्त करता है। अनुभाग 8.3.1 के अंतर्गत उल्लिखित किसी भी जाति के दशा सम्बन्ध को इस श्रेणी में शामिल किया जा सकता है— अर्थात्, अंतर-विषय, अंतःपक्ष या अंतःपंक्ति।

किसी भी वर्गीकरण पद्धति की वर्गीकरण अनुसूचियों में उल्लिखित वर्गों के अनुक्रम के आधार पर दो दशाओं का अनुक्रम निर्धारित किया जाता है।

निम्नलिखित उदाहरणों में कोलन क्लैसिफिकेशन के अनुसार दो दशाओं का अनुक्रम प्रदर्शित किया गया है :

(क) Relation between Religion and Philosophy (अंतर-विषय) : Religion, Philosophy (सी सी में अनुक्रम) Q&aR

(ख) Relation between Anatomy and Physiology (अंतःपक्ष) : सी सी के अनुसार Anatomy का स्थान Physiology से पूर्व होगा। अतः इन दोनों दशाओं का अनुक्रम निम्नलिखित होगा :
Medicine, Anatomy, Physiology L;2&j3

(ग) Relation between Audio and Visual Learning in Education (अंतःपंक्ति)

यहाँ पर सी सी के अनुसार Audio का स्थान Visual से पूर्व होगा। अतः दोनों दशाओं का अनुक्रम इस प्रकार होगा—Education, Learning, Audio, Visual T; 416 & t 7

नोट : इस उदाहरण में दोनों एकल एक ही पंक्ति से सम्बन्धित हैं, अतः यह अंतःपंक्ति सम्बन्ध कहलाता है।

NOTES

झुकाव दशा

दो विषयों के मध्य झुकावपरक सम्बन्ध यह सूचित करता है कि एक विषय (दशा 1) के निरूपण का झुकाव दूसरी दशा अर्थात् विषय विशेषज्ञ (दशा 2) की ओर है। इसका अर्थ यह है कि किसी एक विषय का प्रतिपादन, विशेष रूप से, इस प्रकार से किया जाता है कि उसमें शामिल किए गए प्रकरण, उनका व्यवस्थापन; उनके उदाहरणों का चुनाव विषय विशेषज्ञों की आवश्यकता के अनुरूप सिद्ध हों। यहाँ प्रथम दशा को Biased phase तथा द्वितीय दशा को (Biasing phase कहते हैं।

स्पष्टतया, इन दोनों दशाओं के अनुक्रम में प्रतिपादित विषय (दशा 1) को प्रथम स्थान पर तथा विशेषज्ञ (दशा 2) जिनके लिए उक्त कृति की रचना की गई है, को दूसरे स्थान पर रखा जाता है।

यह सम्भव है कि सांख्यिकी की कुछ पुस्तकें इंजीनियरों, जीव विज्ञानियों, पुस्तकालयाध्यक्षों इत्यादि के उपयोग के लिए लिखी गई हों। चूँकि इस प्रकार की पुस्तकों को सांख्यिकी विषय की सामान्य पुस्तकों से भिन्न प्रदर्शित करना आवश्यक है, अतः इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर इस युक्ति का प्रतिपादन किया गया है। विशिष्ट वर्ग के लोगों के लिए लिखी हुई सांख्यिकी की पुस्तकों को निम्नलिखित तर्कसंगत अनुक्रम में व्यवस्थित किया जा सकता है :

| | |
|---------------------------|-------|
| Statistics for Librarians | BT&b2 |
| Statistics for Engineers | BT&bD |
| Statistics for Biologists | BT&bG |

ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के 18वें संस्करण में सर्वप्रथम दशा सम्बन्ध के प्रयोग का प्रावधान किया गया था। यह प्रयोग मानक उपविभाजन—024 के माध्यम से किया जाता है। डी डी सी के अनुसार उपर्युक्त विषयों की वर्ग संख्याएँ निम्नांकित होंगी :

| | |
|---------------------------|------------|
| Statistic for Librarians | 310.240 92 |
| Statistics for Engineers | 310.246 2 |
| Statistics for Biologists | 310.245 74 |

यू डी सी में दशा सम्बन्ध प्रदर्शित करने के लिए योजक चिह्न कोलन (:) का प्रयोग किया जाता है। यू डी सी में दशा सम्बन्धों के घटकों के स्तरों में कोई अंतर नहीं समझा जाता है। सभी जाति के दशा सम्बन्धों के लिए केवल एक ही योजक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। उपर्युक्त विषयों की वर्ग संख्याएँ निम्नांकित होंगी :

| | |
|---------------------------|----------|
| Statistics for Librarians | 31 : 02 |
| Statistics for Engineers | 31 : 62 |
| Statistics for Biologists | 31 : 574 |

झुकाव निर्दिष्ट दशा (Biasing Phase) से सम्बन्धित तीनों विषयों का अनुक्रम सी सी के अनुरूप है। अंतःपक्ष एवं अंतःपक्षित सम्बन्धों के उदाहरण देने के लिए कोई साहित्यिक आधार या साहित्य समादेश दिखाई नहीं देता।

तुलनात्मक दशा

इस प्रकार के दशा सम्बन्ध के अंतर्गत दो विषयों की तुलना की जाती है। निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार करें :

Comparison between plants and animals (अंतर-विषय)

Botany-Zoology (सी सी में दशा सम्बन्ध एवं सामान्य एकल अनुक्रम) : I&cK

Comparison between plant morphology and physiology (अंतःपक्ष)

I;2&m3

Comparative psychology of man and woman (अंतःपंक्ति)

Psychology, Man, Woman (सी सी में अनुक्रम) : S,55&v6

भेदपरक दशा

इस प्रकार के दशा सम्बन्ध के अंतर्गत ऐसे प्रलेखों को शामिल किया जाता है जहाँ दो विषयों का अंतर या भेद स्पष्ट किया गया है।

उदाहरणार्थ :

Difference between Political Science and History (अंतर-विषय)

History-Political Science (सी सी अनुक्रम) : V&dW

Psychological difference between sick and abnormal persons (अंतःपक्ष)

Psychology; sick] abnormal (सी सी में अनुक्रम) S,4&m6

Difference between meditation and worship (अंतःपंक्ति)

Religion, Worhsip, Meditation (सी सी में अनुक्रम) : Q;413&w4

उपकरण दशा

इस प्रकार के दशा सम्बन्ध के अंतर्गत ऐसे प्रलेखों को शामिल किया जाता है, जहाँ किसी एक विषय का किसी दूसरे विषय का प्रतिपादन करने के लिए उपकरण के रूप में उपयोग किया जाता है।

उदाहरणार्थ :

Literature Through Art : A New Approach to French Literature (अंतर-विषय)

O,122&eN

Classification as a tool to study circulation service (अंतःपक्ष)

2;8&p5

Rural sociology as a tool to study urban sociology (अंतःपंक्ति)

Y,342&x1

इस प्रकार के दशा सम्बन्ध को, ऐसे सम्बन्ध प्रदर्शित करने वाले प्रलेखों के वर्गीकरण के लिए दशा सम्बन्धों की श्रेणी में शामिल किया गया है। तथापि, इस युक्ति के सभी निहितार्थों का मूल्यांकन करने के लिए और अधिक खोज की आवश्यकता है। इसे 'एक्सपोजीशन फेज' (Exposition Phase) (प्रदर्शन दशा) के नाम से भी जाना जाता है।

प्रभाव दशा

इस प्रकार के दशा सम्बन्ध के अंतर्गत ऐसे प्रलेखों को शामिल किया जाता है जिनमें किसी एक विषय का प्रभाव किसी दूसरे विषय पर प्रदर्शित किया गया है। निम्नलिखित उदाहरणों को देखिए :

NOTES

NOTES

उपर्युक्त इन तीन उदाहरणों में दो दशाओं का अनुक्रम निम्नलिखित है :

Education – Nourishment

Ruling Classes – intellectuals

Indirect tax – Direct tax

जिस विषय पर प्रभाव पड़ता है उसे प्रथम दशा का स्थान दिया जाता है तथा जो विषय प्रभाव डालता है उसे द्वितीय दशा का।

अब तक छः प्रकार के दशा सम्बन्धों की पहचान की जा चुकी है। तथापि कुछ और सम्बन्धों का सामना करने की नितांत सम्भावना विद्यमान है। इस सम्बन्ध में ध्यान देने योग्य बिन्दु यह है कि कोलन क्लैसिफिकेशन में एक विधि पहले से ही मौजूद है, जो भविष्य के मिश्रित विषयों का निपटारा करने के कार्य में सहायक हो सकती है।

इस प्रकार की विस्तृत विधियाँ केवल सी सी में ही उपलब्ध हैं।

यू डी सी एवं डी डी सी में विभिन्न जाति के दशा सम्बन्धों का अंतर स्पष्ट करने की कोई व्यवस्था नहीं है। यद्यपि यू डी सी में सभी प्रकार के दशा सम्बन्धों को व्यक्त करने के लिए केवल एक ही योजक चिह्न का प्रावधान किया गया है, तथापि डी डी सी में कुछ अंतःपक्ष दशा सम्बन्धों की पहचान की जा सकती है, जैसे

Foreign Relations between India and UK = 32.7540 41

यहाँ पर भारत (54) एवं यू के (41) उसी एक पक्ष से सम्बन्ध रखते हैं। अतः इसे अंतःपक्ष सम्बन्ध की संज्ञा दी जा सकती है। इस इकाई में बाद में, हम तीनों वर्गीकरण पद्धतियों में दशा सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे।

4. 3. वर्गीकरण पद्धतियों में दशा सम्बन्ध

इस इकाई के विषय-प्रवेश में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि अंतरविषयी विषयों को, जिनकी गत अनेक दशकों में लगातार वृद्धि होती रही है, समायोजित करने के लिए दशा विश्लेषण एवं संश्लेषण की विधि को विकसित किया गया है। ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन में मिश्रित विषयों का वर्गीकरण करने के लिए कुछ नियमों एवं अनुदेशक दिशा निर्देशों की व्यवस्था की गई है। यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन में मिश्रित विषयों का वर्गीकरण करने के लिए सीमित प्रावधान किए गए हैं; किन्तु, तीनों वर्गीकरण पद्धतियों में से, जिनसे इस पाठ्यक्रम में हमारा सम्बन्ध है, केवल कोलन क्लैसिफिकेशन में ही वर्गीकरण के इस क्षेत्र का पूर्ण निरूपण किया गया है।

कोलन क्लैसिफिकेशन

कोलन क्लैसिफिकेशन में दशा सम्बन्धों की स्पष्ट रूप से पहचान की गई है तथा इन्हें जातियों एवं प्रकारों के अनुसा श्रेणीबद्ध किया गया है। इनका वर्णन पूर्व में किया जा चुका है। इस पद्धति में मिश्रित विषयों का वर्गीकरण करने के लिए स्पष्ट नियमों की व्यवस्था की गई है। जिस प्रकार बहुपक्षीय विषयों के वर्गीकरण के लिए पक्ष विश्लेषण ने तक तकसंगत एवं सहायक ढाँचा प्रदान किया है, उसी प्रकार दशा विश्लेषण ने अंतरविषयी विषयों का वर्गीकरण करने के लिए इससे मिलता-जुलता ढाँचा प्रदान किया है। ये विधियाँ

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। इन विधियों का पाठकों की आवश्यकताओं के अनुकूल, पुस्तकालय की निधानियों पर प्रलेखों का एवं प्रसूचियों तथा ग्रन्थसूचियों में प्रविष्टियों का सहायक एवं उपयोगी व्यवस्थापन करने के लिए उपयोग किया जाता है। निम्नलिखित आख्याओं में मिश्रित विषयों के उदाहरण दिए गए हैं। इन आख्याओं में दशा सम्बन्धों की विभिन्न जातियों एवं प्रकारों को सम्बन्धित वर्ग संख्या के साथ प्रदर्शित किया गया है :

NOTES

| अंतर-विषय | सम्बन्ध के प्रकार | वर्ग संख्या |
|---|-------------------|-------------|
| Relation between religion and philosophy | (सामान्य) | Q&aR |
| Statistics for engineers | (झुकाव) | BT&bD |
| Comparison between plants and animals | (तुलना) | I&cK |
| Difference between political science and history | (भेदपरक) | V&dW |
| Literature through art; a new approach to French Literature | (उपकरण) | O,122&eN |
| Influence of nourishment on education | (प्रभाव) | T&gL;573 |
| अंतःपक्ष | | |
| Relations between anatomy and physiology | (सामान्य) | L; 2&j3 |
| Comparison between morphology and physiology of plants | (तुलना) | I;2&m3 |
| Psychological difference between sick and abnormal persons | (भूदपरक) | S,4&n6 |
| Indian music through painting | (उपकरण) | NR-(44)&pN6 |
| Influence of intellectuals on ruling classes | (प्रभाव) | Y,417&r53 |
| अंतःपंक्ति | | |
| Relation between education of blind and dumb | (सामान्य) | T,522&t5 |
| Comparison between psychology of man and woman | (तुलना) | S,55&v6 |
| Difference between meditation and worship | (भेदपरक) | Q;413&w4 |
| Rural sociology as a tool to study urban sociology | (उपकरण) | Y,342&x1 |
| Influence of direct tax on indirect tax | (प्रभाव) | X72,01&x2 |

उपर्युक्त वर्ग संख्याओं का निर्माण कोलन क्लैसिफिकेशन के 7वें संस्करण के अनुसार किया गया है। कोलन क्लैसिफिकेशन के 7वें संस्करण में ऐम्परसैंड (&) योजक चिह्न का प्रयोग दशा सम्बन्ध के लिए किया गया है।

ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन

ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन एक परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति है। अतः इसमें दशा विश्लेषण एवं संश्लेषण का सुस्पष्ट प्रयोग करने के बहुत सीमित प्रावधान हैं। तथापि, इस प्रकार के विषयों के वर्गीकरण के लिए उल्लिखित प्रावधानों के आधार पर ही यह ज्ञात होता है कि इस वर्गीकरण पद्धति में भी मिश्रित विषयों को स्वीकार किया गया है। ये प्रावधान निम्नलिखित हैं :

इसकी अनुसूचियों में मिश्रित विषयों का उल्लेख :

उदाहरण : 261.55 सामने विज्ञान (Science) एवं धर्म (Religion) के उल्लेख।

NOTES

झुकाव सम्बन्ध प्रदर्शित करने के लिए मानक उपविभाजन का प्रयोग :

उदाहरण : मानक उपविभाजन-024 "विशेष प्रकार के पाठकों के लिए ग्रन्थ" एक प्रावधान है।

Mathematics for Engineers : 510.2462

510 Mathematics (गणित)

924 Works for specific user (विशेष प्रकार के पाठकों के लिए ग्रन्थ)

62 सारणी 7 से (Persons occupied with engineering and allied operations and manufacturing) (अभियांत्रिकी एवं सम्बन्धित क्रियाओं एवं निर्माण कार्य में संलग्न व्यक्ति)

अनुसूची में कुछ स्थानों पर दशा विश्लेषण एवं संश्लेषण के लिए उल्लिखित नियम :

उदाहरण : Foreign relations between India and China

327.540 51

327 Foreign relations (विदेश सम्बन्ध)

54 India (भौगोलिक सारणी से)

0 योजक चिह्न

51 China (भौगोलिक सारणी से)

इस उदाहरण को 'अंतःपक्ष दशा सम्बन्ध' का द्योतक माना जा सकता है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि डी डी सी के ये प्रावधान मिश्रित विषयों के वर्गीकरण के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन

यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन में सभी जातियों एवं प्रकारों के दशा सम्बन्धों को व्यक्त करने के लिए सम्बन्ध वाचक चिह्न कोलन (:) का प्रयोग किया जाता है। इसी चिह्न का प्रयोग पक्ष सम्बन्ध व्यक्त करने के लिए भी किया जाता है। निम्नलिखित उदाहरणों में इन बिन्दुओं को स्पष्ट किया गया है :

| | |
|-----------------|--|
| 2:5 | Religion and Science (अंतर-विषय-सामान्य दशा सम्बन्ध) |
| 51:62 | Mathematics for Engineers (अंतर-विषय-झुकाव दशा सम्बन्ध) |
| 22/28:294.3 | Comparison between Christianity and Buddhism (अंतःपक्ष-तुलना दशा सम्बन्ध) |
| 595.141:591.142 | Difference between simple marine worm and earth worms (अंतःपक्ष-भिन्नता दशा सम्बन्ध) |
| 7:8 | Influence of Literature on Art (अंतर-विषय-प्रभाव दशा सम्बन्ध) |
| 8:7 | Literature through art, a new approach (अंत-विषय-उपकरण दशा सम्बन्ध) |

पक्ष सम्बन्ध व्यक्त करने के लिए कोलन (:) के प्रयोग के उदाहरण :

| | |
|----------------|---------------------------------|
| 63.91.632.38 | Virus diseases of indoor plants |
| 669.14:621.791 | Welding on steel |
| 371.212:373.4 | Admission to grammar schools |
| 624.21:6251 | Railway bridges |

पक्ष सम्बन्ध व्यक्त करने वाली वर्ग संख्या के घटकों तथा सम्बन्धों में दशाओं का अनुक्रम प्रतिवर्ती होता है। यू डी सी में अपनाये गए 'लचीलापन के सिद्धान्त' के अनुसार ऐसा किया जाता है।

सी सी, डी डी सी, एवं यू डी सी की तुलना

दशा सम्बन्ध एवं
सामान्य एकल

डी डी सी, यू डी सी एवं सी सी के अनुसार दशा सम्बन्धों को सम्बन्धित वर्ग संख्याओं के साथ निम्नलिखित उदाहरणों में स्पष्ट किया गया है। इन उदाहरणों से आपको यह समझने में सहायता मिलेगी कि सी सी में प्रिश्नित विषयों का वर्गीकरण किस प्रकार से किया जाता है :

NOTES

| विषय का नाम | डी डी सी | यू डी सी | सी सी |
|---|-------------------------|-------------|------------|
| अंतर-विषय दशा सम्बन्धों के उदाहरण | | | |
| Relation between philosophy and religion | 100 or ? 200 | 1:2 | Q&aR |
| Psychology for teachers | 150.088379 | 159.9:371.1 | S&bT |
| Comparison between philosophy and religion | 100 or ? 200 | 1:2 | Q&eR |
| Difference between philosophy and religion | 100 or ? 200 | 1:2 | Q&dR |
| Influence of religion on philosophy | 100or ? 200 | 1:2 | R&gQ |
| अंतःपक्ष दशा सम्बन्धों के उदाहरण | | | |
| Relation between Primary and Secondary education | 372 or ? 373 | 375:373 | T,15&j16 |
| Epistemology for metaphysics | 121.08811 | 11:165 | R2&k3 |
| Comparative study of epistemology and metaphysics | 110 or ? 121 | 11:165 | R2&m3 |
| Difference between epistemology and metaphysics | 110 or? 121 | 11:165 | R2&n3 |
| Influence of Logic on Ethics | 170 or? 160 | 17:16 | R4&rl |
| अंतः पंक्ति दशा संबंधी के उदाहरण | | | |
| Relatioin between import and export duty | 336.264 or? 336.265 | 339.543.3 | X72,951&t5 |
| Import duty biased towards export duty | 336.264 or? 336.265 | 339.543.3 | X72,951&u5 |
| Comparative study of spring and autumn seasons | 551.6? | 551.583? | U2,761&v3 |
| Difference between undergraduate and postgraduate education | 378.1553 or? | 378 ? | T,181&w2 |
| Influence of wind on cyclones | 551.552 or ? 551.518 | 551.55? | U2,736&y3 |

उपर्युक्त सारणी में उल्लिखित वर्ग संख्याओं के आधार पर यह स्पष्ट चित्र उभर कर आता है कि सी सी में प्रत्येक जाति के अंतरविषयी को सह-विस्तृत वर्ग संख्या प्रदान की जा सकती है। यू डी सी में क्योंकि सभी

NOTES

प्रकार के सम्बन्धों को प्रदर्शित करने के लिए केवल एक ही योजक चिह्न का प्रयोग किया जाता है, अतः इस पद्धति में विभिन्न जाति के सम्बन्धों की भिन्नता की पहचान नहीं की जा सकती है। डी डी सी में इस जाति के सम्बन्धों के लिए अभी तक स्पष्ट प्रावधान नहीं किया गया है। फिलहाल, सारणी में उल्लिखित किसी भी वर्ग संख्या का उपयोग किया जा सकता है।

बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन

मिल्स के अनुसार बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन में भी "दशा" की अवधारणा को मान्यता दी गई है, तथा दशा योजक के रूप में (यू डी सी के कोलन के तुल्य) सामान्यतः हाइफन (-) का प्रयोग किया जाता है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. मूल विषय कितने प्रकार के होते हैं?
2. मिश्रित विषय को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

5. सामान्य एकल

एकल जगत् के अंतर्गत एकलों की अनेक जातियों की उप-जगत् के रूप में पहचान की जा सकती है। इनमें भौगोलिक एकल, लक्षण परक काल एकल, आकृति सूचक एकल, सामान्यतः कार्य सूचक एकल, सामान्यतः गुणधर्म सूचक एकल इत्यादि जातियों को शामिल किया जाता है। प्रत्येक अथवा लगभग सभी मूल विषयों से मेल खाने वाले अनेक यौगिक विषयों के घटक के रूप में संस्थापरक एकलों का प्रयोग किया जा सकता है। इस प्रकार की प्रत्येक जाति का प्रत्येक एकल 'सामान्य एकल' (CI:Common Isolate) कहलाता है।

वस्तुतः वर्गीकरण की प्रत्येक पद्धति में—एल सी (L.C) एवं आर आईसी (RIC) को छोड़कर—किसी विशेष मूल विषय के सन्दर्भ के बिना ही सामान्य एकलों की प्रत्येक जाति की अनुसूचियों का पृथक्-पृथक् उल्लेख किया गया है।

5. 1. सामान्य एकलों का अर्थ एवं उनकी आवश्यकता

रंगनाथन ने सामान्य एकलों को निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया है :

"सामान्य एकल ऐसे विचार एकल होते हैं, जिनका प्रयोग उसी एकल पद को सूचित करते हुए तथा उसी एकल संख्या के द्वारा, उस यौगिक विषय अथवा उस मूल विषय जिसके साथ वह यौगिक विषय मेल खाता है, का कुछ भी ध्यान किए बिना सभी वर्गों के साथ एक ही रूप में किया जाता है"। डी डी सी में इसे "एक विशेष प्रकार की प्रतिरूपी पुनरावृत्ति के रूप जाना जाता है"। किसी भी विषय को अनेक रूपों में प्रस्तुत किया जा सकता है। यह प्रस्तुति रूपरेखा, इतिहास, सिद्धान्त अथवा शब्दकोश इत्यादि किसी भी रूप में हो सकती है। यह प्रस्तुति सामयिक प्रकाशन, पत्रिका अथवा हैंडबुक के रूप में भी हो सकती है। किसी विषय का किस प्रकार अध्ययन किया जाए अथवा किसी विषय का अध्यापन किस प्रकार किया जाए इत्यादि अवधारणाओं को प्रस्तुत करने के लिए भी इनका प्रयोग किया जा सकता है। इन सामान्य रूपों एवं प्रस्तुतीकरण की विधियों को "मानक उपविभाजन" कहते हैं।

ऐसा विदित होता है कि कुछ प्रकार की अवधारणाओं की पुनरावृत्ति होती रहती है तथा उन्हें अनेक विषयों में पाया जाता है—उदाहरणार्थ, सम्मेलन कार्यवाही, सामयिक पत्रिका, शब्दकोश, विश्वकोश इत्यादि ये सभी प्रस्तुतीकरण के रूप कहलाते हैं। अर्थशास्त्र की पत्रिका, दर्शन शास्त्र का विश्वकोश, भारतीय पुस्तकालय

सम्मेलन की कार्यवाही, ये सभी शीर्षक किसी न किसी विशिष्ट रूप में सम्बन्धित विषय को प्रस्तुत करते हैं। सामयिक पत्रिका, विश्वकोश, सम्मेलन कार्यवाही ये सभी रूप सामान्यतः "बाह्य स्वरूपों" के वर्ग में रखे जाते हैं, किन्तु किसी विषय के अभिगम के रूपों को 'आंतरिक स्वरूपों' के वर्ग में रखा जाता है। उदाहरणार्थ, सिद्धान्त, अध्ययन एवं अध्यापन, इतिहास तथा जीवन चरित्र इत्यादि किसी भी विषय का ज्ञान प्राप्त करने के विभिन्न अभिगम या प्रवेश मार्ग हैं तथा ये "आंतरिक स्वरूप" कहलाते हैं।

हमें यह भी ज्ञात है कि विषयों का विवेचन उनके ऐतिहासिक एवं भौगोलिक संदर्भ में भी किया जाता है, तथा क्रमशः ये संदर्भ सामान्यतः 'काल' एवं 'स्थान' को सूचित करते हैं। इस प्रकार प्रस्तुतीकरण के 'आंतरिक स्वरूप' एक 'बाह्य स्वरूप' तथा ऐतिहासिक एवं भौगोलिक विवेचन सभी या अधिकांश विषयों के सर्व सामान्य लक्षण होते हैं। अतः वर्गीकरण पद्धति में प्रत्येक स्थान पर इनकी पुनरावृत्ति होती है। पुस्तकालय वर्गीकरण में ऐसी पुनरावृत्त अवधारणाओं का मानकीकरण कर दिया जाता है। इस मानकीकरण के फलस्वरूप अनुसूचियों का आकार छोटा करने में सहायता मिलती है, क्योंकि वर्गीकरण पद्धति में इन सामान्य लक्षणों को केवल एक ही बार सूचीबद्ध किया जाता है। संयोग से, मानकीकरण के द्वारा पुनरावृत्त अवधारणाओं को स्मृति सहायक महत्व प्राप्त हो जाता है, क्योंकि सभी स्थानों पर उन्हें निरंतर उन्हीं प्रतीक चिह्नों द्वारा व्यक्त किया जाता है। अतः वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकलों को पृथक्-पृथक् सारणियों में प्रस्तुत किया जाता है तथा उनके अनुप्रयोग के लिए उपर्युक्त निर्देशों का उल्लेख कर दिया जाता है।

5. 2. सामान्य एकलों का इतिहास

मेल्विल ड्यूई को वर्गीकरण के क्षेत्र में अनेक बातों का श्रेय है। सामान्य एकलों की अवधारणा उनमें से एक है। प्रारम्भ में इनका नाम रूप विभाजन (Form Divisions) रखा गया। सर्वप्रथम इनका समावेश 1885 ई. में प्रकाशित डी डी सी के द्वितीय संस्करण में किया गया। इसके बाद अनेक बार इनके नाम में परिवर्तन किया गया। रूप विभाजन नाम का 1922 ई. में प्रकाशित डी डी सी के 12वें संस्करण तक लगातार प्रयोग किया जाता रहा। इस नाम का परिवर्तन 'सामान्य उपविभाजन' (Common Sub-divisions) के रूप में 1932 में प्रकाशित डी डी सी के 13वें संस्करण में किया गया। इन 'सामान्य उपविभाजनों' की तीन अलग-अलग श्रेणियों-अर्थात् 'विविध सामान्य उपविभाजन' (Miscellaneous Common Sub division) 'दृष्टिकोण' (View Points) एवं 'रूप विभाजन' (Form Divisions) के अंतर्गत सूचीबद्ध किया गया; इसके बाद डी डी सी के 15वें एवं 16वें संस्करणों में इन तीनों श्रेणियों का केवल "रूप-विभाजन (Form Divisions) एक ही नाम के अंतर्गत पुनः उल्लेख किया गया तथा 17वें संस्करण में इस नाम को बदलकर नया नाम 'मानक उपविभाजन' (Standard Sub-divisions) दिया गया। 17वें संस्करण में 'स्थान' एवं 'काल' एकलों की भी सामान्य एकल के रूप में अलग से पहचान की गई, तथा इनको अलग-अलग सारणियों के अंतर्गत सूचीबद्ध किया गया। 17वें संस्करण के प्रकाशन तक इतिहास विषय की अनुसूची का 'स्थान एकल' के रूप में उपयोग किया जाता था।

यू डी सी में सामान्य एकल 'सहायक उपविभाजन (Auxiliary Sub-divisions) कहलाते हैं। सामान्यतः यू डी सी में दो प्रकार के सहायकों- 'सामान्य' एवं 'विशिष्ट'—का प्रयोग किया जाता है। डी सी में 'रूप सहायक' डी डी सी के 'मानक उपविभाजनों' के समान हैं। 'स्थान' एवं 'काल' एकलों को सामान्य सहायकों के रूप में अलग-अलग सारणियों के अंतर्गत सूचीबद्ध किया गया है। वर्ग संख्याओं का निर्माण करने में 'सहायकों' के उपयोग को यू डी सी का महत्वपूर्ण पक्ष माना जाता है।

सी सी के प्रथम संस्करण में सामान्य उपविभाजनों के लिए तीन भिन्न-भिन्न अनुसूचियों का उल्लेख किया गया था तथा 'स्थान' एवं 'काल' दोनों एकलों की अनुसूचियाँ इन्हीं तीन अनुसूचियों में शामिल थीं। प्रारम्भ में सामान्य उपविभाजनों की संख्या कम थी। केवल चौथे संस्करण में ही इनकी पहचान पूर्वस्थापक सामान्य उपविभाजन 'व' 'पश्चस्थापक सामान्य उपविभाजन' के रूप में की गई। पाँचवें संस्करण में इनका नाम 'सामान्य एकल' रखा गया। अनुवर्ती संस्करणों के जरिये अनेक परिवर्तनों के बाद सी सी के सातवें संस्करण में सामान्य एकलों की एक सुविस्तृत सूची दी गई है।

NOTES

5. 3. सामान्य एकलों के प्रकार

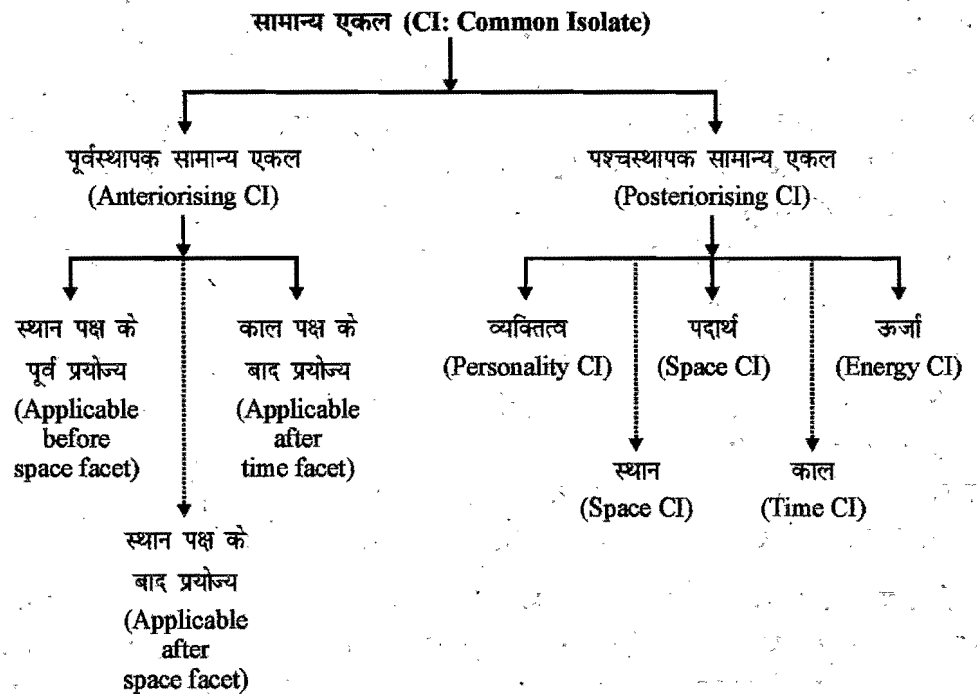
'सामान्य एकल विचार' की परिभाषा के अनुसार (देखें अनुभाग 8.4.1) भाषा एकल विचार, काल एकल विचार, स्थान एकल विचार, एवं पूर्वस्थापक सामान्य एकल विचार, विभिन्न प्रकार के सामान्य एकलों की श्रेणी में सम्मिलित किए जाते हैं। इनके अतिरिक्त सामान्य व्यक्तित्व परक एकल विचार, सामान्य पदार्थ एकल विचार एवं सामान्य ऊर्जा एकल विचार भी सामान्य एकल कहलाते हैं।

यह उल्लेखनीय बिन्दु है कि 'मूलभूत श्रेणी ऊर्जा' एवं 'मूलभूत श्रेणी पदार्थ' की अभिव्यक्तियों में से कुछ विचार तो 'विशिष्ट एकल विचार' कहलायेंगे एवं कुछ अन्य सामान्य एकल विचार। 'पदार्थ सामान्य एकलों' की श्रेणी में केवल 'गुणधर्म' एवं 'मूल्यों' को सम्मिलित किया जाता है न कि "सामग्री" को; तथापि, इन 'सामान्य गुणधर्म एकल' एवं 'ऊर्जा सामान्य एकल' विचारों का भी उल्लेख करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, यह ज्ञात हुआ है कि प्रलेखों में 'ऊर्जा सामान्य एकल पद' एवं 'पदार्थ सामान्य एकल पद' दोनों की संयुक्ति प्रायः एक ही पद में पाई जाती है, अर्थात् दोनों को एक ही पद द्वारा व्यक्त कर दिया जाता है; अतः इन्हें एक-दूसरे से अलग करना पड़ता है। इसी प्रकार उसी सामान्य एकल विचार को हमेशा उसी एक पद के द्वारा नहीं किया जाता तथा इन सभी पदों को एक ही पद में परिवर्तित करने के कार्य में समय नष्ट करना पड़ता है।

5. 4. कोलन क्लैसिफिकेशन में सामान्य एकल

सी सी के सामान्य एकल उन सामान्य एकलों से, जिनका हमने डी डी में अध्ययन किया है, बिल्कुल भिन्न हैं। यद्यपि दोनों पद्धतियों में सामान्य एकलों का उद्देश्य एवं उनकी आवश्यकता समान है; किन्तु सी सी में सामान्य एकलों की संख्या एवं उनका अनुप्रयोग भिन्न है। सी सी में सामान्य एकलों की भिन्नता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया है। सी सी में उल्लिखित परिभाषा के अनुसार सामान्य एकल ऐसे विचार एकल होते हैं जिनका प्रयोग उसी पद तथा उसी प्रतीक संख्या द्वारा पद्धति के प्रत्येक वर्ग के साथ एक ही रूप में किया जाता है। सी सी में सामान्य एकलों का वर्ग भी बहुत बड़ा है। सी सी में अनेक जाति के सामान्य एकल हैं। इनकी झलक निम्नलिखित रेखाचित्र में प्रस्तुत की गई है :

सी सी में सामान्य एकलों की जातियाँ



सी सी के छोटे संस्करण तक पूर्वस्थापक एवं पश्चस्थापक सामान्य एकलों में पारस्परिक भिन्नता स्पष्ट रूप से प्रदर्शित की गई थी। पूर्वस्थापक सामान्य एकल ग्रहयता वर्ग के साथ संयोजक चिह्न के बिना ही जोड़ दिए

जाते थे; जबकि पश्चस्थापक सामान्य एकल ग्रह्यता वर्ग के साथ योजक चिह्न के द्वारा जोड़े जाते थे। सातवें संस्करण में इस भिन्नता को दूर कर दिया गया है। तथापि, उनका कार्य वही है जो उनके लिए पूर्व संस्करणों में निर्धारित किया गया था।

सी सी में पूर्वस्थापक सामान्य एकल

पूर्वस्थापक सामान्य एकल से युक्त वर्ग संख्या का व्यवस्थापन उस मूल वर्ग संख्या के पूर्व या जाता है, जिसके साथ उन्हें जोड़ जाता है। संक्षेप में, पूर्वस्थापक सामान्य एकलों का पूर्वस्थापक मान होता है। उदाहरणार्थ, V, 54 एवं V, 54" a वर्ग संख्याओं का व्यवस्थापन करते समय वर्गों के अनुक्रम में V, 54" a स्थान V, 54 से पहले होता है। ग्रन्थसूचियों, विश्वकोशों, सामयिक पत्रिकाओं एवं विषय के इतिहास से सम्बन्धित प्रलेख उपागम प्रलेख अथवा परिचयात्मक प्रलेख होते हैं। अतः इनकी ऐसी स्थिति के कारण निधानियों पर व्यवस्थापन में इनका स्थान विषय से सम्बन्धित अन्य मूल प्रलेखों से पूर्व होता है। कुछ पूर्वस्थापक सामान्य एकल निम्नलिखित हैं :

पूर्वस्थापक सामान्य एकल :

स्थान पक्ष से पूर्व प्रयोज्य

- a - bibliography (ग्रन्थसूची)
- c - concordance (शब्दानुक्रमणिका)
- d - table (सारणी)
- f - atlas (एटलस)
- k - cyclopaedia (विश्वकोश)
- m - periodical (पत्रिका)
- p - conference proceedings (सम्मेलन कार्यवाही)
- v - history (इतिहास)
- w - biography (जीवनचरित)

पूर्वस्थापक सामान्य एकल

स्थान पक्ष के बाद प्रयोज्य

- r - Periodical administration report (सामयिक प्रशासन रिपोर्ट)
- s - statistics (serial) आँकड़े (क्रमिक)

पूर्वस्थापक सामान्य एकल

काल पक्ष के बाद प्रयोज्य

- t - commission report (आयोग रिपोर्ट)
- t4 - survey (सर्वेक्षण)
- y - source material (स्रोत सामग्री)
- v46 - genealogy (वंशावली)
- v6 - chronology (कालक्रम)

पूर्वस्थापक सामान्य एकलों की पूर्ण सूची सी सी के सातवें संस्करण के पृष्ठ 105 पर उपलब्ध है।

NOTES

सी सी में पश्चस्थापक सामान्य एकल

पश्चस्थापक सामान्य एकल तीन प्रकार के होते हैं—अर्थात् व्यक्तित्व, पदार्थ एवं ऊर्जा सामान्य एकल। इनको ग्रहयता वर्ग के साथ अपने-अपने योजक चिहनों द्वारा जोड़ा जाता है—अर्थात् सेमीकोलन एवं कोलन। 'व्यक्तित्व सामान्य एकल' (Personality Common Isolates) का प्रयोग मुख्य रूप से संस्थाओं के लिए किया जाता है। इनके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

NOTES

- f – investigating institution (अनुसंधान संस्था)
- f2 – observational institution (प्रेक्षणात्मक संस्था)
- f3 – laboratory (प्रयोगशाला)
- g – learned body (विद्वत् सभा)
- h6 – museum (संग्रहालय)
- y – cultural organisations (सांस्कृतिक संगठन)

सी सी के सातवें संस्करण के पृष्ठ 104 पर व्यक्तित्व सामान्य एकलों की सूची उपलब्ध है।

सी सी में, पदार्थ, ऊर्जा, स्थान एवं काल सामान्य एकल

सी सी के सातवें संस्करण के पृष्ठ 93 से 104 तक ऊर्जा एवं पदार्थ एकलों (Energy and Matter Common Isolates) की विस्तृत सूची उपलब्ध है। सी सी के छठे संस्करण में ऊर्जा सामान्य एकलों की संख्या कम थी। पदार्थ सामान्य एकलों का उल्लेख सर्वप्रथम सातवें संस्करण में किया गया है।

स्थान एवं काल को भी सामान्य एकलों की श्रेणी में सम्मिलित किया जात है, तथा इनकी सूचियों का उल्लेख अलग से किया गया है। इन्हें किसी भी ग्रहयता वर्ग संख्या के साथ आवश्यकतानुसार जोड़ा जा सकता है। इनके प्रयोग के कुछ उदाहरणों का निम्नलिखित अनुच्छेद में उल्लेख किया गया है :

सी सी में सामान्य एकलों का अनुप्रयोग

हमें यह जानकारी मिल चुकी है कि सी सी में विभिन्न जाति के सामान्य एकलों का उल्लेख किया गया है। प्रत्येक जाति के सामान्य एकलों के अनुप्रयोग को उपर्युक्त उदाहरण देकर निम्नलिखित अनुच्छेदों में स्पष्ट किया गया है :

पूर्वस्थापक सामान्य एकल : निम्नलिखित उदाहरणों में पूर्वस्थापक सामान्य एकलों के प्रयोग का स्पष्ट किया गया है :

- C"aN 7 – Bibliography of physics books upto the 1979s
- C"K73,N3 – Encyclopedia of physics, first published in USA in the 1930s
- C"m56, N5 – Physics journal first published in the UK in the 1950s.
- C"p44, N7 – Proceedings of physics conference held first in the 1970s in India
- C"v – History of physics
- C"w M88 – Biography of a physicist, born in the year 1888 (C.V. Raman)

यहाँ पर यह ध्यतव्य है कि उपर्युक्त उदाहरणों में योजक चिह्न अर्थात् दोहरे उदाहरण चिह्न (") का कोई क्रमबोधक मान नहीं है। जैसा कि पहले व्यक्त किया जा चुका है, अनुक्रम में सभी उपर्युक्त वर्ग संख्याओं का स्थान मूलवर्ग C (Physics) से पूर्व होगा उपर्युक्त उदाहरणों के, पूर्वस्थापक सामान्य एकलों का प्रयोग स्थान पक्ष से पूर्व किया जाता है।

आइए अब हम ऐसे कुछ उदाहरणों को प्रस्तुत करें जहाँ पूर्वस्थापक सामान्य एकलों का प्रयोग स्थान एवं काल पक्षों के बाद किया जाता है।

- T,34,44"r – Report on adult education in India
T,34,44"s – Statistics on adult education in India (Published regularly as a serial)
T,34,44'N75"t – Indian adult education commission report, published in 1975
T,34,44'N75"t4 – Survey report of adult education in India published in 1975 (a stray publication)

NOTES

उपर्युक्त चार उदाहरणों में से, प्रथम दो उदाहरणों में तो सामान्य एकलों का प्रयोग स्थान पक्ष के बाद किया गया है; बाद के दो उदाहरणों में सामान्य एकलों का प्रयोग काल पक्ष के बाद किया गया है। यहाँ पर यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि सी सी में अनेक सामान्य एकल अपने-अपने पक्ष—परिसूत्रों के साथ प्रयोग में लाए जाते हैं। इन पक्ष—परिसूत्रों का उल्लेख अनुसूचियों में उपर्युक्त स्थान पर सम्बन्धित सामान्य एकल के साथ किया गया है।

पश्चस्थापक सामान्य एकल : इस श्रेणी के अंतर्गत हम व्यक्तित्व, पदार्थ, ऊर्जा, स्थान एवं काल सामान्य एकलों का क्रमशः अध्ययन करेंगे।

व्यक्तित्व सामान्य एकल : ये सामान्य एकल संस्थाओं अथवा संगठनों के द्योतक हैं। व्यक्तित्व सामान्य एकल को सामान्यतः स्थान पक्ष के बाद जोड़ा जाता है। वर्ग संख्या में संस्थागत तत्व को वर्ण युक्ति (वर्णक्रम विधि) अथवा कालक्रम युक्ति के द्वारा प्राप्त किया जाता है। वर्णक्रम युक्ति के अनुसार संस्था की स्थापना के वर्ष को प्रयोग में लाया जाता है। वर्ण युक्ति का प्रयोग उस समय किया जाता है जब स्थापना वर्ष ज्ञात न हो। यदि कोई संस्था राष्ट्रीय स्तर की संस्था हो तो काल सूचक संख्या के पूर्व अंक '9' का प्रयोग किया जाता है। आप व्यक्तित्व सामान्य एकल के प्रयोग को निम्नलिखित कुछ उदाहरणों द्वारा स्पष्ट रूप में समझ सकेंगे :

- (1) Indian Mathematical Society founded in 1931 B.44,g,9N31
(2) Delhi University T,18,4441,t4,N22
(3) Poona Observatory BX,44,f2,P

सम्बन्धित नियमों की जानकारी देने के लिए उपर्युक्त वर्ग संख्याओं के निर्माण की प्रक्रिया का विवेचन निम्नलिखित है :

- (1) B – Mathematics
44 – India (सभी स्थान एकलों को जोड़ने के लिए योजक चिह्न बिन्दु (.) का प्रयोग किया जाता है)
g – Learned body (सभी रोमन छोटे अक्षर सामान्य एकलों के द्योतक हैं। व्यक्तित्व पक्ष के घटक को जोड़ने के लिए योजक चिह्न अल्पविराम (,) का प्रयोग किया जाता है)।
9N31 – राष्ट्रीय स्तर की संस्था का निरूपण करने के लिए अंक 9 के साथ संस्था का स्थापना वर्ष जोड़ दिया जाता है; इस प्रकार N 31 = 1931
(2) T – Education
T,18 – University education. मुख्य वर्ग T Education के अंतर्गत, 18 व्यक्तित्व पक्ष से लिया गया है।
4441 – Delhi
t4 – An institution of higher education (t4 व्यक्तित्व सामान्य एकल है)

NOTES

N22 - Founded in 1922 (दिल्ली विश्वविद्यालय स्थानीय संस्था है अतः अंक 9 स्थापना वर्ष से पूर्व नहीं लगाया गया है)

(3) BX - Astronomy

44 - India

f2 - Observational insitution (f2 व्यक्तित्व सामान्य एकल है)

p - Poona (वर्णक्रम युक्ति)

पदार्थ-गुणधर्म सामान्य एकल : पदार्थ-गुणधर्म सामान्य एकलों की विस्तृत सूची सर्वप्रथम सी सी के सातवें संस्करण में दी गई थी। पदार्थ, गुणधर्म सामान्य एकल का प्रयोग करते समय योजक चिह्न सेमीकोलन (;) का उपयोग किया जाता है। इसके अनुप्रयोग के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

The Outgoing Tamil Nadu Ministry-V,4411,2;aP5

यहाँ V History

4411 Tamil Nadu

2 Cabinet (ministry)

aP5 Outgoing - पदार्थ-गुणधर्म सामान्य एकल

The intrinsic value of paintings-N6; a72

यहाँ, N6 Paintuing

a72 Intrinsic value

ऊर्जा सामान्य एकल : सी सी के सातवें संस्करण के पृष्ठ 93 पर ऊर्जा सामान्य एकलों की सूची दी गई है। ऊर्जा सामान्य एकल को योजक चिह्न कोलन के साथ जोड़ा जाता है। पूर्व उल्लिखित उदाहरणों की तरह ही सर्वप्रथम विषय के उपर्युक्त वर्ग संख्या की रचना की जाती है, तथा उसके बाद यदि आवश्यक हो तो, संलग्नीय सामान्य एकल का निर्धारण किया जाता है। ऊर्जा सामान्य एकलों के कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं :

ab - establish, Inaugurate

ab - mixing

af3 - differentiate

eg - cleaning

ak - compensate

ev - washing

aD2 - infiltrate

e3 - boiling

aR - investigation, research

fZ6 - preserving

aR2 - observing

p2 - describing

aT - evaluation

pR4 - printing

d1 - designing

u1 - surveying

उपर्युक्त उदाहरण ऊर्जा सामान्य एकलों का केवल एक नमूना मात्र है। ऊर्जा सामान्य एकलों के अनुप्रयोग से सम्बन्धित कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

(1) Observing solar eclipse

BX,3; 57:aR2

(2) Research on the ulcer of the intestine

L,25; 474:aR

(3) Desiging architectural plan of library buildings

NA, 9(2); 3:d1

उपर्युक्त वर्ग संख्याओं की विस्तृत व्याख्या निम्न प्रकार से है :

दशा सम्बन्ध एवं सामान्य एकल

- | | | | | |
|-----|------|----------------------------------|---|---|
| (1) | BX | - Astronomy | } | BX के पक्ष-परिसूत्र के अनुसार हल किया गया है। |
| | | - Sun | | |
| | | - Eclipse | | |
| | Ar2 | - Observation- ऊर्जा सामान्य एकल | | |
| (2) | L | - Medicine | } | L के पक्ष-परिसूत्र के अनुसार हल किया गया है। |
| | 25 | - Intestine | | |
| | 4 | - Disease | | |
| | 74 | - Ulcer | | |
| | aR | - Research- ऊर्जा सामान्य एकल | | |
| (3) | NA | - Architecture | } | NA के पक्ष-परिसूत्र के अनुसार हल किया गया है। |
| | 9(2) | - Library buildings | | |
| | 3 | - Plans | | |
| | dl | - Designing- ऊर्जा सामान्य एकल | | |

NOTES

स्थान एवं काल सामान्य एकल : स्थान एवं काल को आवश्यकतानुसार किसी भी वर्ग संख्या के साथ जोड़ा जा सकता है; अतः इनको भी सामान्य एकलों की श्रेणी में स्थान संख्या के साथ जोड़ा जा सकता है; अतः इनको भी सामान्य एकलों की श्रेणी में स्थान दिया गया है। अनुसूचियों में इनका भी अलग-अलग सूचियों में उल्लेख किया जाता है। स्थान एवं काल का अनुप्रयोग बहुत सरल है, तथा इसे आसानी से समझा जा सकता है। तथापि आपको लाभ पहुँचाने की दृष्टि से इनके अनुप्रयोग से सम्बन्धित कुछ उदाहरणों का उल्लेख निम्नलिखित है :

- यहाँ 2 - library science
J4 - university libraries
44 - India

Mass communication in India in the 1980s - 4,44'N8

- यहाँ 4 - Mass communication
44 - India
N8 - 1989s

द्वितीय उदाहरण में, स्थान एवं काल एकल दोनों मौजूद हैं।

5.5 ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन में सामान्य एकल

डी डी सी के सामान्य एकलों में, नामकरण एवं निरूपण दोनों ही दृष्टि से, समय-समय पर अनेक परिवर्तन किए गए हैं। डी डी सी के भिन्न-भिन्न संस्करणों में इनको भिन्न-भिन्न नाम दिए गए हैं। अब तक इनको 'रूप विभाजन' (form divisions), 'सामान्य उपविभाजन' (common sub-divisions), 'दृष्टिकोण परक संख्या' (view point numbers) एवं मानक उपविभाजन' (standard sub-divisions) इत्यादि नाम दिए गए हैं 17 वें संस्करण से आगे इनका नाम 'मानक उपविभाजन' रखा गया है। डी डी सी के 19 वें संस्करण के खंड 1 की सरणी 1 के अंतर्गत मानक उपविभाजनों की पूर्ण सूची दी गई है।

NOTES

डी डी सी में सामान्य एकलों के प्रकार

- 01 Philosophy and theory
- 016 Indexes
- 02 Miscellany
- 22 Illustrations and models
- 028 Techniques, procedues, apparatus, equipmnet, material
- 0285 Data processing
- 0288 Maintenance and repiar
- 03 Dictionaries, encyclopaedias, concordances
- 05 Serial publications
- 06 Organisations and management
- 07 Study and teaching
- 072 Research
- 08 History and description of the suibject among groups of persons
- 09 Historical and geographical treatment

सारणी 1 के अंतर्ग उल्लिखित टिप्पणी के अनुसार “इन इंकनों को कमी भी अकेले प्रयोग मे नहीं लाया जाता; किन्तु इन्हे आवश्यकतानुसार अनुसूचियों की किसी भी वर्ग संख्या के साथ जोड़ा जा सकता है”। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि उपर्युक्त अंकनों को विषय अनुसूचियों में उल्लिखित मूल वर्ग संख्या के अलावा अन्यत्र स्वतंत्र रूप में प्रयोग में नहीं लाया जाता। उपर्युक्त सरणी में प्रत्येक अंकन के पूर्व डैश का चिह्न लगा हुआ है, जो केवल यही प्रदर्शित करता है कि इन अंकनों का स्वतंत्र अस्तित्व कदापि नहीं है। जब इस अंकन को अनुसूचियों में उल्लिखित विषय की वर्ग संख्या के साथ जोड़ा जाता है तो डैश चिह्न को हटा दिया जाता है।

डी डी सी में स्थान एवं काल एकल

डी डी सी के 16 वें संस्करण तक स्थान एकलों के लिए पृथक् सरणी नहीं थी। जब कभी इनकी आवश्यकता होती थी इन्हें अतिहास की अनुसूचियों से लिया जाता था। 17वें संस्करण में ही सर्वप्रथम इनको लग से सूचीबद्ध किया गया। इन्हें भूक्षेत्र संख्या या भौगोलिक संख्या के नाम से जाना जाता है, तथा खंड 1 की सारीणी 2 में इनका उल्लेख किया गया है। जिस समय किसी विषय का विवेचन विशेष रूप में भौगोलिक आधार पर किया जाता है, उस समय उस विषय से सम्बन्धित वर्ग संख्या के साथ क्षेत्र संख्या को जोड़ना अनिवार्य हो जाता है। उदाहरणार्थ, भारत की विदेश नीति, चीन की आर्थिक दशा, युनाइटेड किंगडम के राजनीतिक दल इत्यादि। इन सभी उदाहरणों में भौगोलिक क्षेत्र (स्थान) इतना महत्वपूर्ण है कि इसके बिना वर्ग संख्या अधूरी होगी तथा बोधगम्य नहीं होगी। अतः सभी वर्गीकरण पद्धतियों में स्थान एकलों की व्यवस्था की गई है।

- 1 Area, regions, places in general
- 2 Persons regardless of area, region and place
- 3 The ancient world
- 4 Europe
- 5 Asia
- 6 Africa

- 7 North America
- 8 South America
- 9 Other parts of the world...

NOTES

डी डी सी के स्थान एकलों का अवलोकन करने के बाद, आइए अब हम इस पद्धति में उल्लिखित काल एकलों की जाँच करें। डी डी सी में काल एकलों की इतनी विस्तृत व्यवस्था नहीं है जितनी कि यू डी सी एवं सी सी में उपलब्ध है। डी डी सी में काल एकलों का प्रावधान ऐतिहासिक अवधियों के रूप में मानक उपविभाजन सारणी 1 के अंतर्गत किया गया है इनका उपयोग सीमित है। विषय अनुसूचियों में काल का प्रयोग कुछ बहुत विस्तृत ऐतिहासिक अवधियों के आधार पर किया जाता है। इनका विवरण निम्नलिखित है:

- 0901 - to 499 AD
- 0902 - 500-1499
- 0903 - Modern period, 1500
- 0904 - 20th Century; 1900-1999
- 0905 - 21st Century, 2000-2099

डी डी सी के 19वें संस्करण के खंड 1 के पृष्ठ 10 एवं 11 पर काल एकल के उपविभाजन का विस्तृत विवरण दिया गया है।

डी डी सी में सामान्य एकलों का अनुप्रयोग

वर्गीकरण करते समय विशिष्ट विषय का पता लगाने के लिए सर्वप्रथम प्रलेख का विश्लेषण किया जाता है, तथा इसके बाद उसे उपर्युक्त विषय संख्या प्रदान की जाती है। आगे यह पता लगाने के लिए इसकी और जाँच की जाती है कि मानक उपविभाजन सारणी से किसी अतिरिक्त संख्या को उसके साथ जोड़ना आवश्यक है या नहीं। उदाहरणार्थ, यदि किसी पुस्तक की आख्या The teaching of geography हो तो सर्वप्रथम उसको geography विषय की सूचक वर्ग संख्या प्रदान की जाती है। इसके बाद इस वर्ग संख्या के साथ मानक उपविभाजन सारणी 1 से teaching सूचक मानक उपविभाजन जोड़ दिया जाता है। आपको पहले से ही यह ज्ञात है कि मानक उपविभाजन को मूल वर्ग के साथ शून्य (0) लगाकर जोड़ा जाता है। उपर्युक्त आख्या की वर्ग संख्या 910.7 होगी। यहाँ पर "910 geography" है तथा "07 study and teaching" है जिसे सारणी 1 से लिया गया है।

कुछ अन्य उदाहरण निम्नलिखित हैं :

- Medical dictionary - 610.3 610 plus 03
- Encyclopaedia of religion - 203 200 plus 03
- Journal of agriculture - 630.5 630 plus 05
- Research in Crystallography - 548.072 548 plus 072

उपर्युक्त उदाहरणों में जिन घटक अंकों को रेखांकित किया गया है—वे सभी मानक उपविभाजन हैं इन सभी का उपयोग जीरो (0) के साथ किया गया है। तथापि अनुसूचियों में कहीं—कहीं ऐसे उदाहरण भी मौजूद हैं, जहाँ जीरो का प्रयोग किसी वर्ग के विभाजन के लिए पहले से ही किया जा चुका है, तो ऐसी स्थिति में मानक उपविभाजन को दो जीरो सहित अथवा तीन जीरो सहित, जैसी भी स्थिति हो, जोड़ना पड़ता है। इस सम्बन्ध में अनुसूचियों में उल्लिखित वर्ग संख्याओं के अंतर्गत उपर्युक्त निर्देश दिए गए हैं। इस बिन्दु को निम्नलिखित उदाहरणों में स्पष्ट किया गया है :

| | |
|-------------------------------------|------------|
| Encyclopedia of oriental philosophy | - 181.003 |
| Dictionary of political science | - 320.03 |
| Journal of social welfare | - 361.005 |
| Journal of engineering | - 620.005 |
| Journal of public administration | - 350.0005 |

NOTES

उपर्युक्त उदाहरणों तथा इनसे पूर्व उल्लिखित उदाहरणों की वर्ग संख्याओं की पारस्परिक भिन्नता पर ध्यान दें। अंकनों के रेखांकित घटक मानक उपविभाजन हैं, इनको मूल वर्ग संख्याओं के साथ दो या तीन जीरो सहित जोड़ा गया है। इस प्रकार के उपयोग के बारे में अनुसूचियों में स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं। अतः वर्गीकरण करते समय इस सम्बन्ध में किसी भी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। यथापि, सारणी 1 से मानक उपविभाजन संख्याओं का प्रयोग करने से पूर्व केवल यह सावधानी बरतनी होगी कि अनुसूचियों में उल्लिखित विषय वर्ग संख्याओं के अंतर्गत एक या एक से अधिक जीरो जोड़ने के निर्देश हैं अथवा नहीं।

निर्देश दिया गया है अथवा नहीं। यदि स्थान एकल जोड़ने के सम्बन्ध में कोई निर्देश दिया गया है तो उस निर्देश के अनुसार विषय वर्ग संख्या के साथ स्थान एकल को जोड़ा जाता है। यदि किसी विषय वर्ग संख्या के साथ स्थान एकल जोड़ने का निर्देश नहीं दिया गया है तो उस स्थिति में उक्त वर्ग संख्या के साथ सारणी 1 से मानक उपविभाजन 09 लेकर जोड़ दिया जाता है तथा उसके बाद 09 आधार संख्या के साथ वांछित एकल जोड़ दिया जाता है। उदाहरणार्थ, 'Income tax in India' विषय पर ध्यान दीजिए। अनुसूचियों में 'Income tax' के साथ स्थान एकल जोड़ने के निर्देश नहीं दिए गए हैं। अतः Income tax की वर्ग संख्या के साथ 09 मानक उपविभाजन को जोड़ कर उसके बाद स्थान एकल जोड़ा जा सकता है। इस प्रकार,

336.24. Income tax

09 Historical and geographical treatment

(मानक उपविभाजन सारणी 1 से)

54 India (मानक उपविभाजन 09 के अंतर्गत निर्देश दिया गया है कि सारणी 2 से क्षेत्र अंकन लाकर जोड़ें।)

336.240 954 Income tax in India

5.6 यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन में सामान्य एकल

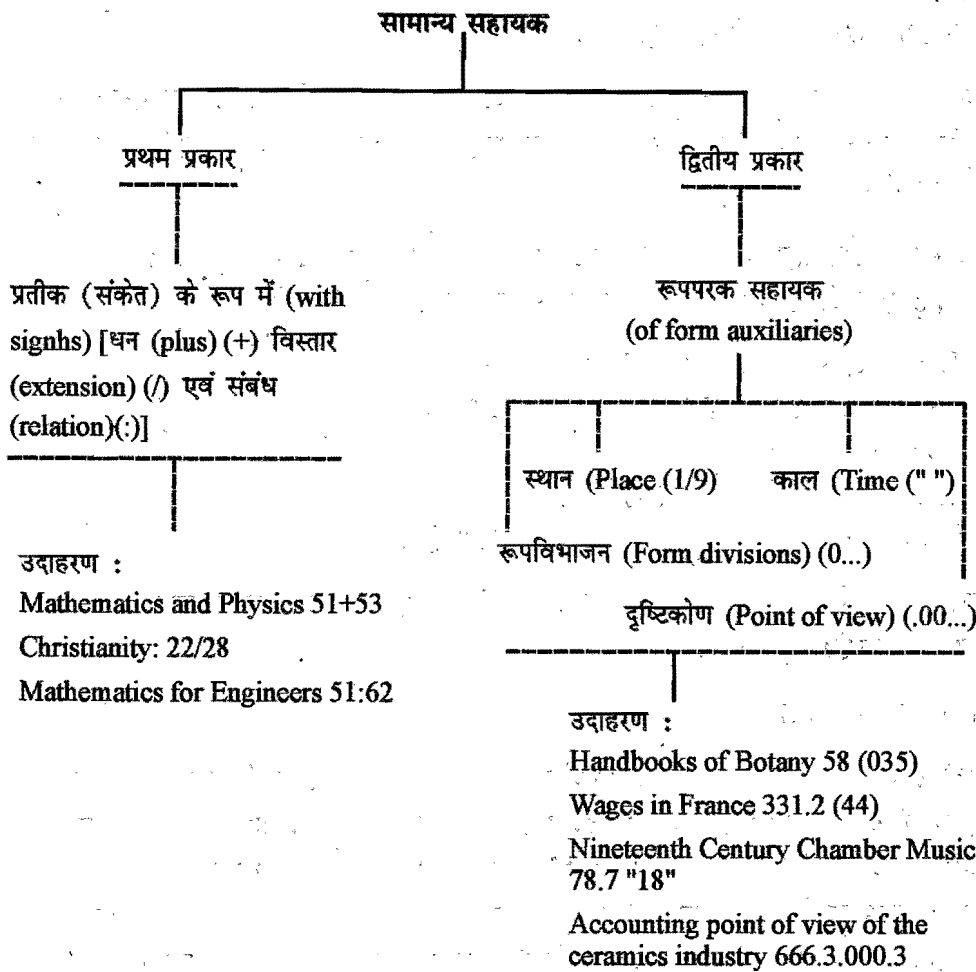
यू डी सी में सामान्य एकल 'सहायक' (auxiliaries) कहलाते हैं। मोटे तौर पर इन्हें दो श्रेणियों में रखा जाता है; अर्थात् 'सामान्य (general) एवं 'विशिष्ट' (special)। सामान्य श्रेणी वाले सहायकों को यू डी सी की अनुसूचियों में किसी भी विषय वर्ग संख्या के साथ जोड़ा जा सकता है। जबकि विशिष्ट श्रेणी वाले सहायक इस पद्धति के केवल कुछ विशिष्ट भागों में ही सम्बन्धित होते हैं। इसके अतिरिक्त, सामान्य श्रेणी को भी दो वर्गों में विभाजित किया जाता है। अर्थात् :

(i) वे प्रतीक जो अन्य अंकन घटकों को जोड़ने का कार्य करते हैं, तथा

(ii) वे जिनको उपविभाजनों की सुस्पष्ट सारणियों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

निम्नलिखित रेखाचित्र में इस विषय को और अधिक स्पष्ट किया गया है :

NOTES



यू डी सी के रूपपरक सामान्य सहायक डी डी सी के मानक उपविभाजनों तथा सी सी के पूर्वस्थापक सामान्य एकलों के सामन हैं।

यी डी सी में सामान्य एकलों के योजक चिह्न

यू डी सी के योजक चिह्न या संकेतक अंक वर्ग संख्याओं का निर्माण करने के कार्य में प्रमुख भूमिका अदा करते हैं। सी सी के संकेतक अंकों की तरह ही यू डी सी के संकेतक अंक भी प्रयुक्त पक्ष की श्रेणी को व्यक्त करते हैं। यही कारण है कि गहन वर्गीकरण के क्षेत्र में यू डी सी पद्धति विश्वभर में बहुत अधिक प्रचलित हो गई है।

रूपपरक सामान्य सहायक लघु कोष्ठक के भीतर योजक चिह्न शून्य के साथ रखे जाते हैं (0...) और अधिकतर इनका प्रयोग निरूपण के बाह्य स्वरूप को व्यक्त करने के लिए किया जाता है; जैसे, शब्दकोश, पत्रिका इत्यादि। इनका प्रयोग कुछ आंतरिक स्वरूपों को भी व्यक्त करने के लिए किया जाता है।

यू डी सी के स्थान एकल डी डी सी की भूक्षेत्र संख्या के सदृश हैं। यू डी सी में इन्हें लघु कोष्ठक के भीतर रखा जाता है 1/0); सी सी की तरह ही यहाँ पर भी स्थान एकलों के अंतर्गत राजनीतिक विभाजनों, मंडल विभजनों,, दिशानुसार विभाजनों, प्राकृतिक लक्षण सम्बन्धी विभाजनों इत्यादि का उल्लेख किया गया है।

यू डी सी के काल एकल सी सी के काल एकलों से बहुत अधिक मिलते-जुलते हैं। यू डी सी में मास, दिन, घंटे मिनट भी व्यक्त किए जा सकते हैं। काल—एकलों को दोहरे उदाहरण चिह्न "...") के मध्य रखा जाता है।

यू डी सी में सामान्य एकलों का अनुप्रयोग

निम्नलिखित कुछ उदाहरणों में यू डी सी में सामान्य एकलों के अनुप्रयोग को प्रदर्शित किया गया है। यहाँ पर हम केवल यपपरक सामान्य सहायकों, स्थान सामान्य सहायकों एवं काल सामान्य सहायकों के प्रयोग का ही उल्लेख करेंगे।

NOTES

रूपपरक सामान्य सहायक : निम्नलिखित उदाहरणों में आंतरिक (उदाहरणार्थ, इतिहास : History), एवं बाह्य (उदाहरणार्थ, पत्रिका : Journal) स्वरूप से सम्बन्धित सामान्य एकलों को प्रदर्शित किया गया है :

| | |
|-----------------------------------|----------|
| Bibliography on international law | 341 (01) |
| Dictionary of international law | 341 (03) |
| Journal of international law | 341 (05) |
| Teaching of international law | 341 (07) |
| History of international law | 341 (09) |

उपयुक्त उदाहरणों में रूप परक सामान्य सहायकों को योजक चिह्न 'शून्य' के साथ लघु कोष्ठक (0...) के भीतर रखा गया है।

स्थान सामान्य सहायक

डी डी सी एवं सी सी के सदृश यू डी सी में भी भौगोलिक एकलों की कॉफी अच्छी तरह से सुविस्तृत अनुसूची की व्यवस्था की गई है। इस अनुसूची में राजनीतिक एवं भू-आकृतिपरक विभाजनों को सम्मिलित किया गया है। ये सभी 'स्थान सामान्य सहायक' कहलाते हैं। इनका अनुप्रयोग बहुत सरल है जिसे आसानी से समझा जा सकता है। आपके लाभ को ध्यान में रखकर इनके अनुप्रयोग से सम्बन्धित कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप देखेंगे कि स्थान एकल संख्या को हमेशा बिना किसी उपसर्ग के लघु कोष्ठक में रखा जाता है।

327 (54) Foreign policy of India, यहाँ 327 = विदेश नीति (Foreign Policy) तथा (540) भारत (India) हैं।

दो देशों के बीच द्विपक्षी सम्बन्धों को भी आसानी से व्यक्त किया जा सकता है। इस प्रकार, 327 (540:41) Bilateral relations between India and the UK

उपर्युक्त उदाहरण में द्वितीय देश की द्योतक वर्ग संख्या (41 ये के (UK) को कोलन से जोड़ा गया है।

33 (540-22) Economic Conditions of Rural India यहाँ 33 अर्थशास्त्र (Economics), (540) = भारत (India) तथा (-22) = ग्रामीण मण्डल (rural zone) (मंडलों अथवा विशिष्ट क्षेत्रों को हाइफन द्वारा किसी अन्य स्थान के साथ जोड़ा जा सकता है)।

स्व-प्रगति परीक्षण

3. दशा सम्बन्धों की कौन-कौन सी तीन जातियाँ होती हैं?
4. अन्तःपंक्ति दशा सम्बन्ध को उदाहरण सहित समझाइये।

.....

.....

.....

.....

काल सामान्य सहायक

यू डी सी में काल एकलों का, जहाँ कहीं भी आवश्यक हो, प्रयोग किया जा सकता है। ये सी सी के काल एकलों के लगभग समान हैं। यू डी सी में काल एकलों को जोड़ने के लिए योजक चिह्न दोहरे उदहरण चिह्न ("....") का प्रयोग किया जाता है। यू डी सी के काल एकलों के अंतर्गत मास, सप्ताह, दिन, घण्टा, मिनट इत्यादि का, जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, प्रयोग किया जा सकता है। काल एकलों में ऋण चिह्न (-) का प्रयोग ईसा पूर्व की काल अवधियों को सूचित करने के लिए किया जाता है। काल एकल के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

| | |
|------------------------|----------------|
| 1988 | — "1988" |
| 15 अगस्त, 1947 | — "1947.08.15" |
| 6 नवम्बर, 1987 | — "1987.11.06" |
| 32 B. C. | — "-0032" |
| 6 ठी | — "05" |
| 19वीं शताब्दी | — "18" |
| 1950s (1950-1959) | — "195" |
| 18वीं से 20वीं शताब्दी | — "17/19" |

काल एकल का प्रयोग भी बहुत सरल है। उदाहरणार्थ :

Economic conditions in India in the 19th Century: 33(540) "18" (33 Economics (540) Inda तथा "18" 19th Century)

6. सार-संक्षेप

इस अध्याय में हमने निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया है :

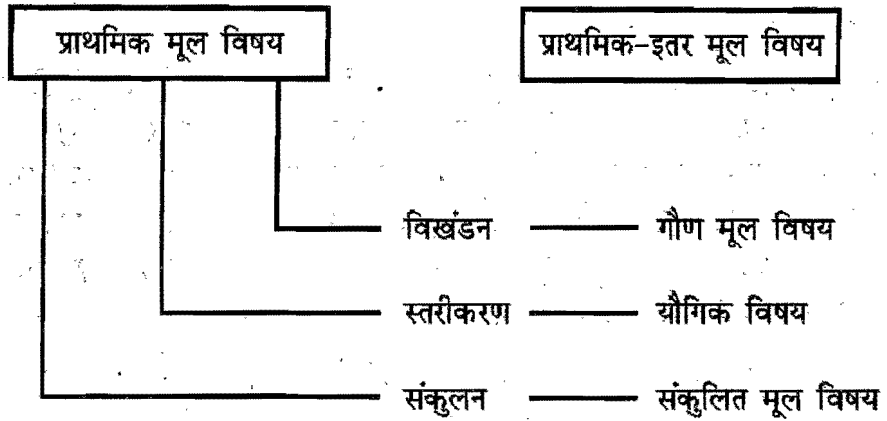
- (i) अंतरविषयी विषयों, जो दो विषयों के बीच किसी प्रकार के सम्बन्ध को प्रदर्शित करते हैं, को मिश्रित विषय कहते हैं। सहायक व्यवस्थापन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए वर्गीकरण के कार्य में इनकी पहचान करना आवश्यक है।
- (ii) ये मिश्रित विषय दशा सम्बन्धों को प्रदर्शित करते हैं, तथा पहला विषय प्राथमिक दशा को एवं दूसरा विषय गौण दशा को द्योतक करता है।
- (iii) मिश्रित विषय दो विषयों (अंतरविषयी), एक ही पक्ष के दो एकलों (अंतःपक्ष) या एक ही पंक्ति के दो एकलों (एक पक्ष में अंतःपंक्ति) के मध्य दशा सम्बन्धों को प्रदर्शित करते हैं।
- (iv) दशा सम्बन्ध की उपर्युक्त तीन जातियों के अतिरिक्त इनके छः प्रकार भी हैं—अर्थात् सामान्य, झुकाव, तुलना, भेद, उपकरण एवं प्रभाव दशा सम्बन्ध।
- (v) दशा सम्बन्धों की जातियों एवं प्रकारों को उदाहरण देकर समझाया गया है।
- (vi) कोलन क्लैसिफिकेशन, ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन एवं यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन के अनुसार दशा सम्बन्धों को उदाहरण देकर स्पष्ट किया गया है।
- (vii) सामान्य एकलों की जातियों एवं प्रकारों को समझाया गया है।
- (viii) कोलन क्लैसिफिकेशन, ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन एवं यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन में सामान्य एकलों के अनुप्रयोग को उदाहरण देकर स्पष्ट किया गया है।

7. स्व-प्रगति परिक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. मूल विषय अनेक प्रकार के होते हैं। मूल विषयों के निर्माण की विधियों एवं मूल विषय के प्रकारों के पारस्परिक सम्बन्ध का संक्षिप्त उल्लेख निम्नलिखित है :

NOTES

NOTES



सभी अन्य प्रकार के मूल विषयों के लिए प्राथमिक मूल विषय एक प्रमुख ढाँचा प्रस्तुत करते हैं।

2. मिश्रित विषय : वह विषय, जिसकी रचना दो या दो से अधिक विषयों, मूल अथवा यौगिक, के संयोजन से होती है।

उदाहरण : General relation between economics and sociology

Economics for statisticians

Economics influenced by political factors

3. दशा सम्बन्धों की तीन जातियाँ होती हैं। यह सम्बन्ध :
- (i) दो या दो से अधिक विषयों के बीच हो सकता है, इसे अंतर-विषय दशा सम्बन्ध (Inter-Subject Phase Relation) कहते हैं, अथवा
 - (ii) पक्ष एकलों की उसी अनुसूची के अंतर्गत दो या दो से अधिक एकलों के बीच हो सकता है; इसे अंतःपक्ष दशा सम्बन्ध (Intra-Facet Phase Relation) कहते हैं, अथवा
 - (iii) पंक्ति एकलों में से दो या दो से अधिक एकलों के बीच हो सकता है, इसे अंतःपंक्ति दशा सम्बन्ध (Intra-Array Phase Relation) कहते हैं।
4. अंतःपंक्ति दशा सम्बन्ध के अंतर्गत किसी पक्ष की एक ही पंक्ति के दो एकल विचार आपस में सम्बन्धित होते हैं। इस प्रकार के जटिल विषयों के उदाहरण निम्नलिखित हैं :
- (1) ग्रामीण एवं नगरीय जीवन की तुलना (Comparision of rural and urban life)
 - (2) डकैती एवं चोरी से सम्बन्धित कानूनों में अंतर (Difference between laws relating to dacoity and theft)
 - (3) मनोविज्ञान में राजनीतिक रूप से अक्षम एवं सामाजिक रूप से अक्षम व्यक्तियों का पारस्परिक सम्बन्ध (The relationship between politically handicapped and socially handi-capped persons in psychology)

7. मुख्य शब्द

अंत (Intra) : अंतर्गत (एक पक्ष अथवा एक पंक्ति के अन्तर्गत)।

एकल (Isolate) : वह एकल विचार जिसे किसी मूल वर्ग के साथ जोड़ा जा सकता है।

NOTES

- नामपद्धति (Nomenclature)** : किसी विषय में नामकरण की पद्धति।
- पंक्ति (Array)** : किसी वर्ग में किसी एक अभिलक्षण का प्रयोग कर उपविभाजनों का जो प्रथम समुच्चय प्राप्त होता है उसे पंक्ति कहते हैं। उदाहरण : खिलौना (उपयोग में लाई गई सामग्री के आधार पर उपविभाजन), गार (मिट्टी), लकड़ी, धातु, कागज, प्लास्टिक।
- पक्ष (Facet)** : किसी वर्ग में एक या एक से अधिक अभिलक्षणों का प्रयोग करने के आधार पर एकलों का जो संपूर्ण वर्ग प्राप्त होता है उसे पक्ष कहते हैं। (मूल पाठ में सम्मिलित उदाहरण में उल्लेखित एकल समूह तथा इनके उपविभाजन 'खिलौना' वर्ग के एक पक्ष का निर्माण करते हैं)।
- पश्चस्थापक सामान्य एकल (Posteriorising Common Isolates)** : पूर्व स्थापक सामान्य एकलों के विपरीत, जो अनुक्रम में बाद का स्थान देते हैं।
- पूर्व स्थापक सामान्य एकल (Anteriorising Common Isolates)** : वे सामान्य एकल जो किसी ग्राह्यता वर्ग के साथ जोड़े जाने पर, इस प्रकार से उपलब्ध वर्ग को व्यवस्थापन में ग्राह्यता वर्ग से पूर्व स्थान प्रदान करते हैं।
- मूल वर्ग (Basic Class)** : वर्गीकरण पद्धति में मुख्य वर्ग के रूप में परिगणित वर्ग।
- साहित्य समादेश (Literary Warrant)** : पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति में विभिन्न प्रावधानों के औचित्य की पुष्टि। यह किसी सिद्धांत पर आधारित नहीं होता, अपितु किसी वर्ग विशेष पर उपलब्ध कृतियों की वास्तविक संख्या पर आधारित होता है।
- स्मृति सहायक (Mnemonics)** : इस शब्द का अर्थ है स्मृति में सहायक। वर्गीकरण पद्धति में किसी एक विशिष्ट विचार को व्यक्त करने के लिए किसी एक अंक अथवा अंक समूह का निर्धारण और प्रयोग किया जाता है तथा जिस किसी वर्ग संख्या में इस विचार का समावेश होता है वहाँ पर इस विचार का निरूपण करने के लिए इसी निर्धारित अंक या अंक समूह का प्रयोग किया जाता है। किसी अवधारणा के एक समान निरूपण के लिए यह विधि अपनाई जाती है।

8. अभ्यास-प्रश्न

1. मूल, यौगिक एवं मिश्रित विषयों को उदाहरण सहित समझाइए।
2. दशा सम्बन्धों की जातियों का सोदाहरण वर्णन कीजिए।
3. वर्गीकरण पद्धतियों में दशा सम्बन्धों के प्रयोग की उपयोगिता बताइए।
4. सामान्य एकलों का अर्थ बताते हुए उनकी आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।
5. सामान्य एकलों के इतिहास का वर्णन कीजिए।

10. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Dewey Decimal Classification and Relative Index (1979). 19th ed. 3 vol. Albany : Forest Press.

NOTES

Raju, A.An (1984). Dewey Decimal, Universal and Colon Classification : A Study in Comparison. New Delhi: Ajanta Publications.

Ranganathan, S.R. (1987). Colon Classification. 7thed. Edited by M.A. Gopinath.

Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.

Ranganathan, S.R. (1967). Prolegomena to Library Classification. 3rd ed.

Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.

UDC International Medium Edition. English Text (BS 1000M: 1985). London : British Standards Institution.

पुस्तकालय वर्गीकरण में प्रयुक्त युक्तियाँ

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन के उद्देश्य।
2. परिचय
3. पुस्तकालय वर्गीकरण में प्रयुक्त युक्तियाँ
4. युक्तियों के प्रकार
 - 4.1 कालक्रम युक्ति
 - 4.2 भौगोलिक युक्ति
 - 4.3 विषय युक्ति
 - 4.4 वर्गक्रम युक्ति
 - 4.5 परिणनात्मक युक्ति
 - 4.6 पंक्ति एव श्रृंखला में ग्राह्यता के लिए युक्तियाँ
 - 4.7 अन्य युक्तियाँ : पक्ष, दशा, अध्यारोपण, स्मृति सहायक
5. वर्गीकरण पद्धतियों में युक्तियों का प्रयोग
 - 5.1 सी सी मे प्रयुक्त युक्तियाँ
 - 5.2 डी डी सी में प्रयुक्त युक्तियाँ
 - 5.3 यू डी सी में प्रयुक्त युक्तियाँ
6. सार-संक्षेप
7. स्व-प्रगति परीक्षण पश्नों के उत्तर
8. मुख्य शब्द
9. अभ्यास प्रश्न
10. संदर्भ ग्रंथ सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्याय में आपको पुस्तकालय वर्गीकरण में प्रयुक्त विभिन्न युक्तियों की जानकारी दी गई है और युक्तियों के प्रकार तथा विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों में उनके प्रयोग पर प्रकाश डाला गया है।

इस अध्याय का अध्ययन करने के पश्चात् आप :

- युक्तियों का स्पष्ट ज्ञान तथा पुस्तकालय वर्गीकरण में उनकी आवश्यकता की जानकारी प्राप्त करेंगे, तथा
- विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों में युक्तियों के प्रयोग की गहन जानकारी प्राप्त करेंगे।

2. परिचय

इस पाठ्यक्रम की 2 ईकाई के सामान्य सिद्धांत सिद्धांत (General Theory of Classification) की स्पष्ट जानकारी दी गई है; तथा यह भी प्रदर्शित किया गया है कि विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों जैसे कोलन क्लैसिफिकेशन, ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन एवं यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन इत्यादि में विषय जगत् का मानचित्रण किस प्रकार किया गया है। ईकाई 3 का उद्देश्य पुस्तकालय वर्गीकरण के उपागमों-विशेषतः अभिधारणात्मक एवं प्रणलीगत उपागम, मूलभूत श्रेणियों की अवधारणाओं, पक्ष विश्लेषण, अनुक्रम दशा संबंधों एवं सामान्य एकलों से आपका परिचय कराना है।

इस अध्याय में पुस्तकालय वर्गीकरण में युक्तियों की आवश्यकता विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों में इनके प्रयोग पर विशेष महत्त्व देते हुए, उनके उपयोग से प्राप्त होने वाले लाभों की व्याख्या करने का प्रयास किया गया है।

3. पुस्तकालय वर्गीकरण में प्रयुक्त युक्तियाँ

पुस्तकालय वर्गीकरण में प्रयुक्त युक्तियों से अभिप्राय उन घटकों से है जिन्हें वैश्लेषी-सेश्लेषणात्मक वर्गीकरण में पक्षों का निर्माण करने अथवा विद्यमान पक्ष के वाच्यार्थ को गहन बनाने तथा/या परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति में किसी विषय को तीक्ष्ण बनाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली विशेषता के आधार पर इन्हे कालक्रम युक्ति, भौगोलिक युक्ति इत्यादि कहते हैं। वर्गीकरण पद्धतियों में इन युक्तियों का वैचारिक तथा अंकन दोनों ही धरातल पर, जहाँ कहीं भी संभव हो, प्रयोग किया जाता है।

सामान्यतः युक्तियाँ निम्नलिखित प्रकार से लाभदायक हैं:

- इनके प्रयोग का प्रावधान होने पर एकलों की परिगणना नहीं करनी पड़ती, तथा इस प्रकार किसी भी अनुसूची में पंक्ति को छोटारूप दिया जा सकता है, एवं इसके फलस्वरूप संपूर्ण अनुसूची को भी छोटा रूप प्राप्त हो जाता है;
- वर्गीकरणकार को स्वायत्तता मिलती है; तथा
- इनका प्रयोग होने पर सुसंगत अनुक्रम, सहायक अनुक्रम, स्मृति सहायकों, पंक्ति में ग्रह्यता एवं श्रृंखला में ग्राह्यता के उपसूत्रों के अनुसार अनुरूपता स्वतः सुनिश्चित हो जाती है।

जहाँ तक एक युक्ति को दूसरी युक्ति के ऊपर वरीयता देने का प्रश्न है, यदि किसी स्थान-विशेष दो-या-दो से अधिक युक्तियाँ उपलब्ध हों तो सर्वप्रथम उपलब्ध युक्ति का प्रयोग किया जाना चाहिए, बशर्तते इसके विपरीत कोई और अधिक महत्पूर्ण तर्क नहीं हो। तथापि, कुछ स्थानों पर एक ही बार दो-या दो से अधिक युक्तियों का प्रयोग करना भी आवश्यक हो जाता है। उदाहरणार्थ, कुछ अवस्थाओं में-जैसे, किसी भाषा के लिए विशिष्ट संघटक अथवा ललित कलाओं के लिए शैली-प्रयोग में लाए गए संघटकों को आपस में सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करना चाहिए तथा संघटकों के पूरे समूह को लघु कोष्ठक में रखना चाहिए।

4. युक्तियों के प्रकार

वर्गीकरण पद्धतियों में किसी पक्ष अथवा विषय का निर्माण करने अथवा अके वाच्यार्थ को गहन बनाने के लिए निम्नलिखित युक्तियों का प्रयोग किया जाता है:

- (i) कालक्रम युक्ति (CD : Chronological Device)
- (ii) भौगोलिक युक्ति (GD : Geographical Device)
- (iii) विषय युक्ति (SD : Subject Device)
- (iv) वर्णक्रम युक्ति (ED : Enumeration Device)
- (v) परिगणनात्मक युक्ति (ED : Enumeration Device)
- (vi) पंक्ति एवं श्रृंखला में ग्राह्यता के लिए युक्तियाँ (Device for Hospitality in Arravs and Chains)
- (vii) अन्य युक्तियाँ-जैसे, पक्ष युक्ति, दशा युक्ति, अध्यारोपण युक्ति, स्मृति सहायक युक्ति (Other devices, such as, Facct Device , Phase Device, Super-Imposition Device, Mnemonic Device)।

4.1 कालक्रम युक्ति

(1) वैचारिक धरातल

“वैचारिक धरातल पर कालक्रम युक्ति वह युक्ति है जिसका प्रयोग एकलों की अनुसूची अथवा प्रणाली-आधारभूत विभाजनों में केंद्रीभूत विचारों का निर्माण करने अथवा उनको इनता प्रदान करने के लिए किया जाता है। ऐसा करते समय कालक्रम विशेषता का प्रयोग करके एकलों का व्यष्टीकरण किया जाता है। व्यष्टीकरण करते समय, जो भी सुविधाजनक या लाभदायक हो, उस विषय, वस्तु या सत्ता के जन्म, उद्भव या प्रारंभ के काल अथवा उसके प्रथम अन्वेषण या खोज या आविष्कार या प्रवर्तन या घटित होने से संबंधित काल अथवा अन्य किसी अवधि क, जो निश्चित रूप से उसके साथ किसी प्रकार से अथवा किसी तर्क के आधार पर संबद्ध की जा सके, का प्रयोग किया जाता है”।

(2) अंकन धरातल

“अंकन धरातल पर कालक्रम युक्ति का अर्थ है वैचारिक धरातल से संबद्ध कालक्रम युक्ति को, किस एकल विचार के निर्माण अथवा किसी एकल संख्या के वाच्यार्थ को गहन बनाने के लिए, कालक्रम सूचक संख्या का प्रयोग करके, अमल में लाना।”

(3) कालक्रम संख्या

(1) “कालक्रम संख्या के निर्माण के लिए जिस काल या अवधि को प्रयोग में लिया जाता है उसका संबंधित नियमों अथवा अनुसूचियों में विशेष रूप से उल्लेख होगा, यदि इसका उल्लेख नहीं किया गया है तो जो अवधि या काल अत्यधिक अपयुक्त हो उसे प्रयोग में लिया जाना चाहिए”।

(सी स के 7वें संस्करण के पृष्ठ 43-45 से युक्तियों से संबंधित CU, CV, CW, CX एवं CY अध्यायों को उद्धृत करने की स्वीकृति प्रदान करने के लिए शारदा रंगनाथन इण्डोमेंट फॉर लाइब्रेरी साइंस के प्रति आभार प्रकट करते हैं।)

(2) कालक्रम संख्या को “काल एकल” क अध्याय DH से लाना चाहिए। काल एकल संख्या का निर्माण करने के लिए संबंधित नियमों में विशेष रूप से उल्लिखित काल या अवधि के सूचक वर्ष का प्रथम अंक या उसके प्रथम दो अंकों या प्रथम तीन अंकों का प्रयोग किया जा सकता है। यदि इस बिंदु से संबंधित विशिष्ट नियम उपलब्ध न हों तो निम्नलिखित परंपरा का अनुसरण करना चाहिए :

NOTES

NOTES

- (क) पंक्ति के प्रथम एकल विचार के लिए, जिसके अवधि किसी शताब्दी में पड़ती हो, केवल शताब्दी प्रथम अंक का ही प्रयोग करना चाहिए। यह अंक रोमन दीर्घ अक्षर होगा।
- (ख) यदि पंक्ति के अन्य एकल विचार भी उसी प्रथम अंक के पात्र या हकदार हों तो प्रथम दो अंकों को प्रयोग में लेना चाहिए। इसमें दूसरा अंक हिंद-अरबी अंक होगा।
- (ग) यदि पंक्ति के अन्य कल विचार भी उन्हीं प्रथम दो अंकों के पात्र या हकदार हों तो उनमें से प्रथम एकल के लिए जिसकी अवधि उसी वर्ष में पड़ती हो, प्रथम तीन अंकों का प्रयोग करना चाहिए। इनमें से दूसरा एवं तीसरा अंक दोनों हिंद-अरबी अंक होंगे।
- (घ) यदि पंक्ति का प्रत्येक अन्य एकल विचार उन्हीं तीन अंकों का पात्र हो तो निकटवर्ती किस रिक्त वर्ष का प्रयोग किया जा सकता है।
- (ङ) यदि उपर्युक्त विधि के अनुप्रयोग के लिए कोई भी निकटवर्ती वर्ष खाली न हो तो अंक, 1,2, इत्यादि को क्रमशः तीन अंक वाली संख्या के साथ जोड़ा जा सकता है। इन्हें पूर्णांक समझना चाहिए न कि दशमलव भिन्न।
- (च) 1000 ई. काल के लिए उपर्युक्त विधान में उल्लिखित 'शताब्दी', 'दशक', एवं वर्ष पदों के स्थान क्रमशः 'सहस्राब्दी' एवं 'दशक' पदों को प्रयोग में लाना चाहिए।

(4) प्रणाली मूल विभाजन

“प्रणाली मूल विभाजन (System-Basic Division) के निर्माण के लिए कालक्रम युक्ति का प्रयोग किया जाता है।” उदाहरणार्थ, कोलन प्रयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ, कोलन क्लैसिफिकेशन के 7वें संस्करण के मुख्य वर्गों B-गणित, C-भौतिकी, E-रसायन शास्त्र, L-आयुर्विज्ञान एवं X-अर्थशास्त्र की अनुसूचियों के अंतर्गत प्रणालियों का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त मुख्य वर्ग 'साहित्य' में लेखक संख्या प्राप्त करने के लिए कालक्रम युक्ति का प्रयोग किया जाता है। स्थान एकलो की अनुसूचियों में भी कुछ विभाजन कालक्रम युक्ति के आधार पर प्राप्त किए जाते हैं। भाषा एकलों की अनुसूची में तथ N % मुख्य वर्ग ललित कला में भी कालक्रम युक्ति का उपयोग किया गया है। पूर्वस्थापक सामान्य एकलों में भी [P2] के एकलौंका गहनता प्रदान करने के लिए कालक्रम युक्ति का प्रयोग किया जाता है।

सी सी के 7वें संस्करण के अनुसार कालक्रम युक्ति के प्रयोग से संबंधित कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

| | |
|-----------------|----------------------------------|
| S-M | Experimental Psychology |
| CV” m 44, N73 | Indian Journal of Space Physics |
| O, 157, 1M61, 1 | Gitanjali by Rabindranath Tagore |
| CN48 | Commonwealth |
| N6-(44, J) | Moghul Painting |

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. पुस्तकालय वर्गीकरण में प्रयुक्त युक्तियों का अधिप्राय क्या है?
2. वैचारिक एवं अंकन धरातल पर 'काल क्रम युक्ति' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4.2 भौगोलिक युक्ति

(1) वैचारिक धरातल

“वैचारिक धरातल पर भौगोलिक युक्ति वह युक्ति है जिसका प्रयोग एकलों की किसी अनुसूची अथवा कुछ विषेश मूल विभाजनों में केंद्रीभूत विचरों के निर्माण के लिए अथवा उनको गहनता प्रदा करने के लिए किया जाता है। ऐसा करते समय भौगोलिक अभिलक्षण का प्रयोग करके एकलों का व्यष्टीकरण किया जाता है। व्यष्टीकरण करते समय, जो भी सुविधाजनक या लाभदायक हो, उस विषय, वस्तु सत्ता के जन्म, उद्भव या प्रारंभ या प्रवर्तन या प्रचालन, अथवा उसके व्यपक्त्व अथवा प्रवर्तन के स्थान से संबंधित भौगोलिक क्षेत्र आंवा अन्य किसी स्थान, जिसे निश्चित रूप से उसके साथ किसी प्रकार से अथवा किसी तर्क के आधार पर संबद्ध किया जा सके, का प्रयोग किया जा सकता है।”

(2) अंकन धरातल

“अंकन धरातल पर भौगोलिक युक्ति का अर्थ है, वैचारिक धरातल से संबद्ध भौगोलिक युक्ति की, किसी एकल विचार के निर्माण के लिए अथवा किसी एकल संख्या के वाच्यार्थ का गहन बनाने के लिए भौगोलिक क्षेत्र की सूचक संख्या का प्रयोग करके, अमल में लाना।”

“भाषा-परिवारों से संबंधित सूचियों में जिन भाषाओं को उल्लेख नहीं है उन भाषाओं; एशिया, यूरोप अमेरिका एवं आस्ट्रेटिया की भाषाओं के क्रमशः तीन परिवारों से बाहर की भाषाओं, क्षेत्रीय बोलियों एवं वर्ग बोलियों (Jargon) का व्यष्टीकरण करने के लिए संबंधित नियमों में भौगोलिक युक्ति के प्रयोग की अनुमति दी गई है। कुछ धर्मों के व्यष्टीकरण के लिए भी भौगोलिक युक्ति का प्रयोग किया जाता है।”

सी सी के 7वें संस्करण में अनेक स्थानों पर भौगोलिक युक्ति प्रयो किया गया है। सी सी के 7वे संस्करण की अनुसूचियों में उन सभी स्थानों का स्पष्ट उल्लेख किया गया है जहाँ भौगोलिक युक्ति का प्रयोग किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ—SY—समाजिक, मनोविज्ञान (Social Psychology), V—इतिहास (History), Y—समाजशास्त्र (Sociology), P—भाषा विज्ञान (Linguistics)। सामान्य एकलो एवं Q—धर्म (Religion) की अनुसूचियों में भौगोलिक युक्ति के प्रयोग का उल्लेख है।

सी सी संस्करण 7 के अध्याय ‘DJ स्थान एकल’ से भौगोलिक एकलो के लिए अंक प्राप्त किए जा सकते हैं।

SY—social Psychology की अनुसूचियों में [PI] व्यक्ति सूचक एकलों के स्पेसियेटर “fw by culture” को भौगोलिक युक्ति के अनुसार विभाजित किया जाता है।

उदाहरण : Indian Culture and Social Psychology

SY, 1 = fw44

मुख्य वर्ग V—History में ‘18 Foreign Policy’ के लिए [IMP1] के एकलों में भौगोलिक युक्ति का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण : Indian foreign Policy towards Pakistan

V,440844X

मुख्य वर्ग ‘Y—Sociology के [1P1] एकलों 6B एवं 6G को, जो ‘विदेशी मूल’ (foreign born) को व्यक्त करते हैं, भौगोलिक युक्ति के अनुसार विभाजित किया जाता है।

उदाहरण : Sociogy of British born people Pakistan

Y, 6G56,44X

NOTES

मुख्य वर्ग 'P Linguistics' में [P1] के विशिष्ट संघटक b,d,j को भौगोलिक युक्ति के द्वारा और गहन बनाया जाता है।

उदाहरण :

NOTES

P,153 = d44X

मुख्य वर्ग 'Q-Religion' की अनुसूचियों में 'Q8-Other Religion' को भौगोलिक युक्ति द्वारा विभाजित किया जाता है।

| | |
|-------|----------------|
| Q8 | Other Religion |
| Q8412 | Confucianism |
| Q8441 | Sikhism |

भाषा एकलों की सारणी में अन्य भाषाओं की वर्ग संख्या भौगोलिक युक्ति द्वारा प्राप्त की जाती है

4 Asian Languages

41 Chaines

42 Japanese

पूर्वस्थापक सामान्य एकलों की सारणी में [P1] एकल भौगोलिक युक्ति द्वारा प्राप्त किए जाते हैं।

उदाहरण : Indian Journal of Economics (Started in 1972)

X" m44, N72

4.3 विषय युक्ति

(1) वैचारिक धरातल

“वैचारिक धरातल पर विषय युक्ति है जिसका प्रयोग विषय अभिलक्षण के आधार पर, एकलों की अनुसूची में केन्द्रीयभूत विचारों के निर्माण के लिए अथवा उनको गहनता प्रदान करने के लिए किया जाता है। इस प्रक्रिया के द्वारा एकलों का व्यष्टकरण किया जाता है, तथा व्यष्टीकरण उस विषय के सुविधाजनक एवं लाभदायक होने पर आधारित है”।

(2) अंकन धरातल

“अंकन धरातल पर विषय युक्ति का अर्थ है वैचारिक धरातल से संबद्ध विषय युक्ति को, किसी एकल विचार के निर्माण के लिए अथवा किसी एकल संख्या के वाच्यार्थ को गहन बनाने के लिए किसी विषय वर्ग संख्या का प्रयोग करके, अमल में लाना। जो भी वर्ग संख्या इस प्रकार प्रयोग में लाई जाए उसे लघु कोष्ठक में रखना चाहिए; तथा इस वर्ग संख्या को विलयित (Fused) मानकर इसे एकल अंक के रूप में समझना चाहिए”।

“कुछ विषयों में इस युक्ति का प्रयोग भिन्न-भिन्न स्थितियों में किया जाता है। सी सी की अनुसूचियों में विषय युक्ति के प्रयोग से संबंधित अनेक उदाहरणों का उल्लेख है। विशेष रूप से यहाँ अनुसूची के Ethics (R4) भाग एवं [1M1] गुणधर्म” अनुसूची का हवाला दिया जा सकता है। कुछ स्थानों पर यह भी पता लगेगा कि विषय युक्ति के लिए जो संख्या प्रयोग में लाई गई है उसका थोड़ा सा रूपान्तरण कर दिया गया है, किंतु वर्गीकरणकार—विशेष को इस प्रकार के रूपान्तरण मुक्त रूप से या स्वेच्छा से नहीं करने चाहिए। इस प्रकार की रूपान्तरित विषय युक्ति 'तुल्य विषय युक्ति' (Quas-subject Device) कहलाती है। इस प्रकार का प्रावधान करके सूचीबद्ध स्मृति सहायकों के उपसूत्र का उचित अनुपालन गया है।

उदाहरण :

| | |
|-------------|---|
| 2,B (V;78) | National Archives Library |
| NA,9 (2,J3) | Architecture of College Library Buildings |
| R4,4 (T) | Ethics for Teachers |
| V;3(X) | State and Economics |

पुस्तकालय वर्गीकरण में
प्रयुक्त युक्तियाँ

NOTES

कुछ स्थानों पर 'स्थान-एकल' के विशेष संघटकों का भी विषय युक्ति के द्वारा और आगे विभाजन किया जाता है।

उदाहरण :

| | |
|-------------|------------------------|
| 1 = (Q7) | Muslim Countries |
| 1 = (P,111) | English Speaking World |

4.4 वर्णक्रम युक्ति

(1) वैचारिक धरातल

“वैचारिक धरातल पर वर्णक्रम युक्ति है जिसका प्रयोग एकलों की अनुसूची में केंद्रीयभूत विषयों का निर्माण करने के लिए अथवा उनको तीक्ष्णता प्रदान करने के लिए नाम—अभिलक्षण के आधार पर किया जाता है; बशर्तें इस युक्ति के लिए जो नाम प्रयोग में लाए जाएँ वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्य हों तथा उनका वर्णानुक्रम व्यवस्थापन, यदि कुछ अधिक सहायक हो तो कम-से-कम किसी अन्य व्यवस्थापन के समान तो सहायक हों”।

(2) अंकन धरातल

“अंकन धरातल पर वर्णक्रम युक्ति का अर्थ है वैचारिक धरातल से संबद्ध वर्णक्रम युक्ति को, किस एकल परिवार के निर्माण के लिए अथवा किसी एकल संख्याओं के वाच्यार्थ को गहन बनाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्य नाम का प्रथम अथवा उसके प्रथम दो, या प्रथम तीन इत्यादि आद्याक्षरों का प्रयोग करके अमल में लाना। किंतु “1” अक्षर के स्थान पर “J” अक्षर का तथा “O” के स्थान पर “P” अक्षर का प्रयोग किया जाना चाहिए”।

उदाहरणार्थ : Othello (English drama by Shakespeare) = O,111,2J64,P. यहाँ इस वर्ग संख्या में “O” अक्षर के स्थान पर “P” अक्षर का प्रयोग किया गया है।

(3) एकलों के नाम जिनके प्रथम तीन अक्षर समान हैं

“यदि एक से अधिक एकल संख्या तीन समान आद्याक्षरों से युक्त हो तो ऐसी एकल संख्याओं, में द्वितीय के साथ 1, तृतीय के साथ 2 इत्यादि अंक, क्रमशः उक्त तीन आद्याक्षरों के बाद जोड़े जा सकते हैं”।

(4) बहु-नामक पदों के लिए वर्ग संख्या

“द्विपद नामों—इर्थात् दो शब्दों से निर्मित नामों—के लिए वर्णक्रम युक्ति का प्रयोग करते समय संघटक पद के लिए वर्ण युक्ति का उपयोग करना चाहिए तथा दोनों वर्णयुक्ति संघटकों को संकेतक अंक “+” (धन) से जोड़ देना चाहिए”।

उदाहरण : शेक्सपीयर के नाटकों के नामों के आधार पर—

| | |
|--------|---------------------|
| M + V | Merchant of Venice |
| T + S | Taming of the Shrew |
| TW + N | Twelfth Night |

NOTES

सामान आद्याक्षरों वाले नामों क समस्या का हल निकालने के लिए निम्नांकित पिरपाटी आपनाई जाती है। अत्यधिक वरीय सत्ता के नाम का केवल प्रथम अक्षर ही प्रयोग में लाया जा सकता है—अर्थात् वह सत्ता जिसका अधिकतम साहित्य समादेश हो अथवा वह प्रथम सत्ता या वस्तु जिसके बारे में पुस्तक प्राप्त हुई हो। यदि किसी दूसरी सत्त के नाम का आद्याक्षर भी वही हो तो नाम के दो आद्याक्षरों को प्रयोग में लाया जा सकता है तथा इस प्रकार प्रयोग के लिए आवश्यक सीमा तक आद्याक्षरा की संख्या बढ़ाई जा सकती है”।

“सामान्यतः अनुसूचियों में अथवा नियमों में उन स्थानों का उल्लेख होता है जहाँ वर्णक्रम युक्ति का प्रयोग किया जा सकता है।”

(5) वर्णक्रम युक्ति का अनियंत्रित प्रयोग

“प्रथम क्रम की पंक्ति में अथवा उस स्थिति में जब वर्णक्रम संख्या रिक्त अंक के बाद आती है, वर्णक्रम युक्ति का प्रयोग बिना किसी पाबंदी के किया जा सकता है।”

सी सी के 7वें संस्करण में इस युक्ति का बहुत अधिक प्रयोग किया जाता है। वर्णक्रम युक्ति के प्रयोग के बारे में अनेक स्थानों पर स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं, जैसे भाषा एकल अनुसूची, भौगोलिक एकल अनुसूची, सूक्ष्म जीव विज्ञान में विशेष वायरसों एवं जीवाणुओं के नामों के लिए, अथवा अभियांत्रिकी में विभिन्न ट्रेड मार्क की साइकिलों के नामों के लिए, कृषि शास्त्र में चावल की विभिन्न किस्मों के नामों के लिए, मुख्य वर्ग साहित्य में लेखकों की विशिष्ट कृतियों के लिए इत्यादि।

उदहरण :

Shakespeare's Macbeth

0.111,2J64,M

Basmati Rice

J,381B

Atla Bicycle

D935A

The Ganga River

44 = 9N = zf 70G

Bantu Language

(यह अफ्रीका की एक भाषा है) = 6B

Paramecium Coandatum Protozoa

GV, 8P + C

Congress Party of India

V, 44, 47C

Banaras Hindu University

T,18.445,t4,B

4.5 परिगणनात्मक युक्ति

(1) वैचारिक धरातल

“वैचारिक धरातल पर परिगणनात्मक युक्ति वह युक्ति है जिसका प्रयोग अनुसूची की किसी भी पंक्ति में केंद्रीयभूत विचारों का निर्माण उनका परिगणन करके किया जाता है, तथा यह परिगणन मौलिक स्मृति सहायक उपसूत्र अथवा सहायक अनुक्रम के किसी सिद्धांत पर आधारित अधिमान्य अनुक्रम में किया जाता है”।

(2) अंकन धरातल

“अंकन धरातल परिगणनात्मक युक्ति का अर्थ है वैचारिक धरातल में संबद्ध परिगणनात्मक युक्ति को, अनुसूची की किसी भी पंक्ति में किसी एकल विचार के निर्माण के लिए, अंकन पद्धति से संबद्ध संख्याओं का लगातार अथवा रिक्त छोड़कर, प्रयोग करके अमल में लाना”।

(3) सूचीबद्ध स्मृति सहायक

“परिगणनात्मक युक्ति पर आधारित कुछ अनुसूचियाँ प्रायः सूचीबद्ध स्मृति सहायकों के लिए आधार बनाती हैं।”

4.6 पंक्ति एवं श्रृंखला में ग्राह्यता के लिए युक्तियाँ

चूँकि विषय जगत् तीव्र गति से बढ़ रहा है अतः अपने नाम को सार्थक बनाने हेतु किसी भी वर्गीकरण पद्धति को ऐसी कुछ विशेषताएँ एवं प्रक्रियाएँ एवं प्रक्रियाएँ अपनानी चाहिए जिनके द्वारा वह नवोदित विषयों एवं विचारों को पहले से ही विद्यमान वर्गों/पंक्तियों के फिलियेटरी (सह संबंधित) संबंधों को अस्त-व्यस्त किए बिना, उपयुक्त स्थान पर समायोजित कर सके। वह वर्गीकरण पद्धति जो

वर्धनशील विषय जगत् की इस अपेक्षा या आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम है, ग्राह्यशील वर्गीकरण पद्धति कहलाती है। वर्गीकरण पद्धति की ग्राह्यशीलता को सुनिश्चित करने के लिए, उसमें परिवर्तनशील अंकन पद्धति आपनाई जानी चाहिए, ताकि उसके द्वारा इसमें वर्धनशील विषय जगत् की अपेक्षा के अनुकूल असीमित ग्राह्यता लाई जा सके।

दूसरे शब्दों में, समकक्ष वर्ग के अनुक्रम युक्त पंक्ति के किसी भी छोर पर अथवा उसकी दो लगातार संख्याओं के मध्य नवजात विषय/विचार को उपयुक्त स्थान पर समायोजित किया जाना चाहिए। पहली व्यवस्था को पंक्ति के दोनों छोर बहिर्निवेशन के नाम से जाना जाता है तथा दूसरी अवस्था को, पंक्ति की किन्हीं दो विद्यमान लगातार संख्याओं के मध्य अंतर्निवेशन के नाम से जाना जाता है।

पंक्ति में बहिर्निवेशन : पंक्ति में बहिर्निवेशन के उपसूत्र के अनुसार “वर्ग संख्याओं या एकल संख्याओं की पंक्ति के आरंभ एवं अंत में अनेक नवीन समकक्ष समकक्ष संख्याओं को स्थान देने की व्यवस्था होनी चाहिए।”

इस उपसूत्र की अपेक्षा को पूरा करने के लिए विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियाँ में दो युक्तियाँ—अर्थात् रिक्त स्थान युक्ति (Gap Device) एवं सेक्टराइजिंग डिजिट युक्ति (Sectorising Digit Device) अपनाई गई है।

रिक्त स्थान युक्ति : इस युक्ति के अनुसार किसी पंक्ति के लिए प्रयुक्त अंकन समुच्चय के आरंभ एवं अंत में कुछ अंक अप्रयुक्त छोड़ दिए जाते हैं। इस युक्ति के द्वारा बहिर्निवेशन को कुछ सीमा तक ही सुनिश्चित किया जा सकता है क्योंकि सभी अप्रयुक्त अंक किसी भी समय समाप्त हो सकते हैं। अप्रयुक्त अंक समाप्त होने की स्थिति में पंक्ति में और बहिर्निवेशन करना असंभव हो जाएगा। विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियाँ जैसे डी डी सी सी एवं यू डी डी में बहिर्निवेशन को सुनिश्चित करने वाली एक प्रकार की रिक्त स्थान युक्तियाँ मौजूद हैं। ये रिक्त स्थान पूर्णतः आकस्मिक हो सकते हैं, हालांकि कभी-कभी जानबूझकर भी इनका सहारा लिया जाता है।

NOTES

सी सी के 7वें संस्करण में विषय जगत् 1के [IPI] एकलो की अनुसूची में अंक 7 एवं 8 रिक्त स्थान के रूप में अप्रयुक्त छोड़े गए हैं। इस प्रकार—क

NOTES

- | | | |
|---------------|--------------------|-----------------------------|
| 1. Science | 2. Natural Science | 3. Social Science |
| 4. Philosophy | 5. Religion | 6. Fine Arts and Literature |

हिंद-अरब मूल के संख्याकों जैसे शुद्ध अंकन आधार में पंक्ति को दोनों छोर पर विस्तारित करने के लिए अन्य प्रकार के प्रतीक चिह्नों—जैसे रोमन लघु एवं रोमन दीर्घ अक्षर—को भी प्रयोग में लाकर बहिर्निवेश संभव हो सकता है। वस्तुतः यह व्यवस्था भी अंक अप्रयुक्त छोड़ने की युक्ति के समान ही साबित होगी।

सेक्टराइजिंग डिजिट युक्ति : रिक्त अंक विधि की सहायता किसी भी पंक्ति की क्षमता को बढ़ाने के लिए इस युक्ति को प्रयोग में लाया जाता है। (प्रोलेगोमेना, पृष्ठ 238)। बहिर्निवेशन के उपसूत्र की मांग को पूरा करने के लिए इस विधि को अपनाया जाता है, क्योंकि इसके द्वारा किसी भी पंक्ति के आरंभ एवं अंत में क्रमशः बहिर्निवेशन की प्रक्रिया से सरल बनाया जा सकता है। संबंधित अभिधारणा के अनुसार रिक्त अंक वह अंक होता है जिसका क्रमसूचक मान तो होता है किंतु उसका अर्थगत मान नहीं होता। डी डी सी एवं यू डी सी में 0 एवं 9 संख्याओं को कुछ पंक्तियों में प्रायः रिक्त अंक के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। दूसरी ओर, सी सी में सामान्यतः z, 9, Z अंक रिक्त अंक के रूप में प्रयोग में लाए जाते हैं। अंक 0 (जीरो) का भी रिक्त अंक के रूप में प्रयोग किया जाता है।

उदाहरणार्थ, यदि हिंद-अरब मूल के 1 से 9 तक के अंकों का प्रयोग किया जाता है तो हम पंक्ति में केवल 9 वर्गों को ही स्थान दे सकते हैं किंतु पंक्ति में यदि 9 से अधिक वर्गों को स्थान देना हो तो समस्या उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार की समस्याजनक स्थिति का सामना करने के लिए अभिधारणा के अनुसार अंक 9 को रिक्त अंक मान लिया गया है। इस प्रकार समकक्ष संख्याओं का निम्नलिखित समुच्चय प्राप्त हो जाता है—

1 2 3 4 5 6 7 8, 91 92 93 94 95 96 97 98, 991 992...998

इस प्रक्रिया का किसी भी सीमा तक विस्तार किया जा सकता है एवं इस प्रकार समकक्ष संख्याओं का नया समुच्चय बनाया जा सकता है। यह कहना कि संख्यांक 1 एवं 998 समकक्ष है तर्कसंगत प्रतीत न हो अथवा हास्यास्पद लगे, किंतु यह सही है; क्योंकि अभिधारणा के अनुसार अंक 9 को रिक्त अंक मान लिया गया तथा इस अंक का केवल क्रमबोधक मान है, न कि अर्थगत मान। दूसरे शब्दों में, 91, 92-98 अंक युगल एवं 991-998 अंकों त्रयी में से प्रत्येक को एकल अंक मान लिया गया है।

पंक्ति में अंतर्निवेशन : पंक्ति में अंतर्निवेशन के उपसूत्र के अनुसार “वर्ग संख्याओं अथवा एकल संख्याओं की पंक्ति में किसी भी स्थान पर अनेक नवीन समकक्ष संख्याओं को स्थान देने की क्षमता होनी चाहिए”।

इस उपसूत्र की मांग को पूरा करने के लिए विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों में चार विभिन्न दृष्टिकोण अपनाए गए हैं—अर्थात् रिक्त स्थान युक्ति, मिश्रित अंकन आधार, नवीन प्रकार के अंकों का सन्निवेश, रिक्तक अंक, एवं रिक्त तथा रिक्तक अंक युक्तियाँ।

रिक्त स्थान युक्ति : इस युक्ति के अनुसार पंक्ति के कुछ स्थलों पर, संबंधित स्थिति को ध्या में रखकर, नवीन वर्गों या नवीन एकलों का अंतर्निवेशन करने के लिए अंकन में कुछ स्थान खाली छोड़ दिए जाते हैं। किंतु ये रिक्त स्थान कभी-न-कभी भर सकते हैं।

उदाहरणार्थ : सी सी के 7वें संस्करण में 8 : Management वर्ग के [1P1] एकलों की अनुसूची में 4 एवं 5 संख्याओं को रिक्त स्थान युक्ति के रूप में, पंक्ति में अंतर्निवेशन को बाद में सुविधाजनक बनाने के लिए, अप्रयुक्त छोड़ दिया गया है।

- | | |
|------------------|-------------------|
| 1 Top management | 6 Committee |
| 2 Board | 7 Chief executive |
| 3 General body | 8 Department |

इसी प्रकार सी सी के 7वें संस्करण में U : Geography के [1P1] एकलों की अनुसूची में 4, 5, 6, 8 एवं 91 से 97 संख्याओं को रिक्त स्थान युक्ति के रूप में, पंक्ति में अंतर्निवेशन को बाद में सुविधाजनक बनाने के लिए, अप्रयुक्त छोड़ दिया है। इस प्रकार :

- | | |
|------------------|-------------------------|
| 1 Map | 7 Marine map |
| 2 Map projection | 98 topographical survey |
| 3 Globe | |

NOTES

डी डी सी के —17वें संस्करण में 770 Photography and Photographs वर्ग में रिक्त स्थान युक्ति को अपनाया गया था। निम्नांकित पर ध्यान दें:

- | | |
|-----|--------------------------------|
| 773 | Pigment process of printing |
| 778 | Specific fields of photography |

मिश्रित अंकन आधार : जब अंकन का आधार मिश्रित होता है तो जीरो या सेक्टर (प्रथम एवं अंतिम सेक्टर के आलावा) के अनुसार बहिर्निवेशन का विषय समझा जा सकता है। उदाहरणार्थ 91 को, जो सेक्टर (S-7) बहिर्निवेशन है, 8 एवं A के मध्य अंतर्निवेश माना जा सकता है।

नवीन प्रजाति के अंकों का सन्निवेश : नवीन जाति के किसी अंक का क्रमबोधमान निर्धारित करके, उसका किसी भी पंक्ति के दो अंकों के मध्य अंतर्निवेशन किया जा सकता है। सी सी के छठे संस्करण में 'आध्यात्मिक अनुभूति एवं रहस्यवाद' (Spiritual Experience and Mysticism) का द्योतित करने वाले अंक का M-Useful Arts-एवं N-Fine Arts के मध्य अंतर्निवेशन किया गया है।

रिक्तक अंक : किसी भी पंक्ति में अंतर्निवेशन को सरल बनाने के लिए रंगनाथन न कुछ अंकों को रिक्तक अंक (Emptying digits) मान लिया। रिक्तक अंक वह अंक होता है जिसका सामान्य क्रमबोधमान एवं अर्थगत मान दोनों की होते हैं, तथा यह अपने पूर्ववर्ती अर्थपूर्ण अंक को, किसी भी विचार को निरूपित करने की क्षमता से वंचित कर देता है। दूसरे शब्दों में, यह मान लिया गया है कि रिक्तक अंक अपने पूर्ववर्ती अंक के अर्थगत मान को समाप्त कर देता है तथा इस प्रकार उस पूर्ववर्ती अंक का केवल क्रमबोध मान ही शेष रह जाता है। इस दृष्टिकोण के आधार पर T, V एवं X को रिक्तक अंक मान लिया गया है। अतः अंक युगल JX एवं KX क्रमशः अंकों के समकक्ष की स्थिति को व्यक्त करते हैं। सी सी के 7वें संस्करण की मूल विषयों की अनुसूचियों में J-Agriculture एवं K-Zoology के मध्य JX Forestry का अंतर्निवेशन किया गया है, तथा K-Zoology एवं L-Medicine के मध्य KX-Animal Husbandary का अंतर्निवेशन किया गया है।

रिक्त रिक्तक अंक : U, W एवं Y को रिक्त-रिक्तक अंक (Empty-Emptying Digit) मान लिया गया है। ये अंक रिक्त एवं रिक्तक दोनों हैं। दूसरे शब्दों में, इन अंकों का क्रमबोध मान तो होता है किंतु ये अर्थगत मान रहित होते हैं तथा ये अपने पूर्ववर्ती अंकों को भी अर्थगत मान से वंचित कर देते हैं, एवं इस प्रकार उस पूर्ववर्ती अंक का केवल क्रमबोध मान ही शेष रहता है। अतः जब U, W एवं Y का प्रयोग किसी मूल विषय संख्या अथवा एकल संख्या को व्यक्त करने के लिए किया जाता है तो उनके बाद योज्य अंक हमेशा सारगर्भित या अर्थपूर्ण अंक होता है।

इस प्रकार सी सी के 7वें संस्करण में अंक-त्रयी के प्रावधान के द्वारा और अधिक मूल विषयों का अंतर्निवेशन संभव हो गया है। इस प्रकार:

- | | |
|-----|-----------------------|
| L | Medicine |
| LUD | Medical technology |
| LU5 | Public health |
| LYX | Medical Jurisprudence |

NOTES

श्रृंखला में ग्राह्यता

पंक्ति के समान ही, वर्गों की अथवा श्रेणीबद्ध एकलों (Ranked Isolates) की श्रृंखला में ग्राह्यता की क्षमता होनी चाहिए, ताकि श्रृंखलाके अंत में अथवा लगातार क्रम में व्यवस्थित दो अधीनस्थ संख्याओं के मध्य नवजान विचारों को समायोजित किया जा सके। दूसरे शब्दों में, श्रृंखला में बहिर्निवेशन एवं अंतर्निवेशन की क्षमता होनी चाहिए ताकि पहले से ही दियमान वर्गों या श्रेणीबद्ध एकलों के पारस्परिक संबंधों को अस्त-व्यस्त किए बिना नवीन विचारों को वर्तमान क्रम में उपयुक्त स्थान मिल सके। श्रृंखला में बहिर्निवेशन एवं अंतर्निवेशन से संबंधित विविध युक्तियों का वर्णन निम्नलिखित है।

श्रृंखला में बहिर्निवेशन : श्रृंखला में बहिर्निवेशन के उपसूत्र के अनुसार "वर्ग संख्याओं अथवा एकल संख्याओं की श्रृंखला के अंत में अनेक उत्तरवर्ती या अनुक्रमिक कड़ियों के अंतर्निवेशन की क्षमता होनी चाहिए"। इसका यह अर्थ है कि अंकन व्यवस्था में ऐसी श्रृंखला का स्थान होना चाहिए जिसका किसी भी संख्यांक से अंत हो सके अथवा आवश्यकतानुसार जिसका किसी भी सीमा तक विस्तार किया जा सके।

यदि हम वर्धनशील विषय जगत् क संबंध में विस्तार हास के उपसूत्र का परिपालन करने पर विचार करें तो इस उपसूत्र का महत्त्व स्पष्ट हो जाता है। अतः वर्गीकरण पद्धति में जो भी अंकन पद्धति अपनाई जाए वह काफी परिवर्तनशील या बहुमुखी एवं लचीली होनी चाहिए तथा उसमें इस उपसूत्र की अपेक्षा को पूरा करने के लिए आवश्यक युक्तियों का प्रावधान होना चाहिए। श्रृंखला में ग्रह्यता (बहिर्निवेशन) को सुनिश्चित करने के लिए जिन कतिपय युक्तियों को उपयोग में लाया जाता है, निम्नलिखित है:

- रिक्त स्थान युक्ति (Gap Device)
- दशमलव भिन्न युक्ति (Decimal Fraction Device)

रिक्त स्थान युक्ति : कुछ वर्गीकरण पद्धतियों में, पंक्ति में किसी विशिष्ट संख्या के बाद अप्रयुक्त संख्यांक पाए जाते हैं, जो उस विशिष्ट संख्या के उप विभाजन जैसे प्रतीत होते हैं। यह व्यवस्था रिक्त स्थान युक्ति कहलाती है। ऐसी दशा में पदानुक्रम एवं अभिव्यंजकता के उपसूत्रों का स्पष्ट रूप में उल्लंघन होता है। यदि ऐसे रिक्त स्थान विद्यमान भी हों तो उनका श्रृंखला में बहिर्निवेशन के लिए बहुत ही सीमित प्रयोग होता है।

दशमलव भिन्न युक्ति : इस युक्ति के अनुसार प्रत्येक वर्ग संख्या को शुद्ध दशमलव भिन्न के रूप में माना जाता है। इस युक्ति के द्वारा वर्धनशील विषय जगत् में नवजात वर्ग या नवजात एकल की श्रृंखला में रचना कर दी जाती है अथवा समायोजित कर लिया जाता है। अर्थात् इस श्रृंखला की अंतिम कड़ी की रचना करने वाले वर्ग अथवा एकल का नवीन अतिरिक्त अभिलक्षण के आधार पर उपविभाजन पर दिया जाता है। वस्तुतः इस युक्ति के अनुसार अंतिम कड़ी के संख्यांक के साथ एक अंक जोड़ दिया जाता है। पदानुक्रम एवं अभिव्यंजकता के उपसूत्रों का उल्लंघन किए बिना ही इस प्रक्रिया को असीम मात्रा में जारी रखा जा सकता है। इस प्रकार, इस युक्ति के द्वारा प्रत्येक नवीन वर्ग अथवा एकल को, जैसी भी स्थिति हो, किस भी विद्यमान वर्ग संख्या के क्रमबोध मान को अस्त-व्यस्त किए बिना, स्पष्ट सहायक संख्यांक प्रदान किया जा सकता है। डी डी सी, यू डी सी, एवं सी सी में श्रृंखला में असीमित बहिर्निवेशन प्रदान करने के लिए इस युक्ति को प्रयोग में लाया जाता है।

| BC (बी सी) | CC (सी सी) | विषय | DDC (डी डी सी) | UDC (यू डी सी) |
|------------|------------|---------------|----------------|----------------|
| GY | K, 97 | Mammalia | 599 | 599 |
| GYD | K, 972 | Marsupialia | 599.2 | 599.2 |
| GYDD | K, 9721 | Diprotodontia | 599.2 | 599.22 |

श्रृंखला में अंतर्निवेशन : श्रृंखला में अंतर्निवेशन के उपसूत्र के अनुसार “वर्ग संख्याओं अथवा एकल संख्याओं की श्रृंखला में किन्ही दो क्रमागत कड़ियों के मध्य अनेक कड़ियों को अंतर्निवेशित करने की क्षमता होनी चाहिए”।

यदि वर्गीकरण पद्धति में अधिमिश्रण उपसूत्र (Canon of Modulation) की अपेक्षा को पूरा किया जाता है तो श्रृंखला में अंतर्निवेशन का उपसूत्र निष्क्रिय हो जाता है। सामान्यतः यह अनुभव किया गया है कि सभी मानक वर्गीकरण पद्धतियों में अधिमिश्रण उपसूत्र का अनुपालन किया गया है। तथापि, ज्ञान जगत् अननुमेय (Unpredictable) है एवं ऐसी स्थिति में नवीन सत्ताओं का जन्म होना स्वाभिक है, अतः वर्गीकरण पद्धति को अभिकल्पित करते समय श्रृंखला के सभी स्थलों पर अधिमिश्रण उपसूत्र का अनुपालन करना प्रायः असंभव हो जाता है। इस प्रकार की स्थिति का अच्छा नमूना हमें भूगोल विषय में मिलता है। भूगोल एक अनिश्चित प्रकार का क्षेत्र है। अतः इस वर्ग राजनीतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्रों की रचना या सृष्टि में अधिमिश्रण उपसूत्र का अनुपालन करना कठिन है।

अतः श्रृंखला में भी अंतर्निवेशन को सुनिश्चित करना आवश्यक हो जाता है। ब्रिटिश नेशनल बिब्लियोग्राफी में डी डी सी का उपयोग करते समय श्रृंखला में अंतर्निवेशन को सुनिश्चित करने के लिए स्ट्रोक (Stroke) अंकन का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरणार्थ :

220/280 Christianity (ईसाई धर्म)

626/627 Hydraulic engineering (द्रव अभियांत्रिकी)

इसका अनिवार्य रूप से यह अर्थ निकलता है कि किसी लुप्त कड़ी को प्रदर्शित करने के लिए सांख्याकों की पूरी पंक्ति का प्रयोग में लाया जाए। ऐसा करने पर मिव्ययिता का अनुपालन करना संभव नहीं होगा और अनुसूचियाँ बड़ा आकार धारण कर लेंगी।

हालांकि सी सी के 7वीं संस्करण में सामान्यतः अधिमिश्रण के उपसूत्र का अनुपालन किया गया है किंतु यहाँ आवश्यकता के अनुकूल श्रृंखला में अंतर्निवेशन को सरल बनाने के लिए युक्तियों/प्रक्रियाओं की व्यवस्था की गई है। उदाहरणार्थ, श्रृंखला में किन्ही दो क्रमिक कड़ियाँ के मध्य तार चिह्न (*) अथवा धन चिह्न (+). जिनका पूर्वस्थापक मान होता है, का प्रयोग करके अंतर्निवेशन करना संभव है; उदाहरणार्थ, यदि L, 37 A (External Carotid artery) एवं L, 37A1 (thyroid artery) के मध्य अंतर्निवेशन करना आवश्यक हो तो, योजक चिह्न तारांक (*) का प्रयोग करके एवं वर्ग संख्या का संश्लेषण करके इसको संभव बनाया जा सकता है। इस प्रकार संश्लेषित वर्ग संख्या L, 37A1* होगी एवं इसकी श्रृंखला निम्नांकित होगी:

L,37A External Cardotid artery

अंतर्निवेशन L,37A1*

यू डी सी में भी, यदि आवश्यक हो तो, क्रमागत कड़ियों के मध्य विस्तार या धन चिह्न (/ एवं +) का प्रयोग करके अंतर्निवेशन किया जा सकता है।

4.7 अन्य युक्तियाँ : पक्ष, दशा, अध्यारोपण, स्मृति सहायक

अन्य युक्तियों में पक्ष, दशा, अध्यारोपण, स्मृति सहायक इत्यादि युक्तियाँ शामिल हैं। इनकी परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं :

पक्ष युक्ति (Facet Device)

वैचारिक धरातल

: नया (नए) पक्ष जोड़कर अतिथेय संकेंद्र (Host focus) को वर्ग के रूप में सुरपष्ट या तीक्ष्ण बनाने की युक्ति।

NOTES

NOTES

अंकन धरातल

: वैचारिक धरातल की पक्ष युक्ति को अमल में लाने के लिए किसी वर्ग संख्या के अंतर्गत किसी एकल संख्या के पूर्व योजक चिह्न जोड़ने की युक्ति

दशा युक्ति (Phase Device)

वैचारिक धरातल

: द्वितीय दशा या पक्ष के रूप में (अर्थात् अतिरिक्त दशा के रूप में) उसी प्रजाति के केंद्र बिंदु को जोड़कर आतिथेय संकेंद्र (Host focus) को सुस्पष्ट या तीक्ष्ण बनाने की युक्ति।

अंकन धरातल

: वैचारिक धरातल में दशा संबंध को दृयोतित करने वाले अंक क पूर्व योजक चिह्न जोड़ने की युक्ति।

अध्यारोपण युक्ति

(Super-Imposition Device)

: एक ही एकल विचार जगत् से संबंधित दो या दो से अधिक एकल विचारों को जोड़ना।

वैचारिक धरातल

: एकल के रूप में एक संकेंद्र को तीक्ष्ण बनाने की युक्ति। इस युक्ति के अनुसार संबंधित संकेंद्र के विस्तार को उसके उस भाग तक सीमित कर दिया जाता है जो उसी पक्ष के किसी अन्य एकल के अंतर्गत आता है।

अंकन धरातल

: वैचारिक धरातल पर अध्यारोपण युक्ति के लिए आवश्यक एकलों का निरूपण करने वाली एकल संख्याओं के बीच योजन चिह्न जोड़ने की युक्ति। सी सी में आध्यारोपण के लिए योजन चिह्न हाइफन (-) का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण : L,18-3 = Circulatory system of the Head

अध्याय 7 में पक्ष युक्ति से संबंधित अवधारणाओं पर विचार किया गया है, किन्तु अध्याय 8 में दशा युक्ति से संबंधित अवधारणाओं का विस्तृत विवरण दिया गया है। स्मृति सहायकों का विस्तृत विवेचन अनुवर्ती अनुच्छेदों में किया गया है।

स्मृति सहायक (Mnemonics)

'निमोनिक्स' (Mnemonics) शब्द की उत्पत्ति एक ग्रीक शब्द से हुई है जिसका अर्थ है "याद करना"। शब्दकोश के अनुसार इसका अर्थ है "स्मृति सहायक कला" अर्थात् किसी तथ्य या संख्यांक, अथवा असंबद्ध पदों या अंकों की श्रेणी को स्मरण करने की विधि।

समय-समय पर हम सभी स्मृति सहायकों को प्रयोग में लाते हैं एवं उनके अनुसार आचरण करते हैं। उदाहरणार्थ, परिवर्णी शब्द 'PODSCORB' हमें प्रबंधन के कार्यों को याद करने में सहायता देता है, अर्थात् Planning, Organising, Directiong, Staffing, Coordinating, Reportting एवं Budgeting। स्मृति सहायक तत्त्व अच्छे अंकन के अत्यावश्यक गुणों में से एक है। इसकी उपयोगिताओं का उल्लेख करते हुए बर्विक सेयर्स (Berwick Sayers) ने यह कहा है कि "आधुनिक वर्गीकरण पद्धतियों को अंकन में एक उत्तम एवं सीमाबद्ध अत्यंत सामान्य गुण है जो वर्गीकरणकार के लिए अत्यधिक उपयोगी है। यह है अंकन का स्मृति सहायक गुण, जो स्मरण शक्ति को सहायता प्रदान करता है तथा स्मृति सहायकों का प्रयोग होने पर सारणियों एवं अनुक्रमणिकाओं का अवलोकन करने का कार्य बहुत कम हो जाता है। स्मृति सहायक अंकन से हमारा अभिप्राय उस अंकन से है जो वर्गीकरण में जब-जब प्रयोग में लाया जाए, उसका अर्थ हमेशा वही रहता है"।

NOTES

रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित स्मृति सहायकों का सामान्य उपसूत्र इस प्रकार है "किसी वर्ग संख्या में (या उसके किसी संघटक में) किसी विशिष्ट विचार का प्रतिनिधित्व करने के लिए जिस किसी अंक या अंक समूह का प्रयोग किया जाए, उसी विचार को व्यक्त करने वाली सभी वर्ग संख्याओं में उसी अंक या अंक समूह को प्रयोग में लाया जाना चाहिए, बशर्ते इस प्रकार के सुसंगत प्रयोग या निरूपण का सहारा लेने से अधिक महत्वपूर्ण आवश्यकताओं का उल्लंघन नहीं होता हो (प्रोलोगोमेना, पृष्ठ 293)"

रंगनाथन से निम्नलिखित चार प्रकार के स्मृति सहायकों का उल्लेख किया है:

- (क) वर्णक्रम स्मृति सहायक (Alphabetical mnemonics),
- (ख) सूचीबद्ध स्मृति सहायक (Scheduled mnemonics),
- (ग) सुव्यवस्थित स्मृति सहायक (Systematic mnemonics), तथा
- (घ) मौलिक स्मृति सहायक (Seminal mnemonics)।

वर्णक्रम स्मृति सहायक

जीवन में शाब्दिक सहायकों का प्रयोग सामान्यतः काफी प्रचलित है। इनके अनेक नाम हैं, जैसे वर्णक्रम स्मृति सहायक एवं लिटरल निमोनिक्स (Literal Mnemonics)। वर्गीकरण में इनके अनुप्रयोग की मुख्य विशेषता यह है कि किसी सत्ता से संबंधित विचार का प्रतिनिधित्व करने के लिए उस सत्ता के नाम के प्रथम अक्षर या प्रथम दो, तीन इत्यादि अक्षरों को प्रयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ, वर्णक्रम स्मृति सहायकों का प्रयोग कर मोटर कारों का व्यवस्थापन किया जा सकता है। जैसे,

Ambassador A

Fiat F

Ford Fo

Standard S

वर्णक्रम स्मृति सहायकों के उपसूत्र के अनुसार यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि "यह वर्णानुक्रम की अपेक्षा पाठकों के लिए अन्य अधिक सहायक या अधिक फिलियेटरी अनुक्रम उपलब्ध हो तो वर्णानुक्रमिक स्मृति सहायकों का प्रयोग हिचकिचाहट बिना अस्वीकार देना चाहिए। यदि वर्णानुक्रम किसी अन्य अनुक्रम के समान ही सहायक हो एवं जिस क्षेत्र में इसका प्रयोग किया जाता है उस क्षेत्र का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित हो तो वर्णक्रम स्मृति सहायकों को वरीयता दी जानी चाहिए"। (प्रोलोगोमेना, पृष्ठ 295)

उपर्युक्त उपसूत्र को ध्यान में रखकर अधिकांश वर्गीकरण पद्धतियों में वर्णक्रम युक्ति को अपनाया गया है। लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस क्लैसिफिकेशन में इसका भरपूर प्रयोग किया जाता है, जबकि अन्य वर्गीकरण पद्धतियों में इसका कम उपयोग किया गया है।

सूचीबद्ध स्मृति सहायक

प्रोलोगोमेना में सूचीबद्ध स्मृति सहायक (Scheduled Menmonies) का वर्णन करते हुए कहा गया है कि "यह किस एक अंक या अंक समूह का प्रयोग किसी एकल विचार अथवा किसी पंक्ति एकल विचार को व्यक्त करने के लिए एक बार किया गया है एवं यदि वही एकल विचार अन्य विषयों में उसी रूप में प्रयुक्त होता है तो उसके लिए वहाँ भी उसी निश्चित अंक या अंक समूह का प्रयोग किया जाना चाहिए"। (प्रोलोगोमेना, पृष्ठ 298)

सी सी में निर्देशानुसार इन्हें निम्नलिखित समानांतर अनुसूचियों के रूप में भी प्रयोग में लाया जाता है:

NOTES

| | | सारणी-1 |
|------------|--------|---|
| मूल विषय | पक्ष | समानांतर अनुसूची |
| Biophysics | [1P1] | L-Medicine के [1P1] एकलों की तरह |
| GWC | | |
| Mineralogy | [1P1] | F-Technology के [1P1] एकलों की तरह |
| H1 | | |
| Botany | [1MP1] | [1MP1] G-Biology के [1MP1] एकलों की तरह |
| I | 1-6 | |
| | 7 | L-Medicine के [1MP1] एकलों की तरह |
| Budget | [1MP1] | X 72 Tax के [1MP1] एकलों की तरह |
| Law | [1P2] | 4-Tort उसी पक्ष में |
| Z | | 5-Crime की तरह उप-विभाजित करने योग्य |

डी डी सी की अनुसूचियों समानांतर अनुसूचियों का प्रयोग सभी जगह उल्लिखित "में जोड़िए" (Add to) निर्देशों के माध्यम से सुनिश्चित किया गया है। डी डी सी में इन प्रावधानों का भरपूर प्रयोग किया जाने लगा है। डी डी सी में समानांतर अनुसूचियों के प्रयोग को प्रदर्शित करने के लिए केवल एक उदाहरण पर्याप्त है:

632.6 Animal pests (632.6 आधार संख्या में 592/599 में 59 के बाद वाले संख्याओं को जोड़िए) अर्थात् Snails = 632.643

सुव्यवस्थित स्मृति सहायक

सुव्यवस्थित स्मृति सहायकों के उपसूत्र (Canon of Systematic Mnemonics) के अनुसार "वर्गीकरण पद्धति की किसी पंक्ति में प्रयुक्त पंक्ति एकल विचारों को व्यक्त करने के लिए जिन अंकों का प्रयोग किया जाए उनका अनुक्रम सहायक अनुक्रम के सिद्धांतों के अनुरूप होना चाहिए"। (प्रोलेगोमेना, पृष्ठ 301)

इस प्रकार के सुव्यवस्थित व्यवस्थापन के लिए सी सी में प्रयोग में लाए जाने वाले कुछ सहायक अनुक्रम के सिद्धांत निम्नलिखित हैं :

- (क) काल अनुक्रम (Time sequence)
- (ख) क्रमिक विकासात्मक अनुक्रम (Evolutionary sequence)
- (ग) स्थानिक अनुक्रम (Spatial sequence)
- (घ) परिमाणात्मक अनुक्रम (Quantity sequence)
- (ङ) जटिलतापरक अनुक्रम (Complexity sequence)

सी सी यू डी सी एवं एल सी में अपनाए गए काल अनुक्रम का उदाहरण निम्नांकित है:

पुस्तकालय वर्गीकरण में
प्रयुक्त युक्तियाँ

| विषय | सी सी, छठ संस्करण | यू डी सी | एल सी |
|--------------|-------------------|----------|------------|
| Stratigraphy | H5 | 551.7 | QE 724/760 |
| Archacan | H51 | 551.71 | QE 724 |
| Eozoic | H52 | 551.73 | QE 725 |
| Mesozoic | H53 | 551.78 | QE 735 |
| Tertiary | H54 | 551.78 | QE 735 |
| Quaternary | H55 | 551.79 | QE 741 |

NOTES

तीनों वर्गीकरण पद्धतियों के अनुक्रम में उपर्युक्त उपसूत्र का अनुपालन किया गया है।

आइए अब हम एक अन्य उदाहरण का अवलोकन करें जहाँ सी सी, यू डी डी एवं बी सी (Bibliographic Classification) में क्रमिक विकासात्मक अनुक्रम का अनुसरण किया गया है।

| विषय | सी सी, छठ संस्करण | यू डी सी | बी सी |
|----------|-------------------|----------|-------|
| Zoology | K | 59 | G |
| Pisces | K 92 | 597 | GVI |
| Amphibia | K 93 | 597.6 | GWA |
| Reptilia | K 94 | 598.1 | GWL |
| Aves | K 96 | 598.2 | GX |
| Mammalia | K 97 | 599 | GY |

तीनों वर्गीकरण पद्धतियों के अनुक्रम में उपर्युक्त उपसूत्र का अनुपालन किया गया है।

मौलिक स्मृति सहायक

मौलिक स्मृति सहायक के उपसूत्र (Cannon of Seminal Mnemonics) के अनुसार "एक वर्गीकरण पद्धति में मौलिक रूप से समानार्थक विचारों को व्यक्त करने के लिए एक ही अंक का प्रयोग किया जाना चाहिए, चाहे इन विचारों का उल्लेख किसी भी विषय में क्यों न किया गया हो"। (प्रोलेगोमेना, पृष्ठ 304) सूचीबद्ध स्मृति सहायकों में एक ही प्रकार की अवधारणा के लिए, सभी स्थानों पर एक ही पद एवं एक ही संख्यांक को प्रयोग में लिया जाता है; जबकि मौलिक स्मृति सहायकों में एक ही मौलिक अवधारणा का प्रतिनिधित्व करने के लिए सभी स्थानों पर एक ही संख्यांक का तो प्रयोग किया जाता है किन्तु उसे भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न पदों द्वारा व्यक्त किया जाता है। सूचीबद्ध सहायकों की मौलिक स्मृति सहायकों से तुलना करते हुए रंगनाथन ने इन दोनों का अंतर स्पष्ट करने के लिए मौलिक स्मृति सहायकों को 'असूचीबद्ध स्मृति सहायक' नाम दिया है।

तथापि, बाद में पामर (Palmer) एवं वेल्स (Wells) के सुझाव के अनुसार "मौलिक स्मृति सहायक" नाम ही चुन लिया गया। उदाहरणार्थ, जीव विज्ञान (Biology) में 'शरीर क्रिया विज्ञान' (Physiology), राजनीति शास्त्र (Political Science) 'कार्य' (Functions) एवं समाजशास्त्र (Sociology) में 'सामाजिक गतिविधियाँ' (Social activities) अनभिव्यक्त मौलिक स्तर पर समानार्थक हैं, तथा सी सी में सभी स्थानों पर इन्हें संख्यांक 3 द्वारा सूचित किया गया है। इसी प्रकार 'रोग' (Disease) एवं 'सामाजिक विकृति' (Social Pathology) को संख्यांक 4 द्वारा सूचित किया गया है।

NOTES

चूँकि प्रत्येक अंक को उसके द्वारा निरूपित विचार से सहसंबंध स्थापित करने में वर्धनशील अंकन पद्धति अंकन पद्धति का स्मरण शक्ति पर काफी दबाव पड़ता है, अतः अंकों एवं अंक समूहों का स्मृति सहायक प्रयोग करके, अर्थात् स्मृति सहायक युक्ति के अनुप्रयोग द्वारा, स्मरण शक्ति को कुछ राहत दी जा सकती है।

5. वर्गीकरण पद्धतियों में युक्तियों का प्रयोग

अनुवर्गी उप-अनुभागों में सी सी यू डी डी एवं डी डी सी में विभिन्न युक्तियों के प्रयोग पर विचार किया गया है।

5.1 सी सी में प्रयुक्त युक्तियाँ

जहाँ कहीं उपयोगी एवं संभव प्रतीत हुआ है, सी सी में सभी युक्तियों का प्रयोग किया गया है। कोलन क्लैसिफिकेशन में विभिन्न युक्तियों के प्रयोग से संबंधित उदाहरण निम्नलिखित है:

कालक्रम युक्ति : इस युक्ति का प्रयोग :

- (क) साहित्य में लेखकों,
- (ख) कृत्रिम भाषाओं,
- (ग) धार्मिक संप्रदायों,
- (घ) मूल वर्गों के अंतर्गत विभिन्न प्रणालियाँ (Systems) जैसे भौतिकी, आयुर्विज्ञान, मनोविज्ञान शिक्षा शास्त्र एवं अर्थशास्त्र,
- (ङ) ललित कला में शैलियाँ

इत्यादि का प्रयोग विशिष्टता प्रदान करने के लिए किया जाता है।

सी सी में इस युक्ति के प्रयोग के बारे में विस्तृत नियम दिए गए हैं।

भौगोलिक युक्ति : इस युक्ति का प्रयोग :

- (क) इतिहास एवं विधि में समुदाय,
- (ख) भाषा की क्षेत्रीय बोली एवं वर्ग बोली,
- (ग) ललित कला में शैली, एवं
- (घ) अनेक पूर्वस्थापक सामान्य एकलों इत्यादि को विशिष्टता प्रदान करने के लिए किया जाता है।

विषय युक्ति : इस युक्ति का प्रयोग :

- (क) कार्बनिक रसायन शास्त्र में कुछ द्रव्यों,
- (ख) वास्तुकला में कुछ भवनों,
- (ग) मूर्तिकला में कुछ विषयों,
- (घ) मीमांसा में विशिष्ट मतों,
- (ङ) अध्ययन तकनीक में विषयों, एवं
- (च) अर्थशास्त्र में उद्योग धंधों को विशिष्टता प्रदान करने के लिए किया जाता है।

वर्णक्रम युक्ति : इस युक्ति का प्रयोग 5

- (क) साहित्यिक एवं श्रेण्य लेखकों की कृतियों,
- (ख) मशीनासों के ब्राण्डों,
- (ग) शस्यों (पौधों) वायरसों एवं जीवाणुओं की नस्लों को विशिष्टता प्रदान करने के लिए किया जाता है।

परिगणनात्मक युक्ति : सी सी के अपरिवर्तनीय पक्षात्मक, लगभग-मुक्त-पक्षात्मक, मुक्त-पक्षात्मक रूपान्तरों में परिगणनात्मक युक्ति का प्रयोग किया गया है। किंतु प्रायः अन्य वर्गीकरण पद्धतियों की अपेक्षा बहुत कम।

5.2 डी डी सी में प्रयुक्त युक्तियाँ

सामान्यतः डी डी सी में कालक्रम युक्ति को प्रयोग में नहीं लाया जाता। डी डी सी में विषय युक्ति का बहुधा प्रयोग किया जाता है। जहाँ अनिवार्य होता है वहाँ भौगोलिक युक्ति का प्रयोग किया जाता है तथा वर्णक्रम युक्ति का बहु कम प्रयोग हुआ है।

डी डी सी जैसी परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति में वर्ग संख्या के वाच्यार्थ को गहन बनाने के लिए भौगोलिक युक्ति का प्रयोग किया जाता है। इतिहास (History) विषय के समुदाय पक्ष में संकटों का निर्माण करने के लिए भौगोलिक युक्ति का प्रयोग किया जाता है तथा इसी प्रकार से विधि (Law) में भी इसका प्रयोग किया जाता है। अन्य विषयों में जहाँ स्थानीय वर्णन आवश्यक होता है, भौगोलिक संख्यांक का स्थान पक्षा के रूप में प्रयोग किया जाता है; तथापि इसे भौगोलिक युक्ति की संज्ञा नहीं दी जा सकती।

डी डी सी में, फिर भी पचास विषयों को 001-999 की तरह विभाजित करने की निर्देश दिए गए हैं। ये सभी विषय युक्ति के उदाहरण हैं।

वर्ण युक्ति को डी डी सी के 17वें संस्करण (1963) में अपनाया गया था, तथा इसका प्रयोग काफी मुक्त रूप से किया जाता है।

इसके अतिरिक्त अधिकांश पंक्तियों में परिगणनात्मक युक्ति का प्रयोग अत्यधिक व्यापक रूप से किया जाता है। यहाँ भौगोलिक युक्ति या विषय युक्ति का प्रयोग किया जाता है, वहाँ पर भी प्रत्येक युक्ति के पूर्व परिगणनात्मक युक्ति का प्रयोग किए जाने की अपेक्षा की जाती है।

5.3 यू डी सी में प्रयुक्त युक्तियाँ

डी डी सी के सदृश यू डी सी में भी कालक्रम युक्ति का प्रयोग नहीं किया जाता, किन्तु जहाँ अनिवार्य होता है वहाँ भौगोलिक युक्ति का प्रयोग किया जाता है तथा वर्णक्रम युक्ति का बहुत कम प्रयोग किया जाता है, किन्तु डी डी सी तुलना में इनका प्रयोग कुछ अधिक हुआ है। इसके आलावा, अधिकांश वर्गीकरण पद्धतियों की तरह यू डी सी की अधिकांश पंक्तियों में परिगणनात्मक युक्ति का प्रयोग अत्यधिक व्यापक रूप से किया जाता है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. वैचारिक एवं अंकन धरातल पर भौगोलिक युक्ति का अर्थ बताइए।
4. वैचारिक एवं अंक धरातल पर 'वर्णक्रम युक्ति' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

6. सार-संक्षेप

इस इकाई हमने पुस्तकालय वर्गीकरण में युक्तियों के प्रयोग की आवश्यकता एवं उपयोगिता के बारे में विचार किया है। हमने विभिन्न युक्तियाँ—जैसे, कालक्रम युक्ति, भौगोलिक युक्ति, विषय युक्ति, वर्णक्रम युक्ति, परिगणनात्मक युक्ति—का भी विशेष रूप से अध्ययन किया है। इसके अतिरिक्त पंक्तियों एवं श्रृंखलाओं में ग्राह्यता के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली युक्तियों का भी विस्तृत विवेचन किया है। विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों में युक्तियों के प्रयोग का भी इस इकाई में विशेष महत्त्व दिया गया है। इस पृष्ठभूमि के आधार पर आप युक्तियों के प्रकरण की पूरी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा पुस्तकालय वर्गीकरण में इनकी भूमिका एवं महत्त्व के मूल्यांकन कर सकेंगे।

NOTES

NOTES

7. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. पुस्तकालय वर्गीकरण में प्रयुक्त युक्तियों से अभिप्राय उन घटकों से है जिन्हें वैश्लेषी-सेश्लेषणात्मक वर्गीकरण में पक्षों का निर्माण करने अथवा विद्यमान पक्ष के वाच्यार्थ को गहन बनाने तथा/या परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति में किसी विषय को तीक्ष्ण बनाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली विशेषता के आधार पर इन्हे कालक्रम युक्ति, भौगोलिक युक्ति इत्यादि कहते हैं। वर्गीकरण पद्धतियों में इन युक्तियों का वैचारिक तथा अंकन दोनों ही धरातल पर, जहाँ कहीं भी संभव हो, प्रयोग किया जाता है।

सामान्यतः युक्तियाँ निम्नलिखित प्रकार से लाभदायक हैं:

- इनके प्रयोग का प्रावधान होने पर एकलों की परिगणना नहीं करनी पड़ती, तथा इस प्रकार किसी भी अनुसूची में पंक्ति को छोटारूप दिया जा सकता है, एवं इसके फलस्वरूप संपूर्ण अनुसूची को भी छोटा रूप प्राप्त हो जाता है;
- वर्गीकरणकार को स्वायत्तता मिलती है; तथा
- इनका प्रयोग होने पर सुसंगत अनुक्रम, सहायक अनुक्रम, स्मृति-सहायकों, पंक्ति में ग्राह्यता एवं शृंखला में ग्राह्यता के उपसूत्रों के अनुसार अनुरूपता स्वतः सुनिश्चित हो जाती है।

2. (1) वैचारिक धरातल

“वैचारिक धरातल पर कालक्रम युक्ति वह युक्ति है जिसका प्रयोग एकलों की अनुसूची अथवा प्रणाली-आधारभूत विभाजनों में केंद्रीभूत विचारों का निर्माण करने अथवा उनको इनता प्रदान करने के लिए किया जाता है। ऐसा करते समय कालक्रम विशेषता का प्रयोग करके एकलों का व्यष्टीकरण किया जाता है। व्यष्टीकरण करते समय, जो भी सुविधाजनक या लाभदायक हो, उस विषय, वस्तु या सत्ता के जन्म, उद्भव या प्रारंभ के काल अथवा उसके प्रथम अन्वेषण या खोज या आविष्कार या प्रवर्तन या घटित होने से संबंधित काल अथवा अन्य किसी अवधि क, जो निश्चित रूप से उसके साथ किसी प्रकार से अथवा किसी तर्क के आधार पर संबद्ध की जा सके, का प्रयोग किया जाता है”।

(2) अंकन धरातल

“अंकन धरातल पर कालक्रम युक्ति का अर्थ है वैचारिक धरातल से संबद्ध कालक्रम युक्ति को, किस एकल विचार के निर्माण अथवा किसी एकल संख्या के वाच्यार्थ को गहन बनाने के लिए, कालक्रम सूचक संख्या का प्रयोग करके, अमल में लाना।”

3. (1) वैचारिक धरातल

“वैचारिक धरातल पर भौगोलिक युक्ति वह युक्ति है जिसका प्रयोग एकलों की किसी अनुसूची अथवा कुछ विशेष मूल विभाजनों में केंद्रीभूत विचारों के निर्माण के लिए अथवा उनको गहनता प्रदा करने के लिए किया जाता है। ऐसा करते समय भौगोलिक अभिलक्षण का प्रयोग करके एकलों का व्यष्टीकरण किया जाता है। व्यष्टीकरण करते समय, जो भी सुविधाजनक या लाभदायक हो, उस विषय, वस्तु सत्ता के जन्म, उद्भव या प्रारंभ या प्रवर्तन या प्रचालन, अथवा उसके व्यपक्त्व अथवा प्रवर्तन के स्थान से संबंधित भौगोलिक क्षेत्र अथवा अन्य किसी स्थान, जिसे निश्चित रूप से उसके साथ किसी प्रकार से अथवा किसी तर्क के आधार पर संबद्ध किया जा सके, का प्रयोग किया जा सकता है।”

(2) अंकन धरातल

“अंकन धरातल पर भौगोलिक युक्ति का अर्थ है, वैचारिक धरातल से संबद्ध भौगोलिक युक्ति की, किसी एकल विचार के निर्माण के लिए अथवा किसी एकल संख्या के वाच्यार्थ का गहन बनाने के लिए भौगोलिक क्षेत्र की सूचक संख्या का प्रयोग करके, अमल में लाना”।

NOTES

4. (1) वैचारिक धरातल

“वैचारिक धरातल पर वर्णक्रम युक्ति है जिसका प्रयोग एकलों की अनुसूची में केंद्रीयभूत विषयों का निर्माण करने के लिए अथवा उनको तीक्ष्णता प्रदान करने के लिए नाम—अभिलक्षण के आधार पर किया जाता है; बशर्ते इस युक्ति के लिए जो नाम प्रयोग में लाए जाएँ वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्य हों तथा उनका वर्णानुक्रम व्यवस्थापन, यदि कुछ अधिक सहायक हो तो कम-से-कम किसी अन्य व्यवस्थापन के समान तो सहायक हों”।

(2) अंकन धरातल

“अंकन धरातल पर वर्णक्रम युक्ति का अर्थ है वैचारिक धरातल से संबद्ध वर्णक्रम युक्ति को, किस एकल परिवार के निर्माण के लिए अथवा किसी एकल संख्याओं के वाच्यार्थ को गहन बनाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्य नाम का प्रथम अथवा उसके प्रथम दो, या प्रथम तीन इत्यादि आद्याक्षरों का प्रयोग करके अमल में लाना। किंतु “1” अक्षर के स्थान पर “J” अक्षर का तथा “O” के स्थान पर “P” अक्षर का प्रयोग किया जाना चाहिए”।

8. मुख्य शब्द

- अंक (Digit)** : अंकन पद्धति में प्रयोग में लाया गया एकल प्राथमिक प्रतीक।
- अध्यारोपण (Super-Imposition)** : एक ही एकल जगत् से संबंधित दो या दो से अधिक एकल विचारों को जोड़ना अध्यारोपण कहलाता है। अध्यारोपण के द्वारा प्राप्त एकल विचार अध्यारोपित एकल विचार कहलाता है। इसका दूसरा नाम है यौगिक एकल विचार।
- पंक्ति (Array)** : किसी समष्टि का जब विषय के रूप में विभाजन एक ही अभिलक्षण के आधार पर किया जाता है तथा इस प्रकार प्राप्त की गई वर्ग संख्याओं को वरीय क्रम में व्यवस्थित कर दिया जाता है तो उस वर्ग समूह को पंक्ति कहते हैं। अर्थात् समकक्ष वर्गों या उप विभाजनों के समुच्चय को पंक्ति कहते हैं।
- रिक्त अंक (Empty Digit)** : वह अंक जिसका क्रमबोध मान तो होता है, किन्तु अर्थगत मान नहीं होता।
- रिक्तक अंक (Emptying Digit)** : मूल-विषय संख्यांक अथवा एकल संख्यांक में वह अंक जो अपने पूर्ववर्ती अंक को अर्थगत मान से तो वंचित कर देता है किंतु उसके क्रमबोधमान को यथावत् रहने देता है।
- रिक्त-रिक्तक अंक (Empty-Emptying Digit)** : वह अंक जिसका अर्थगत मान नहीं होता तथा जो अपने पूर्ववर्ती अंक को भी अर्थगत मान से वंचित कर देता है।
- श्रृंखला (Chain)** : किसी भी निश्चित वर्ग एवं उसकी समष्टि के सोपान 1. सोपान 2. सोपान 3. इत्यादि सोपानों को वांछित लक्ष्य तक आगे बढ़ाकर प्राप्त किए गए वर्गों के अनुक्रम को श्रृंखला कहा जाता है। इस प्रकार, आनुक्रमिक उप-विभाजनों द्वारा प्राप्त किया गया अधीनस्थ वर्गों के किसी भी अनुक्रम को श्रृंखला कहते हैं।
- संकेतक अंक (Indicator Digit)** : किसी एकल संख्या के पूर्व लगाया जाने वाला ऐसा अंक जो यह प्रदर्शित करता है कि वह एकल किस मालिक श्रेणी की अभिव्यक्ति है। कुछ समय पहले तक इसे योजक चिह्न कहा जाता था।

NOTES

सेक्टर (Sector)

: संख्याओं का वह दायरा (श्रेणी) जो अर्थ परिपूर्ण अंक अथवा एक रिक्त अंक या दो रिक्त अंकों इत्यादि से शुरू होता है।

उदाहरण :

(S-1) सेक्टर 1, 2 8 का द्वयोतक है।

(S-91) सेक्टर 91, 92 98 का द्वयोतक है।

(S-A) सेक्टर A, B Y का द्वयोतक है।

(S-Z1) सेक्टर Z1, Z2 Z8 का द्वयोतक है।

(S-ZA) सेक्टर ZA, ZB ZY का द्वयोतक है।

9. अभ्यास प्रश्न

1. पुस्तकालय वर्गीकरण में प्रयुक्त युक्तियों के लाभ एवं प्रकारों को लिखिए।
2. कालक्रम एवं भैगलिक युक्तियों की व्याख्या उदाहरण सहित कीजिए।
3. विषय युक्ति एवं वर्णक्रम युक्ति का विस्तृत वर्णन कीजिए।
4. पंक्ति एवं श्रृंखला में ग्राह्यता हेतु युक्तियों की विवेचना कीजिए।
5. अध्यारोपण एवं स्मृति सहायक युक्तियों की व्याख्या कीजिए।

10. संदर्भ ग्रन्थ सूची

Foskett, A.C. (1977). *Subject Approach to Information*. 3rd ed. London : Clive Bingley.

Mills, J.A. (1960). *Modern Outline of Library Classification*. Bombay : AsiamPublishing House.

Ranganathan, S.R. (1987). *Colon Classification*. 7th ed. Edited by M.A. Gopinath Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.

Rangnathan, S.R. (1967). *Prolegomena io Library Classification*. 3rd ed. Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.

UDC : *International Medium Edition-English Texi (BS 1000M : 1985)*. London : British Standards Institution.

ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन (डी डी सी)

अध्याय में सम्मिलित हैं :

1. अध्ययन के उद्देश्य।
2. परिचय
3. डीडी सी का उद्भव
4. उत्तरवर्ती संस्करण
5. आधारभूत सिद्धांत
6. संशोधन प्रक्रिया
7. डी डी का 19वाँ संस्करण
8. मूल्यांकन
9. सार-संक्षेप
10. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
11. मुख्य शब्द
12. अभ्यास प्रश्न
13. संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्याय में आपको? ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन (DDC : Dewey Decimal Classification) के सिद्धांत एवं अभ्यास के बारे में जानकारी दी जा रही है।

NOTES

इस अध्याय के अध्ययन के उपरांत आप:

- डी डी सी के आधारभूत सिद्धांतों एवं इसकी मुख्य विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- डी डी सी के सबल एवं दुर्बल पक्षों का मूल्यांकन कर सकेंगे; तथा
- डी डी सी के 19वें संस्करण द्वारा प्रलेखों का वर्गीकरण कर पाएँगे।

2. परिचय

अब आप यह जान चुके हैं कि प्रलेखों और उनके संलेखों के विषयानुसार व्यवस्थापन का पुस्तकालय वर्गीकरण एक अपरिहार्य साधन है। इसी प्रकार के व्यवस्थापन के कारण ही पुस्तकालयों में किसी भी विषय पर रखी पाठ्य-सामग्री की पहचान होती है तथा उसका स्थान निर्धारण होता है। पिछले खंडों में प्रस्तुत की गई सैद्धांतिक पृष्ठभूमि के अध्ययन के पश्चात् अब आपको तीन वर्गीकरण पद्धतियों की जानकारी प्राप्त करनी है। ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धति अँगरेजी भाषी विश्व में सर्वाधिक लोकप्रिय है।

यह अध्याय डी डी सी के पिछले 125 वर्षों के इतिहास की जानकारी प्रदान करती है जिसमें इस पद्धति के उद्भव एवं विकास का वर्णन है। इसमें विषय वर्गीकरण की रूपरेखा, अंकन तथा युक्तियाँ एवं इस पद्धति की संशोधन विधि की जानकारी दी गई है। इस अध्याय में वर्गीकरण क्षेत्र में पद्धति के चिरस्थायी योगदान एवं इसकी सापेक्षिक अनुक्रमणिका का चर्चा की गई है। इस अध्याय में डी डी सी के 19वें संस्करण का विस्तृत विवरण दिया गया है जो व्यावहारिक वर्गीकरण के कार्य में एक अध्ययन संदर्शिका के समान सिद्ध होगा।

इस अध्याय में डी डी सी का मूल्यांकन भी किया गया है और इसकी सबलता और दुर्बलता का भी उल्लेख किया गया है।

इस अध्याय का अधिकतम लाभ उठाने के लिए यह आवश्यक है कि आपके निरंतर संदर्भ के लिए डी डी सी के 19वें संस्करण का सेट आपको उपलब्ध हो।

3. डी डी सी का उद्भव

मेल्विल ड्यूई (Melvil Dewey) का जन्म एडम्स सेन्टर, न्यूयार्क में 10 दिसंबर 1851 में हुआ था। वे एक लघु स्टोरकीपर पिता के पुत्र थे। पाँच वर्ष की बाल्यावस्था में उन्होंने अपनी माँ की खाद्य सामग्री रखने की आलमारी को अधिक उपयोगी ढंग से पुनर्व्यवस्थित कर दिया था। पुस्तकालय व्यवसाय में उनका पर्दापण केवल अपनी स्वशिक्षा के आधार पर ही हुआ था। ड्यूई ने उच्च शिक्षा ओनिडा सेमिनरी, विश्वविद्यालय में और तत्पश्चात् एमहर्स्ट कालेज से प्राप्त की। इसी कालेज में 1972 में उन्होंने विद्यार्थी पुस्तकालय सहायक के पद पर कार्य करना प्रारंभ किया। एक वर्ष के अंदर ही उन्होंने पुस्तकालय संग्रह को विषयानुसार व्यवस्थित करने हेतु एक योजना प्रस्तुत की। 1874 में आपकी पदोन्नति सहायक कोलज लाइब्रेरियन के पद पर हुई। 876 में आपने इसे वर्गीकरण पद्धति को प्रकाशित करवाया लेकिन उस समय अपने नाम को इस पद्धति के साथ नहीं जोड़ा। इस पद्धति ने आगे जाकर प्रसिद्धि प्राप्त की। इस वर्गीकरण पद्धति के अलावा अनेक प्रकार के योगदानों से भी आपने पुस्तकालय व्यवसाय को प्रसिद्धि दिलवाई। आप "लाइब्रेरी जर्नल" (Library Journal) के 1876 में सर्वप्रथम संपादक नियुक्त हुए। इसी वर्ष आप अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन के संस्थापक सदस्य बने एवं बाद में इसके सचिव भी नियुक्त हुए। आपने 1887 में कोलंबिया यूनिवर्सिटी में सर्वप्रथम पुस्तकालय विज्ञान स्कूल (School of Librarianship) का शुभारंभ किया। इसके साथ ही मानकीकृत कैटलॉग कार्ड (12.5 × 7.5cm) के उपयोग को बढ़ावा दिया और आपने अपने पूरे जीवनकाल में पुस्तकालय विज्ञान विषय के हर क्षेत्र में असीम रुचि दिखाई

3.1 प्रथम संस्करण

मेल्विल ड्यूई ने सर्वप्रथम केवल 42 पृष्ठों की एक पुस्तिका प्रकाशित की जिसका शीर्षक 'A Classification and Subject Index for Cataloguing and Arranging the Books and pamphlets of a Library' था। यह पुस्तिका 1876 में प्रकाशित हुई थी। यह ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन एवं पुस्तकालय वर्गीकरण की सर्वप्रथम शुरुआत थी। यही डी डी सी का प्रथम संस्करण था। इसमें 12 पृष्ठों में प्रारंभिक (Preparatory) सामग्री प्रस्तुत की गई थी। अन्य 12 पृष्ठों में सारणी एवं शेष अंतिम 18 पृष्ठों में अनुक्रमणिका प्रस्तुत की गई थी। इस प्रकार कुल 42 पृष्ठों की इस पुस्तिका में 1000 वर्ग दिए गए थे। उस समय इस पद्धति की इसलिए आलोचना की गई कि यह सूक्ष्म विषयों एवं उनके उप विभाजन पर आधारित होने के कारण अधिकांश पुस्तकालयों के लिए कम उपयोगी थी। लेकिन कुछ वर्षों के भीतर ही यह पद्धति सर्वाधिक लोकप्रिय बन गई। संयुक्त अमेरिका एवं विश्व के अन्य देशों, में इसको स्वीकार किया गया। यही 42 पृष्ठों की लेखक के नाम से विहीन एक लघु पुस्तिका आने वाले वर्षों में एण्क विश्वालय वर्गीकरण पद्धति के रूप में उभरी जो विश्व की सर्वाधिक सरल एवं उपयोगी वर्गीकरण पद्धति साबित हुई है। एक सर्वेक्षण के अनुसार संयुक्त राज्य अमेरिका एवं कनाडा के 85 प्रतिशत पुस्तकालयों में इसी पद्धति का प्रचलन है। विश्व के अन्य पाँच महाद्वीपों में भी इस पद्धति को अपना लिया गया है।

3.2 मुख्य विषेताएँ

यद्यपि मेल्विल ड्यूई पहले व्यक्ति नहीं थे जिन्होंने पुस्तकालयों में प्रलेखों की विषयानुसार रखने की व्यवस्था की थी, लेकिन विषय-आधारिक व्यवस्थापन में निम्नलिखित मौलिक बिंदुओं पर बल देने वाले वे सर्वप्रथम व्यक्ति थे:

- (1) सापेक्षिक स्थान की अवधारणा
- (2) दशमलव अंकन
- (3) विस्तृत विनिर्देशन
- (4) सोपक्षिक अनुक्रमणिका

सापेक्षिक स्थान (Relative Location)

सापेक्षिक स्थान की अवधारणा आज कोई नई बात नहीं मानी जाती क्योंकि यह सिद्धांत अब हर वर्गीकरण पद्धति के लिए आवश्यक है। ड्यूई ने उस काल में इस सिद्धांत का प्रवर्तन किया जब पुस्तकालयों में पुस्तकों के स्थान निश्चित हुआ करते थे एवं पुस्तकें शेल्फों पर लगी अपने स्थान से पहचानी जाती थीं। पुस्तकालय में प्रत्येक विषय की पुस्तक के लिए उसके विषयानुसार एक परिग्रहण संख्या एवं शेल्फ का निर्धारण कर दिया जाता था प्रत्येक पुस्तक विषयानुसार परिग्रहण संख्या क्रम में एक निश्चित स्थान पर व्यवस्थित की जाती थी। इस प्रकार प्रलेख कमरों की अलमारियों में, उपखंडों, शेल्फों एवं पंक्तियों में एक स्थान पर सुनिश्चित कर दिए जाते थे। यही शेल्फ चिह्न (Shelf Marks) ग्रंथों पर लिखे होते थे। एक बार संख्या आर्बटित हो जाने पर उसी संख्या द्वारा ही उस पुस्तक का स्थाई स्थान सुनिश्चित हो जाता था।

लेकिन यह व्यवस्था संतोषप्रद नहीं थी। नवीन पुस्तकों के आगमन से उनके स्थान में भी बदलाव लाना आवश्यक हो गया। अतः निरंतर स्थान परिवर्त से छुटकारापाने के लिए ही मेल्विल ड्यूई ने बेहत विकल्प खोजने का प्रयास किया। अपने सापेक्षिक स्थान के सिद्धांत (Principle of Relative Location) द्वारा ड्यूई ने इस समस्या का हल खोज लिया। इस सिद्धांत ने विषयों एक अनुक्रम में व्यवस्थित किया और उन्हें अंकन भी प्रदान किया। इस अंकन को उन्होंने पुस्तक पर अंकित किया न कि शेल्फों पर। इस विधि से नये ग्रंथों को अन्य ग्रंथों के साथ बिना किसी व्यवधान के रखा जाना संभव हो गया। इस प्रकार जो भी नवीन पुस्तक पुस्तकालयों में खरीदी जाती उनका अन्य ग्रंथों के साथ स्वतः स्थान बनता गया। आपको यह ज्ञात होगा कि किस प्रकार एक अंकन की सहायता से एक पुस्तक दूसरी पुस्तक के साथ स्वतः ही एक मशीनी प्रक्रिया के साथ सुसज्जित हो जाती है। अंकन ही प्रत्येक पुस्तक का सोपक्षिक स्थान निर्धारित करता है।

सापेक्षिक स्थान को प्राप्त करने की विधि इसलिए और भी सरल हो गई थी क्योंकि ड्यूई ने दशमलव अंकन (Decimal Notation) का उपयोग किया।

दशमलव अंकन (Decimal Notation)

NOTES

डी डी सी में दशमलव के उपयोग द्वारा प्रत्येक विषय को उसके दस उपभागों में, फिर इन दस उपभागों को और दस उपभागों में विभक्त किया गया। डी डी सी की इस विशेषता के कारण इसमें क्षमता अत्याधिक बढ़ गई जिसके द्वारा सूक्ष्म से सूक्ष्म विषयों को भी बिना स्थान परिवर्तन के समायोजित करना संभव हो गया। डी डी सी का प्रथम संस्करण केवल मुख्य वर्ग खंड एवं उपखंडों तक ही 3 अंकों से सीमित रहा। यदि आवश्यक हो तो प्रसूची में चौथे एवं पाँचवें स्थान का उपयोग करने का भी ड्यूई ने सुझाव दिया था। शुद्ध अंकन की सरलता ने ही इस पद्धति को लोकप्रिय बना दिया।

विस्तृत विनिर्देशन (Detailed Specification)

सापेक्षिक स्थिति एवं दशमलव अंकन के कारण अब यह संभव हो गया है कि किसी भी विषय को उसके उपभागों में सुगमता से विभाजित किया जा सकता है। ड्यूई के पूर्व यह संभव नहीं था कि पुस्तकों को सापेक्षिक अवस्थिति प्रदान की जाए। इस प्रकार के विचार से कि पुस्तकों को आगे पीछे खिसकाया जा सकता है, इस बिंदु की पुष्टि हो गई कि किसी भी पुस्तक को उसके विषयानुसार सूक्ष्म से सूक्ष्म विभाजन तक पहुँचाया जा सकता है।

ड्यूई ने अपने प्रथम संस्करण में लगभग एक हजार विषयों को सूचीबद्ध किया। डी डी सी के 19वें संस्करण में 21,504 (सहायक तालिकाओं के अतिरिक्त) विषयों को सूचीबद्ध किया गया है। साथ ही यह भी व्यवस्था है कि किस प्रकार अन्य विषयों के साथ भी इनको जोड़ा जाए। डी डी सी के विकास में निरंतर विस्तार होता रहा है। साथ ही साथ इस व्यवस्था में भी वृद्धि हुई है कि किस भी विषय को उसका विस्तार के अनुरूप अंकन प्रदान किया जा सके।

सापेक्षिक अनुमणिका (Relative Index)

वर्गीकृत प्रसूची एवं प्रलेखों की सुनियोजित व्यवस्था में मुख्य आपत्ति यह थी कि किसी प्रलेख के लिए उपभोक्त कहीं देखे। मैल्विल ड्यूई ने इस समस्या का समाधान सापेक्षिक अनुक्रमणिका के रूप में प्रदान किया। उनकी सापेक्षिक अनुक्रमणिका किसी भी विषय की पाठ्य सामग्री को भली-भाँति दर्शाने में सक्षम है। इस सापेक्षिक अनुक्रमणिका का अन्य लाभ यह था इसमें विषय के समस्त पहलुओं को एक ही स्थान पर संजो दिया गया था जबकि ये विषय अनुसूची में जहाँ-तहाँ छितरे हुए पड़े थे। इस सापेक्षिक अनुक्रमणिका में पर्चायवाची शब्द भी सूचीबद्ध किए गए थे।

आज इन नवप्रतनों को पुस्तकालय वर्गीकरण में सहज मान लिया गया है। परंतु यह जानना अति आवश्यकत है कि ड्यूई के पूर्व ऐसा नहीं था। ड्यूई की पद्धति वास्तव में एक आधुनिक पद्धति थी। मैल्विल ड्यूई ने आज की अनेक समस्याओं का उस काल में ही पूर्वानुमान कर लिया था। **संश्लेषण सिद्धांत एवं पक्ष संरचना (Principle of Synthesis and Facet Structure)** का यद्यपि उन्होंने स्पष्ट रूप से तो स्वीकार नहीं किया पर इनकी जानाकारी इन्हें अवश्य थी।

4. उत्तरवर्ती संस्करण

1885 में डी डी सी का द्वितीय संस्करण *Decimao Clasification and Relative Index* की आख्या के अंतर्गत प्रकाशित हुआ। इसी शीर्षक के नाम से बारह और संस्करण प्रकाशित हुए। इस पद्धति का द्वितीय संस्करण प्रथम संस्करण की अपेक्षा आकार में बड़ा एवं विस्तृत था।

इस पद्धति के बारह संस्करण 57 वर्षों के अंतराल में ही प्रकाशित हो गए। एक संस्करण एवं दूसरे संस्करण के मध्य का अंतराल दो से बारह वर्षों का रहा है। यह पद्धति 14वें संस्करण तक सफलतापूर्वक एक ही नीति निर्देश के अंतर्गत चलती रही। हर संस्करण में इस पद्धति का आकार बढ़ता गया। लेकिन उत्तरवर्ती संस्करणों में भी इसका ध्यान रखा गया कि इस पद्धति के आधारभूत ढाँचे में कोई परिवर्तन न हो।

4.1 पंद्रहवाँ मानक संस्करण

इस संस्करण के बारे में विशेष उल्लेख किया जाना आवश्यक है। यह संस्करण पिछले संस्करणों की संरचना से अपेक्षाकृत हटकर 1951 में प्रकाशित हुआ। इस संस्करण के संपादक मिल्टन फरग्युसन (Milton Ferguson) थे। यह प्रथम संस्करण था जिसके आख्या—पृष्ठ पर *इयूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन एवं रिलेटिव इंडेक्स* मुद्रित था। बिना किसी यथार्थ संशोधन के विषयों के गहन विस्तार में इस संस्करण ने रोक लगा दी। किए गए विस्तार संतलित नहीं थे और संशोधन अविचारित थे। अनुसूचियों के विस्तार का कार्य बहुधा साहित्य समादेश पर आधारित नहीं था।

इस संस्करण के प्रकाशन के तुरंत बाद यह स्पष्ट हो गया कि किए गए परिवर्तन, विशेषतः विषयों का पुनर्स्थापन निर्धारण, पुस्तकालयाध्यक्षों के अत्यंत बोझिल साबित हुआ। इनमें से अनेक ने इस नए संस्करण को अस्वीकार करते हुए 14वें संस्करण का उपयोग जारी रखा। पंद्रहवें संस्करण की बहुत आलोचना हुई एवं इसका घोर विरोध भी किया गया। यहाँ तक कि यह कहना भी शुरू कर दिया गया कि यह पद्धति मृतप्रायः सी है।

4.2 सोलहवाँ एवं उत्तरवती संस्करण

सोलहवाँ संस्करण 1958 में बेंजामिन कस्टर (Benjamin Custer) के संपादन में प्रकाशित हुआ और संशोधन के लिए सात वर्षीय कालचक्र निश्चित किया गया। इस संस्करण में वर्ग संख्याओं को पुनः चौदहवें संस्करण जैसा कर दिया गया, लेकिन जो विषय प्रद्रहवें संस्करण में तुलनात्मक दृष्टि से सही स्थान पर थे उन्हें ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया गया था इस संस्करण के जो भी अच्छे गुण थे उनको उसी प्रकार रखा गया जैसे मानक वर्तनी, सामयिक शब्दावली एवं सुंदर मुद्रण। अनुक्रमणिका स्वतंत्र रूप से अलग खंड में प्रकाशित होने लगी जो चौदहवें संस्करण से अधि विस्तृत थी। सोलहवें संस्करण में सर्वप्रथम फीनिक्स अनुसूचियाँ (Phoenix schedules) सम्मिलित की गईं।

सत्रहवें से उन्नीसवें संस्करण का विकास भी बेंजामिन कस्टर के संपादन में इसी नीति के अंतर्गत संपन्न हुआ। प्रत्येक संस्करण में इस बात का ध्यान अवश्य ही रखा गया कि ज्ञान विस्तार के अनुसार वर्गीकरण पद्धति में भी उसी प्रकार विकास हो। यह भी ध्यान रखा गया कि वर्ग संख्याओं की सुव्यवस्था बनी रहे।

4.3 बीसवाँ संस्करण

यह संस्करण 1989 में प्रकाशित हुआ जिसका संपादन जे.पी. कोमारोमी (J. P. Comaromi) ने किया। यह संस्करण चार खंडों में है। प्रथम खंड में प्रस्तावना एवं सारणियाँ, द्वितीय खंड में अनुसूचियाँ (000-5000), तृतीय खंड में अनुसूचियाँ (600-900) एवं चतुर्थ खंड में सापेक्षिक अनुक्रमणिका एवं मैनुअल। प्रत्येक खंड की पृष्ठ संख्या अलग-अलग है। समस्त चारो खंड 3308 पृष्ठों में समाहित हैं जिनमें निम्नलिखित भाग दिए गए हैं:

- (क) प्रस्तावना : उपयोक्ताओं के लिए इयूई पद्धति का परिचय एवं पद्धति का प्रयोग करने के संबंधित अनुदेश दिए गए हैं।
- (ख) सारणियाँ : सात सहायक सारणियाँ अंकन के साथ हैं जिन्हें किसी भी वर्ग संख्या के साथ जोड़ा जा सकता है।
- (ग) 19वें एवं 20वें संस्करण की तुलनात्मक सूचियाँ। पुनसर्थापन, लघुकरण इत्यादि।

खंड 2 एवं 3 : ये दोनों खंड इस पद्धति के मुख्य भाग का निर्माण करते हैं।

खंड 2 (000-500), खंड 3 (600-900)

- (घ) अनुसूचियाँ : ज्ञान-जगत् का 001-999 के अंतर्गत व्यवस्थापन।

खंड 4: इस खंड में निम्नलिखित दो भाग हैं :

NOTES

NOTES

(ड) सापेक्षिक अनुक्रमणिका : अनुसूचियों एवं सारणियों में दिए गए विषयों की वर्गानुक्रम में सूची।

(च) मैनुअल—यह वर्गीकरणकार को दुष्कर विषयों का वर्गीकरण करने में सहायता प्रदान करता है।

डी डी सी-20 के विकास में वर्ष 1988 के के दौरान दो महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं, जिन्होंने इसके भविष्य को प्रभावित किया है। 29 जुलाई 1988 को डी डी सी-20 के मूलपाठ के कंप्यूट टेप को मेसाचूसेट्स राज्य के एक प्रतिष्ठान को सुपुर्द कर दिया गया ताकि उसके द्वारा संस्करण का प्रकाशन हो सके। फॉरिस्ट प्रेस एवं डी डी सी, ये दोनों ओहायो स्थित एक लाभ निरपेक्ष संस्था ऑनलाइन कंप्यूटर लाइब्रेरी सेंटर (OCLC : Onlice Computer Library Centre) के भाग बन गए।

डी डी सी का 21वाँ संस्करण 1996s में प्रकाशित हो चुका है। इसकी संरचना 20वें संस्करण के समान है।

4.4 संक्षिप्त डी डी सी

छोटे तथा धीरे-धीरे विकसित होने वाले पुस्तकालयों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए सन् 1984 में डी डी सी का एक संक्षिप्त संस्करण जारी किया गया। यह संक्षिप्त संस्करण डी डी सी के पूर्ण संस्करण के लगभग द्वि-पंचम आकार का था। वर्तमान में संक्षिप्त संस्करण अपने ग्यारहवें संस्करण में है। इस ग्यारहवें संस्करण का प्रकाशन पूर्ण उन्नीसवें संस्करण के तुरंत बाद किया गया। डी डी सी के समानांतर संक्षिप्त संस्करणों, जिनका प्रकाशन उन छोटे पुस्तकालयों के लिए किया जाता है जिन्हें उच्च विशेषज्ञता पूर्ण पर प्रलेख संग्रह की आवश्यकता नहीं होती, में सम्मिलित अंकन कभी-कभी ही पाँच अंकों से अधिक होते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका के अधिकतर विद्यालय पुस्तकालयों तथा अनेक लघु सार्वजनिक पुस्तकालयों में इस संक्षिप्त संस्करण का उपयोग हो रहा है। अन्य देशों में भी इसका व्यापक उपयोग हो रहा है।

5. आधारभूत सिद्धांत

डी डी सी के प्रथम संस्करण की प्रस्तावना में इस पद्धति के सिद्धांतों का विशेषकर विषयों के अनुक्रम के संदर्भ में, कोई उल्लेख नहीं है। लेकिन ड्यूई ने नटाले बैटजेटी (Natale Battezzati), जैकब श्वार्ट्ज (Jacob Schwartz) एवं डब्ल्यू.टी. हैरिस (W.T. Harris) का आधार व्यक्त किया है वास्तव में इस पद्धति का दार्शनिक डब्ल्यू. टी. हैरिस का विषय वर्गीकरण ही है।

5.1 दार्शनिक आधार

पुस्तकालय वर्गीकरण के क्षेत्र में दार्शनिकों एवं तर्कशास्त्रियों ने बड़ा योगदान दिया है। पुस्तकालय वर्गीकरण की जड़े दर्शनशास्त्र में पाई जाती हैं। यही बात डी डी सी पर भी लागू होती है।

डी डी सी का मुख्य वर्ग हैरिस द्वारा 1870 में प्रतिपादित ज्ञान वर्गीकरण पर आधारित है जो कि फ्रांसिस बेकन (Francis Bacon's) चार्ट ऑफ लर्निंग (Chart of Learning) का विपरीत क्रम है।

5.2 विधानुसार वर्गीकरण

सामान्यतः यह कहा जाता है कि पुस्तकालय वर्गीकरण में एक ही तरह के विषय एक ही समूह में रखे जाते हैं। अधिकांश वर्गीकरण पद्धतियाँ विधानुसार वर्गीकरण के सिद्धांत पर आधारित हैं डी डी सी की मुख्य विशेषता यही है कि इसमें मुख्य वर्गों एवं उनके उपवर्गों का विभाजन शैक्षणिक विचार पर अधिक आधारित है, बजाय केवल विषयों के। परिणामस्वरूप एक विषय को एक से अधिक स्थानों पर वर्गीकृत किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप यदि पुस्तक का विषय 'Copper' है तो उसको **Chemistry, Metalurgy, mineralogy, chemical technolgy** इत्यादि विषयों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है जो कि लेखक के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। यह उपागम विधानुसार (classification by discipline) वर्गीकरण के रूप में माना जाता है कि एक विधा को एक ही स्थान पर वर्गीकृत करने से भिन्न है। डी डी सी एक पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति है जो विषयों को उनके संदर्भ के आधार पर वर्गीकृत करती है। उदाहरण के तौर copper के रसायन पक्ष की पुस्तक रसायनशास्त्र तथा धातु पक्ष की पुस्तक धातु विज्ञान में रखी जाएगी। डी डी सी का यह दृष्टिकोण उपयुक्त ही था क्योंकि पुस्तकालयों में अधिकांशतः पुस्तकें पाठकों द्वारा विधा के

दृष्टिकोण में ही माँगी जाती हैं जो कि जेम्स डफ ब्राउन (James Duff Brown) कृत Subject Classification के ठीक विपरीत है जो विषयों की स्थिति एक ही स्थान पर निर्धारित करती है।

ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन
(डी डी सी)

डी डी सी ने ज्ञान-जगत् को नौ मूल वर्गों में बाँटा है। उदाहरणार्थ Philosophy, Religion, Social Science, Language, Pure Technology, The Arts, Literature तथा General Geography and History। ड्यूई के समय में ये ही शैक्षणिक विधाएँ हुआ करती थीं। अब इन मुख्य वर्गों में Natural science, Usefule arts, Schoology इत्यादि में अनेक नई शैक्षणिक विधाओं का समावेश हो गया है।

NOTES

5.3 पदानुक्रमिक संरचना

डी डी सी मुख्यतः पदानुक्रमिक पद्धति (Hierarchical Scheme) है जो कि विभाजन के सामान्य सिद्धांत पर आधारित है। यह ज्ञान-जगत् को एक साथ लेकर फिर इसे वर्गों एवं उपवर्गों में प्रत्येक स्तर पर कुछ लक्षणों के आधार पर विभाजित करती है। इस प्रकार इसका वृद्धिक्रम सामान्य से विशेष की ओर है जो इस पद्धति की पदानुक्रमिक संरचना को दर्शाता है।

जिस प्रकार के अंकन को अपनाया गया है उसके अनुसार प्रत्येक विभाजन स्तर पर केवल दस उपविभाजन ही संभव हैं। प्रत्येक वर्ग अपने ऊपर के वर्ग का अधीनस्थ वर्ग है तथा समान स्तर के वर्ग परस्पर समकक्ष हैं। यह पदानुक्रमिक संरचना को दर्शाता है।

5.4. व्यावहारिकता

ड्यूई का मानना था कि “दार्शनिक सिद्धांत और सटीकता सभी जगह व्यावहारिक उपादेयता संभव हुई है।” इस प्रकार डी डी सी में व्यावहारिकता की परंपरा एवं उपयोगिता के प्रति प्रतिबद्धता दोनों को अक्षुण्ण रखा गया है। ड्यूई एवं उत्तरवर्ती संपादकों के समय-समय पर पूर्ण प्रयास किया कि इसकी सामयिक उपयोगिता बनी रहे जिसमें आगामी समस्याओं का समाधान ढूँढा जा सके। इन्हीं गुणों ने डी डी सी को स्थायित्व प्रदान किया है।

डी डी सी को स्थायित्व प्रदान कराने में एक अन्य घटक, इसकी सतत् संशोधन प्रक्रिया, है जो इस पद्धति को अद्यतन रखती है। संशोधनों का स्वरूप सामान्यतः निम्नलिखित है:

- विस्तार (Expansion)
- लघुकरण (Reduction)
- पुनर्स्थान निर्धारण (Relocation)

विस्तार

नए विषयों के समायोजन एवं विषयों के सूक्ष्म विभाजन हेतु इस प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है। यह प्रक्रिया उपयुक्त ही प्रतीत होती है। किसी विषय में यदि ज्ञान का अधिक विस्तार हो रहा है तो उन नए विषयों को पद्धति में समायोजित किया ही जाना चाहिए। आज के बढ़ते हुए विशेषज्ञता के युग में पुस्तकालयों की पाठ्य सामग्री भी अधिक विशिष्ट हो गई है। ऐसे विषयों को नई वर्ग संख्या प्रदान करने हेतु इनका अधिकाधिक सूक्ष्म विभाजन एवं उप-विभाजन करना ही पड़ता है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. डी डी सी पद्धति में सापेक्षित स्थान की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।
2. डी डी सी के पंद्रहवें मानक संस्करण का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

लघुकरण का अर्थ है, विद्यमान उप-विभाजनों में से जिनका अत्यंत कम उपयोग किया जा रहा हो, उनको हटाना। हटाने के बाद उन्हें अधिक सामान्य विषयों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।

NOTES

पुनस्थान निर्धारण

इस प्रक्रिया द्वारा प्रत्येक नए संस्करण में अनेक विद्यमान विषयों को स्थानांतरित कर उनका पुनस्थान निर्धारण किया जाता है।

6.1 फीनिक्स अनुसूचियाँ

ड्यूई को छोटे-छोटे अंशों में अईयतन बनाए रखने की यह एक विधि है। जो अनुसूचियाँ पुरानी हो चली हैं और जिनमें आमूल परिवर्तन की आवश्यकता होती है उनको हटाकर पूर्णतया नए वर्गीकरण द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता है। यह प्रक्रिया सोलहवें संस्करण से प्रारंभ की गई तथा नवीन संस्करणों में भी जारी है। कुछ विषयों की अनुसूचियों को पूरी तरह से नष्ट कर उसके स्थान पर नवीन अनुसूचियों का विकास किया जाता है तथा उनको नए वर्गों में ढाल दिया जाता है। ऐसी नवीन अनुसूचियों को, जो पुरानी अनुसूचियों को नष्ट करके तैयार की गई है, फीनिक्स अनुसूचियाँ (Phoenix schedules) कहते हैं। इस प्रक्रिया में वर्ग संख्याओं की अखंडता की नीति का परित्याग कर दिया जाता है और पहले से उपलब्ध विभाजनों का ध्यान रखे बिना ही कई विषयों के लिए नई अनुसूचियाँ तैयार कर ली जाती हैं। नए संस्करणों में निम्नलिखित अनुसूचियों को फीनिक्स उपचार प्रदान किया गया है:

546 कInरण में

6.2 संगठनात्मक व्यवस्था

मेल्विल ड्यूई द्वारा स्थापित Lake Pacid Education Foundation के स्वामित्व वाले Forest Press पर डी डी सी भरण-पोषण का दायित्व है। इस पद्धति का संपादन कार्य एक अनुबंध के अंतर्गत लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस (Library of Congress) के पास है लेकिन इसे प्रकाशित करने एवं इसके विपणन की जिम्मेदारी फॉरेस्ट प्रेस की है। अब ये दोनों संस्थाएँ ओ सी एल सी (OCLC) का अंग बन गई हैं। इन दोनों संगठनों के बीच डी डी सी एडिटोरियल पॉलिसी कमेटी (DDC Editorial Policy Committee) भी है जिसमें पुस्तकालय विज्ञान के कुछ अध्यापक एवं पुस्तकालय भ हैं जो फॉरेस्ट प्रेस एवं संपादक को समय-समय पर अपनी सलाह से अवगत कराते रहते हैं।

6.3 संशोधन प्रक्रिया

प्रत्येक नया संस्करण पिछले संस्करणों पर आधारित होता है। इस पद्धति के उपयोक्ताओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इसके संपादक DDC Editorial Policy Committee निरंतर परामर्श लेते हुए यह तय करते हैं कि कौन-सी अनुसूची में किस स्तर तक संशोधन एवं समीचा का आवश्यकता है। विस्तृत संशोधन करने हेतु विषय विशेषज्ञों से सलाह ली जाती है। संशोधन करने का मुख्य सिद्धांत यह है कि भिन्न-भिन्न प्रकार के उपयोक्ताओं जैसे—छोटे-बड़े सार्वजनिक एवं अनुसंधान पुस्तकालयों के पुस्तकालयाध्यक्ष, अध्यापक एवं विद्यार्थी वर्ग की आवश्यकताओं की पूर्ति किस प्रकार से की जा सके।

इस पद्धति के उपयोक्तों के उपयोग हेतु *DDC Additions, Notes, and Decisions* नामक पत्रिका समयानुसार प्रकाशित होती रहती है। यह बुलेटिन एक उपयोगी पुस्तिका है जो उपयोक्तों को डी डी सी अनुसूचियों में किए गए परिवर्तनों से समय समय पर अवगत कराती है।

6.4 डी डी सी का उपयोग

यद्यतप डी डी सी प्रायः आलोचना हुई है फिर भी यह पद्धति संयुक्त राज्य अमेरिका एवं विश्व के अन्य देशों में बड़ी तीव्र गति से अपनाई हैं। सर्वक्षणों से तो यही सिद्ध होता है। इसका उपयोग 1901 में भी इतना अधिक था कि अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन के कैटलॉग सेक्सन (American Library Association's

NOTES

Catalog Section) में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया गया है कि लाइब्रेरी ऑफ कॉग्रेस द्वारा प्रकाशित प्रिन्टेड कैटलॉग कार्ड्स (Printed Catalog Cards) पर डी डी सी का वर्ग संख्याओं को भी मुद्रित किया जाए। अतः पुस्तकालय व्यवसाय के दबाव के फलस्वरूप लाइब्रेरी ऑफ कॉग्रेस को 1930 में इन कार्डों पर डी डी सी संख्याएँ प्रदान करने के लिए एक नया कार्यालय खोलना पड़ा। इसका अनुसरण करते हुए एच डब्लू विल्सन कंपनी (H.W. Wilson Company) द्वारा मुद्रित कैटलॉग कार्ड्स एवं स्टैंडर्ड कैटलॉग्स (Catalog Cards and Standard Catalogs) में ए एल ए (ALA) द्वारा प्रकाशित बुक लिस्ट (Book List) में आर.आर. बोकर (R. R. Bowker) द्वारा प्रकाशित पब्लिशर्स वीकली (Publisher's Weekly) में एवं अमेरिकन बुक पब्लिशिंग रिकार्ड (American Book Publishing Record) में तत्पश्चात् ब्रिटिश नेशनल बिब्लियोग्राफी (British National Bibliography) द्वारा मुद्रित कैटलॉग कार्ड्स एवं सूचियों में कुछ विशिष्ट विषयों के लिए डी डी सी संख्याओं का उपयोग किया जाने लगा।

7. डी डी सी का 19वाँ संस्करण

सप्तवर्षीय संशोधन चक्र का अनुसरण करते हुए डी डी सी का 19वाँ संस्करण 1979 में प्रकाशित हुआ। यह संस्करण डी डी सी के पिछले तीन संस्करणों में हुए विकास को दर्शाता है। विशेषकर पिछले दो संस्करणों में किए गए संशोधनों में से जिन्हें सामान्य स्वीकृति मिली तथा जिनका स्वागत हुआ, उन संशोधनों को इस संस्करण में समेकित करने पर बल दिया जाता है। डी डी सी की Editorial Policy Committee ने इस बारे में कहा कि "जहाँ परिवर्तन से अधिक स्थायित्व का महत्त्व है वहाँ परिवर्तन नहीं किया गया है और जहाँ नया दृष्टिकोण पुरातन दृष्टिकोण से अधिक उपयोगी है वहाँ परिवर्तन किया गया है"।

इस संस्करण में पिछले संस्करणों की अपेक्षा अधिक प्रविष्टियाँ हैं तथा अधिक विषयों (topics) के संख्या-निर्माण के प्रावधान एवं अवसर प्रदान किए गए हैं। इस पद्धति में अब अधिक क्षमता है जिससे हम विस्तारपूर्वक वर्गीकरण कर सकते हैं। इसमें कुल 21,504 प्रविष्टियाँ हैं।

19वाँ संस्करण तीन खंडों में प्रकाशित हुआ है। खंड 1- परिचय एवं सारणियों, खंड 2- अनुसूचियाँ एवं खंड 3- सोपक्षिक अनुक्रमणिकां यह संस्करण बेंजामिन कस्टर जिन्होंने 15वें संस्करण के असफल होने पर कार्यभार संभाला था, के संपादन में संपादित चौथा एवं अंतिम संस्करण था। यद्यपि प्रथम एवं खंड इस पद्धति के पहलुपूर्ण भाग हैं किंतु द्वितीय खंड (अनुसूची) इस पद्धति का मुख्य भाग है। इसका विस्तृत अध्ययन करना उपयोगी रहेगा।

7.1 अनुसूचियाँ

इस पद्धति का मुख्य भाग अनुसूची है। इसमें 21,504 प्रविष्टियाँ हैं जिसमें ज्ञान-जगत् के समस्त विषयों को तब तक विभाजित एवं उप-विभाजित किया गया है जब तक कि किसी विषय को उसकी विशिष्ट वर्ग संख्या नहीं मिल जाती है।

मुल योजना : 19वें संस्करण में भी पूर्व संस्करणों के समान ही ज्ञान-जगत् को विधानुसार नौ मुख्य वर्गों में बाँटा गया है। दसवाँ वर्ग सामान्य वर्ग का है। इन मुख्य वर्गों में से अनेक शैक्षिक विधाएँ हैं जैसे शुद्ध विज्ञान (Pure Sciences), प्रौद्योगिकी (Technology), एवं सामाजिक विज्ञान (Social Sciences)। विभिन्न विषयों को अब मानविकी, सामाजिक विज्ञान, शुद्ध विज्ञान और अनुप्रयुक्त विज्ञान जैसे अध्ययन क्षेत्रों में समूहबद्ध किया जाता है। डी डी सी में दर्शन (Philosophy), भाषा विज्ञान (Languages) तथा साहित्य (Literature), जो मानविकी (Humanities) के उपविभाजन हैं, को सामाजिक विज्ञान (Social Sciences), शुद्ध विज्ञान (Pure Sciences) तथा अनुप्रयुक्त विज्ञान (Applied Sciences) के समकक्ष रखा गया है। ड्यूई के नौ मुख्य वर्गों में से छः मानविकी (HUmanities) संबंधित है जो उन्नीसवीं शताब्दी में उच्च शिक्षा की स्थिति को दर्शाता है। ड्यूई ने इनको सामाजिक विज्ञान (Social Sciences), शुद्ध विज्ञान (Pure Sciences) तथा अनुप्रयुक्त विज्ञान (Applied Sciences) के समकक्ष वर्गीकरण स्तर प्रदान किया।

NOTES

ज्ञान-जगत् के प्रथम विभाजन क्रम में संपूर्ण मानव ज्ञान को 0-9 तक सम्मिलित किया गया है। 0 वर्ग को उपयोग सामान्य विषयों (Generalities) के लिए किया गया है। डी डी सी सामान्य विषयों में वे विषय सम्मिलित किए गए हैं जो अन्य नौ मुख्य वर्गों में नहीं रखे जा सकते हैं। इनमें सामान्य समाचारपत्र एवं विश्वकोश और पत्रकारिता एवं पुस्तकालय विज्ञान जैसे विषयों को रखा गया है। मुख्य वर्ग 1-9 में ज्ञान-जगत् के बड़े विषयों को स्थान दिया गया है। ये मुख्य वर्ग निर्मलखित हैं

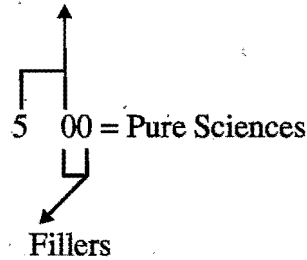
| | |
|-----|---|
| 000 | Generalities |
| 100 | Philosophy and related disciplines |
| 200 | Religion |
| 300 | Social Sciences |
| 400 | Languages |
| 500 | Pure Science |
| 600 | Technology (Applied Sciences) |
| 700 | The Arts |
| 800 | Literature (Belles-Letters) |
| 900 | General Geography and History and their auxiliaries |

इस प्रकार दस मुख्य वर्गों को 000 से 900 के अंतर्गत प्रदर्शित किया गया है। इन संख्याओं के प्रथम स्थान पर रखे अंक जैसे 0, 1, 2, 3, 49 का विशेष अर्थ है। अंत के दो शून्यों की भूमिका रिक्त स्थानों को भरकर तीन अंकों को बनाने भर की है। डी डी सी के नियमानुसार कम से कम तीन अंकों का उपयोग करना आवश्यक है। उदाहरणस्वरूप 500-599 मुख्य वर्ग Pure Sciences को दर्शाते हैं।

विभाजन : प्रत्येक मुख्य वर्ग के 10 विभाजन हैं जिन्हें 0-9 द्वारा दर्शाया गया है। इन विभाजनों का अंकन में दूसरा स्थान है अर्थात् ये द्वितीय स्तर के विभाजन हैं।

उदाहरणस्वरूप :

मुख्य वर्ग संख्या (Main class number)



मुख्य वर्ग संख्या (Main class number)

विभाजन 0 हर मुख्य वर्ग में उसके सामान्य विषय को दर्शाता है और 1-9 के विभाजन उसके उपविभाजन को दर्शाते हैं। उदाहरणार्थ 50 के अंतर्गत विशुद्ध विज्ञान के सामान्य विषयों को रखा गया है। प्रत्येक विभाग को पुनः दस अनुभागों में तथा जहाँ तक सामान्य कृतियों (General works) का संबंध है इन्हें नौ अनुभागों में विभाजित किया जाता है। जैसे:

- 501 Philosophy
- 502 Miscellany
- 503 Dictionaries and encyclopedias
- 504 Vacant
- 505 Serial publications
- 506 Organisations
- 507 Study and teaching
- 508 Travel and surveys
- 509 Historical and geographical treatment

उपर्युक्त संख्याओं के सेट में तृतीय स्थान पर आने वाले 1-9 तक के अंक मुख्य वर्ग 5 में द्वितीय स्थान पर आने वाले 0 विभाग के अनुभाग हैं दूसरे शब्दों में तृतीय स्थान अनुभाग को द्योतित करता है।

अनुभाग : इसी प्रकार, प्रत्येक विभाजन जैसे 51 Mathematics, 52 Astronomy, 53 Physics को 10 उपविभाजनों या अनुभागों में विभाजित किया गया है। उपविभाजन के तृतीय अंक में 0 की स्थिति इस विषय की सामान्य कृतियों को प्रदर्शित करती है जबकि 1-9 इस सेक्शन के उपविभाजन को प्रदर्शित करते हैं। उदाहरणस्वरूप, 530 Physics के लिए है जबकि 531-539 Physics के उपविभाजन या अनुभाग को प्रदर्शित करते हैं। डी डी सी में प्रत्येक विषय को किसी भी सूक्ष्म स्तर तक वर्गीकृत करने की क्षमता है। इसके साथ दशमलव अंक का भी उपयोग करना होता है। दशमलव बिंदु का उपयोग तृतीय एवं चतुर्थ अंक के बीच करना होता है। 536 Heat को निम्नलिखित रीति से विभाजित किया जा सकता है :

- 536.1 Theories
- 536.2 Transmission
- 536.3 Radiation
- 536.4 Effects of heat on matter
- 536.5 Temperature
- 536.3 Radiation is further divided as
 - 536.31 Reflection
 - 536.32 Refraction
 - 536.33 Radiation
 - 536.34 Absorption

उपर्युक्त उदाहरण में Physics का विभाजन पाँचवें क्रम पर समाप्त हुआ है। लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि सदैव ऐसी ही हो। प्रत्येक वर्ग संख्या को उस विषय की विशिष्टता तक पहुँचने तक विभाजित किया जाता है। अतः दशमलव अंकन के बाद लगे अंकों की संख्या की कोई निर्धारित सीमा नहीं है। उदाहरणस्वरूप :

- 390 Customs, etiquette, folklore
- 394 General customs
 - 394.2 Special occasions
 - 394.26 Holidays

NOTES

NOTES

आपने ध्यान दिया होगा कि छठे एवं सातवें अंक के बीच रिक्त स्थान छोड़ा गया है। यह (रिक्त स्थान) अंकन का भाग नहीं है। वर्ग संख्याओं को सरलता से पढ़ा तथा लिखा जा सके, इसलिए दशमलव के बाद प्रत्येक तीन अंक उपरांत एक रिक्त स्थान छोड़ दिया जाता है।

यद्यपि अंकन 0 (शून्य) सामान्य कृतियों के लिए आरक्षित है लेकिन फिर भी कई स्थानों पर इसका प्रयोग विशिष्ट उद्देश्य के लिए भी किया गया है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

जैसे : 301–307 Sociology के अंकन।

7.2 अंकन

डी डी सी का अंकन (Notation) इसकी विशेषता भी है एवं अवरोधक भी। डी-डी सी ने शुद्ध अंकन (अक्षरों का प्रयोग नाम मात्र को ही है) को ही अपना जो इंडो-अरेबिक (Indo-Arabic) संख्याओं पर आधारित हैं। इंडो अरेबिक (Indo-Arabic) संख्याओं ने इसको एक सार्वभौतिक पद्धति बना दिया है। किंतु केवल नौ तक ही विभाजन करने से इसकी क्षमता सीमित हो गई। 0 (शून्य) का उपयोग केवल सामान्य कृतियों कि लिए किया जाता है।

अंकन में पदानुक्रम : इस अंकन की दूसरी मुख्य विशेषता इसकी पदानुक्रमिक संरचना (Hierarchical Structure) है। ड्यूई ने हय निश्चित किया कि अंकन प्रत्येक चरण पर वर्ग का पदानुक्रम प्रस्तुत करे। अंकन में पदानुक्रम का अर्थ है कि प्रत्येक स्तर पर पारस्परिक अनन्यता वाले वर्ग होते हैं जो एक-दूसरे के समकक्ष होते हैं। प्रत्येक उत्तरवर्ती स्तर के विभाजन में वर्ग की विशिष्टता में वृद्धि होती जाती है, अर्थात् विभाजन के स्तर पर विशिष्टता बढ़ती जाती है। किसी दिए गए स्तर के वर्ग अपने उच्चस्थ वर्ग के परिप्रेक्ष्य में अधीनस्थ वर्ग होते हैं तथा अपने निम्नस्थ वर्ग के परिप्रेक्ष्य में उच्चस्थ वर्ग होते हैं।

निम्नलिखित उदाहरण में इस पद्धति के अंकन की पदानुक्रमिक संरचना को दर्शाया गया है:

| | |
|---------|--------------------------------|
| 500 | Pure Sciences |
| 510 | Mathematics |
| 516 | Geometry |
| 516.3 | Analytic Geometries |
| 516.37 | Metric Differential Geometries |
| 516.372 | Euclidean |

जैसे-जैसे वर्गीकरण सामान्य से विशिष्ट के ओर अग्रसर होगा वैसे-वैसे हर स्तर वर्ग संख्या में एक अंक की वृद्धि होती जाएगी। इस पदानुक्रम संरचना में कुछ अपवाद भी हैं जो निम्नलिखित हैं:

- कभी कभी वर्ग संख्या का फैलाव विषय की गहराई को प्रदर्शित करता है। इसे अनुसूची के केंद्रीय प्रविष्टि के रूप में दर्शाया जाता है। उदाहरणस्वरूप 541–547 में वर्ग संख्या का फैलाव वर्ग Chemistry को प्रदर्शित करता है।
- विषय का उपविभाजन सदा ही उस विषय का अधीनसी वर्ग ही हो यह आवश्यक नहीं है। अप्रयुक्त अंकन की उपलब्धता तथा अंकन को छोटा करने के उद्देश्य से भी ऐसा किया जाता जैसे-574 में Biology एवं इसके अधीनस्थ विषयों का समावेश है। Botanical Sciences एवं Zoological Sciences को 580 एवं 590 के वर्ग में रखा गया है कि 574 के साथ।

7.3 सारणियाँ

पिछले कुछ संस्करणों से डी डी सी पद्धति अब धीरे धीरे परिगणनात्मक वर्गीकरण (Enumerative Classification) से वैश्लेषिक-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण (Analytico Synthetic Classification) की ओर अग्रसर हो रही है। अब इसमें कई ऐसी संख्याएँ हैं जो अनुसूचियों में परिगणित नहीं हैं। ऐसी संख्याओं को दो विभिन्न स्थानों से लेकर संश्लेषण कर बनाया जा सकता है। इस कार्य के लिए सहायक सारणियाँ डी डी सी के प्रथम खंड में दी हुई हैं।

प्रथम खंड को निम्नलिखित तीन भागों में प्रस्तुत किया गया है :

- (i) प्रस्तावना,
- (ii) सारणियाँ, एवं
- (iii) सारांश-तालिकाएँ।

संपादक ने प्रस्तावना ने इस पद्धति का परिचय देते हुए इसकी मुख्य विशेषताओं का वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त नये संस्करण में इस पद्धति के मुख्य लक्षण के साथ इसकी मुख्य योजना भी दी गयी है इस पद्धति के प्रायोगिक उपयोग की जानकारी मिल सके। इस पद्धति के अठारहवें संस्करण तक मेल्विल ड्यूई द्वारा बारहवें संस्करण तक मेल्विल ड्यूई द्वारा बारहवें संस्करण की प्रस्तावना ही प्रस्तुत की जाती थी। उन्नीसवें संस्करण में मेल्विल ड्यूई की इस प्रस्तावना को हटा कर संपादकीय प्रस्तावना सम्मिलित की गई। उन्नीसवें संस्करण की संपादकीय प्रस्तावना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है और इसका अध्ययन ध्यानपूर्वक किया जाना चाहिए।

उन्नीसवें संस्करण में सात सारणियाँ प्रदान की गई हैं जो अठारहवें संस्करण में भी उपलब्ध थीं, लेकिन स्थान-स्थान पर कुछ आवश्यक परिवर्तन एवं विस्तार भी किया गया है। सत्रहवें संस्करण में केवल दो सारणियाँ थीं—(1) भौगोलिक क्षेत्र सारणी (Areas Table); एवं (2) मानक उपविभाजन (Standard Sub-Division)। अठारहवें संस्करण में सारणियों की संख्या को बढ़ाकर दो से सात कर दिया गया। इस प्रकार पाँच और सारणियों का विकास हुआ। ये सात सारणियाँ निम्नलिखित हैं;

| | |
|-----------|--|
| Table 1 : | मानक उपविभाजन (Standard Subdivisions) |
| Table 2 : | भौगोलिक क्षेत्र (Areas) |
| Table 3 : | साहित्य-विशेष के उपविभाजन (Subdivisions of Individual Literatures) |
| Table 4 : | भाषा-विशेष के उपविभाजन (Subdivisions of Individual Languages) |
| Table 5 : | जाति, प्रजाति एवं राष्ट्रजन समूह (Racial, Ethnic, National Groups) |
| Table 6 : | भाषाएँ (Languages) |
| Table 7 : | जन (Persons), |

उपर्युक्त सात सारणियों में से सबसे विस्तृत सारणी भौगोलिक क्षेत्र सारणी (Areas Table) है जो इस खंड के सर्वाधिक पृष्ठों में है। वर्तमान में केवल चार सारणियाँ ही सर्वाधिक उपयोग में आती हैं। ये हैं—(1) मानक उपविभाजन; (2) भौगोलिक क्षेत्र, (3) साहित्य-विशेष के उपविभाजन; एवं (4) भाषा-विशेष के उपविभाजन। इन सारणियों में दिए गए अंकन का उपयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता बल्कि इन्हें मुख्य वर्ग संख्या के साथ जोड़ा जाता है।

सारणी 1, 2, 5 एवं 7 का उपयोग अनुसूचियों में दी गई वर्ग संख्याओं के साथ जोड़कर किया जा सकता है। इनका उपयोग वर्ग संख्या 000 से लेकर 999 तक कहीं भी किया जा सकता है। मानक उपविभाजन सारणी का उपयोग किसी भी मुख्य वर्ग संख्या के साथ किया जा सकता है। कभी एक शून्य (0) के साथ तथा कभी एक से अधिक शून्य (0) का उपयोग दिए गए निर्देशानुसार कर सकते हैं। यदि अनुसूची में एक शून्य (0) का उपयोग सामान्य कृतियों के लिए किया जा चुका है तो मानक उप-विभाजन को दर्शाने के लिए 00 का उपयोग करना होगा और यदि अनुसूची में 00 का उपयोग किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए लिया जा चुका है तो मानक उप-विभाजन को दर्शाने के लिए -000 का उपयोग किया जाएगा।

NOTES

NOTES

सारणी 2, 5 तथा 7 का उपयोग निर्देशों के अनुसार करना होगा। निर्देश न होने पर इसे भौगोलिक या भूक्षेत्र सारणी की संख्या 09 के साथ जोड़ा जा सकता है। इसी प्रकार -089 के साथ जातीय, प्रजाति एवं राष्ट्रजन समूह, इत्यादि को एवं -088 के साथ व्यक्तियों को थोड़ा जा सकता है।

सारणी 6, जो भाषाओं के लिए है, का उपयोग सभी अनुसूचियों के साथ किया जा सकता है। लेकिन इसका उपयोग केवल उसी संख्या एवं अन्य सारणी के साथ किया जा सकता है जहाँ वर्गीकरणकार को विशिष्ट निर्देश दिए गए हैं।

सारणी 3 एवं 4 में दिए गए अंकों का उपयोग केवल साहित्य एवं भाषा वर्ग के साथ ही किया जा सकता है। सारणी 3 में दिए अंकों का उपयोग केवल साहित्य-विशेष की तारांकित (*) आधार-संख्याओं के साथ किया जा सकता है जो अनुसूची में 810-890 तक फैली हुई हैं। इसी प्रकार सारणी 4 में दिए गए अंकों का उपयोग भाषा-विशेष की तारांकित आधार संख्याओं के साथ किया जा सकता है जो अनुसूची में 420-490 तक फैली है। इन सारणियों के उपयोग से डी डी सी की क्षमता में वृद्धि हुई है।

सारांश तालिकाएँ : प्रथम खंड के अंत में तीन सारांश तालिकाएँ दी गई हैं जो यह दर्शाती हैं कि डी डी सी में ज्ञान-जगत् को कैसे विभाजित किया गया है। सर्वप्रथम विषयों को मुख्य वर्गों, तत्पश्चात् उनका उपविभाजन करके कुल 1000 विभाजन दर्शाए गए हैं। इस प्रकार 10 मुख्य वर्ग, 100 विभाजन एवं 1000 उपविभाजन या अनुभाग प्रस्तुत किए गए हैं। ये सारांश तालिकाएँ खंड 2 में दिए गए इन विभाजनों को समझने के लिए एक उत्तम संदर्शिका का कार्य करती हैं तथा नव-शिक्षार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

7.4 सापेक्षिक अनुक्रमणिका

डी डी सी की सापेक्षिक अनुक्रमणिका (Relative Index) इसका एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण भाग है और आरंभ से ही इस पद्धति का फ़ायदा मानी जाती रही है। यह अनुक्रमणिका वर्गीकरण कार्य में अत्यंत सहायक है क्योंकि इसी के द्वारा उन विषयों को, जो अनुसूचियों में विधानुसार विभक्त होने के कारण फैले हुए हैं, एक वर्णानुक्रम में प्रस्तुत कर दिया गया है। सापेक्षिक अनुक्रमणिका अनुसूचियों की पूरक हैं। एक ओर अनुसूची में ज्ञान-जगत् के समस्त विषयों को विषयानुसार व्यवस्थित किया गया है वहीं सापेक्षिक अनुक्रमणिका में सारे विषयों को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया गया है। यह अनुक्रमणिका वर्णानुक्रम में व्यवस्थित अन्य सामान्य अनुक्रमणिकाओं से भिन्न है। इसमें 'सापेक्षिक' शब्द का उपयोग इसलिए किया गया है क्योंकि इसमें ऐसे विषयों को एक साथ संस्थित (collocate) किया गया है जिनमें सामंजस्यता है।

19वें संस्करण की अनुक्रमणिका का व्यवस्थापन 18वें संस्करण के समान ही है। 19वें संस्करण के संपादक ने यह दावा किया है कि इसमें दी गई अनुक्रमणिका अधिक समक्ष और फलप्रद है। कई स्थानों से अन्योन्य तथा अवांछित प्रविष्टियों को हटा दिया गया है। ऐसा हर संस्करण में समयानुसार संपादक अपने विवेक से करते रहते हैं। ताकि वर्गीकरण पद्धति नवीन एवं उद्यत बननी रहे। कई स्थानों पर पर्यायवाची शब्दों का उपयोग किया गया है। सापेक्षिक अनुक्रमणिका इतनी विशाल बनाई गई कि यह अनुसूचियों की पूरक सी लगती है।

सापेक्षिक अनुक्रमणिका अत्यधिक विस्तारित है। इसके अंतर्गत किसी विषय के नीचे दिए गए विषयों से उसके सापेक्षिक संबंध हैं। विभिन्न विषयों में अलग-अलग अर्थ की अभिव्यक्ति करने वाले प्रकरणों को बहुत अच्छे ढंग से प्रदर्शित किया गया है। निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि अनुक्रमणिका में किस प्रकार copper से संबंधित विषयों को प्रस्तुत किया गया है।

Copper

Age

archaeology

93015

ARts

decorative

739.511

other aspects see Metal arts

chemistry

inorganic

546.652

| | |
|--|------------|
| organic | 547.056 52 |
| technology | 661.065 2 |
| organic | 661.895 |
| soc. & econ. aspects <i>see</i> Secondary industries | |
| compounds | |
| chemistry <i>see</i> Copper chemistry | |
| plant nutrition <i>see</i> Trace elements | |
| plant nutrition | |
| construction | |
| architecture | 721.044 73 |
| <i>s.a. spec. kinds of buildings</i> | |
| building | 693.73 |
| materials | |
| building | 691.83 |
| engineering | 620.182 |
| foundations | 624.153 82 |
| naval design | 623.818 22 |
| shipbuilding | 623.820 7 |
| structures | 624.182 2 |
| <i>x.a. other spec. uses</i> | |
| Metallography | 669.953 |
| metallurgy | 669.3 |
| physical & chemical | 669.963 |
| soc. & econ. aspects <i>see</i> | |
| secondary industries | |
| mineral aspects | |
| economic geology | 553.43 |
| mineralogy | 549.23 |
| mining | |
| technology | 622.343 |
| prospecting | 622.184 3 |
| <i>s.a. spec. minerals</i> | |
| pharmacology | |
| <i>misc. aspects are pharmacology</i> | 615.265 2 |
| Products | |
| arts <i>see</i> Copper arts | |
| mf. tech | 673.3 |
| <i>other aspets see</i> | |
| Nonferrous metals | |
| Products | |
| roofing | |
| bldg. construction | 695 |
| soaps | |
| chem tech. | 668.125 |

NOTES

7.5 अन्य मुख्य विशेषताएँ

डी डी सी के 19वें संस्करण में कुछ अन्य लक्षण भी विद्यमान हैं। ये निम्नलिखित हैं : संश्लेषणात्मक युक्ति (Synthetic device). के साथ जोड़ें युक्ति (add to device), विशिष्ट उपविषयों की सामान्य प्रयोज्यता (special topics for general applicability), स्मृति सहायक (mnemonics), वैकल्पिक प्रावधान (optional provisions)। साथ ही इसकी सार्वभौमिकता भी इसका एक मुख्य लक्षण है। उपर्युक्त लक्षणों से डी डी सी अधिक लचीली, स्मृति सहायक, सार्वभौमिक एवं बहुमुखी प्रतिभा संपन्न पद्धति बन गई है। इनका निम्नलिखित अनुच्छेदों में विवेचन किया गया है।

NOTES

7.6 संश्लेषणात्मक युक्ति

इस युक्ति से डी डी सी के गहन वर्गीकरण करने की क्षमता से वृद्धि हुई है। धीरे-धीरे डी डी सी में परिगणना (enumeration) के साथ साथ संश्लेषणात्मक (Synthesis) सिद्धांत को भी विकसित किया गया है। ऐसा करने के लिए सात सारणियों का विकास किया गया है। एक अन्य युक्ति का भी विकास गया है जिसे "के साथ जोड़े" (add to) निर्देश कहा जाता है। इसके द्वारा मितव्ययितापूर्वक वर्ग संख्या बनाई जा सकती है।

7.7 'के साथ जोड़े' युक्ति

यह संश्लेषण प्राप्ति की एक बड़ी प्रभावी युक्ति है। हाल के संस्करणों में इसका उपयोग बहुत बढ़ गया है। यह युक्ति एक निर्देश के रूप में है जिसके द्वारा किसी भी वर्ग संख्या या उसके उपविभाजन की संख्या का विस्तार जा सकता है। इसके निम्नलिखित प्रकार हैं:

- (1) सारणी से जोड़ना (Add from Tables) : सारणी 2-7 में से लिए गए अंकन को किसी विशिष्ट वर्ग, तो अनुसूची में दिया हुआ है, की संख्या के साथ जोड़ा जा सकता है। इन निर्देशों से यह जानकारी मिलती है कि किस सारणी से किस संख्या को किस आधार वर्ग संख्या में जोड़ा जा सकता है।

उदाहरणस्वरूप 325.4-9. International Migration by Specific Continents..... etc., के अंतर्गत Add "Areas" दवजंजपवद 4-9 from Table 2 to base number 325 निर्देश मितला है। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि पुस्तक Migration to India है तो 54 संख्या को सारणी 2 से लाकर वर्ग संख्या 325 के साथ जोड़ना है। इस प्रकार संयुक्त संख्या 325.54 बनेगी।

- (2) अनुसूची से जोड़ना (Add from Schedules) : इसी प्रकार, अनुसूचियों के दो विभिन्न स्थानों में से दो संख्याओं को मिलाकर संयुक्त संख्या बनाई जा सकती है, जैसे Animal Pests की वर्ग संख्या 632.6 हैं। यहाँ पर निर्देश है 'Add to base number 632.6 the numbers following' in 592/599, e.g., snails 6321.643.'

कभी-कभी किसी एक पूर्ण वर्ग संख्या के साथ दूसरी वर्ग संख्या जोड़ दी जाती है जैसे Consumption of Specific Commodities and Groups of Commodities की वर्ग संख्या 339.48 है। यहाँ पर निर्देश है, Add 01-999 to base number 339.48, e.g., Consumption of Agricultural Products 339.48, e.g., Consumption of Agricultural Products 339,486.3.

कभी-कभी एक 'add to' निर्देश से दूसरा 'add to' निर्देश नृःसृत होता है। जैसे Pathological Physiology की वर्ग संख्या 581.21 है। यहाँ पर निर्देश है, "add to base number 581.21 the numbers following 581.1 in 581.11-581.19 यहाँ 581.16 Reproduction की वर्ग संख्या है। यहाँ पर दिया गया दूसरा निर्देश इस प्रकार है : 'add to base number 581.16 the numbers following 574.16 in 574.162 to 574.166' अब इस प्रकार यदि एक वर्गीकरणकार Pathological Physiology of Sexual Reproduction की वर्ग संख्या बनाना चाहता है तो सर्वप्रथम उसे 581.21 को लाना तथा फिर 581.16 reproduction में से 6 लेना होगा। यहाँ पर 581.16 के साथ निर्देश है जिसके अनुसार 574.166 से संख्या 6 लेकर एक संयुक्त वर्ग संख्या बनाई जाती है जो संख्या 574.166 Sexual reproduction से लेकर बनाई गई हैं इस प्रकार संश्लेषित संख्या 581.216 होगी।

- (3) सारणियों एवं अनुसूचियों से जोड़ना : कभी-कभी वर्ग संख्या को पहले सारणी से लेकर जोड़ा जाता है तत्पश्चात् अनुसूची से लेकर। प्रतिलोम (reverse) क्रम से भी ऐसा किया जा सकता है।

7.8 विशिष्ट प्रकरणों की सामान्य प्रयोज्यता

यह सिद्धांत किसी विषय के विभिन्न अभिलक्षणों के आधार पर विभाजित, उप विभाजनों के मध्य एक सामान्य अभिलक्षण की अवसीति स्वीकार करता है।

NOTES

यह एक युक्ति (device) है जो किसी परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति को एक से अधिक विषयों को जोड़ने में सहायता करती है। इस युक्ति से किसी भी पद्धति के सुनिश्चित पदानुक्रम (fixed hierarchy) तथा अपरिवर्तनीय कठोरता को समाप्त किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप, Animal husbandry विषय को उसके विशिष्ट कार्यकलापों selection and acquisition, breeding, care, and maintenance, etc. के आधार पर वर्गीकृत किसी जा सकता है। विषय Animal husbandry की दूसरी विशेषता, विशिष्ट प्रकार के वन्य-प्राणी, के आधार पर भी यही किया जा सकता है जैसे horses, cattle इत्यादि। Breeding जैसे विशिष्ट प्रकार के कार्यकलाप विशिष्ट प्रकार के वन्य प्राणियों के साथ भी जोड़े जा सकते हैं। इस प्रकार 636 Zanimal husbandry के लिए 636.08 for generalities तथा 636.1 –636.9 विभिन्न प्रकार के वन्य प्राणियों के लिए हैं। इस सामान्य वर्ग (generalities) इत्यादि का उपयोग 636.1 to 636.9 के किसी भी विभाजन के साथ किया जा सकता है। इस प्रकार breeding horses की वर्ग संख्या 636.108 2 है यह वर्ग संख्या “add to” निर्देश के आधार पर बनाई गई है। यह संश्लेषणात्मक युक्ति (Synthetic device) डी डी सी की स्मृति सहायक विशेषता वृद्धि करती है। अब हम स्मृति सहायक लक्षणों का संक्षेप में अध्ययन करेंगे।

7.9 स्मृति सहायक लक्षण

डी डी सी में स्मृति सहायकों का उपयोग संश्लेषणात्मक युक्तियों, जैसे सारणियों एवं add to निर्देश द्वारा हुआ है। इस प्रकार के हमारे समक्ष सुनियोजित स्मृति सहायकों (systematic mnemonics) के उदाहरण हैं। डी डी सी में स्मृति सहायकों की क्षमता का पता विशेष संबंधित विषयों में अंकों का उपयोग करने पर चलता है। उदाहरणस्वरूप 800 Literature के अंकन में सभी भाषाओं के साहित्यों के लिए 1 poetry, 2 Drama, 3 Fiction, 4 Essays का उपयोग होगा। इस प्रकार 811 American poetry, 821 English poetry इत्यादि।

7.10 वैकल्पिक प्रावधान

पुस्तकालय वर्गीकरण एक पूर्वसमन्वित प्रणाली (pre-coordinated system) है। अतः इसकी वर्ग संख्याओं के विभिन्न पक्षों में सुनिश्चित उद्धारण क्रम (fixed citation order) होता है। हालाँकि इसमें सुनिश्चित उद्धारण क्रम होता है, फिर भी कभी-कभी पूर्व-सुनिश्चित क्रम को अनेक पाठकों एवं कई पुस्तकालयों द्वारा संतोषजनक नहीं पाया जाता। अतः इस समस्या के निदान हेतु डी डी सी ने वैकल्पिक प्रावधान का भी उपयोग किया है। कुछ प्रकरणों (topics) के लिए दो या दो से अधिक स्थान बनाए गए हैं। इसमें से एक वर्ग संख्या अकेले संपादकों द्वारा वरीयता प्रदान की गई है तथा अन्य वैकल्पिक वर्ग संख्याओं का प्रावधान विभिन्न प्रकार के पुस्तकालयों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किया गया है। इसके लिए वरीय तथा वैकल्पिक दोनों शीर्षकों के अंतर्गत निर्देश दिए गए हैं। कुछ उत्कृष्ट उदाहरण जीवनीय एवं विषय ग्रंथसूचियाँ (subject bibliography) हैं जहाँ पर विकल्प प्रस्तुत किया गया है कि इनको विषय के साथ भी रखा जा सकता है तथा इनको सामान्य वर्ग के अंदर भी ग्रंथसूची एवं जीवनी की वर्ग संख्या दी जा सकती है। इस प्रकार Bibliography of Physics को 016 अथवा 530 में भी रखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त डी डी सी में ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ पक्ष संरचना (facet structure) को स्वीकारा गया है। उदाहरणस्वरूप 340 Law में विभावन तीन तत्वों से मिलकर बनाया गया है। (i) विधि की विषय शाखाएँ अथवा पक्ष; (ii) विषय शाखाओं के उपविषय या प्रकरण एवं (iii) भौगोलिक क्षेत्र। इस प्रकार इयूई वर्गीकरण पद्धति में Law के व्यवस्थापन के लिए निम्नलिखित तीन विधियाँ बताई गई हैं।

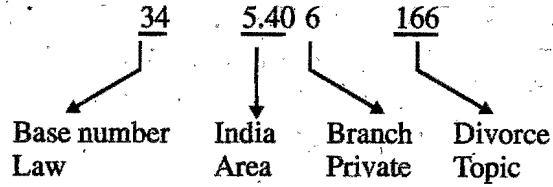
- (अ) branch of law, area, topic, or
- (ब) area, branch of law, topic, or
- (स) branch of law, topic, area.

यदि हमें एक पुस्तक का वर्गीकरण करना है जिसकी आख्या Law of divorce in India है तो सर्वप्रथम 34 में जाना पड़ेगा जो कि आधार संख्या (base number) है। Law के अंतर्गत Private Law में जाना होगा। इसका उपविषय 'divorce' है तथा भारत इसका भौगोलिक क्षेत्र है। इसकी निम्नलिखित तीन वैकल्पिक वर्ग संख्याएँ बनाई जा सकती हैं;

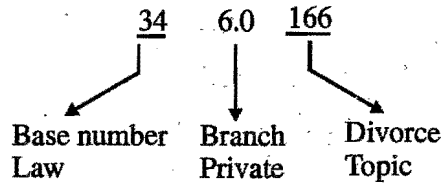
(अ) branch of law, area, topic :

NOTES

(ब) area, branch of law, topic :



(स) branch of law, topic, are :



(Preferred Country की संख्या लिखने की आवश्यकता नहीं है)

जहाँ जिस प्रकार उद्धरण क्रम (citation order) में परिवर्तन किया गया है, यह उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है। उदाहरण को यू डी सी में दिए गए अंतर्निवेशन से तुलना करें।

8. मूल्यांकन

किसी भी वर्गीकरण पद्धति की उपयोगिता की जाँच-परख करने के लिए यह आवश्यक है कि हम उस वर्गीकरण पद्धति के उद्देश्यों को पहचानें और जानें कि किस वातावरण और एवं किन परिस्थितियों में उसका विकास हुआ है। मेल्विल ड्यूई ने अपनी वर्गीकरण पद्धति का विकास उस काल में किया जब वर्गीकरण पद्धति का अस्तित्व ही नहीं था। यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धति का विकास सार्वभौमिक ग्रंथसूची की प्रविष्टियों को पत्रकों पर व्यवस्थित करने के लिए एवं रंगनाथन की कोलन क्लैसिफिकेशन (Colon Classification) पद्धति का विकास वर्गीकरण के सिद्धांत के प्रतिपादन के लिए किया गया। डी डी सी का मुख्य उद्देश्य था कि किस प्रकार पुस्तकालयों को व्यवस्थित करने के लिए इसे एक योग्य mark उपकरण के रूप में उपयोग किया जाए।

ड्यूई ने अपनी पद्धति का विकास 1870 के दशक में किया था। इसका मुख्य उद्देश्य अमेरिकन शैक्षणिक एवं सार्वजनिक पुस्तकालयों द्वारा प्राप्त की गयी पाठ्य सामग्री को व्यवस्थित करना था। डी डी सी एक स्थानीय पद्धति से आज अंतरराष्ट्रीय पद्धति के रूप में विकसित हो चुकी है।

इस पद्धति का मुख्य उद्देश्य इसका व्यावहारिक रूप से उपयोगी होना है। ड्यूई-ने ही सर्वप्रथम एक वास्तविक वर्गीकरण का विकास किया। इस पद्धति के सिद्धांत बाद में निर्मित किए गए। अनेक कमियों के होते हुए भी वर्गीकरण पद्धति प्रशंसनीय है। ड्यूई अपनी पद्धति के कमजोर सैद्धांतिक पक्ष से अवगत थे। फिर भी उन्होंने व्यावहारिक पक्ष की ओर अधिक ध्यान दिया।

अतः इस पद्धति के मूल्यांकन के लिए उपर्युक्त पृष्ठभूमि की जानकारी आवश्यक है। किसी भी वर्गीकरण पद्धति की कमी एवं उपयुक्तता उसके उपयोग पर निर्भर करती है। यह बात डी डी सी पद्धति के साथ भी सत्य साबित होती है।

8.1 वर्गों की संस्थिति एवं क्रम

डी डी सी की आलोचना इसलिए की जाती है कि इसमें आज भी ड्यूई के काल के ज्ञान क्रम उद्धृत है। इसके मुख्य वर्गों का क्रम एवं इसके उप-विभाजन की संस्थिति तर्क संगत नहीं है।

अतार्किक क्रम क कुछ प्वलंत उदाहरण इस प्रकार है—जैसे Languages (400) को Literature (800) से दूर रखना, Social Sciences (320) को Geography and History (900) से अलग रखना, Political Science (320) तथा Business Administration (650) से दूर रखना, एवं Sociology (301-307) को Customs (390) and Social Problems तथा Services (360) से दूर रखना

8.2 असंगत स्थापन

मुख्य असंगत स्थापन के उदाहरण निम्नलिखित हैं : Psychology (150) को Philosophy (100) का उपविभाजन मानना, Sports and Amusement को Fine Arts (700) का अंग

मानना, Biography (920) को General Geography and History (900) में रखना (हालाँकि बाद में विकल्प प्रस्तुत कर इस त्रुटि को ठीक कर लिया गया है), तथा Statistics (310) को Social Sciences (300) में रखना।

8.3 ऍंग्लो-अमेरिकन झुकाव

इस पद्धति में विशुद्ध रूप से ऍंग्लो अमेरिकन संस्कृति, भाषा, साहित्य, धर्म इत्यादि के प्रति झुकाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। यह झुकाव इसके उद्भव को देखते कुछ हद तक सही प्रतीत होता है। अब धीरे-धीरे प्रयास किए जा रहे हैं कि किस प्रकार इस पद्धति में आवश्यक परिवर्तन या विकल्प प्रस्तुत कर इसे अंतरराष्ट्रीय बनाया जाए। ऐसे आवश्यक विकल्प विशेषकर language, literature तथा religion में अधिकांशतः उचित नहीं लगते।

उदाहरणस्वरूप, यदि कोई हिंदू धर्म को स्थानीय महत्त्व (local emphasis) देकर 200-280 का अंकन का उपयोग करना चाहता है तो वह स्थानीय स्तर पर उसका उपयोग कर सकता है क्योंकि वर्तमान उपविभाजन में दी गई वर्ग संख्या में हिंदू धर्म के लिए उचित स्थान नहीं है। अतः वर्गीकरणकार को स्थानीय स्तर पर पद्धति में सुधार करना पड़ेगा।

4. उद्धरण क्रम

किसी भी विषय के अंतर्गत दिया गया उद्धरण क्रम सदैव उपयोगी संस्थिति में प्रतिफलित नहीं होता। उदाहरणस्वरूप (800) को भीतरी उद्धरण क्रम भाषा (language), रूप (form), काल (period) एवं लेखक (author) किसी भी एक लेखक के कार्य को उसके रूप के आधार पर बिखरा देगा जबकि पाठक उनको एक स्थान पर देखना चाहेंगे। इसी प्रकार Social Sciences (300) में भौगोलिक पक्ष की महत्ता को नहीं पहचाना गया है जो किसी भी देश के समाज की विशेषता को दर्शाता है। इससे पाठ्य सामग्री बिखर जाएगी। लेकिन Law (340) में इसको ठीक पहचाना गया है। परिगणना सिद्धांत (Principle of enumeration) के अनुसार उन तत्वों को, जो विभिन्न पक्षों से संबंधित हैं, एक साथ नहीं रखा जा सकता है। परिणामस्वरूप केवल एक तत्व के आधार पर ही उसकी वर्ग संख्या बनाई जा सकती है।

डी डी सी के उद्धरण क्रम में एक विशेषता यह है कि अब पक्षों (facet) में लचीलापन प्रस्तुत किया गया है जैसा कि वैकल्पिक प्रावधानों (optional provision) में प्रदर्शित होता है। आशा की जाती है कि भविष्य में आने वाले संस्करणों में भी इस प्रकार के प्रावधान रहेंगे।

8.5 अंकन

डी डी सी का अंकन उसका गुण भी है और बोज़ भी। एक ओर जहाँ इसके शुद्ध अरबी अंकों की सरलता (simplicity) तथा अनुकूलता (simplicity) तथा अनुकूलता (adaptability) ने विश्व भर में इसे मान्य बना दिया है, वही दूसरी ओर शुद्ध अंकों के कारण पद्धति को विश्व ज्ञान में हो रही निरंतर वृद्धि को यथास्थान

NOTES

NOTES

समोजित करने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा है। डी डी सी के दशमलव अंकन से इसकी क्षमता में अनंतता आ गई है। अंकन ने हर स्थान पर अपना अर्थ प्रदर्शित किया है। डी डी सी ने पदानुक्रमिक श्रृंखला को प्रदर्शित करने की योग्यता को दर्शाया। पर समकक्ष वर्गों को केवल नौ उपविभाजनों तक सीमित करना तार्किक नहीं लगता है। समकक्ष वर्गों को केवल नौ तक सीमित करने से डी डी सी की (Decimal Procrustean Bed) बहुत आलोचना हुई है। इसके लंबे अंकन के निरंतर उपयोग से बहुत असंतुष्ट होकर फॉरिस्ट प्रेस ने लाइब्रेरी ऑफ कॉंग्रेस के डेसिमल क्लैसिफिकेशन डिवीजन से आग्रह कर इस संबंध में कुछ उपाय करने को कहा। परिणामस्वरूप अंकन को खंडों में व्यवस्थित करने की नीति बनी। 1967 से डी डी सी वर्ग संख्याओं को लाइब्रेरी ऑफ कॉंग्रेस कैटलॉग कार्ड्स तथा मार्क (MARC) टेप में एक से तीन खंडों में प्रदर्शित किया जाता है। इस खंडीकरण (segmentation) को उद्धरण चिह्न (inverted comma) द्वारा चिह्नित किया गया है ताकि जिस पुस्तकालय की जैसी माँग हो उसी के अनुसार इसका उपयोग किया जा सके।

निम्नलिखित उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि अंकन का किस प्रकार खंडीकरण किया गया है।

025-4'3

3384'7'655 573 0'942

658.8'09' 655 73

8.6 असमता एवं विसंगति

विभिन्न विषयों में हुई भिन्न वृद्धि दर के कारण डी डी सी के संरचना में असमान वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप सामाजिक विज्ञान (Social Sciences), विज्ञान (Sciences) (500) एवं प्रौद्योगिकी (Technology) (600) विषय-विधाओं में अधिक मोड़ एकत्र हो गई है एवं संश्लेषण सिद्धांत (principle of synthesis) के उपयोग से परिगणनात्मक वर्गीकरण (enumerative classification) में अनेक विसंगतियाँ (inconsistency) आ गई हैं जिसके कारण इसकी संरचना में अनिश्चितता रहती है। इस पद्धति में ऐसी विसंगतियों के अनेक उदाहरण विद्यमान हैं। जैसे :

312.2 Statistics on deaths (mortality)

312.22 Maternal deaths in Childbirth

312.23 Infant deaths

Add "Areas" notation 1-9 from Table 2 to base number 312.23

जबकि ऐसे निर्देश 312.22 वर्ग संख्या के नीचे में ही दिए गए हैं। परिणामस्वरूप Maternal death statistics pertaining to India के लिए 312.220 954 वर्ग संख्या बनेगी जबकि Infant deaths के लिए 312.235 4 बनेगी।

8.7 संशोधन के कारण पुनर्वर्गीकरण

जहाँ तक संशोधन एवं पुनर्स्थापन निर्धारण (Relocation) का प्रश्न है, यू डी सी तथा सी सी की तुलना में डी डी सी कम उदार है। इतना होने पर भी डी डी सी के उपयोक्ता इसमें फेरबदल की आलोचना करते हैं। संपादक मंडल के समक्ष भी अधिक विकल्प उपलब्ध नहीं है। यदि कुछ फेरबदल किया जाता है तो उपयोक्ताओं में रोष फैलता है।

दूसरी ओर यदि समयानुसार फेरबदल नहीं किया गया तो डी डी सी पद्धति ज्ञान की नवीन संरचना से धीरे-धीरे दूर होती चली जाएगी। इतना होने पर भी डी डी सी ने अब तक परिवर्तन एवं स्थिरता के बीच अच्छा संतुलन बनाए रखा है।

8.8 डी डी सी का स्थायित्व

डी डी सी की लोकप्रियता एवं इसके व्यापक उपयोग का कारण इसके अंतर्निहित गुण, इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं प्रशासनिक गुण हैं। इन गुणों (जिसकी विस्तृत चर्चा इस इकाई में की गई है) के अतिरिक्त

समयानुसारितसां, संगठनात्मक समर्थन एवं अंतरराष्ट्रीय ग्रंथसूची एवं मार्क (MARC) टेप में इसका उपयोग होने से इस पद्धति की लोकप्रियता तथा स्थायित्वता में वृद्धि हुई है।

इयूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन
(डी डी सी)

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. विधानुसार वर्गीकरण की विशेषता बताइए।
4. फीमिमन अनुसूचियों से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

NOTES

9. सार-संक्षेप

डी डी सी के विकास का अध्ययन करते समय हमने देखा कि इस पद्धति की सफलता में इसमें प्रस्तुत विषयों की सापेक्षिक अवस्थिति जैसी नवप्रवर्तक विचारधारा, इसका दशमलव अंकन, इसकी अनुक्रमणिका एवं विस्तृत वर्गीकरण का महान योगदान रहा है। हालाँकि इस पद्धति का विकास किसी सुव्यक्त सिद्धांत पर आधारित नहीं है लेकिन पदानुक्रमिक संरचना तथा विषय-पक्षा वर्गीकरण सिद्धांत को अवश्य अपनाया गया है। परिगणनात्मक संरचना के होते हुए भी इस पद्धति ने, जहाँ कहीं भी संभव हो सका है, संश्लेषात्मक युक्ति को समाविष्ट किया है। व्यवहारिक पक्ष ने इसका दार्शनिक सिद्धांत पक्ष को पीछे धकेल दिया है। अपने अस्तित्व के लिए सतत एवं अथक प्रयासों तथा निपुण संगठनात्मक अवलंबन से इसकी लोकप्रियता में निरंतर वृद्धि हुई है। अपनी कमियों के रहते हुए भी डी डी सी में कई गौण गुण हैं जिन्होंने इस पद्धति को सफल एवं लोकप्रिय बना दिया है।

1979 में प्रकाशित डी डी सी का उन्नीसवाँ संस्करण पिछले तीन संस्करणों के विकास को प्रदर्शित करता है। एक परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति होने के कारण इसमें ज्ञान-जगत् को दस मुख्य वर्गों में बाँटा गया है फिर सौ विभागों तथा एक हजार अनुभागों में व्यवस्थित किया गया है। इसका प्रमुख भाग इसकी अनुसूचियाँ हैं जिसमें विषयानुसार वर्गीकरण को प्रस्तुत किया गया है। सात सारणियाँ सभी विषयों के साथ समान रूप से लागू होती हैं। अनुसूची में परिगणित विषय तथा सारणियों में उपलब्धसामान्य विभाजनों को जोड़ने की प्रक्रिया ही इस पद्धति की संश्लेषणात्मक विधि को प्रदर्शित करती है। सामान्य विभाजन स्वतन्त्र रूप से उपयोग में नहीं लाए जा सकते हैं। पद्धति में अन्य युक्तियाँ भी उपलब्ध हैं जैसे 'के साथ जोड़े' (add to) एवं वैकल्पिक प्रावधान (optional provisions) जिससे इस पद्धति की क्षमता में वृद्धि हुई है। इसका अंकन सरल एत्र प्रायः स्मृति सहायक है। अब तक डी डी सी में ऐंग्लो अमेरिकन झुकाव (bias) रहा है लेकिन अब धीरे-धीरे इस पद्धति को सार्वभौमिक बनाने के प्रयास चल रहे हैं। अब वैकल्पिक प्रावधान भी प्रदान किए जाने लगे हैं।

डी डी सी की सापेक्षिक अनुक्रमणिका वर्गीकरणकार के लिए बहुत सहायक है। सबसे महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि अनुक्रमणिका में विषय के विभिन्न पक्ष एक स्थान पर एक साथ रखे गए हैं।

19वें संस्करण में संश्लेषणात्मक युक्ति के उपयोग से वर्गीकरण क्षेत्र में इसकी स्थिति और भी सुदृढ़ हो गई है।

10. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. सापेक्षिक स्थान की अवधारणा आज कोई नई बात नहीं मानी जाती क्योंकि यह सिद्धांत अब हर वर्गीकरण पद्धति के लिए आवश्यक है। इयूई ने उस काल में इस सिद्धांत का प्रवर्तन किया जब पुस्तकालयों में पुस्तकों के स्थान निश्चित हुआ करते थे एवं पुस्तकें शेल्फों पर लगी अपने स्थान से पहचानी जाती थीं। पुस्तकालय में प्रत्येक विषय की पुस्तक के लिए उसके विषयानुसार एक परिग्रहण संख्या एवं शेल्फ का निर्धारण कर दिया जाता था प्रत्येक पुस्तक विषयानुसार परिग्रहण संख्या क्रम में एक निश्चित स्थान पर व्यवस्थित की जाती थी। इस प्रकार प्रलेख कमरों की अलमारियों में, उपखंडों,

NOTES

शेल्फों एवं पंक्तियों में एक स्थान पर सुनिश्चित कर दिए जाते थे। यही शेल्फ चिह्न (Shelf Marks) ग्रंथों पर लिखे होते थे। एक बार संख्या आर्बांठित हो जाने पर उसी संख्या द्वारा ही उस पुस्तक का स्थाई स्थान सुनिश्चित हो जाता था।

लेकिन यह व्यवस्था संतोषप्रद नहीं थी। नवीन पुस्तकों के आगमन से उनके स्थान में भी बदलाव लाना आवश्यक हो गया। अतः निरंतर स्थान परिवर्त से छुटकारापाने के लिए ही मैल्विल ड्यूई ने बेहत विकल्प खोजने का प्रयास किया। अपने सापेक्षिक स्थान के सिद्धांत (Principle of Relative Location) द्वारा ड्यूई ने इस समस्या का हल खोज लिया। इस सिद्धांत ने विषयों एक अनुक्रम में व्यवस्थित किया और उन्हें अंकन भी प्रदान किया। इस अंकन को उन्होंने पुस्तक पर अंकित किया न कि शेल्फों पर। इस विधि से नये ग्रंथों को अन्य ग्रंथों के साथ बिना किसी व्यवधान के रखा जाना संभव हो गया। इस प्रकार जो भी नवीन पुस्तक पुस्तकालयों में खरीदी जाती उनका अन्य ग्रंथों के साथ स्वतः स्थान बनता गया। आपको यह ज्ञात होगा कि किस प्रकार एक अंकन की सहायता से एक पुस्तक दूसरी पुस्तक के साथ स्वतः ही एक मशीनी प्रक्रिया के साथ सुसज्जित हो जाती है। अंकन ही प्रत्येक पुस्तक का सोपक्षिक स्थान निर्धारित करता है।

सापेक्षिक स्थान को प्राप्त करने की विधि इसलिए और भी सरल हो गई थी क्योंकि ड्यूई ने दशमलव अंकन (Decimal Notation) का उपयोग किया।

2. पंद्रहवाँ मानक संस्करण

इस संस्करण के बारे में विशेष उल्लेख किया जाना आवश्यक है। यह संस्करण पिछले संस्करणों की संरचना से अपेक्षाकृत हटकर 1951 में प्रकाशित हुआ। इस संस्करण के संपादक मिल्टन फरग्युसन (Milton Ferguson) थे। यह प्रथम संस्करण था जिसके आख्या—पृष्ठ पर ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन एवं रिलेटिव इंडेक्स मुद्रित था। बिना किसी यथार्थ संशोधन के विषयों के गहन विस्तार में इस संस्करण ने रोक लगा दी। किए गए विस्तार संतलित नहीं थे और संशोधन अविचारित थे। अनुसूचियों के विस्तार का कार्य बहुधा साहित्य समादेश पर आधारित नहीं था।

इस संस्करण के प्रकाशन के तुरंत बाद यह स्पष्ट हो गया कि किए गए परिवर्तन, विशेषतः विषयों का पुनर्स्थान निर्धारण, पुस्तकालयाध्यक्षों के अत्यंत बोझिल साबित हुआ। इनमें से अनेक ने इस नए संस्करण को अस्वीकार करते हुए 14वें संस्करण का उपयोग जारी रखा। पंद्रहवें संस्करण की बहुत आलोचना हुई एवं इसका घोर विरोध भी किया गया। यहाँ तक कि यह कहना भी शुरू कर दिया गया कि यह पद्धति मृतप्राय सी है।

3. सामान्यतः यह कहा जाता है कि पुस्तकालय वर्गीकरण में एक ही तरह के विषय एक ही समूह में रखे जाते हैं। अधिकांश वर्गीकरण पद्धतियाँ विधानुसार वर्गीकरण के सिद्धांत पर आधारित हैं डी डी सी की मुख्य विशेषता यही है कि इसमें मुख्य वर्गों एवं उनके उपवर्गों का विभाजन शैक्षणिक विधायक पर अधिक आधारित है, बजाय केवल विषयों के। परिणामस्वरूप एक विषय को एक से अधिक स्थानों पर वर्गीकृत किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप यदि पुस्तक का विषय 'Copper' है तो उसको **Chemistry, Metalurgy, mineralogy, chemical technology** इत्यादि विषयों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है जो कि लेखक के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। यह उपागम विधानुसार (classification by discipline) वर्गीकरण के रूप में माना जाता है कि एक विधा को एक ही स्थान पर वर्गीकृत करने से भिन्न है। डी डी सी एक पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति है जो विषयों को उनके संदर्भ के आधार पर वर्गीकृत करती है। उदाहरण के तौर copper के रसायन पक्ष की पुस्तक रसायनशास्त्र तथा धातु पक्ष की पुस्तक धातु विज्ञान में रखी जाएगी। डी डी सी का यह दृष्टिकोण उपयुक्त ही था क्योंकि पुस्तकालयों में अधिकांशतः पुस्तकें पाठकों द्वारा विधा के दृष्टिकोण में ही माँगी जाती हैं जो कि जेम्स उफ ब्राउन (James Duff Brown) कृत Subject Classification के ठीक विपरीत है जो विषयों की स्थिति एक ही स्थान पर निर्धारित करती है।

डी डी सी ने ज्ञान-जगत् को नौ मूल वर्गों में बाँटा है। उदाहरणार्थ Philosophy, Religion, Social Science, Language, Pure Technology, The Arts, Literature तथा General Geography and History। ड्यूई के समय में ये ही शैक्षणिक विधाएँ हुआ करती थीं। अब इन मुख्य वर्गों में Natural science, Usefule arts, Schoology इत्यादि में अनेक नई शैक्षणिक विधाओं का समावेश हो गया है।

NOTES

4. ड्यूई को छोटे-छोटे अंशों में अद्यतन बनाए रखने की यह एक विधि है। जो अनुसूचियाँ पुरानी हो चली हैं और जिनमें आमूल परिवर्तन की आवश्यकता होती है उनको हटाकर पूर्णतया नए वर्गीकरण द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता है। यह प्रक्रिया सोलहवें संस्करण से प्रारंभ की गई तथा नवीन संस्करणों में भी जारी है। कुछ विषयों की अनुसूचियों को पूरी तरह से नष्ट कर उसके स्थान पर नवीन अनुसूचियों का विकास किया जाता है तथा उनको नए वर्गों में ढाल दिया जाता है। ऐसी नवीन अनुसूचियों को, जो पुरानी अनुसूचियों को नष्ट करके तैयार की गई है, फीनिक्स अनुसूचियाँ (Phoenix schedules) कहते हैं। इस प्रक्रिया में वर्ग संख्याओं की अखंडता की नीति का परित्याग कर दिया जाता है और पहले से उपलब्ध विभाजनों का ध्यान रखे बिना ही कई विषयों के लिए नई अनुसूचियाँ तैयार कर ली जाती हैं। नए संस्करणों में निम्नलिखित अनुसूचियों को फीनिक्स उपचार प्रदान किया गया है:

11. मुख्य शब्द

- इंटरफ्लाइ (Interfle)** : किसी मद को किसी अनुक्रम में उस बिंदु पर व्यवस्थित करना जहाँ उसे व्यवस्थित करना वर्गीकरण के अनुरूप हो।
- पक्षात्मक वर्गीकरण (Aspect Classification)** : वह वर्गीकरण जो विषयों को, वर्गों में, उसके पक्षों के आधार पर विभाजित करे। उदाहरणस्वरूप Mining of Coal को Mining में तथा Chemistry of Coal को Chemistry में रखे।
- पदानुक्रम संरचना (Hierarchical Structure)** : वर्गों की पदानुक्रमिक संरचना को प्रदर्शित करने वाली वर्गीकरण संरचना, जिसमें किसी दिए गए स्तर के वर्ग अपने उच्चस्थ वर्ग के परिप्रेक्ष्य में अधीनस्थ होते हैं तथा अपने नीचस्थ वर्ग के परिप्रेक्ष्य में उच्चस्थ होते हैं। पदानुक्रम के किसी स्तर पर सामान्य अभिलक्षण के आधार पर प्राप्त वर्ग पारस्परिक अनन्यता वाले वर्ग होते हैं।
- परिणनात्मक वर्गीकरण (Enumecrative Classification)** : समस्त विषयों को वर्गीकरण के एक बृहताकार मानचित्र पर सुनियोजित क्रम में परिगणित करने वाली पद्धति।
- पूर्व-समन्वित प्रणाली (Pre-Cordinate System)** : एक ऐसी प्रणाली जो समन्वय करती हो, जो शब्दों को विषय शीषकों अथवा पक्षों के आधार पर जोड़ती हो एवं जिसमें पक्षों को उपयोग के पूर्व ही माँग के आधार पर, सज्जित किया जाता है। अतः सभी वर्गीकरण पद्धतियाँ पूर्व-समन्वित पद्धतियाँ हैं।
- प्रोक्रूस्टियन बेड (Procrustean Bed)** : एकरूपता बनाए रखने की प्रवृत्ति। (यूनानी पौराणिक कथाओं पर आधारित)।
- फीनिक्स अनुसूची (Phoenix Schedule)** : ऐसी अनुसूचियों को, जिन्हें पुरानी अनुसूचियों को नष्ट करके तैयार किया जाता है, फीनिक्स अनुसूचियाँ कहते हैं। फीनिक्स एक पौराणिक पक्षी है जो अपने आप जल जाता है तथा उसी राख से फिर उठ खड़ा होता है।
- मुक्त प्रवेश (Open Access)** : वह प्रणाली जिसके अनुसार पुस्तकें खुले शेल्फ पर पाठकों के उपयोग हेतु सज्जित की जाती हैं।

NOTES

- विनिर्देशन (Specification/Specificity)** : पुस्तकों/प्रलेखों के अंतर्विषय के वर्गीकरण एवं अनुक्रमणीकरण में संश्लेषण अथवा समन्वय के आधार पर सही प्रदर्शन करना।
- विषय-विधा (Discipline)** : अध्ययन का कोई भी क्षेत्र अथवा शिक्षण की शाखा।
- व्यावहारिकता (Practicality)** : उपयोगिता, जो तार्किकता से भी अधिक महत्वपूर्ण है।
- शेल्फ संकेत (Shelf Mark)** : ऐसा संकेत जो शेल्फ पर पुस्तक की सही तथा सुनिश्चित स्थिति निर्धारित करे।
- संख्याओं की अखंडता (Integrity of Numbers)** : वह सिद्धान्त जो संख्याओं द्वारा किसी भी वर्गीकरण पद्धति में एक बार ही में सारी संकल्पनाओं का प्रदर्शन कर उसका स्थान सुनिश्चित कर दे जो मौलिक रूप से निरूपित की गई थीं।
- सापेक्षिक अनुक्रमणिका (Relative Index)** : वह अनुक्रमणिका जो सभी संबंधित शब्दों अथवा पक्षों को एक स्थान पर उनके वर्ग अथवा सजातीय पद के अंतर्गत प्रस्तुत करे।

12. अभ्यास-प्रश्न

1. डी डी सी के उद्भव एवं विकास क्रम की विवेचना कीजिए।
2. डी डी सी के उत्तरवर्ती संस्करणों का वर्णन कीजिए।
3. डी डी सी आधारभूत सिद्धान्तों की व्याख्या कीजिए।
4. डी डी सी में संशोधन प्रक्रिया के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
5. डी डी सी वर्गीकरण पद्धति का मूल्यांकन कीजिए।

13. ग्रन्थ सूची

- Chan, Luis Mai (1985). *Cataloguing and Classification : An Introduction*. New York : Me Graw-Hill
- Custer, Benjamin A. (1972). Dewey Decimal Classification. In : Kent, Allen [etal.] (eds). *Encyclopedia of Library and Information Science*. New York : Marcel Dekker. Vol. 7.
- Custer, Benjamin A. (1979). *Dewey Decimla Classification and Relative Index*. 19th ed. New York : Forest Press. 3 Vol.
- Foskett, A.S. (1977). *The subject Approach to Information*. 3rd ed. London : Clive Bingley.
- Maltby, Arthur (1975). *Sayers' Manual of Classification for Librains*. 5th ed. London : Andre Deutsch.
- Raju, A.A.N. (1984) *Decimal, Universal Decimal and Colon Classification : A Study in Comparison*. Delhi : Ajanta Publications.
- Sharm, Pandey S.K. (1998). *Practical Approach to DDC : Dewey Decimal Classification Made Easy*. Delhi : Ess Ess Publication.

ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के 19वें (1979), 20वें (1989) एवं 21वें (1996) संस्करणों का तुलनात्मक अध्ययन

NOTES

अध्याय में सम्मिलित है :

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
 - 2.1 संशोधन प्रक्रिया
 - 2.2 परिवर्तनों का समायोजन एवं संचार
3. डी डी सी-19 (1979) की मुख्य विशेषताएँ
 - 3.1 सारणियों में परिवर्तन
 - 3.2 डी डी सी मैनुअल
 - 3.3 कम्प्यूटरीकरण
 - 3.4 सापेक्षिक अनुक्रमणिका
4. डी डी सी-20 (1989)
 - 4.1 संपादकीय समर्थन प्रणाली
 - 4.2 अनुसूचियों में नवीन परिवर्तन
 - 4.3 सारणियों में परिवर्तन
 - 4.4 इलेक्ट्रॉनिक संस्करण
 - 4.5 सरलीकरण गतिविधियाँ
 - 4.6 सापेक्षिक अनुक्रमणिका
5. डी डी सी-21 (1996)
 - 5.1 डी डी सी-21 की संरचना
 - 5.2 उपयोक्ताओं की सुविधा
 - 5.3 अनुसूचियों में परिवर्तन
 - 5.4 सारणियों में परिवर्तन
 - 5.5 पारदर्शी पक्ष संरचना
 - 5.6 सापेक्षिक अनुक्रमणिका
 - 5.7 ड्यूई फॉर विंडोज (डी एफ डब्ल्यू)
6. आगामी प्रवृत्तियाँ
7. सार-संक्षेप
8. प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
9. मुख्य शब्द
10. अभ्यास-प्रश्न
11. संदर्भ ग्रन्थ सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्याय का अध्ययन करने के पश्चात् आप:

- पुस्तकालय वर्गीकरण प्रणाली की आवश्यकता एवं इसकी प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त करने में;
- डी डी सी की संशोधन नीति एवं संशोधन तंत्र से परिचित होने में;
- डी डी सी के 19वें संस्करण के परिप्रेक्ष्य में इसके 21वें संस्करण में हुए परिवर्तनों को पहचानने में; गया। यह परिवर्तन 1974 से लागू हुआ।
- डी डी सी के इलेक्ट्रॉनिक संस्करण (ड्यूई फॉर विण्डोज) की प्रमुखा विशेषताओं को समझने में; तथा
- डी डी सी की आगामी प्रवृत्तियों की झलक पाने में समर्थ हो सकेंगे।

2. परिचय

सर्वप्रथम सन् 1876 में प्रकाशित डी डी सी सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तकालय वर्गीकरण प्रणाली सिद्ध हुई है। विश्व के 135 देशों के 2,00,000 पुस्तकालयों में इसका उपयोग हो रहा है। इस सूद्ध स्थिति का मुख्य कारण इस पद्धति की सुनिश्चित संशोधन नीति एवं इसका स्वस्थ संशोधन तंत्र है। इस पद्धति में सर्वप्रथम 1885 में संशोधन किया गया था। उसके पश्चात् इसमें निरंतर संशोधन होते रहे हैं। निरंतर संशोधन के कारण ही यह समयानुसार अपने को योग्यतम पद्धति के रूप में विकसित करती रही है। यद्यपि अधिक संशोधन करते रहना इसकी लोकप्रियता को कम भी कर सकता है। अतः संशोधन नीति को सावधानी पूर्वक समायोजित करना चाहिए ताकि यह पद्धति स्थायित्व एवं परिवर्तन के मध्य संतुलन बनाए रख सकें। नए संस्करण में वैसे सभी एक विषय सम्मिलित किए जाते हैं जो पूर्व संस्करण में उपलब्ध नहीं थे। लेकिन उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है कि किस प्रकार विषयों का पुनर्स्थापन निर्धारण करें एवं साथ ही पुराने विषयों को हटाएँ। कई विषयों का विस्तार भी किया जाता है। इसके अतिरिक्त नई-नई वर्गीकरण तकनीकों का उपयोग भी इस प्रणाली को उन्नत करने के लिए किया जाता है। यह पद्धति प्रत्येक संस्करण के साथ पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति के रूप में विकसित हो रही है तथा साथ ही पाठकोपयोगी भी है।

2.1 संशोधन प्रक्रिया

इस पद्धति में संशोधन हेतु मुख्य संपादक के निर्देशन के अंतर्गत एक संपादकीय दल कार्य करता है। 1953 से इसका संपादकीय कार्यालय Decimal Classification Division, Library of Congress, Washington D.C. में स्थित है। यह विभाग प्रतिवर्ष लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस द्वारा प्राप्त की गई। 1,00,000 से अधिक नई पुस्तकों में डी डी सी संख्याओं का प्रयोग करता है। संपादक को यह सलाह देने के लिए कि किस हद तक संशोधन किया जाना चाहिए, एक समिति है जिसे Decimal Classification Editorial Policy Committee (DCEPC) कहा जाता है। इस समिति का अध्यक्ष संपादक को परामर्श देता है। यह एक अंतरराष्ट्रीय समिति है जो संयुक्त रूप से अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन तथा डी डी सी के प्रकाशक फॉरिस्ट प्रेस द्वारा नियुक्त की जाती है। इस समिति में कनाडा, यू.के. आस्ट्रेलिया एवं अमेरिका के पुस्तकालय व्यवसाय के कई क्षेत्रों के प्रतिनिधी होते हैं। यह एक शीर्ष समिति है जो इस पद्धति के संपादन में गंभीर सलाह देती है और इसका निरीक्षण करती है। पद्धति के नवीन संस्करण लगभग हर 7-10 वर्ष के अंतराल में प्रकाशित होते रहते हैं जिनका प्रकाशन अल्बानी, न्यूयार्क स्थित फॉरिस्ट प्रेस करता रहा है। अब इसका कार्यालय डब्लिन, ओहियो स्थित ओसीएलसी (OCLC) मुख्यालय में बदल दिया गया है। इसका संचालन कार्यकारी निदेशक के द्वारा किया जाता है।

2.2 परिवर्तनों क समायोजन एवं संचार

संशोधन की प्रक्रिया तथा इसके कार्यन्वयन में परिवर्तन होता रहता है। इस पद्धति का संशोधन एक निरंतर प्रक्रिया है। इसमें विचार-विमर्श के उपरांत जब परिवर्तन एवं विस्तार इत्यादि उपर्युक्त समिति द्वारा स्वीकृत हो

जाते हैं तब उनसे संबंधित सूचना DC& नामक एक अनियमित न्यूजलेटर (सूचापत्र) में प्रकाशित की जाती है। इसको (DC&को) DC AND (DC Addition, Notes and Decisions) भी कहते हैं। इस न्यूजलेटर डी डी सी के सभी क्रैतओं को निशुल्क भेजा जाता है। लेकिन 1997 से इस न्यूजलेटर को मुद्रित पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करना बंद कर दिया गया है। अब यह इंटरनेट के ड्यूई होम पेज <http://www.oclc.org> पर उपलब्ध है।

ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के 19वें (1979), 20वें (1989) एवं 21वें (1996) संस्करणों का तुलनात्मक अध्ययन

NOTES

इस होम पेज को प्रतिमाह अद्यतन किया जाता है। इसलिए डी डी सी उपयोक्ताओं को अब सदैव अद्यतन डी डी सी (DDC) उपलब्ध रहती है। इसके अलावा 1993 से डी डी सी CD-ROM प्रारूप में भी उपलब्ध है जिसे प्रत्येक वर्ष नए संशोधनों के साथ उपलब्ध कराया जाता है। बार-बार परिवर्तन पुस्तकालयाध्यक्षों को अरुचिकर लगता है और वे परिवर्तन के लिए किसी न किसी कारणवश तैयार नहीं होते हैं। कुछ ही पुस्तकालयाध्यक्ष नए संशोधनों को लागू करने के लिए तैयार होते हैं। ग्रंथसूचियाँ अवश्य ही नवीन संस्करण में दी गई वर्ग संख्याओं का उपयोग करती हैं।

3. डी डी सी 19 (1979) की मुख्य विशेषताएँ

इसका 19वाँ संस्करण 1979 में बेंजामिन कस्टर के सफल संपादकत्व में प्रकाशित हुआ। बेंजामिन कस्टर ने सर्वप्रथम 16वें (1958) संस्करण का संपादन किया था। 19वें संस्करण ने पिछले तीस वर्षों में हुई प्रवृत्तियों (trends) को जारी रखा तथा इसमें, 1971 में प्रकाशित 18वें संस्करण में जितने परिवर्तन किए गए थे उसकी तुलना में अत्यल्प परिवर्तन किए गए। मुख्य संशोधन (फीनिक्स अनुसूची) Sociology 301-307 की नवीन अनुसूची है। तत्पश्चात् 1982 में Sociology 301-307 का संपूर्ण संस्करण एक स्वतंत्र पुस्तिका के रूप में भी प्रकाशित हुआ। अन्य परिवर्तन भी मुख्य वर्ग 300 Social Sciences में ही किए गए। 329 'Practical Politics' को 324 में सम्मिलित कर नई वर्ग संख्या 324 'Political' Process को विकसित किया गया।

3.1 सारणियों में परिवर्तन

मानक उप-विभाजनों (SS : Standard Subdivisions) में कुछ परिवर्तन किए गए। यह परिवर्तन विशेषकर मान उप-विभाजन (Standard Subdivisions)-08 को हटाने एवं अत्यंत उपयोगी अग्रता सारणी, जो सारणी 1 के आरंभ में दी गई है, के उपयोग से संबंधित है। अग्रता सारणी दो मान उप-विभाजनों के चयन के बीच सही निर्णय हेतु एक मानक निर्देश प्रदान करती है।

सारणी (Area Table) में 17% वृद्धि की गई। मुख्य परिवर्तन UK की भौगोलिक वर्ग संख्या में हुए। 42 को 41 में स्थानांतरित कर दिया इकाई-11

सारणी 3 जो साहित्य-विशेषों के लिए प्रयुक्त होती है, में भी पूर्णरूपेण परिवर्तन किया गया तथा इसको दो उपसारणियों अर्थात् सारणी 3 एवं 3A में विभाजित किया गया। सारणी 3A के उपयोग के बारे में सारणी 3 में निर्देश दिए गए हैं। सारणी 3 प्रस्तुत 08/अथवा-09 को सारणी 3A में स्थानांतरित कर दिया गया है। इसे वर्ग 800 में संख्या जोड़ना एवं वर्ग संख्या बनाना सरल हो गया है।

3.2 डी डी सी मैनुअल

सर्वप्रथम 1982 में जे. पी. कोमारोमी (J.P. Comaromi) ने फॉरेस्ट प्रेस द्वारा डी डी सी मैनुअल प्रकाशित करवाया जो डी डी सी के 19 वें संस्करण के व्यवहार एवं मानवीकरण में मील का पत्थर साबित हुआ। यह मैनुअल जे.पी. कोमारोमी एवं उनके दल की अध्यक्षता में तैयार करवाया जो 1975 में उनके स्वयं के द्वारा किए गए सर्वेक्षण 'डी डी सी पद्धति का उत्तरी अमरीका में उपयोग' पर आधारित था। यह मैनुअल लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस के डेसिमल क्लैसिफिकेशन डिवीजन में कार्यरत कर्मियों द्वारा डी डी सी वर्ग संख्याओं के चयन एवं उपयोग से संबंधित धारणा एवं प्रायोगिकता की व्याख्या करता है। इससे यह पता चलता है इन संख्याओं का उपयोग इसके अधिकृत उपयोग के अनुरूप है या नहीं। इसमें कठिन से कठिन

NOTES

विषयों का वर्गीकरण करने के तथा एक संख्या के दूसरी संख्या से अंतर को स्पष्ट हेतु निर्देश प्रदान किए गए हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि यह डी डी सी वर्ग संख्याओं के अधिकृत प्रतिवेदन के समान है। इसमें कई स्थानों पर नक्शों, फ्लो चार्ट तथा बिंदु को विस्तारमें दर्शाया गया है। यह उपयोगी संदर्शिका है जो डी डी सी द्वारा वर्गीकरण करने में एकरूपता सुनिश्चित करती है। इसकी उपयोगिता को देखते हुए डी डी सी के 20वें संस्करण (1989) में इसे समाविष्ट कर लिया गया है।

3.3 कंप्यूटरीकरण

यहाँ यह बताना आवश्यक है कि डी डी सी के 19वें संस्करण का प्रकाशन सर्वप्रथम कंप्यूटराइज्ड फोटो-कंपोजिशन (Computerized Photo Composition) प्रक्रिया द्वारा किया गया। तत्पश्चात् इसी कंप्यूटर टेप द्वारा Karen Markey Drabenstott ने कई प्रयोगात्मक अध्ययन किए कि किस प्रकार डी डी सी का उपयोग ऑनलाइन खोज तथा सूचना पुनर्प्राप्ति के लिए किया जा सकता है। 1984 में इसी कंप्यूटराइज्ड टेप की सहायता से Inforonics Inc. द्वारा एक Editorial Support System (ESS) फॉरेस्ट प्रेस के लिए विकसित किया गया। यह से ही वर्गीकरण क्षेत्र के उच्च स्तरीय सूचना प्रौद्योगिकी युग का आरम्भ हुआ।

3.4 सापेक्षिक अनुक्रमणिका

सापेक्षिक अनुक्रमणिका की जटिलता ज्यों की त्यों रही। 19वें संस्करण में मात्र परिवर्तन यही है कि अनुसूचियों में प्रविष्टियों के लिए मोटे अक्षरों में मुद्रण (Bold Typeface Letters) का उपयोग करना बंद कर दिया गया है।

4. डी डी सी 20 (1989)

डी डी सी का 20वाँ संस्करण 1989 में प्रकाशित हुआ। इस संस्करण में कई परिवर्तन किए गए जिन्होंने आगे जाकर प्रवृत्ति-स्थापक (trend setter) का कार्य किया। इस संस्करण का संपादन एक प्रतिभाशाली शिक्षाविद् डॉ. जॉन पी. कोमारोमी (1937-1991) की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। ये इस पद्धति के विकास के साथ कई वर्षों तक कई रूप से जुड़े रहे। जुलाई 1988 में फॉरेस्ट प्रेस का स्मामित्व ओसीएलसी, डब्लिन, ओहयो को हस्तांतरित कर दिया गया। इस नए कार्यालय से एक नए युग का सूत्रपात हुआ जिसमें इस पद्धति पर शोध-कार्य, इसकी लोकप्रियता एवं इसके विपणन (Marketing) के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई। यह संस्करण चार खंडों में विभाजित कुल 3383 पृष्ठों में प्रकाशित हुआ जो पिछले संस्करण के तीन खंडों में विभाजित 361 पृष्ठों की तुलना में अधिक विस्तृत है।

4.1 संपादकीय समर्थन प्रणाली

लाइब्ररी ऑफ कॉग्रेस के डेसिमल डिवीजन कार्यालय में Inforonics Inc. Company ने 1984 में 20वें संस्करण को प्रकाशित करने के लिए एक ऑनलाइन संपादकीय समर्थन प्रणाली (ESS : Editorial Support System) को विकसित किया। यह डी डी सी के संपूर्ण अंतर्विषय की सूची का डेटाबेस है जिसका उपयोग भविष्य में प्रकाशित होने वाले संस्करणों एवं विभिन्न प्रकार के उत्पादों को प्रकाशित करने के लिए किया जा सकता है। इस प्रणाली से शारीरिक श्रम वाला कार्य समाप्त हो गया। अब इसको प्रकाशित करने का समय दो वर्ष से घटा क छः माह तक कर दिया गया है।

4.2 अनुसूचियों में नवीन परिवर्तन

डा. कोमारोमी 1980 में इस संस्करण के नए संपादक नियुक्त हुए। इन्होंने इस संस्करण में कई गए परिवर्तन किए जिससे इस संस्करण को सरल, सुव्यवस्थित एवं अद्यतन बनाया जा सका। इस संस्करण में पुर्व प्रकाशित दो संस्करणों की अपेक्षा कई नवीन परिवर्तन हैं। यद्यपि डॉ. कोमारोमी आमूल परिवर्तन चाहते थे, ताकि यह पद्धति ज्ञान-जगत् में हो रही वृद्धि के साथ कदम मिलाकर चल सके। लेकिन उन्होंने स्थायित्व एवं परिवर्तन के बीच संतुलन स्थापित करने का पूर्ण प्रयास किया। इन्होंने 780 Music के लिए एक नई

अनुसूची प्रस्तुत की जो पिछले एक दशक से संशोधन के लिए तैयार थी। इसे विशेषज्ञों ने तैयार किया था। डी डी सी की अनुसूची अपनी विषय-वस्तु में आधुनिक ही नहीं है अपितु अधिकतम पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति की ओर बढ़ रही है। इसकी संरचना पक्षात्मक है। इस संस्करण में 004-006 'Data Processing and Computer Science' को समाविष्ट किया गया है जिसका प्रकाशन 19वें एवं 20वें संस्करण के मध्य स्वतंत्र रूप से भी हुआ था। Christian Religion, Television, Adult Education, Electronics, Civil Rights, Gymnastics तथा Civil History में भी कुछ न्यूनतम परिवर्तन किए गए हैं।

इयूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के 19वें (1979), 20वें (1989) एवं 21वें (1996) संस्करणों का तुलनात्मक अध्ययन

NOTES

4.3 सारणियों में परिवर्तन

नई भौगोलिक क्षेत्र सारणी (Area Table) में विभिन्न देशों के प्रशासनिक एवं राजनीतिक ढाँचे एवं उनकी इकाइयों में परिवर्तन किए गए हैं। सारणी -3 में परिष्कार के साथ परिवर्तन भी किए गए हैं तथा इसे तीन उप सारणियों में विभाजित किया गया है; 3A, 3B तथा 3C। इसकी तीन उप सारणियाँ हैं। सारणी 3B में दिए गए निर्देश अथवा 080-809 अनुसूचियों में दिए गए निर्देशों पर आधारित है। इसमें किए गए परिवर्तन एवं सरल हैं।

4.4 इलेक्ट्रॉनिक संस्करण

1993 में सी डी-रोम में 20वें संस्करण का इलेक्ट्रॉनिक संस्करण 'Electronic Dewey' की आख्या के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया। इस संस्करण में अनुसूचियों, सारणियों, अनुक्रमणिका, मैनुअल, संशोधन इत्यादि के साथ 1989 के बाद होने वाले परिवर्तनों को भी समाविष्ट किया गया। इस सी डी-रोम का माइक्रो कंप्यूटर में उपयोग किया जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक ड्यूई (Electronic Dewey) से खोज कार्य किसी भी शब्द, वाक्यांश, संख्या, अनुक्रमणिका, बुलियन ऑपरेटर्स इत्यादि द्वारा किया जा सकता है। शीर्षकों का अवलोकन किया जा सकता है एवं पदानुक्रम को प्रदर्शित किया जा सकता है। प्रविष्टियों में एल भी सबजेक्ट हेडिंग्स (L.C Subject Headings) के साथ ड्यूई संख्या भी दी गई है। इससे वर्गीकरणकार को पाठ्य सामग्री के वर्गीकरण में सरलता होती है तथा वर्गीकरण शीघ्रतापूर्वक किया जा सकता है। यह पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति का सर्वप्रथम सी डी-रोम संस्करण है जिसको व्यापारिक दृष्टि से तैयार कर उपलब्ध कराया गया है।

4.5 सरलीकरण गतिविधियाँ

डॉ. कोमारेमी को डी डी सी के सरलीकरण के लिए तथा इसके उपयोग में सुविधा लाने के लिए सदा स्मरण किया जाएगा। इस संस्करण की संरचना एवं इसके प्रस्तुतीकरण में जो परिष्कार हुआ है, वह इस प्रकार है:

- तीन मुख्य सारांश-तालिकाओं को इस पद्धति को दूसरे खंड में स्थान दिया गया है।
- संपूर्ण अनुसूचियों एवं सारणियों में कई स्थानों पर बहुस्तरीय सारांश-तालिकाओं को प्रस्तुत किया गया है। विशेषकर 370 Education, 620 Engineering, और 630 Agriculture तथा यूरोप एवं उत्तरी अमेरिक की भौगोलिक क्षेत्र सारणी। बहुस्तरीय सारांश-तालिका किसी वर्ग के निम्न स्तर की एक रूपरेखा है। उदाहरणस्वरूप- 631.11 की रूपरेखा।

इस प्रकार की रूपरेखा उपयोक्ताओं के लिए लाभप्रद है क्योंकि पाठक एक ही दृष्टि में संपूर्ण वर्ग को देख सकता है। इससे वर्ग संख्या निर्माण में समय की बचत होती है, साथ ही अनुसूचियों के पृष्ठों को भी अनावश्यक रूप से पलटना नहीं पड़ता। इस प्रकार अनुसूचियों को भौतिक क्षति से बचाया जा सकता है।

- हर प्रविष्टि के अंतर्गत विस्तारपूर्वक परिभाषित निर्देश टिप्पणियाँ प्रस्तुत की गई हैं।
- केंद्रीय शीर्षक को मुद्रण चिह्न ">"कद्वारा संख्या कालम में प्रस्तुत किया गया है।
- वैकल्पिक संख्याओं को कोष्ठक में प्रस्तुत किया गया है। उदाहरणस्वरूप (828.993 5)

NOTES

- जो मैनुअल सर्वप्रथम फॉरेस्ट प्रेस द्वारा वर्ष 1982 में प्रकाशित हुआ था, उसको इस संस्करण के चतुर्थ खंड (पृष्ठ 731-961) में प्रयुक्त किया गया है क्योंकि अनुसूचियाँ बार बार मैनुअल को उपयोग करने के लिए प्रेरित करती हैं। इससे किसी भी बिंदु का स्पष्टीकरण एवं विस्तार प्राप्त किया जा सकता है।
- एक अन्य महत्वपूर्ण नवप्रवृत्तन यह है कि संपादकीय प्रस्तावना (Editor's Introduction) को सरल रीति से एवं संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। इस संपादकीय प्रस्तावना में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि "इस उन उपयोक्ताओं के लिए लिखा गया है जो नव-शिक्षार्थी (Novice) हैं एवं वर्गीकरण प्रथम बार कर रहे हैं। अनुभावी वर्गीकरणकार भी इसके अंतर्विषय की समीक्षा पढ़कर लाभान्वित हो सकते हैं"। (Introduction, Sec. 11.1)

4.6 सापेक्षिक अनुक्रमणिका

इस संस्करण की एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि सापेक्षिक अनुक्रमणिका को काँट-छँट कर सरल बना दिया गया है। यह लक्ष्य इसकी उपयोगिता एवं क्षमता को कम किए बिना प्राप्त किया गया है, जो प्रशंसनीय है। केवल कुछ को छोड़कर सभी see references की प्रत्यक्ष प्रविष्टि द्वारा पूर्ति कर दी गई है। 20वें संस्करण की उपलब्धियों में उपयोक्ताओं की सुविधा एवं कुशलता प्रमुख हैं। यह संस्करण निश्चय ही उपयोगी एवं नई प्रवृत्तियों को निर्मित करने वाला है।

5. डी डी सी -21 (1996)

डी डी सी का 21वाँ संस्करण जुलाई 1996 में प्रकाशित हुआ। इसे पुस्तकाकार (चार खंड) एवं सी डी-रोम संस्करण Dewey for Windows के रूप में सर्वप्रथम एक साथ प्रकाशित किया गया। बीसवें संस्करण की पाठ्य सामग्री की सी डी-रोम में उपलब्धता के कारण Dewey for Windows (DfW) को शीघ्र तथा सरलता से तैयार किया जा सका है।

सूचना प्रौद्योगिकी एवं डी डी सी के मध्य में नया संबंध स्थापित होने से एक नए युग का सूत्रपात्र हुआ है। अब 21वें संस्करण का संपादकीय कार्य संपादकीय समर्थन प्रणाली (ESS) पर हो रहा है जो कि UNIX पर आधारित है। एक नवप्रवृत्तन यह भी हुआ है कि अब DCEPC के सदस्य ड्यूई लिस्टर्स के द्वारा इंटरनेट पर भी अपनी इलेक्ट्रॉनिक गोष्ठियाँ करते रहते हैं। DC& को अब मुद्रित पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करने का कार्य बंद कर दिया है। यह अब इंटरनेट पर <http://www.oclc.org> पर उपलब्ध है। ड्यूई होम पेज पर ओ सी एल सी फॉरेस्ट प्रेस का कैंटलॉग, ड्यूई, न्यूज, महत्वपूर्ण वर्गीकरण प्रकरण एवं इंटरनेट पते (जो आनलाईन कैंटलॉग का उपयोग करते हैं) उपलब्ध हैं। इस संस्करण का संपादन कार्य नई महिला संपादक जोन एस, मिचेल (Joan S. Mitchell) ने किया है जो वर्ष 1993 में इसकी मुख्य संपादक नियुक्त हुईं। जोन एस. मिचेल इस पद्धति की नवम् संपादक हैं एवं वे इस संगठन से 1985 से जुड़ी हुई हैं तथा सूचना एवं प्रौद्योगिकी में विशेषज्ञता रखती हैं।

5.1 डी डी सी-21 की संरचना

डी डी सी-21 ग्रंथपरक सूचना निम्नलिखित है:

Dewey, Melvil. Dewey Decimal Classification and Relative Index/devised by Melvil Dewey. Ed. 21/edited by Joan S. Mitchell, Julianne Beall, Winton W. Matthews Jr, and Gregory R. New, Albany, N.Y. : Forest Press, A division of OCLC Online Computer Library Centre, Inc, 1996, 4 Vols. ISBN 0-910608-50-4.

इसके चार खंडों का विवरण इस प्रकार है:

- | | |
|------------|--|
| Volume 1 : | Prefatory Material, Editor's Introduction. Glossary, Tables 1-7 and information on the changes in the new edition. |
| Volume 2 : | Schedules 000-599 |

उपर्युक्त चार खंड 4126 पृष्ठों और नौ अनुभागों में विभाजित है।

5.2 उपयोक्ताओं की सुविधा

डी डी सी—21 ने उन सभी पहलुओं पर ध्यान दिया है, जिन पर पूर्व संस्करणों ने बल दिया था, विशेषकर उपयोक्ताओं की सुविधा एवं आधुनिकीकरण पर 1 प्रविष्टियाँ स्पष्ट हैं, एवं प्रचुर मात्रा में टिप्पणियाँ उपलब्ध कराई गई हैं। संपादकीय प्रस्तावना संक्षिप्त एवं स्पष्ट हैं। साथ ही शीर्षकों को प्रस्तुत करने में सुधार किया है। प्रविष्टियों के साथ मैनुअल के समान कई संक्षिप्त टिप्पणियाँ भी प्रस्तुत की गई हैं। कुछ नई टिप्पणियाँ एवं सैद्धांतिक अवधारणाएँ भी प्रस्तुत की गई हैं।

5.3 अनुसूचियों में परिवर्तन

डी डी सी के 21वें संस्करण में अनेक परिवर्तन किए गए हैं जो वृद्धि (addition), विस्तार (expansion), पुनर्स्थापन (relocation), विलोपन (deletion), शीर्षक में परिवर्तन (change of heading s) तथा जोड़े निर्देश (added notes) के रूप में दिखाई पड़ते हैं। मुख्य नवीन अनुसूचियाँ निम्नलिखित विषय क्षेत्रों के लिए तैयार की गई हैं।

- 296 Judaism and 297 Islam
- 350-354 Public Administration
- 368 Insurance
- 370 Education
- 560-590 Life Sciences
- 004-006 Data Processing, 342-349 Branches of laws, 355 Military science, 362-363 Social problems, 420-490 Specific languages, 636 Animal husbandry, 790 Theatre, 810-890 Literatures of specific languages, 940-990 General History of the Modern world इत्यादि प्रमुख गिने चुने विषय क्षेत्रों में भी संशोधन किए गए हैं। एक महत्वपूर्ण परिवर्तन यह किया गया है कि पूर्व संस्करण में दिए गए 376 Education of women तथा 377 Schools of religions को अब 370 Education के उपविभाजन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही दूर शिक्षा (distance education) को विस्तारित किया गया है।

एक प्रशंसनीय परिवर्तन यह भी है कि ईसाई धर्म के प्रति झुकाव कम किया गया है। धर्म विषय में ईसाई धर्म को 200 से हटाकर 220/289 की ओर स्थानांतरित कर दिया गया है। इसी प्रकार Public administration 350-354 के क्षेत्र में अमेरिकी झुकाव, विशेषकर शब्दों एवं संरचना में, कम किया गया है। इस प्रकार पश्चिमी एवं ईसाई झुकाव को कम कर इस पद्धति को अंतरराष्ट्रीय बनाने की दशा में एक सफलतम प्रयास किया गया है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. डी डी सी की संशोधन प्रक्रिया का उल्लेख कीजिए।
2. डी डी सी मैनुअल की उपयोगिता बताइये।

.....

.....

.....

.....

NOTES

NOTES

5.4 सारणियों में परिवर्तन

सारणियों के प्रमुख क्षेत्रों में भी परिवर्तन कुछ कम नहीं है। मान सारणियों में उपयोग को नियमित करने का पूर्ण प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए 370 Education में मानक उपविभाजन के अनियमित उपयोग को अब नियमित कर TP-07 में रखा गया है। अब 370.7 में मानक उपविभाजन को नियमित कर इसी से संबंधित अनुसूची के अन्य स्थानों पर भी विशेषकर T1-071 में समायोजित कर दिया गया है। इससे अंकन की स्मृति सहायक एवं पक्षात्मक बनाने में एकरूपता आ गई है। लेकिन अभी भी बहुत कुछ फेरबदल किए जाने की आवश्यकता है ताकि कुछ अन्य विसंगतियों को दूर किया जा सके। विसंगति का एक उदाहरण निम्नलिखित है :

340.1 Theories of laws

342.02-.09 Other standard subdivisions of laws

भौगोलिक क्षेत्र सारणी से कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए हैं, विशेषकर 47 Russia तथा 499 Bulgaria में। नए राष्ट्रों के तथा भू-राजनीति (geopolitics) में परिवर्तन के कारण कई क्षेत्र संख्याओं में फेरबदल किए गए हैं। सारणियों में कहीं-कहीं अल्प परिवर्तन भी किए गए हैं।

5.5 पारदर्शी पक्ष संरचना

पूर्णरूप से संशोधित अनुसूचियों (नए संस्करण में फीनिक्स अनुसूची पद का उपयोग भी बंद कर दिया गया है जिसका 16वें से 19वें संस्करण में प्रचलन था)। न केवल नवीन विषयों को ही सम्मिलित करती हैं, बल्कि एक अवसर भी प्रदान करती हैं जिसके द्वारा वर्गों के क्रम को ठीक किया जा सके तथा पक्ष संरचना (Facet Structure) को ओर बढ़ा जा सके जो पुस्तकालय वृत्ति की आधुनिक विचारधारा है। डी डी सी—21 की अनुसूचियों में नई पारदर्शी पक्ष संरचना है। इसका अर्थ यह है कि अब डी डी सी धीरे-धीरे पक्षात्मक रूप लेती जा रही है। स्थानीय बल की महत्ता को महत्त्व देने हेतु पक्षात्मक सूत्र में कई विकल्प प्रस्तुत किए गए हैं। उदाहरणस्वरूप 560-590 Life Sciences के मुख्य Taxonomic उपविभाजनों में कोई फेरबदल नहीं किया गया। लेकिन पक्षों के क्रम को सत्ता-प्रक्रिया (Entity-Process) से अब प्रक्रिया-सत्ता (Process-Entity) कर दिया गया है तथा Biochemistry 574.19 के स्तर को ऊर्चा उठा कर अनुभाग 572 का रूप दे दिया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें कई पक्षों तथा विस्तार की व्यवस्था उपलब्धा की गई है। ऐसा इस विषय के स्तर को ध्यान में रखते हुए गया है।

इसी प्रकार 350-354 Public Administration के क्षेत्र में भी पक्ष क्रम में परिवर्तन किया गया है। अब इसे Jurisdiction-Topic से Topic-Jurisdiction कर दिया गया है। साथ में एक विकल्प भी प्रस्तुत किया गया है जिसके द्वारा Public Administration के सारे विषय क्षेत्रवार एक साथ रखे जा सकते हैं। यहाँ पर आंतरिक सारणियों (internal tables) द्वारा कई पक्ष संकेतक प्रस्तुत किए गए हैं संख्या निर्माण प्रक्रिया को भी सरल बनाया गया है। उदाहरणस्वरूप:

(Public) Administration of Justice in India

353.4 + (T1) + 54 (T2) = 353.409 54

(Option A vol.2, p. 601)

or

351 + 54 (T2) + 0 (Facet indicator) + 34 (from 353.4) = 351.540 34

इसका अर्थ यह है कि अब Public Administration के विषयों को country/palce अथवा विषयानुसार संस्थित किया जा सकता है। Public Administration के क्षेत्र में नई वर्ग संख्या लघु ही नहीं है बल्कि इसने डी डी सी-20 के दोहरे प्रावधान को भी समाप्त कर दिया है। उदाहरणस्वरूप :

Topic Ed 20 Ed 21

Abuse of power 351.991 353.46

352.002

Decentralization 351.007 3

352.283

352.004 72

5.6 सापेक्षिक अनुक्रमणिका

पहले की सापेक्षिक अनुक्रमणिका के 895 पृष्ठों में अब 150 पृष्ठों की और वृद्धि की गई है। इसका मुख्य कारण कई नए शब्दों एवं शीर्षकों को शामिल करना है। इन शब्दों को शीर्षकों के अंतर्गत रखा गया है। इसमें अनुसूचियों एवं सात सारणियों में उपयोग किए गए शब्द एवं टिप्पणियाँ भी शामिल हैं। इन्हें शब्दशः (word by word) सज्जित किया गया है मैनुअल में दी गई टिप्पणियों के शब्दों को भी अनुक्रमणिका में सम्मिलित करने से वर्गीकरण कार को सही वर्ग संख्या प्रदान करने में सहायता मिलती है। सीमांत तथा संबंधित शब्दों की ओर ध्यान खींचने के लिए *see also* संदर्भों का उपयोग किया गया है। इन शब्दों का उपयोग अंतर्विषयी विषयों में स्थान इंगित करने के लिए किया गया है। DDC-20 की भाँति इस संस्करण में भी पर्यायवाची शब्दों के लिए *see* संदर्भ का उपयोग नहीं किया गया है। इसके बदले अब विभिन्न शब्दों को उनके समकक्ष शब्दों के नीचे ही रखा गया है। उदाहरणस्वरूप अब Bird and Aves दोनों शब्दों को Aves के अंतर्गत ही रखा है। 'See also' संदर्भ Birds तथा इससे संबंधित पक्षों की ओर ले जाता है।

DDC-21 में 'सीअर्स लिस्ट ऑफ हेडिंग्स' तथा 'लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस सब्जेक्ट हेडिंग्स' की भाँति की प्रत्यक्ष एवं वाक्यांश शीर्षकों (phrasal headings) का उपयोग किया गया है। व्यक्तिगत एवं भौगोलिक नामों का अनुक्रमणीकरण AACR-2R के विनिर्देशों आधार पर किया गया है। उदाहरणस्वरूप Civil Engineering की प्रविष्टि प्रत्यक्ष रूप से की गई है न कि Engineering, civil के अंतर्गत। इसी प्रकार Commercial art न कि Art, commercial।

कुछ संश्लेषित संख्याओं (Synthesized numbers) का अनुक्रमणिका में फिर से उपयोग किया गया है जो साहित्य समादेश (literary warrant) पर आधारित है। इस प्रकार अनुक्रमणिका में अधिक से अधिक शब्दों का उपयोग किया गया है ताकि गैर-अमेरिकी उपयोक्ता भी इसका उपयोग कर सकें।

कुछ अवधारणाओं एवं अंतर्निहित पदों तथा संख्या निर्माण से प्राप्त कुछ शब्दों, जिनके लिए पर्याप्त साहित्य समादेश है, को भी इस अनुक्रमणिका में सम्मिलित किया गया है। धरातलीय भौगोलिक नामों के अतिरिक्त देश एवं उनके प्रांतों के नाम भी अनुक्रमणिका में सम्मिलित किए गए हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका के भौगोलिक विस्तृत विवरण काउंटी स्तर तक दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक घटनाएँ, मजान पुरुष, सम्राट, साम्राज्ञी, एवं राजनीतिक, साहित्य, सामाजिक आंदोलनों को भी अनुक्रमणिका में सम्मिलित किया गया है। तुलनात्मक दृष्टि में डी डी सी-21 की अनुक्रमणिका में डी डी सी-19 की सरलता एवं डी डी सी-20 की विस्तृतता का अच्छा समन्वय है।

5.7 ड्यूई फॉर विंडोज (डी एफ डब्लू)

ड्यूई फॉर विंडोज (DfW, Dewey for Windows) डी डी सी-21 का इलेक्ट्रॉनिक संस्करण है जिसे पारंपरिक मुद्रित संस्करण के साथ-साथ 1996 में प्रकाशित किया गया। यह इलेक्ट्रॉनिक संस्करण माइक्रोसॉफ्ट विंडोज LAN पर आधारित है जो डी डी सी-21 के डेटाबेस के अनुकूल है। यह विंडो आधारित इंटरफेस है जो डी डी सी-20 का DOS स्वरूप है। इलेक्ट्रॉनिक ड्यूई स्वरूप 1993 में जारी किया गया। दोनों स्वरूपों में खोज इंजन (search engine) वही है। DfW डेटाबेस को लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस के Editorial Support System (ESS) के डेटाबेस के रूप में शुरू किया गया। ESS स्वरूप MARC स्वरूप से भिन्न है। हालाँकि इन दोनों स्वरूपों में काफी समानता भी है। ESS डेटाबेस टेप से दोनों प्रकार के स्वयंपों के डेटाबेस बनाए जाते हैं—एक मुद्रित स्वरूप तथा दूसरा सी डी-रोम स्वरूप। साथ ही संक्षिप्त डी डी सी स्वरूप भी प्रकाशित किया गया है। DfW स्वरूप को हर वर्ष नई सी डी द्वारा अद्यतन भी किया जाता है तथा DC& में प्रकाशित परिवर्तनों को सम्मिलित किया जाता है। DD& अब केवल इंटरनेट पर उपलब्ध है।

प्रत्येक वर्ग संख्या के साथ लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस सब्जेक्ट हेडिंग्स को सांख्यिकीय मिलान द्वारा जोड़ा गया है। ये विषय शीर्षक खोज कार्य के लिए अतिरिक्त पद उपलब्ध कराते हैं। विशेषकर उन पुस्तकालयों में जहाँ LCSH विषय शीर्षकों का उपयोग किया जा रहा है, मुख्य शब्द अभिगम (Key word acces) द्वारा संरचना के साथ बनी बनाई निर्मित वर्ग संख्या को ढूँढा जा सकता है। DfW में नीचे एवं ऊपर की ओर कर्षण करने से संख्याओं की श्रृंखला को प्रदर्शित किया जा सकता है। अंतरापलक (interface) के लिए Single

ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के 19वें (1979), 20वें (1989) एवं 21वें (1996) संस्करणों का तुलनात्मक अध्ययन

NOTES

NOTES

window का उपयोग करना होता है। यदि किसी संख्या और शब्द को search window में प्रतिकर्षित किया जाए तो कंप्यूटर उस संख्या और शब्द को ढूँढना आरंभ कर देगा। डी डी सी वर्ग संख्या को प्रतिकर्षित करने के लिए संख्याओं का पूर्ण विवरण, शीर्षक टिप्पणियाँ, सापेक्षिक अनुक्रमणिका एवं LCSH शीर्षक विषयों का उपयोग करना आवश्यक है। यदि किसी भी शब्द को अनुक्रमणिका की window में प्रतिकर्षित किया जाए तो सापेक्षिक अनुक्रमणिका का संबंधित भाग मुद्रित सापेक्षिक अनुक्रमणिका की तरह ही कार्य करेगा।

विंडोज का व्यवस्थापन इस प्रकार किया गया है कि प्रतिकर्षण में सुविधा रहती है। इसके मानकीकृत एवं ग्राहकीकृत होने के कारण उपयोक्ताओं को इसे अपनी रुचि के अनुसार व्यवस्थापित करने में आसानी होती है। सर्च व्यु (Search view), ब्राउज व्यु (Browse view) तथा स्कैन व्यु (Scan view) मानकीकृत व्यु (Standard view) हैं।

DfW अनुक्रमणिका परिवर्धित है। पदों को पर्यायकोश (thesauri) से लेने से इसकी अभिगम (access) क्षमता में बढ़ोतरी हुई है। परंपरागत मुद्रित संस्करण की अपेक्षाकृत DfW में कई ऐसे लाभ उपलब्ध हैं जिससे इलेक्ट्रॉनिक संस्करण सुविधाजनक सिद्ध हो रहा है, जैसे संपूर्ण DDC-21 के मूल पाठ (text) को मुख्य शब्द (keyword) द्वारा ढूँढने की सुविधाओं एवं शब्दों का प्रतिकर्षण इत्यादि ऐसी कई सुविधाएँ उपलब्ध हैं जो प्रकाशित मुद्रण संस्करण में उपलब्ध नहीं थीं। यह अद्यतन भी रहती हैं। इसका मैनुअल इंटरनेट पर DC& पर उपलब्ध है जिसके कारण इसको प्रतिवर्ष नया स्वरूप प्रदान करने में कोई कठिनाई नहीं आती है। इसमें पद्धति के सिद्धांत एवं वर्ग निर्माण की विधि मुद्रित संस्करण के समान है। आगामी इलेक्ट्रॉनिक संस्करणों में वांछित संख्याओं के स्वचालित संश्लेषण के लिए इनमें एक अंतर्निहित सिस्टम (Expert System) का प्रावधान करने की योजना है। चमत्कृत कर देने वाली अनेक संभावनाएँ अभी भविष्य के गर्भ में भंडारित है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. डी डी सी में सरलीकरण की गतिविधियों का परिचय दीजिए।
4. डी एफ डब्ल्यू का परिचय दीजिए।

.....

6. आगामी प्रवृत्तियाँ

पूर्व प्रकाशित डी डी सी के दो संस्करणों में किए गए अंतरराष्ट्रीयकरण के प्रयासों से यह लगने लगा है कि बि यह पद्धति व्हाइट, एंग्लो सेक्सन एंड प्रोटेस्टेंट (WASP: White, Anglo-Saxon and Protestant) के प्रति झुकाव (bias) से दूर होती जा रही है। यह पद्धति धीरे-धीरे सरलता की ओर अग्रसर हो रही है हालांकि इसमें कठिन परिस्थितियों में भी वर्ग संख्या निर्माण करने की क्षमता है। पक्षात्मक संरचना की ओर अग्रसर होने से इसकी क्षमता में वृद्धि हुई है जिसमें एक वर्ग संख्या में कई पक्ष विद्यमान हो सकते हैं।

जब से फॉरिस्ट प्रेस को OCLC, डब्लिन ने खरीद लिया है तभी से इसमें कई नवप्रवर्तन कर कई अन्य/द्यूई उत्पादों का भी निर्माण किया जा सका है। जैसे bookmarks; Dewey rap music; AV reaching kit; Guide to the full, abridged and electronic version of the DDC एवं Dewey posters तथा तीन मुख्य सारांश—तालिकाओं का अलग से प्रकाशन। ऑनलाइन डेटाबेसों में वर्गीकरण के उपयोग का अध्ययन करने के लिए OCLC के पक्ष प्रदर्शक एवं सफल शोध परियोजनाओं को प्रयोजित किया जाता है। सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि सूचना प्रबंधन (information management) के क्षेत्र में डी डी सी के उपयोग पर महत्त्वपूर्ण शोध कार्य हो रहा है। डी डी सी तीन मुख्य सारांश—तालिकाओं का उपयोग इंटरनेट पर सूचना संगठन में किया जा रहा है। डी डी सी जिन गंभीर एवं सामयिक प्रश्नों से जूझ रहा है। उनमें निम्नलिखित प्रश्न महत्त्वपूर्ण हैं :

- वर्गीकरण को वर्गीकरण के लिए किस प्रकार प्रभावी बनाया जा सका है?
- किस प्रकार मानक अँगरेजी भाषा में ऐसे वर्गीकरण का निर्माण हो जो अंतरराष्ट्रीय उपयोक्ताओं की आवश्यकता की पूर्ति करे?
- किस प्रकार वर्गीकरण को अंत्य-उपयोक्ताओंके लिए अधि से अधि उपयोगी बनाया जा सकता है?
- भविष्य में डी डी सी के औचित्य को बनाए रखने के लिए क्या किया जाए?

ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के 19वें (1979), 20वें (1989) एवं 21वें (1996) संस्करणों का तुलनात्मक अध्ययन

NOTES

डी डी सी पद्धति 21वीं सदी के लिए एक शक्तिशाली एवं विश्वसनीय विषय अभिगमन प्रणाली (subject access system) बनने की दिशा में तीव्र गति से तैयार हो रही है।

7. सार-संक्षेप

आज डी डी सी विश्व के 135 देशों के 2,00,000 पुस्तकालयों में सर्वाधिक लोकप्रिय वर्गीकरण पद्धति के रूप में प्रचलित है। हिंद साहित्य इस पद्धति का अनुवाद 35 भाषाओं में हो चुका है। सुविचारित संशोधन नीति एवं उच्च कोटि के संगठन तंत्र के कारण डी डी सी ने अपना वर्चस्व कायम रखा है। सर्वप्रथम 1876 प्रकाशित होने के पश्चात् यह पद्धति निरंतर रूप से संशोधित होती रही है जिसके फलस्वरूप ज्ञान-जगत् में हो रही वृद्धि के साथ इसमें नवीनता एवं सामयिकता बनी रही है। साथ ही वर्गीकरण क्षेत्र में हो रही नवीन तकनीकों का भी समयानुसार किया गया है। नवीन संस्करण अप्रचलित संख्याओं को हटाते रहे हैं एवं आवश्यकतानुसार उनका पुनर्स्थापन निर्धारण करते रहे हैं। कई संशोधन तो लघु तथा सामान्य हैं। इन्हें पहले फीनिक्स शेड्युल्स (Phoenix Schedules) कहा जाता था। फीनिक्स या पूर्णतया अनुसूचियों को धीरे-धीरे थोड़ी-थोड़ी मात्रा में प्रस्तुत किए जाने की आवश्यकता है।

1979 में प्रकाशित 19वाँ संस्करण एं सफलतक संस्करण सिद्ध हुआ है। इसके संपादक बेंजामिन कस्टर थे। इन्होंने 16वें संस्करण का संपादन भी किया था। डी डी सी—16 में 301-307 Sociology, 324 Political Process का पूर्ण संशोधन किया गया, तथा 329 Practical Politics को हटा दिया गया। भौगोलिक क्षेत्र सारणी में 17 प्रतिशत वृद्धि की गई। सारणी 3 को दो सारणियों 3 तथा 3A में विभक्त किया गया। सन् 1982 में फॉस्फेट प्रेस, अल्बानी, न्यूयार्क ने अलग से एक मैनुअल प्रकाशित किया ताकि व्याख्या एवं उपयोग में समानता बनी रही। इसके बाद में डी डी सी के उत्तरवर्ती संस्करणों में भी शामिल किया गया। डी डी सी—20 (1989) ने सर्वप्रथम ऑनलाइन प्रणाली अपनाई जो ESS : Editorial Support System पर आधारित थी। इसके संपादक जोन कोमारोमी के प्रयास के इसके कार्यान्वयन में तथा इसकी अनुक्रमणिका एवं संपादकीय प्रस्तावना में सरलता आई। मुख्य परिवर्तनों में 780 Music है जिसमें पूर्ण रूप से संशोधन किए गए। इसे काफी तैयारी एवं विचार-विमर्श के पश्चात् संशोधित किया गया। सारणी 3 को भी तीन उपसारणियों 3A, 3B एवं 3C में विभाजित किया गया। 1993 में डी डी सी—20 को सर्वप्रथम CD-ROM संस्करण में प्रकाशित किया गया है इलेक्ट्रॉनिक ड्यूई (Electronic Dewey) कहा जाता है। यह Dos प्रणाली पर आधारित था।

DDC-21 संस्करण का संपादन जोन. एस. मिचेल ने किया है जो स्वयं सूचना प्रौद्योगिकी में विशेषज्ञता रखती हैं। इस संस्करण को एक साथ मुद्रित स्वरूप (चार खंडों में) एवं सी डी-रोम स्वरूप, जिसे Dewey for Windows कहा जाता है, में प्रकाशित किया गया। Dewey for Windows माइक्रोसॉफ्ट UNIX आधारित DDC-21 डेटाबेस का लैन सुसंगत (LAN compatible) अंतरापृष्ठ (interface) है। ये सभी प्रयास अंतरराष्ट्रीयकरण की ओर हैं जिनका मुख्य उद्देश्य डी डी सी के उपयोग में सरलता लाना एवं इसके ऐंग्लो-अमेरिक झुकाव को कम करना है। 296 Judaism, 297 Islam एवं 200 Religion में ईसाई झुकाव को कम करने हेतु मुख्य संशोधन किए गए हैं। पूर्ण रूप से संशोधित 350-354 Public Administration में कई नए विकल्पों तथा पारदर्शी पक्ष संरचना का उपयोग किया है। क

560-590 Life Sciences में पक्षात्मक क्रम को विलोमित कर Princes-Entity कर दिया गया है। बायोकेमिस्ट्री के एक पूर्णतया विषय के रूप में उभरने से एवं साहित्य समादेश के कारण अब इसे 572 में रखा गया है। पक्षात्मकता संरचना के कारण डी डी सी—21 अब अधिक पक्षात्मकता की ओर अग्रसर होती जा रही

NOTES

है। DfW डी डी सी-21 के प्रतिवर्धित डेटाबेस में से वर्ग संख्या खोजने का अवसर प्रस्तुत करती हैं। इसमें वर्ग संख्या, मुख्य शब्द या विषय शीर्षक द्वारा खोज की जा रही है। विंडो प्रणाली में मानकीकृत कक्टमाईज्ड व्युज (customised views) उपलब्ध हैं। विंडो प्रणाली में इस प्रकार की सुविधा उपलब्ध है कि प्रतिकर्षण द्वारा मुख्य शब्द एवं वर्ग संख्या को एक विंडो से दूसरे विंडो में लाया जा सकता है। प्रत्येक प्रविष्ट पूर्ण रूप से विषय शीर्षक से मिलान करती हुई एक नमूना रिकार्ड प्रस्तुत करती है। स्वचालित वर्ग संख्या निर्माण हेतु अब इसमें नवप्रवर्तन करने का प्रयास किया जा रहा है। प्रतिवर्ष डी डी सी—सी डी—रोम को अद्यतन रखने का प्रयास जारी है ताकि नए परिवर्तन किए जा सकें एवं नवागत ज्ञान सामग्री का समावेश किया जासके जिसे द्यूई होमपेज <http://www.oclc.org> के पर भी देखा जा सकता है।

वर्तमान में यह पता लगाने का प्रयास जारी है कि डी डी सी उत्पादों का विपणन किस प्रकार किया जा सकता है तथा डी डी सी का पुस्तकालयों के अतिरिक्त और कहाँ पर उपयोग किया जा सकता है।

8. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. संशोधन प्रक्रिया — इस पद्धति में संशोधन हेतु मुख्य संपादक के निर्देशन के अंतर्गत एक संपादकीय दल कार्य करता है। 1953 से इसका संपादकीय कार्यालय Decimal Classification Division, Library of Congress, Washington D.C. में स्थित है। यह विभाग प्रतिवर्ष लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस द्वारा प्राप्त की गई 1,00,000 से अधिक नई पुस्तकों में डी डी सी संख्याओं का प्रयोग करता है। संपादक को यह सलाह देने के लिए कि किस हद तक संशोधन किया जाना चाहिए, एक समिति है जिसे Decimal Classification Editorial Policy Committee (DCEPC) कहा जाता है। इस समिति का अध्यक्ष संपादक को परामर्श देता है। यह एक अंतरराष्ट्रीय समिति है जो संयुक्त रूप से अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन तथा डी डी सी के प्रकाशक फॉरेस्ट प्रेस द्वारा नियुक्त की जाती है। इस समिति में कनाडा, यू.के. आस्ट्रेलिया एवं अमेरिका के पुस्तकालय व्यवसाय के कई क्षेत्रों के प्रतिनिधी होते हैं। यह एक शीर्ष समिति है जो इस पद्धति के संपादन में गंभीर सलाह देती है और इसका निरीक्षण करती है। पद्धति के नवीन संस्करण लगभग हर 7-10 वर्ष के अंतराल में प्रकाशित होते रहते हैं जिनका प्रकाशन अल्बानी, न्यूयार्क स्थित फॉरेस्ट प्रेस करता रहा है। अब इसका कार्यालय डब्लिन, ओहियो स्थित ओसीएलसी (OCLC) मुख्यालय में बदल दिया गया है। इसका संचालन कार्यकारी निदेशक के द्वारा किया जाता है।
2. डी डी सी मैनुअल— सर्वप्रथम 1982 में जे. पी. कोमारोमी (J.P. Comaromi) ने फॉरेस्ट प्रेस द्वारा डी डी सी मैनुअल प्रकाशित करवाया जो डी डी सी के 19 वें संस्करण के व्यवहार एवं मानवीकरण में मील का पत्थर साबिह हुआ। यह मैनुअल जे.पी. कोमारोमी एवं उनके दल की अथ यक्षता में तैयार करवाया जो 1975 में उनके स्वयं के द्वारा किए गए सर्वेक्षण 'डी डी सी पद्धति का उत्तरी अमरीका में उपयोग' पर आधारित था। यह मैनुअल लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस के डेसिमल क्लैसिफिकेशन डिवीजन में कार्यरत कर्मियों द्वारा डी डी सी वर्ग संख्याओं के चयन एवं उपयोग से संबंधित धारणा एवं प्रायोगिकता की व्याख्या करता है। इससे यह पता चलता है इन संख्याओं का उपयोग इसके अधिकृत उपयोग के अनुरूप है या नहीं। इसमें कठिन से कठिन विषयों का वर्गीकरण करने के तथा एक संख्या के दूसरी संख्या से अंतर को स्पष्ट हेतु निर्देश प्रदान किए गए हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि यह डी डी सी वर्ग संख्याओं के अधिकृत प्रतिवेदन के समान है। इसमें कई स्थानों पर नक्शों, फ्लो चार्ट तथा बिंदु को विस्तारमें दर्शाया गया है। यह उपयोगी संदर्शिका है जो डी डी सी द्वारा वर्गीकरण करने में एकरूपता सुनिश्चित करती है। इसकी उपयोगिता को देखते हुए डी डी सी के 20वें संस्करण (1989) में इसे समाविष्ट कर लिया गया है।
3. सरलीकरण गतिविधियाँ— डॉ. कोमारोमी को डी डी सी के सरलीकरण के लिए तथा इसके उपयोग में सुविधा लाने के लिए सदा स्मरण किया जाएगा। इस संस्करण की संरचना एवं इसके प्रस्तुतीकरण में जो परिष्कार हुआ है, वह इस प्रकार है:

NOTES

- तीन मुख्य सारांश-तालिकाओं को इस पद्धति को दूसरे खंड में स्थान दिया गया है।
- संपूर्ण अनुसूचियों एवं सारणियों में कई स्थानों पर बहुस्तरीय सारांश-तालिकाओं को प्रस्तुत किया गया है। विशेषकर 370 Education, 620 Engineering, और 630 Agriculture तथा यूरोप एवं उत्तरी अमेरिकी की भौगोलिक क्षेत्र सारणी। बहुस्तरीय सारांश-तालिका किसी वर्ग के निम्न स्तर की एक रूपरेखा है। उदाहरणस्वरूप- 631.11 की रूपरेखा।

इस प्रकार की रूपरेखा उपयोक्ताओं के लिए लाभप्रद है क्योंकि पाठक एक ही दृष्टि में संपूर्ण वर्ग को देख सकता है। इससे वर्ग संख्या निर्माण में समय की बचत होती है, साथ ही अनुसूचियों के पृष्ठों को भी अनावश्यक रूप से पलटना नहीं पड़ता। इस प्रकार अनुसूचियों को भौतिक क्षति से बचाया जा सकता है।

- हर प्रविष्टि के अंतर्गत विस्तारपूर्वक परिभाषित निर्देश टिप्पणियाँ प्रस्तुत की गई हैं।
 - केंद्रीय शीर्षक को मुद्रण चिह्न ">"कद्वारा संख्या कालम में प्रस्तुत किया गया है।
 - वैकल्पिक संख्याओं को कोष्ठक में प्रस्तुत किया गया है। उदाहरणस्वरूप (828.993 5)क
- जो मैनुअल सर्वप्रथम फॉरिस्ट प्रेस द्वारा वर्ष 1982 में प्रकाशित हुआ था, उसको इस संस्करण के चतुर्थ खंड (पृष्ठ 731-961) में प्रयुक्त किया गया है क्योंकि अनुसूचियाँ बार बार मैनुअल को उपयोग करने के लिए प्रेरित करती हैं। इससे किसी भी बिंदु का स्पष्टीकरण एवं विस्तार प्राप्त किया जा सकता है।

4. ड्यूई फॉर विंडोज (डी एफ डब्लू)

ड्यूई फॉर विंडोज (DfW, Dewey for Windows) डी डी सी-21 का इलेक्ट्रॉनिक संस्करण है जिसे पारंपरिक मुद्रित संस्करण के साथ-साथ 1996 में प्रकाशित किया गया। यह इलेक्ट्रॉनिक संस्करण माइक्रोसॉफ्ट विंडोज LANपर आधारित है जो डी डी सी-21 के डेटाबेस के अनुकूल है। यह बिंडो आधारित इंटरफेस है जो डी डी सी-20का DOS स्वरूप है। इलेक्ट्रॉनिक ड्यूई स्वरूप 1993 में जारी किया गया। दोनों स्वरूपों में खोज इंजन (search engine) वही है। DfW डेटाबेस को लाइब्रेरी ऑफ कॉग्रेस के Editorial Support System (ESS) के डेटाबेस के रूप में शुरू किया गया। ESS स्वरूप MARC स्वरूप से भिन्न है। हालाँकि इन दोनों स्वरूपों में काफी समानता भी है। ESS डेटाबेस टेप से दोनों प्रकार के स्वयंपों के डेटाबेस बनाए जाते हैं— एक मुद्रित स्वरूप तथा दूसरा सी डी-रोम स्वरूप। साथ ही संक्षिप्त डी डी सी स्वरूप भी प्रकाशित किया गया है। DfW स्वरूप को हर वर्ष नई सी डी द्वारा अद्यतन भी किया जाता है तथा DC& में प्रकाशित परिवर्तनों को सम्मिलित किया जाता है। DD& अब केवल इंटरनेट पर उपलब्ध है।

प्रत्येक वर्ग संख्या के साथ लाइब्रेरी ऑफ कॉग्रेस सब्जेक्ट हेडिंग्स को सांख्यिकीय मिलान द्वारा जोड़ा गया है। ये विषय शीर्षक खोज कार्य के लिए अतिरिक्त पद उपलब्ध कराते हैं। विशेषकर उन पुस्तकालयों में जहाँ LCSH विषय शीर्षकों का उपयोग किया जा रहा है, मुख्य शब्द अभिगम (Key word acces) द्वारा संरचना के साथ बनी बनाई निर्मित वर्ग संख्या को ढूँढा जा सकता है। DfW में नीचे एवं ऊपर की ओर कर्षण करने से संख्याओं की श्रृंखला को प्रदर्शित किया जा सकता है। अंतराफलक (interface) के लिए Single window का उपयोग करना होता है। यदि किसी संख्या और शब्द को search window में प्रतिकर्षित किया जाए तो कंप्यूटर उस संख्या और शब्द को ढूँढना आरंभ कर देगा। डी डी सी वर्ग संख्या को प्रतिकर्षित करने के लिए संख्याओं का पूर्ण विवरण, शीर्षक टिप्पणियाँ, सापेक्षिक अनुक्रमणिका एवं LCSH शीर्षक विषयों का उपयोग करना आवश्यक है। यदि किसी भी शब्द को अनुक्रमणिका की window में प्रतिकर्षित किया जाए तो सापेक्षिक अनुक्रमणिका का संबंधित भाग मुद्रित सापेक्षिक अनुक्रमणिका की तरह ही कार्य करेगा।

विंडोज का व्यवस्थापन इस प्रकार किया गया है कि प्रतिकर्षण में सुविधा रहती है। इसके मानकीकृत एवं ग्राहकीकृत होने के कारण उपयोक्ताओं को इसे अपनी रुचि के अनुसार व्यवस्थापित करने में आसानी होती है। सर्च व्यु (Search view), ब्राउज व्यु (Browse view) तथा स्कैन व्यु (Scan view) मानकीकृत व्यु (Standard view) हैं।

NOTES

9. मुख्य शब्द

इलेक्ट्रॉनिक ड्यूई (Electronic Dewey) : डी डी सी-20 का सी डी-रोम संस्करण जिसे सर्वप्रथम 1993 में जारी किया गया। यह डॉस (DOS) आधारित है तथा इसमें अनुसूनियाँ, सारणियाँ एवं सापेक्षिक अनुक्रमणिका दी गई हैं। इसमें वर्ग संख्या, अनुक्रमणिका शब्द एवं बुलियन सम्मिश्रण (Boolean combination) द्वारा किसी भी पक्ष को ढूँढ़ा जा सकता है। हर वर्ग संख्या को अधिक से अधिक पाँच उपर्युक्त लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस सबजेक्ट हेडिंग्स से जोड़ा गया है। अधिक उपयोग में आ रहे एल. सी. विषय शीर्षकों का भी इसमें समावेश है।

ई एस एस (ESS)

: डी डी सी के विशिष्ट विषयों से संबंधित एडीटोरियल सपोर्ट सिस्टम (ESS) एक यूनिक्स आधारित प्रणाली है। इसको डेसिमल क्लैसिफिकेशन डिवीजन के कम्प्यूटर में 1986 में प्रतिस्थापित किया गया। यह फुल स्क्रीन संपादन क्षमता प्रदान करती है। यह इस वर्गीकरण पद्धति का संशोधन करने तथा इसे अद्यतन रखने में सहायक है। इसके डेटाबेस के आधार पर 1988 से डी डी सी के पूर्ण, संक्षिप्त एवं इलेक्ट्रॉनिक संस्करणों को उत्पादित किया जा रहा है।

डी सी एंड (D C &)

: यह "डेसिमल क्लैसिफिकेशन एडीशन्स, नोट्स एंड डिस्कीजन्स" का संक्षिप्त रूप है। 'डी सी एंड' एक अनियमित पत्रिका है जो फॉरिस्ट प्रेस से प्रकाशित होती है। इसमें दो संस्करणों के मध्य हुए परिवर्तन, संशोधन तथा अन्य समाचारों को प्रकाशित किया जाता है। 1997 से इसका मुद्रित संस्करण प्रकाशित होना बंद हो गया है। अब इसे इंटरनेट पर ड्यूई होम पेज पर <http://www.oclc.org> पर देखा जा सकता है।

डी सी ई पी सी (DCEPC)

: 'डेसिमल क्लैसिफिकेशन एडीटोरियल पॉलिसी कमेटी' एक शीर्षस्थ निकाय है जो अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन एवं फॉरिस्ट प्रेस द्वारा संयुक्त रूप से नियुक्त की गई है। इसका कार्य संशोधन जैसे विषय पर परामर्श प्रदान करना है। यह एक उच्चस्तरीय समिति है जो नियमित रूप से सलाह देती रहती है कि किसका संशोधन किया जाए एवं किस सीमा तक किया जाए। हर संशोधन चाहे वह छोटा हो या बड़ा का समिति द्वारा सर्वप्रथम अनुमोदित होना आवश्यक है। उसके बाद ही संशोधन डी डी सी में सम्मिलित किए जाते हैं।

ड्यूई फॉर विंडोज (Dewey for Windows) (1996) : ड्यूई फार विंडोज (DFW) माइक्रोसॉफ्ट यूनिक्स आधारित डी डी सी-21 का लैन सुसंगत (LAN compatible) अंतरापृष्ठ है। यह डी डी सी-21 में वर्ग संख्या तथा मुख्य शब्द ढूँढने में सहायक है। हर वर्ग संख्या को अधिक से अधिक 5 उपयुक्त लाइब्रेरी ऑफ कॉंग्रेस सब्जेक्ट हेडिंग्स (LCSH) से जोड़ा गया है। यह इलेक्ट्रॉनिक ड्यूई का परिष्कृत संस्करण है जो हर वर्ष प्रकाशित होता है।

ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के 19वें (1979), 20वें (1989) एवं 21वें (1996) संस्करणों का तुलनात्मक अध्ययन

NOTES

फॉरेस्ट प्रेस (Forest Press)

: डी डी सी पद्धति सन् 1911 से नियमित रूप से इस प्रेस द्वारा प्रकाशित हो रही है। यह लेक प्लेसिड क्लब एज्युकेशनल फाउंडेशन की सहायक संस्था है, जिसे मैल्क्विन ड्यूई ने स्थापित किया था। जुलाई 1988 से फॉरेस्ट प्रेस, ओ सी एल सी (ऑनलाइन कम्प्यूटर लाइब्रेरी सेंटर) का भाग बन गया है जो ओहायो राज्य के डब्लिन शहर में स्थित है। इस पद्धति के प्रबंधन, प्रकाशन, समर्थन एवं विपणन की पूर्ण जिम्मेदारी ओ सी एल सी की है। यह सेंटर अन्य विदेशी भाषाओं में अनुवादित प्रोजेक्ट्स को भी संचालित करता है। जनवरी 1999 से इसका कार्यालय अल्बानी, न्यूयार्क से ओ सी एल सी मुख्यालय डब्लिन, ओहायो राज्य में स्थानांतरित हो गया है।

संशोधन (Revision)

: डी डी सी को अद्यतन एवं नवीन रखने की प्रक्रिया। डी डी सी में किए जाने वाले प्रत्येक परिवर्तन का डी डी सी ई पी सी द्वारा अनुमोदित होना आवश्यक है। इसमें तीन प्रकार के संशोधन किए जाते हैं। प्रथम, पूर्ण संशोधन (Complete revision)। इसे पूर्व में फीनिक्स अनुसूची कहा जाता था। इस प्रक्रिया में पूर्व वर्ग को पूर्णतया नष्ट कर फिर से उसकी एक नई संरचना तैयार करनी होती है जिसमें केवल मुख्य वर्ग संख्या को ही सुरक्षित रखा जाता है। डी डी सी-21 में 350-354 Public Administration तथा 560-590 Life Sciences एवं डी डी सी-20 में 780 Music में पूर्ण परिवर्तन किया गया है। डी डी सी-18 में 340 law एवं 510 Mathematics में पूर्ण परिवर्तन किया गया है। इस प्रकार की प्रवृत्ति का आरंभ डी डी सी-16 (1958) से हुआ। द्वितीय, अर्थात् विस्तृत संशोधन (Extensive Revisions) में मुख्य रूपरेखा को छोड़कर प्रमुख परिवर्तन एवं योजन (additions) किए गए हैं। उदाहरणस्वरूप डी डी सी-21 में विस्तृत परिवर्तन इन विषयों में किए गए हैं: 297 Islam; 200 Religion एवं 370 Education में। तृतीय नियमित संशोधन (Routine Revisions)। ये सुधार, विलोपन, पुनर्स्थापन निर्धारण एवं कुछ गौण विस्तार अनुसूचियों, सारणियों एवं अनुक्रमणिका में किए गए हैं।

NOTES

इसमें मुख्य शब्दों में परिवर्तन अर्थात् विषय को सुरक्षित रखते हुए मुख्य शब्दों में परिवर्तन किया जाता है। अतः संशोधन प्रक्रिया बढ़ते हुए ज्ञान के साथ कदम मिलाकर चलने का सुअवसर प्रदान करती है, हालाँकि इससे अस्थिरता भी आ जाती है एवं अधिक संशोधन पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए दुःस्वप्न बन सकता है। लेकिन डी डी सी में हमेशा सामयिकता एवं स्थिरता के बीच एक बुद्धिमत्तापूर्ण संतुलन बनाए रखा जाता है। इसकी स्वीकार्यता तथा इसके सुदीर्घ जीवन का यही राज है।

10. अभ्यास-प्रश्न

1. डी डी सी-19 (1979) की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. डी डी सी के 20 वें संस्करण में किये गये परिवर्तनों के मूल्यांकन कीजिए।
3. ड डी डी-21 की संरचना की विशेषताएँ बताइए।
4. डी एफ डब्ल्यू में खोज एवं पुनर्प्राप्ति की सुविधा की समीक्षा कीजिए।
5. डी डी सी पर हे रहे शोध तथा विपणन की सामाजिक प्रवृत्तियों की चर्चा कीजिए।

11. संदर्भ ग्रंथ-सूची

Chan, Lois Mai [et al.] (1996), *Dewey Decimal Classification : A Practical Guide*. and ed. revision for DDC-21. Albany, New York : Forest Press/OCLC. app 1-24.

Chan, Lois, Mai and Mitchell, Joan S. (eds). (1997). *Dewey Decimal Classification Edition 21 and International Perspectives*. Albany, New York : Forest Press/OCLC. 3-42.

Comaromi, John P. and Satija, M.P. (1990). *Exercises in the 20th Edition of the Dewey Decimal Classification*. New Delhi : Ster

Mitchell, Joan S. (1994). Dewey Behind the Scenes. *DC& 5(5)*, 7-11

Satija, M.P. and Comaromi, John P. (1998). *Excercises in the 21st Edition of the Decimal Classification*. New Delhi : Sterling.

Sharma, Pandey S. K. (199). *Practical Approach ho DDC : Dewey Decimal Classification Made Easy*. Delhi : Ess Ess Publication.

यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन (यू डी सी)

NOTES

अध्याय में सम्मिलित है :

1. अध्ययन के उद्देश
2. परिचय
3. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
4. प्रकृति एवं संरचना
 - 4.1 मुख्य सारणियाँ
 - 4.2 सहायक सारणियाँ
 - 4.3 सामान्य सहायक
 - 4.4 विशिष्ट सहायक
 - 4.5 समानांतर विभाजन
5. अंकन
 - 5.1 ग्राह्यता
 - 5.2 पक्षकरण एवं संश्लेषण
 - 5.3 अंतर्निवेशन
 - 5.4 स्मृति सहायक
 - 5.5 चिह्नों का व्यवस्थापन क्रम
 - 5.6 मूल्यांकन
6. वर्णानुक्रमिक विषय अनुक्रमणिका
7. भविष्य में विस्तार के लिए प्रावधान
8. यू डी सी का भरण-पोषण
9. यू डी सी के गुण एवं दोष
10. यू डी सी द्वारा वर्गीकरण अभ्यास
11. सार-संक्षेप
12. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों
13. मुख्य शब्द
14. अभ्यास-प्रश्न
15. संदर्भ ग्रन्थ-सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्याय में आपको यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन से परिचित कराया गया है। लोकप्रियता में डी डी सी पद्धति के पश्चात् इसका दूसरा स्थान है।

इस अध्याय का अध्ययन करने पश्चात् आप:

- यू डी सी को पुस्तकालयों को पुस्तकों को सुव्यवस्थित रखने के लिए एक वर्गीकरण पद्धति के रूप में एवं ग्रंथात्मक उपकरणों, जैसे पुस्तकालय प्रसूची एवं ग्रंथसूचियों का विकास करने हेतु इसकी उपयुक्तता के बारे में जानने में जानकारी प्राप्त करेंगे; तथा
- वर्ग संख्या निर्माण हेतु इसका उपयोग करने में समर्थ होंगे।

2. परिचय :

यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन (UDC : Universal Decimal Classification) इस श्रृंखला की दूसरी वर्गीकरण पद्धति है जिसका आपको अध्ययन करना है। इस इकाई में यू डी सी की संरचना, अंकन, सहायक सारणियाँ, संश्लेषणात्मक युक्ति एवं वर्णानुक्रमिक अनुक्रमणिका की व्याख्या की गई है। यह इकाई संक्षिप्त रूप से इस वर्गीकरण पद्धति का उद्भव एवं विकास तथा इसकी दृढ़ता एवं कमजोरियों की जानकारी देने में एवं वर्ग संख्या निर्माण में आपका समुचित मार्ग प्रदर्शन करेगी। इकाई के अंत में कुछ अभ्यासों द्वारा यू डी सी पद्धति का उपयोग कर वर्ग संख्या के निर्माण के उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।

आपको यह सलाह की जाती है कि वर्ग संख्या निर्माण में British Standards Institution द्वारा प्रकाशित यू डी सी का उपयोग करें जिसकी आख्या है : **UDC: International Medium Edition-English Text (BS 1000 M: 1985)**। इसके दो भाग हैं : सन् 1985 में प्रकाशित प्रथम भाग जिसमें Systematic Tables हैं तथा सन् 1988 में प्रकाशित द्वितीय भाग जिसमें वर्णानुक्रमिक विषय अनुक्रमणिका प्रस्तुत की गई है।

3. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

यू डी सी का उद्भव ड्यूरै डेसिमल क्लैसिफिकेशन से ही हुआ है। जैसा कि इस पद्धति की प्रस्तावना में बताया गया है, उन्सवीं शताब्दी में डी डी सी पद्धति की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। "डी डी सी का प्रकाशन वर्गीकरण के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना रही है जब पुस्तकालयों में किसी सुनियोजित क्रम में ग्रन्थों को विषयानुसार रखना प्रारम्भ हुआ। यह वर्गीकरण एक सुनियोजित कोड पर आधारित था"। इसका उद्देश्य पुस्तकों को पुनर्प्राप्त करना तथा पुनर्व्यवस्थित करना था ताकि पाठकों का कम से कम समय नष्ट हो डी डी सी के इसी गुण के कारण ख्याति प्राप्त बेल्जियन ग्रन्थसूचीकार पॉल ऑटलेट का ध्यान इसकी ओर आकर्षित हुआ। पॉल ऑटलेट (Paul Otlet) एवं हेनरी ला फोन्टेन (Henri La Fontaine) 1895 में ब्रसेल्स स्थित Institute International de Bibliography के तत्वावधान में यूनीवर्सल बिब्लियोग्राफी पर संयुक्त रूप से कार्य कर रहे थे। जिस परियोजना पर ये दो बेलियन ग्रन्थसूचीकार (Bibliographer) कार्य कर रहे थे उस परियोजना का नाम **Universal Bibliographic Repertory** था। यह उस समय तक की प्रकाशित समस्त पाठ्य सामग्री की एक बृहत वर्गीकृत अनुक्रमणिका थी।

पॉल ऑटलेट इस अनुक्रमणिका की प्रविष्टियों को व्यवस्थित करने के किसी माध्यम की तलाश में थे। इन्हें इस कार्य के लिए डी डी सी का उपयोग करना उपयुक्त लगा। अतः उन्होंने मेल्विल ड्यूरै से डी डी सी को फ्रॉच भाषा में रूपांतरित करने हेतु अनुमति माँगी। पॉल ऑटलेट एवं हेनरी ला फोन्टेन डी डी सी के निम्नलिखित गुणों से अत्याधिक प्रभावित थे :

- (1) यह मानव जाति द्वारा अर्जित ज्ञान की वर्गीकरण पद्धति थी;
- (2) इसमें अंतरराष्ट्रीय संख्याओं का प्रयोग हुआ था; एवं
- (3) डी डी सी की दशमलव संख्या में न केवल नए विषयों का समावेश करने की क्षमता थी, वरन् यह पद्धति अंतरराष्ट्रीय ग्रन्थसूची में पूर्ण विवरण प्रदान करने के लिए भी उपयुक्त थी।

पॉल ऑटलेट केवल डी डी सी के मूल पाठ को फ्रेंच भाषा में रूपांतर करने से ही संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने डी डी सी के विकास में तथा इस पद्धति को पाठ्य सामग्री व्यवस्थित करने एवं पुनर्प्राप्ति का एक सर्वतोमुखी माध्यम बनाने में भी प्रशंसनीय योगदान दिया। मूल पद्धति में कई नवप्रवर्तन किए गए, जैसे :

- (1) यू डी सी एक उच्च स्तरीय संश्लेषणात्मक पद्धति के रूप में विकसित हुई।
- (2) विषयों के मध्य कई प्रकार के सम्बन्धों की पहचान की गई तथा उनको प्रदर्शित करने लिए पृथक्-पृथक् संकेत चिह्न प्रदान किए गए।
- (3) वे सामान्य अभिलक्षण अलग किए गए जो कई विषयों से सम्बन्धित थे। उनको सहायक सारणी (tables of auxiliary numbers) के रूप में रखा गया जिन्हें आवश्यकतानुसार किसी भी विषय के साथ जोड़ा जा सकता था।

सहायक सारणियों एवं अन्य संश्लेषणात्मक लक्षणों के उपयोग से यू डी सी पूर्ण वर्ग संख्या निर्माण में एवं प्रदर्शन में मितव्ययी सिद्ध हुई है। ऑटलेट एवं ला फोन्टेन ने डी डी सी के फ्रेंच रूपांतर में अपने नवप्रवर्तन द्वारा उच्च स्तरीय विस्तार किए जिससे उनके द्वारा विकसित Repertory का उद्देश्य पूर्ण हुआ।

यू डी सी का प्रथम संस्करण फ्रेंच भाषा में प्रकाशित हुआ। इसका शीर्षक **Handbook to the Universal Bibliographic Repertory** था जिसे Institute International de Bibliography (IIB) ने 1904-1907 के मध्य प्रकाशित किया। इसका द्वितीय संस्करण 1927 से 1933 के मध्य प्रकाशित हुआ। संशोधन एवं विस्तार पर कार्य प्रथम विश्व युद्ध के पूर्व चल रहा था, विशेषकर एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में।

इन उपविभागों के विस्तार का श्रेय नीदरलेण्ड के डॉकर ड्यूविस (Donker Duyvis) को जाता है जो उस समय यू डी सी के संपादकों में से एक थे। मूल वर्गीकरण पद्धति में इतना विस्तार किया गया कि 1934 से 1951 के मध्य प्रकाशित हुए विभाजनों की संख्या प्रथम संस्करण में मात्र 33, 000 थीं, जबकि अगले संस्करण में बढ़कर 70,000 एवं तृतीय संस्करण में 1,40,000 तक पहुँच गई।

यू डी सी पद्धति को सर्वप्रथम यूनाईटेड किंगडम, तत्पश्चात् राष्ट्र कुल देशों में उपयोग में लाने एवं लोकप्रिय बनाने का श्रेय एस. सी. ब्रैडफोर्ड (S.C. Bradford) को जाता है जो प्रलेखन के क्षेत्र में पथप्रदर्शक माने जाते हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी साहित्य को वर्गीकृत करने के लिए यू डी सी को अत्यंत संतोषजनक पाया गया। इसका श्रेय भी एस. सी. ब्रैडफोर्ड को ही जाता है। इस पद्धति को अंग्रेजी संस्करण में प्रकाशित करने की सर्वप्रथम पहल British Society for International Bibliography एवं ASLIB ने की जिन्होंने मिल कर इसके कई भाग 1939 में प्रकाशित किए। इस कार्य को बाद में British Standards Institution (BSI) ने अपने हाथ में ले लिया। तभी से यू डी सी एवं उसके भाग अब ब्रिटिश स्टैंडर्ड्स (British Standards) के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं। UDC International Medium Edition (BS 1000 M. 1985) दो भागों में प्रकाशित हुआ : भाग I : Systematic Tables (1985) तथा भाग II : Alphabetical Subject Index (1988)। इसका नवीनतम संस्करण 1993 में प्रकाशित हुआ जिसकी आख्या की ग्रन्थपरक सूचना इस प्रकार है : IME, English Text, Edition 2 (BS 1000M). Part I : Systematic Tables; and Part II : Alphabetical Subject Index. BSI, 1993.

यू डी सी के रखरखाव के लिए अंग्रेजी, फ्रेंच एवं जर्मन अधिकृत भाषाएँ हैं। पूर्वस्थापित Institute International de Bibliography 1931 में Institute International de Documentation बन गया। इसके नाम में 1937 में पुनः परिवर्तन हुआ जब यह संस्था, Federation International de Documentation (FID) बन गई जिसका मुख्यालय दी हेग, नीदरलेण्ड में है। FID ने अब अपने नाम में Information शब्द को भी जोड़ दिया है। अब इसका पूरा नाम Federation Internationale d' Information et de Documentation/International Federation for Information and Documentation है। यू डी सी के अधिकृत संशोधन प्रतिवर्ष प्रकाशित होते हैं जिन्हें **Extensions and Correction to the UDC** कहते हैं। आरम्भ में ये हर छः माह में प्रकाशित होते थे।

NOTES

4. प्रकृति एवं संरचना

जैसा कि आपको ज्ञात है कि यू डी सी का आधार डी डी सी है। यह डी डी सी के मौलिक संस्करण का सुधारा हुआ रूप है। इसमें परिलक्षित कई सुधार निम्नलिखित हैं :

NOTES

- (1) डी डी सी एवं यू डी सी दोनों ही सामान्य वर्गीकरण पद्धतियाँ हैं। यू डी सी के विषय-विशेष संस्करण भी उपलब्ध हैं जिन्हें विशेष वर्गीकरण पद्धति की श्रेणी में रखा जा सकता है।
- (2) यू डी सी पद्धति ग्रन्थपरक उपयोग के लिए उपर्युक्त है। सामान्य एवं विशेष सहायक तथा अन्य युक्तियों के द्वारा इसकी अनुकूलता में वृद्धि हुई है। यह कारण है कि यू डी सी के संपादक इसे **bibliographic classification** कहते हैं जब कि डी डी सी **library classification** के रूप में अधिक प्रचलित है।
- (3) यद्यपि यू डी सी एवं डी डी सी पद्धतियाँ मूल रूप से परिगणनात्मक वर्गीकरण की श्रेणी में आती हैं तथापि यू डी सी एक पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति है क्योंकि इसमें सामान्य विशेषता के आधार पर श्रेणियों को पहचान कर तालिकाओं में स्थान दिया गया है। ये विभाजन ही पक्ष कहलाते हैं।

दोनों पद्धतियों (डी डी सी एवं यू डी सी) में एक प्रकार से समानता है क्योंकि दोनों वर्गीकरण पद्धतियाँ पक्ष वर्गीकरण (aspect classification) हैं। इसका अर्थ है कि अनुसूचियों में विषयों को पक्ष के सन्दर्भ में विभिन्न स्थानों पर व्यवस्थित किया जाता है। केवल अनुक्रमणिका में सारे सम्बन्धित विषय एक स्थान पर वर्णानुक्रम में सज्जित हो जाते हैं जो अलग-अलग विषय पक्षों में बिखरे रहते हैं। 1961 में प्रकाशित Abridged Edition (BS I000A : 1961) की अनुक्रमणिका से लिए गए एक उदाहरण प्रस्तुत है :

Marine :

biology 57(26)

craft 629.12

denudation 551.35.054

engineering 629.12:621

insurance 368.23

products 639

etc.

उपर्युक्त उदाहरण में Marine एक अवधारणा पद (concept term) है तथा जिस सन्दर्भ में इसका उपयोग हुआ है उसमें यह पद अनुसूची में छः विभिन्न स्थानों पर रखा हुआ है। उपर्युक्त उदाहरण यह प्रदर्शित करता है कि इस अनुक्रमणिका में किस प्रकार एक विषय के सभी पक्ष एक साथ आ गए हैं।

यू डी सी में दो प्रकार की सारणियाँ हैं जिनमें सम्पूर्ण वर्गीकरण समाहित है। इन दो प्रकार की सारणियों में मुख्य सारणियाँ हैं तथा सहायक सारणियाँ हैं। मुख्य सारणियों को अनुसूचियाँ (Schedules) भी कहा जाता है जो इस वर्गीकरण के परिगणनात्मक पक्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं। सहायक सारणियाँ इस वर्गीकरण को वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक स्वरूप प्रदान करती हैं। आइए अब यू डी सी की मुख्य सारणियों का अध्ययन करें।

4. 1. मुख्य सारणियाँ

यू डी सी पद्धति भी डी डी सी के समान मानव ज्ञान को एक इकाई के रूप में मानती है जिसे 10 मुख्य वर्गों में दशमलव भिन्न द्वारा प्रदर्शित किया गया है। ये 10 मुख्य वर्ग निम्नलिखित हैं :

0. Generalities. Science and Knowledge. Organisation. Information, etc.

1. Philosophy. Psychology

2. Religion. Theology
3. Social Sciences. Economics. Law Government..., etc.
4. Vacant
5. Mathematics and natural sciences
6. Applied sciences. Medicine. Technology
7. The arts. Recreation. Entertainment. Sport
8. Language. Linguistics. Literature
9. Geography. Biography. History

NOTES

केवल सुविधा हेतु आरम्भिक दशमलव बिन्दु को हटा दिया गया है। इसलिए 0 अब केवल 0 है तथा 1 अब केवल 1 है। वर्ग 4 को 1963 से ही हटा दिया गया ताकि ज्ञान में भविष्य में होने वाले विकास के लिए स्थान बनाया जा सके। भाषा विज्ञान (वर्ग 4) का साहित्य वर्ग 8 में विलय कर दिया गया। आइए अब हम सामान्य वर्ग (Generalities) के प्रावधानों की चर्चा करें।

सामान्य वर्ग : यू डी सी में सामान्य वर्ग को 001 से 09 तक रखा गया है। सामान्य वर्ग का सम्बन्ध विज्ञान एवं ज्ञान के सामान्य पक्षों, संगठन, सूचना, प्रलेखन, पुस्तकालय व्यवसाय, संस्थाओं, प्रकाशन इत्यादि जैसे सामान्य विषयों से है जो अपने आप में स्वतंत्र विषय-विधाएँ तो नहीं हैं, लेकिन सम्पूर्ण ज्ञान के लिए प्रासंगिक हैं। यी सामान्य वर्ग निम्नलिखित हैं :

- 001 Science and Knowledge in General..., etc.
- 002 Documentation. Books. Writing. Authorship
- 003 Semiotics. Syntactics. Semantics in General. Writing. Scripts. Notations. Signs. Symbols
- 004 Vacant
- 005 Study of Organisation. Methodology. Analysis. Syntesis. Classification and Taxonomy. Theory. Principles. Systematisation in general.
- 006 Standardisation and Standards..., etc.
- 007 Activity and Organising. Information. Communication and control theory..., etc.
- 008 Civilisation. Culture. Progress
- 009 Humanities. Arts. Subjects in General.

इसी प्रकार सामान्य वर्गों का एक अन्य समूह 01 से 09 भी है :

- 01 Bibliography and Bibliographies. Catalogues
- 02 Librarianship
- 03 Encyclopaedias. General Reference Works
- 04 Collections..., Pamphlets. Lectures. Papers
- 05 Serial Publications. Periodicals
- 06 Organisations..., Associations. Congresses. Exhibitions. Museums
- 07 Newspapers. Journalism. The Press
- 08 Polygraphies. Collective Works
- 09 Manuscripts. Rare and Remarkable Works..., etc.

NOTES

सामान्य वर्गों के 01 से 09 के कुछ विभाजनों को देख कर भ्रम हो सकता है कि ये सामान्य सहायक हैं। विशेषकर 01 Bibliographies, 03 Encyclopaedias एवं 05 Serial publications। यहाँ पर यह बिन्दु ध्यान देने योग्य है कि Generalities एक स्वतंत्र वर्ग है जबकि सामान्य सहायकों का हमेशा किसी न किसी वर्ग संख्या के साथ जोड़ कर ही उपयोग किया जा सकता है तथा इनको कोष्ठक में रखा जाता है। जैसे :

03 0.1 Encyclopaedia Britannica (simple number)

02(031) Encyclopaedia of librarianship (common auxiliary)

सामान्य वर्गों के अध्ययन के पश्चात् अब हम सैद्धान्तिक वर्गों (Theoretical Classes) की ओर आते हैं।

सैद्धान्तिक वर्ग : हमने देखा है कि यू डी सी पद्धति मानव ज्ञान को दस स्थूल वर्गों 1-9 में विभाजित करती है जिन्हें सैद्धान्तिक वर्ग माना जाता है। प्रत्येक सैद्धान्तिक वर्ग को फिर से दस संकीर्ण वर्गों में विभाजित किया गया है। जैसे :

5 Mathematics and Natural Science के विभाजन को देखिए कि ये किस प्रकार विभाजित हुए हैं :

50 Generalities about the Pure Sciences

51 Mathematics

52 Astronomy. Astrophysics. Space Research Geodesy

53 Physics

54 Chemistry. Mineralogical Sciences

55 Earth Science. Geology. Mineralogy, etc.

56 Palaeontology

57 Biological Sciences in General

58 Botany

59 Zoology

चूँकि 50-59 के अंतर्गत आने वाले वर्ग 5 के तार्किक उपविभाजन है, अतः आरम्भिक अंक 5 इन सब में विद्यमान है। यू डी सी का अंकन डी डी सी अंकन के कम से कम तीन अंक सिद्धान्त से भिन्न है। प्रथम सूची में संख्या केवल एक अंक वाली 0-9 है। दूसरी सूची में 50-59 में हर संख्या में दो अंक हैं। अतः आप देख रहे हैं कि किस प्रकार संख्या में परिमाण-ह्रास तथा वृद्धि-विस्तार के साथ संख्या के अंकों में वृद्धि होती जाती है। इन उपर्युक्त दो अंकों वाली संख्याओं को आगे फिर 10 वर्गों में उपविभाजित किया जा सकता है। ऐसा हाने पर प्रत्येक वर्ग में कम से कम तीन अंक होंगे। UDC International Medium Edition के संपादकों ने इसे "वैचारिक पदानुक्रम को प्रदर्शित करने वाला संख्यात्मक पदानुक्रम" (numeric hierarchy reflecting the conceptual hierarchy) कहा है। इसका अर्थ यह है कि संख्यात्मक पदानुक्रम ही वैचारिक या अवधारणात्मक पदानुक्रम है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि संख्या की लम्बाई ही उसकी विस्तृति की मात्रा को दर्शाती है। इस प्रकार 53 Physics के विभाजन को (जिसे उपर्युक्त सूची से लिया गया है) निम्नलिखित सूची में दर्शाया गया है।

531 General Mechanics. Mechanics of Solid and Rigid Bodies

532 Fluid Mechanics in General Mechanics of Liquids

533 Mechanics of Gases. Aeromechanics. Plasma Physics

534 Vibrations. Acoustics

535 Optics

535.1 Theory of light

- .2 Propagation and energetics of radiation. Photometry
- .3 Propagation. Reflection. Refraction. Absorption. Emission.
- .4 Interference. Diffraction. Scattering by diffraction
- .5 Polarisation. Double refraction. Dispersion in anisotropic bodies
- .6 Colours and their properties, Colour theory
 - .62 Composition of colours..., etc.
 - .64 Colour systems..., etc.
 - .643 Trichromatic systems
 - .1 Physiological chromaticity systems
 - .2 Standard chromaticity systems
- 536 Heat. Thermodynamics
- 537 Electricity. Magnetism. Electromagnetism
- 538. 9 Physics of Condensed Matter
- 539 Physical Nature of Matter

NOTES

उपर्युक्त उदाहरण में हम देख रहे हैं कि किस प्रकार संख्यात्मक पदानुक्रम अवधारणात्मक पदानुक्रम को दर्शा रहा है। इसमें प्रत्येक बड़ा वर्ग दस उपवर्गों में केवल एक अंक की वृद्धि द्वारा बढ़ता चला जाता है। ठीक इसी प्रकार दस उपवर्ग फिर दस उपवर्गों में बढ़ते चले जाएँगे। साथ ही प्रत्येक स्तर पर एक अंक की बढ़ोतरी होती चली जाएगी। यह इस वर्गीकरण पद्धति के पदानुक्रमिक रूप को दर्शाता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित लघु सूची प्रस्तुत की जा रही है :

- 5 Natural Sciences
- 53 Physics
- 535 Optics
- 535.6 Colours and their properties. Colour theory
- 535.64 Colour systems..., etc.
- 535.643 Trichromatic systems
- 535.643.2 Standard chromaticity systems.

वर्ग 5 (जो कि सबसे बड़ा वर्ग है) से नीचे 535.6443.2 (सबसे छोटा वर्ग) की ओर अग्रसर होने पर हम प्रत्येक पर हम प्रत्येक स्तर पर कुल छः बार एक अंक को जोड़ते चले गए जिससे संख्यात्मक पदानुक्रम का पता चलता है। हमें Natural Sciences से Standard chromaticity Systems की ओर अग्रसर होने में अवधारणात्मक पदानुक्रम का स्पष्ट उदाहरण मिलता है जिसमें हम एक वृहत् वर्ग से संकीर्ण वर्ग की ओर बढ़े। उपर्युक्त श्रृंखला सामान्य से विशिष्ट सिद्धान्त को भी प्रदर्शित करती है जिसमें हम अधिक गहन (intension) वर्ग की ओर जा रहे हैं। प्रत्येक वर्ग के साथ एक अंक जोड़ने पर किसी विषय में दस वर्ग तथा अन्य विषयों में उससे कम उपविभाजन प्राप्त करना किसी भी विभाजन की विशेषता को प्रदर्शित करता है।

पदानुक्रम में विभाजित होने वाले प्रत्येक वर्ग को हम Superordinate वर्ग कहते हैं। इसके उपविभाजन आपस में समान वर्ग होते हैं। लेकिन ये वर्ग अपने से ऊपर के वर्गों के अधीनस्थ हैं।

यू डी सी की मुख्य सारणी इस पद्धति के परिगणनात्मक चरित्र को प्रदर्शित करती है। अब हम इसके संश्लेषणात्मक चरित्र, जो सहायक सारणियाँ में उपलब्ध है, का अध्ययन करेंगे।

NOTES

4. 2. सहायक सारणियाँ :

यू डी सी ने दो प्रकार की सहायक सारणियाँ (Auxiliaries) विकसित की हैं। एक सामान्य एवं दूसरी विशिष्ट। ये सहायक सारणियाँ इस पद्धति के नवप्रवर्तनात्मक एवं प्रभावशाली लक्षणों को प्रदर्शित करती हैं। इन्हीं की सहायता से यौगिक वर्ग संख्या निर्मित की जाती है। यौगिक वर्ग संख्या का निर्माण उन घटकों को जोड़ने से होता है जो एक से अधिक स्थान की सारणियों में संजोए हुए हैं। उदाहरण के लिए हम दो वर्ग संख्याओं को देखें जिन्हें वर्ग Generalites से लिया गया है :

030.1 Encyclopaedia Britannica

02(031) Encyclopaedia of Librarianship

030.1 एक सरल संख्या है जिसे Generalities सारणी में से लिया गया है। जबकि 02(031) एक यौगिक संख्या है। इसमें दो घटकों 02 : Librarianship एवं (031) : encyclopaedia, को दो विभिन्न सारणियों से लिया गया है। ये हैं—Generalities एवं Common Auxiliaries। दूसरी वर्ग संख्या यू डी सी के संश्लेषणात्मक चरित्र को प्रदर्शित करती है।

यू डी सी के संपादकों के शब्दों में सामान्य सहायक सारणियों द्वारा सामान्य पुनरावर्ती अभिलक्षणों (generally recurrent characteristics) का प्रतिनिधित्व होता है। इसका अर्थ है कि ये अभिलक्षण सभी विषयों के साथ सामान्य हैं या सभी विषयों में बारबार उपस्थित हो सकते हैं। विशिष्ट सहायक सारणियों द्वारा विषय-विशेष में स्थानीय स्तर पर बार-बार पुनरावर्ती अभिलक्षणों का प्रतिनिधित्व होता है। इसका अर्थ है कि इनका कुछ विशिष्ट विषयों के साथ ही उपयोग होगा। सर्वप्रथम हम सामान्य सहायकों (Common Auxiliaries) एवं तत्पश्चात् विशिष्ट सहायकों (Special Auxiliaries) के बारे में अध्ययन करेंगे।

4. 3. सामान्य सहायक

सामान्य सहायकों के लिए दो प्रकार के प्रतीकों का उपयोग किया जाता है : चिह्न एवं उपविभाजन।

चिह्न : ये चिह्न (Signs) दो संख्याओं को एक साथ लाकर उनके बीच का सम्बन्ध प्रदर्शित करते हैं। किसी विषय का यौगिक प्रदर्शित करने के लिए ऐसा किया जाता है। प्रतीक निम्नलिखित हैं—

+ प्लस (Plus) का अर्थ है एंड (ans) 622+669 Mining and Metallurgy

/स्ट्रोक (Stroke) का अर्थ है 'से' लेकर 'तक' (From...to...) (7/8) North and Central America and South America

: कोलन (Colon) का अर्थ है विलोमित सम्बन्ध (reversible relation) 17:7 Ethics in relation Art
or

7:17 Art in relation to ethics

:: डबल कोलन (Double Colon) का अर्थ है अनुत्क्रमणीय सम्बन्ध (irreversible relation) 77.044::355 War photography चूँकि यह अनुत्क्रमणीय है, इसलिए यह 355::77.044 नहीं हो सकता है।

[] वर्तुल कोष्ठक (relators) का अर्थ है उपसमूह (subgrouping) (जैसा कि बीजगणित में समझा जाता है) [622+669] (485) Mining and Metallurgy in Sweden

ये प्रतीक सम्बन्ध वाचक (relators) हैं जो UDC संख्याओं को जोड़ते हैं। वे अपने आप में कोई वर्ग संख्या नहीं हैं। अतः वे उपविभाजित भी नहीं हो सकते हैं। प्लस का प्रतीक अक्रमिक सम्बन्ध (nonconsecutive) प्रदर्शित करता है, जैसा कि उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है। 622 (Mining) तथा 669 (Metallurgy) के बीच प्लस का चिह्न दो अक्रमिक संख्याओं को प्रदर्शित करता है। उदाहरणस्वरूप (7) तथा (8) (North and Central America, and South America) इसलिए 643/645 का अर्थ 644+645 है। कोलन का प्रयोग किसी भी दो समकक्ष वर्गों (co-ordinate class) के सम्बन्ध को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है जिसे उदाहरणस्वरूप 17:7 में दिखाया गया है। यदि इस संख्या के क्रम को बदल दिया जाए तो इसके अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होगा। वर्ग कोष्ठक एक बीजगणितीय उपसमूह युक्ति है जिसका अर्थ है : वह मिश्रित विषय

जो दो या दो से अधिक मुख्य संख्याओं से मिल कर बना है जिसे प्लस अथवा कोलन चिह्न द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। इस प्रकार यह सम्पूर्ण रूप से दूसरे विषय से सम्बन्धित है जिसको कोलन अथवा सामान्य अथवा विशिष्ट सहायकों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

[622+669] (485) Mining and metallurgy in Sweden (mining and metallurgy taken as a whole and modified by a common auxiliary of place-Sweden)

[622+669] (485) : 31 Statistics of mining and metallurgy in Sweden

31 : [622+669] (485) (mining and metallurgy taken as a whole and related to another subject-statistics)

दोहरा कोलन किसी भी मिश्रित विषय के घटकों के क्रम को सुनिश्चित करत है। जैसे 77.044::355 war photography में। यहाँ 77.044 News photography है तथा 355 war है। इसको केवल News photography में ही रख सकते हैं न कि war में। अतः यह संख्या अनुत्क्रमणीय (irreversible) है।

सहायक उपविभाजन : सामान्य सहायक उपविभाजन (Common Auxiliary Sub-divisions) संख्यात्मक सारणियाँ हैं। इनकी परिगणना पदानुक्रम में की गई है। हालाँकि ये मुख्य वर्गों के समान हैं लेकिन इन्हें इनके प्रतीकों (चिह्नों) से पहचाना जाता है। इन चिह्नों को संख्या के पूर्व में लगाया जाता है अथवा इन्हें कोष्ठक में रखा जाता है। ये वे सामान्य सहायक हैं जो लगभग सभी विषयों में लग सकते हैं। अतः पद्धति में इन्हें एक स्थान पर सूचीबद्ध कर दिया गया है जिससे जहाँ भी इनका उपयोग हो, वहाँ इन्हें संलग्न किया जा सके। जिन चिह्नों के साथ इन्हें जोड़ा जाता है, उन्हें पक्ष संकेतक के रूप में माना जा सकता है। उदाहरण के लिए वर्तुल कोष्ठक (Parenthesis) में रखी संख्या स्थान पक्ष को एवं उधारण चिह्न (Quotation Marks) के बीच रखी संख्या समय पक्ष को इंगित करती हैं।

सामान्य सहायक उपविभाजनों के दो समूह हैं। एक स्वतंत्र (independent) एवं दूसरा आश्रित (dependent) सहायक सारणी। दोनों ही को किसी भी यू डी सी वर्ग संख्या के साथ संलग्न किया जा सकता है। स्वतंत्र सहायक उपविभाजनों (independent auxiliary subdivisions) का उपयोग स्वतंत्र रूप से भी किया जा सकता है जिससे किसी भी पुस्तक की पूर्ण वर्ग संख्या बनाई जा सकती है। ये स्वतंत्र सामान्य सहायक निम्नलिखित हैं।

स्वतंत्र रूप से (as independent) आश्रित रूप से (as dependent)

आश्रित सामान्य सहायक उपविभाजन निम्नलिखित हैं :

point of view 00 622 mining and .002.5 production, plant, machinery equipment. Hence, 6622.002.5 is plant machinery equipment in mining.

material-03 applicable through most of the main tables, e.g., 62-03 is materials in engineering.

persons -05 294.3 Buddhism. इसलिए 294.3-05 Buddhists की संख्या है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. पॉल ऑटलेट एवं हेनरी लॉ फोन्टेन डी डी सी के किन गुणों से प्रभावित थे?
2. पॉल ऑटलेट ने डी डी सी की मूल पद्धति में क्या-क्या नव प्रवर्तन किये?

.....

.....

.....

.....

NOTES

4.4. विशिष्ट सहायक

सामान्य सहायकों की तरह विशिष्ट सहायकों (Special Auxiliaries) को यू डी सी में एक स्थान पर नहीं दिया गया है। स्थानीय (विषय-विशेष) पुनरावर्ती अभिलक्षण (locally recurrent characteristics) के कारण इनकी विस्तारित प्रयोज्यता (extensive applicability) नहीं है। विशिष्ट सहायक एक स्थान पर सूचीबद्ध नहीं हैं अपितु वे सारणियों में विभिन्न स्थानों पर सूचीबद्ध किए गए हैं तथा उन अवधारणाओं को स्पष्ट करते हैं जिनकी उपयुक्तता (applicability) है। अधिकांशतः विशिष्ट सहायक परिगणनात्मक (enumerative) हैं। केवल एक ही संश्लेषणात्मक चिह्न वर्ण-लोप (apostrophe) (') का है। चूँकि विशिष्ट सहायक का उपयोग वहीं होगा जहाँ इसके संकेत दिए गए हैं इसलिए उसी अंकल का उपयोग कहीं और भी किया जा सकता है जिसका भिन्न अर्थ होगा। ये विशिष्ट सहायक मुख्य वर्ग संख्या के बाद संलग्न (suffix) किए जाते हैं। अतः विशिष्ट सहायकों का उपयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता।

विशिष्ट सहायकों का जहाँ कहीं भी उपयोग होना है उन निर्देशों को सारणियों में उपलब्ध कराया गया है। उदाहरण के लिए 62 Engineering में निम्नलिखित निर्देश दिए गए हैं :

विशिष्ट सहायक -1/-9 का उपयोग 62 में 62/69 के बीच कहीं भी कर सकते हैं जब तक कि ऐसा न करने के निर्देश न हों।

विशिष्ट सारणियों में तीन प्रकार के अंकों का उपयोग किया गया है जो निम्नलिखित हैं :

संयोजक श्रृंखला (The Hyphen Series) : -1/-9 का कार्य किसी भी विषय के तत्वों (elements), घटकों (components), गुणों (properties) तथा अन्य विवरणों को इंगित करना है जो मुख्य संख्या के साथ उपयोग में आते हैं। उदाहरण के लिए 62-1/-9 श्रृंखला में 62/69 Engineering and Mechanical विवरणों को दर्शाते हैं।

बिन्दु-शून्य श्रृंखला (The Poin-Nought Series) : .01/.09 पक्ष अध्ययन (aspect studies), गतिविधियों (activities), प्रक्रियाओं (process), संचालन (operations), यंत्र एवं उपस्कर (plant and equipment) को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए 3.07/8 का अर्थ प्राधिकारी एवं प्राधिकारी कर्मचारी वर्ग (authorities and personnel in authorities) है।

वर्ण-लोप श्रृंखला (The Apostrophe Series) : '1/'9 के चिह्न का कार्य जोड़ना अथवा एकत्र करना है जो उसके यौगिक विषय रूप को दर्शाते हैं। कहीं-कहीं पर इनको अनुसूची में पूर्ण रूप से सूचीबद्ध किया गया है। लेकिन कहीं-कहीं पर यू डी सी की समानांतर विभाजन (parallel division) युक्ति से भी संख्या बनाई जाती है। उदाहरण के लिए :

329.17'23'12 Nationalist-republican-Liberal Parties

(synthesis of 329. 17, 329.23 and 329.12)

विशिष्ट सहायक का उपयोग अकेले भी, अथवा अन्य सहायकों के संयोजन से भी किया जा सकता है। जैसे:

329.952 Opposition parties

320.053.52 Opposition splinter parties

यू डी सी में एक और युक्ति है जो विशिष्ट सहायक के समान है एवं डी डी सी की युक्ति "... में जोड़े" ('and to' instructions) के समान है। ऐसा अंकन हर वर्ग में एक से अधिक स्थानों पर उसी अवधारणा को दोहराता है। इसे समानांतर विभाजन (Parallel division) कहते हैं जिसे सारणियों में उपविभाजन के चिह्न = से इंगित किया जाता है। यह चिह्न इंगित करता है कि चिह्न के पूर्व में लिखे अंकन का उपविभाजन भी ठीक उसी प्रकार होगा जैसा कि इस चिह्न के पश्चात् लिखी संख्या का। इससे पंक्तिबद्ध समकक्ष वर्ग प्राप्त होंगे अंकों के अनुक्रम के अनुरूप ही विचार अभिव्यक्त होंगे। उदाहरण के लिए :

61 1.21/.26 Respiratory system = 616.21/.26 Respiratory system

Under anatomy

under pathology

611.21 Nose, sinus

616.21 Nose, sinus

.22 Larynx (voice box)

.22 Larynx (voice box)

.23 Trachea (wind pipe)

.23 Trachea (wind pipe)

.25 Lungs .24 Lungs

.25 Pleurae 25. Pleurae

.26 Diaphragm

.26 Diaphragm

यूनीवर्सल डेसिमल
क्लैसिफिकेशन (यू डी सी)

NOTES

इस उदाहरण में 616 के उपविभाजनों के आधार पर 611 का उपविभाजन किया गया है अर्थात् 616 से अंक लेकर लक्ष्य संख्या के साथ 611 के अंतर्गत जोड़ दिए गए हैं। यहाँ भी ये संख्याएँ समान विचार अभिव्यक्त करती हैं। अतः समानांतर उपविभाजन युक्ति यू डी सी की स्मृति सहायक विशेषता है।

5. अंकन

यह आप जान गए होंगे कि अंकन एक कोड है जो वर्गीकरण पद्धति में अवधारणाओं को प्रदर्शित कर उसके अनुक्रम को अभिव्यक्त करता है।

यू डी सी अंकन में निम्नलिखित चिह्न या प्रतीक समूह उपलब्ध हैं :

(i) दस हिन्द-अरबी संख्याएँ : 9, 1 से 9

(ii) रोमन वर्णमाला के दीर्घ एवं लघु अक्षर

(iii) विराम चिह्न, जैसे बिंदु, सेमीकोलन, कोलन और इवर्टेड कॉमा

(iv) गणितीय चिह्न : जोड़ एवं बराबर (+ and =)

(v) इन उपर्युक्त चिह्नों के अतिरिक्त वर्तुल-लघु कोष्ठक (parenthesis), वर्ग-दीर्घ कोष्ठक (square brackets) स्ट्रोकस एवं एपोस्ट्रॉफी का भी प्रावधान किया गया है।

उपर्युक्त चिह्नों का उपयोग यू डी सी अंकन प्रणाली में हुआ है। जैसे कि अनुभाग 12.3 प्रकृति एवं संरचना में दिखाया गया है, संख्याओं का उपयोग पूरे जगत् को 10 बड़े सैद्धांतिक वर्गों में विभाजित करने के लिए किया गया है तथा प्रत्येक वर्ग का फिर से 10 विषयों में उपविभाजन किया गया है। रोमन अक्षरों का उपयोग उन स्थानों पर किया गया है जहाँ विषय को उसके उपयोग द्वारा बेहतर ढंग से पहचाना जाता है। उदाहरण के लिए वर्ग साहित्य (iliterature)। विराम चिह्नों (punctuation marks) एवं गणितीय चिह्नों का उपयोग सहायक सारणियों में उपलब्ध आधार संख्याओं के साथ योजक चिह्न के रूप में उपयोग किया जाता है। इन संख्याओं का क्रमबोध मान (ordinal value) है न कि अंकगणितीय मान जिसका अर्थ यह है कि वे दशमलव भिन्न हैं न कि पूर्ण संख्या (integer)। इससे किसी भी वर्ग को किसी भी स्तर तक विभाजित करने की निर्बाध सुविधा रहती है। यू डी सी अंकन के अन्य गुणों का वर्णन निम्नलिखित उप-अनुभागों में किया गया है।

5.1. ग्राह्यता

दशमलव भिन्न के उपयोग से यू डी सी अंकन में उपर्युक्त स्थान पर नवोदित विषयों का समायोजन सम्भव हो सका है क्योंकि इसमें समायोजन की क्षमता है। केवल मुख्य वर्गों के साथ ही नहीं वरन् सहायक (auxiliaries) सारणियों में भी समायोजन किया जा सकता है। यू डी सी अंकन में ग्राह्यता (Hospitality) एवं क्षमता है जिससे किसी भी स्तर की गहराई तक पहुँचा जा सकता है। चूँकि यह अंकन पदानुक्रमिक (hierarchical) है एवं सामान्यता से विशिष्टता की ओर अग्रसर होता है इसलिए अंकन हर स्तर पर वर्ग के क्रम को दर्शाता है। इसे समझने के लिए निम्नलिखित उदाहरण लें :

NOTES

| | |
|-----------|---|
| 6 | Technology |
| 62 | Engineering |
| 621 | Mechanical Engineering... Electrical Engineering. Machinery |
| 621.3 | Electrical Engineering |
| 621.39 | Telecommunication. Telecontrol |
| 621.396 | Radiocommunication apparatus and methods (Radio) |
| 621.396.7 | Radio stations |

इस पदानुक्रमिक श्रृंखला में किसी भी नई अवधारणा को विद्यमान विषयों के बीच में बिना बाधा के समायोजित किया जा सकता है। परिमाण ह्रास के आधार पर यह विभाजन वर्गों के पदानुक्रम को प्रदर्शित करता है।

5.2. पक्षकरण एवं संश्लेषण

यू डी सी पद्धति के सपादक यह दावा करते हैं कि यह एक पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति है। हर पुनरावर्ती श्रेणी एक पक्ष है। सामान्य सहायक सारणियों ने पक्षकरण के उपयोग का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है। यू डी सी में पक्षों के उदाहरण क्रम में लचीलापन है जैसा कि पूर्व चर्चित उदाहरणों से स्पष्ट है (उपअनुभाग 12.3.3 में प्रस्तुत)। यह पद्धति अंतर्निवेशन (intercalation) युक्ति का भी उपयोग करती है जिसके द्वारा पक्षों के उद्धरण क्रम को भी परिवर्तित किया जा सकता है ताकि सहायक अनुक्रम को उत्पन्न किया जा सके (देखिए 12.4.3)। इस प्रकार यू डी सी एक पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति है।

यू डी सी एक उच्च स्तरीय संश्लेषणात्मक पद्धति है। साधारण तौर पर हर पक्षात्मक पद्धति की संरचना संश्लेषणात्मक होती है। पक्षात्मक चरित्र सामान्य सहायक सारणियों में भी उपलब्ध है। यू डी सी में अन्य संश्लेषणात्मक युक्तियाँ भी उपलब्ध हैं जैसे—

(1) चिह्नों का उपयोग (+, /, :, [] ::) जिससे दो या दो से अधिक संख्याओं को जोड़ा जा सके, जैसा कि उप अनुभाग 12.3.3 में स्पष्ट किया गया है।

(2) विशिष्ट सहायकों में एपोस्ट्रोफी चिह्न (') (देखें 12.3.4) का उपयोग।

(3) दो विशिष्ट सहायकों को एक संख्या में जोड़ने की सुविधा, जिसे उप-अनुभाग 12.3.4 में देखा जा सकता है।

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि यदि यू डी सी की मुख्य सारणियाँ श्रृंखलाबद्ध परिगणनात्मक चरित्र को प्रदर्शित करती हैं तो दूसरी ओर सहायक सारणियाँ इसकी पक्षात्मक एक संश्लेषणात्मक संरचना को व्यक्त करती हैं।

5.3. अंतर्निवेशन

जैसा कि आपको ज्ञात है कि यू डी सी पद्धति में पक्षों के उद्धरण क्रम में लचीलापन है। अंतर्निवेशन (Intercalation) में सहायकों (auxiliaries) का उपयोग एक मध्य प्रत्यय (infix) के रूप में किया जाता है। सामान्य तौर पर सहायकों को मुख्य वर्ग के आगे अथवा पीछे संलग्न किया जाता है। यू डी सी में इन सहायकों का उपयोग किसी भी मुख्य वर्ग के बीच प्रत्यय (infix) के रूप में किया जाता है। कभी-कभी ऐसा कना आवश्यक हो जाता है ताकि एक वैकल्पिक उपागम (approach) प्रदान किया जा सके। उदाहरण के लिए :

| | |
|--------------|---------------------------|
| 622 | Mining |
| 622(410) | Mining in Britain |
| 622.333 | Mining of coal |
| 622.333(410) | Mining of coal in Britain |

622.34 Mining of metal ores

622.34 (410) Mining of metal ores in Britain

उपर्युक्त व्यवस्थापन में Mining in Britain विषय की पुस्तकें Mining वर्ग में छितरा गई हैं जबकि आदर्श रूप से सारी पुस्तकें जो British Mining पर हैं उनको एक स्थान पर लाया जाना चाहिए। ऐसा कना सम्भव है यदि मुख्य संख्या में व्यवधान डाल कर स्थान की सहायक संख्या को मध्य-प्रत्यय के रूप में लाया जाए। जैसा कि निम्नलिखित उदाहरण में प्रस्तुत किया गया है :

622

622(410)

622(410).333

622(410).34

5.4. स्मृति सहायक

सामान्य सहायक उप विभाजन तथा समानांतर विभाजन दो मुख्य स्मृति सहायक युक्तियाँ हैं जिनका यू डी सी में उपयोग किया जाता है। इन दोनों युक्तियों का वर्णन 4.3 एवं 4.5 के उपअनुभागों में किया गया है। स्मृति सहायकों का उपयोग जहाँ कहीं भी हो, वे हर जगह एक ही विचार का प्रतिनिधित्व करते हैं।

5.5. चिह्नों का व्यवस्थापन क्रम

यू डी सी में प्रयुक्त प्रतीकों या चिह्नों का फाइल करने का क्रम सामान्य से विशिष्ट विषयों की ओर है। अतः सामान्य सहायक जो स्वतंत्र रूप से उपयोग में आते हैं उन्हें मुख्य संख्या के पूर्व में रखा जाता है। इसके पश्चात् वे यौगिक संख्याएँ रखी जाती हैं जिनमें प्लस एवं स्ट्रोक के चिह्नों या प्रतीकों का उपयोग किया गया है क्योंकि यौगिक संख्याएँ सरल संख्याओं से अधिक व्यापक अर्थ प्रदर्शित करती हैं। संख्याएँ अपनी लम्बाई के बढ़ते क्रम में फाइल की जाएँगी। यह लम्बाई विशिष्टीकरण या विशिष्टता को प्रदर्शित करती है। पदानुक्रमिक विभाजन पर आधारित होने के कारण यू डी सी अंकन का व्यवस्थापन (फाइलिंग) क्रम इंटरनेशनल मीडियम एडीशन-इंगलिश टेक्स्ट (BS 1000 M : 1985) में दिया गया है जिसे यहाँ उद्धृत किया जा रहा है।

सारणी : फाइलिंग क्रम

| | चिह्न (Symbol) | उदाहरण (Example) |
|-----------------------------------|----------------|---|
| स्वतंत्र | = | = 30 German language |
| सहायक | (0...) | (0.035.22) Microfilmed documents |
| | (1/9) | (430) Germany |
| (Inde- pendent Auxiliaries) | (=...) | (=1.410) British nationals |
| | "..." | "18" Nineteenth century |
| | + | 622.341.1+669.1 Iron-ore mining and ferrous metallurgy |
| | / | 622.341.1/2 Mining of iron ores and manganese ores |
| | simple number | 622.341.1 Iron-ore mining |
| | : | 622.341.1:338.124.4 Economic crises in iron-ore mining (may be reversed to form 338.124.4:622.341.1) |

NOTES

| | | |
|--------------|--------------------|--|
| प्रत्यय के | :: | 622.341.1::338.124.4 Economic crises in iron-ore mining (may not be reversed) |
| रूप में | = | 622.341.1=30 Documents in German about iron-ore mining |
| सहायक | (0..) | 622.341.1(0.035.22) Microfilmed documents about iron-ore mining |
| | (1/9) | 622.341.1(430) Iron-ore mining in Germany |
| (Auxiliaries | (=...) | 622.341.1(=1.366) Iron-ore mining among the ancient British |
| as suffixes) | "..." | 622.341.1"18" Iron-ore mining in the nineteenth century |
| | + | 622.341.1*Fe ₂ O ₃ Mining of red haematite (Fe ₂ O ₃) |
| | A/Z | 622.341.1GOE Named iron ores: Goethite |
| | .00 | 622.341.1.002.67 By-products of iron-ore mining |
| | -0 | 622.341.1-057.2 Manual workers in iron-ore mining |
| | -1/9 | 622.341.1-78 Protective devices and measures in iron-ore mining |
| | .0 | 622.341.1.03 Geological character of iron-ore deposits |
| | | 622.341.1'17 Waste, residues from iron-ore mining |
| | Next simple number | 622.341.11 Magnetite-haematite ores |

5.6. मूल्यांकन

यू डी सी के अंकन में ग्राह्यता एवं अभिव्यंजकता है। यह परिगणनात्मक पद्धति है जो सामान्य से विशिष्ट की ओर अग्रसर होती है जिसमें संश्लेषणात्मक युक्तियों को समाविष्ट किया गया है। अतः कभी-कभी वर्ग संख्याएँ अत्यंत लम्बी हो जाती हैं। यह पद्धति ग्रन्थात्मक एवं कम्प्यूटरीकरण के उद्देश्य से गहन वर्गीकरण का प्रयास करती है तथा विभिन्न पक्षों को जोड़ने के लिए विभिन्न चिह्नों का प्रयोग करती है। अतः इसकी वर्ग संख्याएँ निश्चित रूप में लम्बी होंगी। इसके अंकन में पूर्ण विशिष्टीकरण लाने की क्षमता है, परन्तु इससे इसमें जटिलता भी आ जाती है। सामान्य सहायक उप विभाजन एवं समानांतर विभाजन इसके अंकन को स्मृति सहायक चरित्र प्रदान करते हैं तथा अंतर्निवेशन युक्ति के उपयोग से इसके क्रम में लचीलापन आ गया है जिससे यह बहुमुखी (versatile) बन गई है।

6. वर्णानुक्रमिक विषय अनुक्रमणिका

IME की द्वितीय भाग वर्णानुक्रमिक विषय अनुक्रमणिका है जो 1988 में प्रकाशित हुई। अनुक्रमणिका की प्रविष्टियाँ अनुसूचियों में प्रयुक्त शब्दों को प्रदर्शित करती हैं। अधिकांशतः : हर शब्द के साथ विशेषक (Qualifiers) का उपयोग नहीं किया गया है जिससे यह जानकारी हो सके कि किसी शब्द का उपयोग किस सन्दर्भ में किया गया है। इस समस्या से उबरने के लिए अनुक्रमणिका की कुछ प्रविष्टियों में कुछ अनुक्रमणी पदों के साथ अनेक वर्ग संख्याएँ प्रस्तुत की गई हैं, उदाहरण के लिए 'Axes' शब्द के साथ पाँच वर्ग संख्याएँ 581.44, 621.968, 622.231, 631.342, 672.719 प्रस्तुत की गई हैं। इन के सन्दर्भ को जानने के लिए आवश्यक है कि इन संख्याओं को अनुसूचियों में देखें कि इनका उपयोग किस सन्दर्भ में किया गया है।

NOTES

अनेक बार, अनुक्रमणिका में सूचीबद्ध पदों का सन्दर्भ इंगित नहीं होता। लेकिन यह किसी भी विचार के सम्भावित स्थान निर्धारण का संकेत अवश्य प्रदान करती है। अनुक्रमणिका में प्रविष्टियों का क्रम शब्दशः है। इस अनुक्रमणिका के उपयोक्ताओं को सलाह दी जाती है कि वे किसी भी पाठ्य सामग्री का वर्गीकरण करने हेतु केवल अनुक्रमणिका पर ही निर्भर नहीं रहें, अपितु वर्ग संख्या को अनुसूचियों से भी अवश्य जाँच लें। अनुक्रमणिका से यहाँ पर एक उदाहरण प्रस्तुत किया गया है :

Lighters 629.123.15, 662.58

cigar and cigarette 662.592

electric 662.593

flint 662.592

pocket 662.59

using solar heat 662.591

7. भविष्य में विस्तार के लिए प्रावधान

जैसा कि हमने देखा है कि यू डी सी अंकन दशमलव भिन्न आधारित है एवं इसमें आवश्यकता पड़ने पर भविष्य में उभरने वाले नवीन विषयों के लिए समायोजित करने की क्षमता है। इसके अलावा यू डी सी पद्धति में रिक्त युक्ति (gap device) का भी उपयोग किया है। अंकन में रिक्त स्थान छोड़ने का मुख्य उद्देश्य नवोदित विषयों के लिए आवश्यक प्रावधान करना है ताकि भविष्य में इन उप विभाजनों में अनावश्यक रूप से फेर-बदल नहीं करना पड़े। हमें यू डी सी अंकों में निम्नलिखित रिक्त स्थान दिखाई पड़ते हैं।

142-159.8 in Philosophy and Psychology

365-367 in Social welfare

375 in Education

4 the class Philology transferred to 8 Literature

538.1-538.8 in Physics

544-545 in Chemistry

इस प्रकार यू डी सी में भविष्य में विस्तार के लिए प्रावधान रखा गया है।

8. यू डी सी का भरण-पोषण

यू डी सी के भरण-पोषण तथा इसे अद्यतन रखने की पूर्ण जिम्मेदारी International Federation for Information and Documentation (FID) की है। FID यू डी सी उपयोक्ताओं से सम्बन्धित कई राष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर कार्य करता है। FID का वर्गीकरण अनुभाग (Classification Section) इस पद्धति के Master Version के रख-रखाव के लिए जिम्मेदार है जो संशोधनों को भी समय-समय पर समाविष्ट करता रहता है। इस पद्धति का संशोधन समय-समय पर होता रहता है। उपयोक्ताओं द्वारा जो भी संशोधन सुझाव जाते हैं वे राष्ट्रीय एजेन्सियों द्वारा उपयोक्ताओं के लिए P-Notes के रूप में वितरित किए जाते हैं। यदि सुझावों को स्वीकार कर लिया गया है तो वे विस्तृत एवं संक्षिप्त भी किए जा सकते हैं अथवा हटाए भी जा सकते हैं। ये सीपी सूचनाएँ यू डी सी की वार्षिक पत्रिका Extensions and Corrections to UDC में प्रकाशित होती रहती हैं। इस पत्रिका को अद्यतन रखने के लिए पुस्तकालय उपयोक्ता की जिम्मेदारी है कि वह इस पद्धति में आवश्यक संशोधन करने हेतु सुझाव देकर इस पत्रिका को अद्यतन रखने में सहायता करे। यू डी सी पद्धति नए संशोधन के प्रस्तावों का स्वागत करती है।

9. यू डी सी पद्धति के गुण एवं दोष

NOTES

डी डी सी पद्धति में जो कमियाँ हैं वे यू डी सी में भी हैं। फिर भी यू डी सी में अधिक गुण विद्यमान हैं। आरम्भ से ही ऐसे प्रयास किए गए हैं कि यह पद्धति सार्वभौमिक आवश्यकताओं को पूरा कर सके तथा अपने चिरपरिचित उद्देश्य, जो कि सार्वभौमिक ग्रन्थ सूची का रख-रखाव करना है, को पूरा कर सके। अतः यह आवश्यक है कि हम यू डी सी के निम्नलिखित गुणों को समझें :

- चूँकि यू डी सी एक सामान्य वर्गीकरण पद्धति है, इसमें सम्पूर्ण मानव ज्ञान का समावेश है। विषयों को प्रत्येक स्तर पर दस भागों में विभाजित करने का क्रम किसी भी सीमा तक जारी रखा जा सकता है। प्रक्रिया द्वारा किसी भी विषय की गहराई तक पहुँच सकते हैं जिसके लिए यह पद्धति सामान्य एवं विशेष सहायकों की मदद लेती है। परिणामतः प्राप्त विषय विवरण नितांत सुस्पष्ट होता है।

इसके अंकन में जिन संख्याओं एवं चिह्नों का उपयोग किया गया है, वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बोधगम्य हैं। इसमें प्रयुक्त दशमलव भिन्न द्वारा अधिकतम ग्रह्यता प्राप्त की जा सकती है जिससे नए विषयों का समावेश हो सके।

यू डी सी वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति है क्योंकि यह विषयों के मुख्य पहलुओं को जोड़ने के लिए सहायकों का उपयोग करती है।

इस पद्धति में अधिकतम लचीलापन है अर्थात् स्थानीय आवश्यकताओं को सरलता से समायोजित किया जा सकता है क्योंकि इसके उदाहरण क्रम में किसी भी वर्ग कई विकल्पों (अंतर्निवेशन और विलोमित सम्बन्ध) द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है।

यह पद्धति विशिष्ट पुस्तकालयों के लिए अधिक उपयोगी है क्योंकि इसके पूर्ण संस्करण में सूक्ष्म से सूक्ष्म विषयों को वर्गीकृत करने के लिए विशिष्ट विषय अनुसूचियों का भी निर्माण किया गया है। ऐसी विशिष्ट विषय अनुसूचियाँ अलग से प्राप्त की जा सकती हैं। मीडियम संस्करण (Medium edition) के आधार पर लगभग सभी विषयों के प्रलेखों का वर्गीकरण किया जा सकता है।

इसकी अनुक्रमणिका में बड़ी सावधानी से विस्तृत शब्दावली का उपयोग किया गया है जिससे अनुक्रमणीकरण एवं पुनर्प्राप्ति (retrieval) में आसानी हो गई है। इसका उपयोग एक पर्याय-कोश की तरह भी किया जा सकता है।

यह पद्धति कम्प्यूटरीकरण के लिए उपयुक्त है।

इसके उपयोक्ता इसके संशोधन में भाग ले सकते हैं।

उपर्युक्त मुख्य विशेषताओं के साथ-साथ इस पद्धति में कई कमियाँ भी विद्यमान हैं जो निम्नलिखित हैं :

इसका अंकन बहुत लम्बा बन जाता है जिससे अंकन जटिल और बेड़गा दिखाई पड़ता है परिणामस्वरूप इसका उपयोग शैल्फों पर करना कठिन हो जाता है।

उपयोक्ताओं की भागीदारी से इसमें कई स्थानों पर असमानताएँ उत्पन्न हो गई हैं। अनुसूचियों में विलम्ब से संशोधन करने से वे पुरानी हो जाती हैं।

FID में धन की अपर्याप्तता के नवीन संस्करणों का कई भाषाओं में निरंतर संशोधन एवं प्रकाशन नहीं हो पाता है।

फिर भी उपर्युक्त कमियों की अपेक्षा यू डी सी में गुण अधिक विद्यमान हैं।

10. यू डी सी द्वारा वर्गीकरण अभ्यास

यूनीवर्सल डेसिमल
क्लैसिफिकेशन (यू डी सी)

आपको इस इकाई के अध्ययन के बाद यह जानकारी हो गई है कि यू डी सी में किस प्रकार साधारण एवं
यौगिक वर्ग संख्या बनाई जाती है। यहाँ पर कुछ जटिल वर्ग संख्याओं के उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं :

NOTES

(1) Importance of weather forecasting for agricultural in arid zones.

| | |
|---------------------|----------------------|
| Weather forecasting | 551.509 |
| Agriculture/farming | 631 |
| Arid zones | (213.52) |
| Synthesised number | 551.509:631 (213.52) |

(2) A directory of research libraries in India.

| | |
|--------------------|--------------------|
| Research libraries | 027.021 |
| Directory | (058) |
| India | (540) |
| Synthesised number | 027.021(058) (540) |

(3) Machine readable cataloguing in the USA.

| | |
|--------------------|------------------|
| Cataloguing | 025.3 |
| Machine readable | (0.034) |
| The USA | (73) |
| Synthesised number | 025.3(0.034)(73) |

(4) Canning of fruit jams in Arunachal Pradesh.

| | |
|-------------------|-----------------------------|
| Fruit Jams | 664.83.858 |
| Canning | .036.52 |
| Arunachal Pradesh | 664.83.858.036.52 (541 ARU) |

(5) Sale of milk powder in the developing countries.

| | |
|----------------------|------------------------|
| Milk powder | 637.143 |
| Sale | 658.81 |
| Developing countries | (1-773) |
| Synthesised number | 637.143:658.81 (1-773) |

(6) Production of colour television in India.

| | |
|--------------------|------------------------|
| Colour television | 621.397.132 |
| Production | .002.2 |
| India | (540) |
| Synthesised number | 621.397.132.002.2(540) |

(7) Soviet economic aid to India, an analysis and evaluation.

| | |
|----------------------|--------------------------------------|
| Law | 34 |
| International law | 341 |
| Economic aid | 341.232.3 |
| Russia | (47) |
| Economic development | 330.34 |
| India | (540) |
| Evaluation | 001.818 |
| Synthesised number | 341.232.3(47): 330.34(540): 001. 818 |

NOTES

(8) Vigyan Pragati (a popular science magazine in Hindi)

| | |
|--------------------|-----------------------|
| Science | 5 |
| Hindi | = 914.3 |
| Magazine | (0.51) |
| India | (540) |
| Synthesised number | 5 (051) (540) = 914.3 |

(9) UDC International medium edition edition-English text.

| | |
|--------------------------|--------------|
| Librarianship | 02 |
| Administrative procedure | 025 |
| Decimal Classification | 025.45 |
| UDC | 025.45 UDC |
| English text | =20 |
| Synthesised number | 025.45UDC=20 |

(10) World armament and disarmament : Facts and figures-SIPRI Year book 1986.

| | |
|---|---|
| International law | 341 |
| Peaceful settlement of international disputes | 341.6 |
| Disarmament | 341.67 |
| Armament | 623.4 |
| Yearbook | (058) |
| World | (100) |
| 1986 | "1986" |
| Synthesised number | 341.67:623.4(058)(100)"1986" or 620.4:341.67(058)(100)"1986" |

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. यू डी सी में किए गये सुधारों का उल्लेख कीजिए।
4. यू डी सी में सैद्धान्तिक वर्ग को कौन-कौन से दस संकीर्ण वर्गों में विभाजित किया गया है?

.....

.....

.....

.....

11. सार-संक्षेप

यू डी सी के संपादकों का दावा है कि यह एक वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति है। इसके अतिरिक्त विषयों के विभिन्न पक्षों के मध्य उदाहरण क्रम में लचीलापन भी है। लचीलेपन का मुख्य कारण इसके उदाहरण क्रम में अंतर्निवेशन एवं प्रतिवर्ती सम्बन्ध का प्रावधान है। यू डी सी में दो प्रकार की सारणियों का उपयोग किया जाता है : मुख्य एवं सहायक। मुख्य सारणी इसकी परिगणनात्मक विशेषता को प्रदर्शित करती है, जबकि सहायक सारणियाँ इसकी वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक विशेषता को दर्शाती हैं। यू डी सी के परिगणनात्मक पदानुक्रम के उपयोग में एवं विस्तार से पक्षकरण एवं सहायकों की सहायता से यह पद्धति सही अर्थों में एक ग्रन्थपरक वर्गीकरण पद्धति बन गई है।

इसके अंकन में ग्राह्यता, उच्च संश्लेषण एवं अभिव्यंजकता है। इसमें कई स्मृति सहायकों का उपयोग किया गया है। सही अर्थ में यू डी सी एक अंतरराष्ट्रीय प्रयास है जो सार्वभौमिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यह पद्धति सामान्य एवं विशेष संग्रह के लिए अति उपयोगी है।

यद्यपि यू डी सी का जन्म डी डी सी से हुआ है जिसमें कुछ कमियाँ हैं, फिर भी इसमें कमियों की अपेक्षा गुण अधिक हैं। आज सम्पूर्ण विश्व में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में विशेष रूचि रखने वाले पुस्तकालयों के लिए यह सर्वलोकप्रिय पद्धति बन गई है।

NOTES

13. स्व-प्रगति परीक्षण के उत्तर

1. पॉल ऑटलेट एवं हेनरी ला फोन्टेन डी डी सी के निम्नलिखित गुणों से अत्याधिक प्रभावित थे :

- (1) यह मानव जाति द्वारा अर्जित ज्ञान की वर्गीकरण पद्धति थी;
- (2) इसमें अंतरराष्ट्रीय संख्याओं का प्रयोग हुआ था; एवं
- (3) डी डी सी की दशमलव संख्या में न केवल नए विषयों का समावेश करने की क्षमता थी, वरन् यह पद्धति अंतरराष्ट्रीय ग्रन्थसूची में पूर्ण विवरण प्रदान करने के लिए भी उपयुक्त थी।

2. पॉल ऑटलेट केवल डी डी सी के मूल पाठ को फ्रेंच भाषा में रूपांतर करने से ही संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने डी डी सी के विकास में तथा इस पद्धति को पाठ्य सामग्री व्यवस्थित करने एवं पुनर्प्राप्ति का एक सर्वतोमुखी माध्यम बनाने में भी प्रशंसनीय योगदान दिया। मूल पद्धति में कई नवप्रवर्तन किए गए, जैसे :

- (1) यू डी सी एक उच्च स्तरीय संश्लेषणात्मक पद्धति के रूप में विकसित हुई।
- (2) विषयों के मध्य कई प्रकार के सम्बन्धों की पहचान की गई तथा उनको प्रदर्शित करने लिए पृथक्-पृथक् संकेत चिह्न प्रदान किए गए।
- (3) वे सामान्य अभिलक्षण अलग किए गए जो कई विषयों से सम्बन्धित थे। उनको सहायक सारणी (tables of auxiliary numbers) के रूप में रखा गया जिन्हें आवश्यकतानुसार किसी भी विषय के साथ जोड़ा जा सकता था।

3. जैसा कि आपको ज्ञात है कि यू डी सी का आधार डी डी सी है। यह डी डी सी के मौलिक संस्करण का सुधारा हुआ रूप है। इसमें परिलक्षित कई सुधार निम्नलिखित हैं :

- (1) डी डी सी एवं यू डी सी दोनों ही सामान्य वर्गीकरण पद्धतियाँ हैं। यू डी सी के विषय-विशेष संस्करण भी उपलब्ध हैं जिन्हें विशेष वर्गीकरण पद्धति की श्रेणी में रखा जा सकता है।
- (2) यू डी सी पद्धति ग्रन्थपरक उपयोग के लिए उपर्युक्त है। सामान्य एवं विशेष सहायक तथा अन्य युक्तियों के द्वारा इसकी अनुकूलता में वृद्धि हुई है। यह कारण है कि यू डी सी के संपादक इसे **bibliographic classification** कहते हैं जब कि डी डी सी **library classification** के रूप में अधिक प्रचलित है।
- (3) यद्यपि यू डी सी एवं डी डी सी पद्धतियाँ मूल रूप से परिगणनात्मक वर्गीकरण की श्रेणी में आती हैं तथापि यू डी सी एक पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति है क्योंकि इसमें सामान्य विशेषता के आधार पर श्रेणियों को पहचान कर तालिकाओं में स्थान दिया गया है। ये विभाजन ही पक्ष कहलाते हैं।

NOTES

4. **सैद्धान्तिक वर्ग** : हमने देखा है कि यू डी सी पद्धति मानव ज्ञान को दस स्थूल वर्गों 1-9 में विभाजित करती है जिन्हें सैद्धान्तिक वर्ग माना जाता है। प्रत्येक सैद्धान्तिक वर्ग को फिर से दस संकीर्ण वर्गों में विभाजित किया गया है। जैसे :

5. Mathematics and Natural Science के विभाजन को देखिए कि ये किस प्रकार विभाजित हुए हैं:

- 50 Generalities about the Pure Sciences
- 51 Mathematics
- 52 Astronomy. Astrophysics. Space Research Geodesy
- 53 Physics
- 54 Chemistry. Mineralogical Sciences
- 55 Earth Science. Geology. Mineralogy, etc.
- 56 Palaeontology
- 57 Biological Sciences in General
- 58 Botany
- 59 Zoology

13. मुख्य शब्द

अंतर्निवेशन (Intercalation) : वह युक्ति जो infix करने की सुगमता प्रदान करे जैसा कि मध्यप्रत्यय (infix) के संदर्भ में वर्णित है।

अनुक्रमणीय संबंध (Irreversible Relation) : वह संबंध जिसे पलटा नहीं जा सकता। यह संबंध किसी भी यौगिक संख्या में उलट-पुलट की अनुमति नहीं देता (प्रतिवर्ती संबंध देखें)।

अवधारणात्मक पदानुक्रम (Conceptual Hierarchy) : सजातीय अवधारणा का उपविभाजन, जिसमें अधीनस्थ अवधारणाओं को पदानुक्रम में दिया जाता है। जैसे वर्गीकरण से डेसिमल क्लैसिफिकेशन से यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन (संख्यात्मक पदानुक्रम को देखें)।

आश्रित सहायक (Dependent Auxiliary) : वे सामान्य सहायक जो केवल मुख्य वर्ग संख्या के साथ जुड़ते हैं। उदाहरणस्वरूप point of view, materials, persons इत्यादि (स्वतंत्र सहायक देखें)।

उद्धरण क्रम (Citation Order) : एक संख्या में पक्षों को उद्धरित करने का क्रम।

पर्यायकोश (Thesaurus) : किसी सूक्ष्म विषय से संबंधित पदों की संरचनात्मक सूची। यह सूची अंतरसंबंधों एवं प्राथमिकताओं को प्रदर्शित करती है। प्रत्येक पर्यायकोश संबंधित विषय की अनुक्रमणी-भाषा का निर्माण करता है। (शब्दावली नियंत्रण देखें)।

पूरक वर्गीकरण (Supplementary Classification) : पक्ष आधारित वर्गीकरण (विशेषकर डी डी सी एवं यू डी सी के परिप्रेक्ष्य में) जो विषय को पक्षों के आधार पर विभाजित करे। इसकी वर्णानुक्रमिक अनुक्रमणिका में एक ही विषय-पद के नीचे सारे संबंधित पक्ष रखे जाते हैं। इस प्रकार के परिदृश्य को पूरक वर्गीकरण कहते हैं।

NOTES

- प्रतिवर्ती संबंध (Reversible Relation)** : वह संबंध जिसे पलटा जा सकता है। वर्गीकरण में ऐसे दो तत्व जो किसी यौगिक वर्ग संख्या में उपस्थित हों एवं जिनका क्रम परिवर्तित किया जा सके तथा उनका आपसी संबंध प्रतिवर्ती हो (अनुक्रमणीय संबंध देखिए)।
- बीजगणितीय उपसमूह (Algebraic in subgrouping)** : बीजगणित में जैसा उपसमूहीकरण किया जाता है। वर्गीकरण में उपसमूह तब बनते हैं जब किसी मिश्रित संख्या में दो या उससे अधिक घटक हों, जिनको कोष्ठक में रखा जाता है जिससे एक यौगिक तत्व बन जाता है। जैसे (622+669)।
- मध्यप्रत्यय (Infix)** : उस तत्व अथवा संख्या का जिसे दो वर्ग संख्याओं के बीच स्थापित किया जाए मध्य प्रत्यय कहते हैं। उदाहरणस्वरूप 622 Mining एवं 333 coal है। इन दोनों संख्याओं को जोड़ने से 622:333 Coal Mining की संख्या बनती है। अब इनके बीच (410) को मध्य प्रत्यय के रूप में प्रस्तुत कर स्थापित किया जा सकता है। अतः संख्या 622 (410) 333 बनेगी, जिसमें (410) एक मध्य प्रत्यय है।
- विशिष्टता (Particularity)** : वर्गीकरण की वह क्षमता जिसके द्वारा अविभाज्य विशेष तक पहुँचा जा सके। ऐसी क्षमता को विशिष्टता कहते हैं जिसे पदानुक्रम परिगणना द्वारा प्राप्त किया जाता है।
- विस्तारकरण (Specificity)** : यह (Specificity) शब्द Particularity के समान है। यदि Particularity परिगणना द्वारा प्राप्त की जाती है तो संश्लेषण के माध्यम से Specificity प्राप्त की जा सकती है। यह वर्गीकरण की वह क्षमता है जो विषय के सभी तत्वों को प्रदर्शित करती है।
- शब्दावली नियंत्रण (Vocabulary Control)** : पर्यायकोश द्वारा सम्पन्न किया जाने वाला कार्य पर्यायकोश भाषा की विभिन्नता को नियंत्रित करने के लिए कई प्रकार की युक्तियों का उपयोग करता है। ऐसी भाषा को नियंत्रित शब्दावली कहते हैं। (पर्यायकोश देखें)।
- संख्यात्मक पदानुक्रम (Numeric Hierarchy)** : वह पदानुक्रम जो संख्यात्मक रूप को अभिव्यक्त करता है। उदाहरण 6, 62, 621 इत्यादि। Technology to Engineering to Mechanical Electrical Engineering (अवधारणात्मक पदानुक्रम को देखें)।
- समानांतर विभाजन (Parallel Division)** : वर्गीकरण में जब एक प्रकार की अवधारणाएँ दो स्थान अथवा दो वर्गों में उपस्थित हों, तब इस प्रकार की अवधारणाओं को एक बार सूचीबद्ध किया जाता है तथा अन्य स्थानों पर इनका केवल संदर्भ दिया जाता है, जहाँ पर इन्हें प्रदर्शित किया जाना है। इस स्थिति में दो विभाजन दो वर्गों में एक दूसरे के समानांतर होते हैं।
- सामान्य पुनरावर्ती (Generally Recurrent)** : वे लक्षण जो सभी विषयों के साथ सर्वनिष्ठ हैं, उदाहरणस्वरूप आकार (form), भाषा इत्यादि। सामान्य या सर्वनिष्ठ सहायक केवल एक ही बार सूचीबद्ध होते हैं। (स्थानीय पुनरावर्ती (Locally recurrent) को देखें)।

NOTES

स्थानीय पुनरावर्ती (Locally Recurrent)

: वे लक्षण जो किसी विषय-विशेष के साथ लागू होते हैं। उदाहरणस्वरूप उद्योग में कर्मचारी वर्ग तथा अन्य। इन्हें वहीं सूचीबद्ध किया जाता है जहाँ ये लागू होते हैं। (सामान्य पुनरावर्ती देखें)।

स्वतंत्र सहायक (Independent Auxiliary)

: यू डी सी में सर्वनिष्ठ सहायक का उपयोग एक वर्ग संख्या के समान हो सकता है। उदाहरणस्वरूप भू-क्षेत्रीय अध्ययन से संबंधित पुस्तक संग्रह का वर्ग निर्माण स्थान संख्या द्वारा किया जाता है। यहाँ पर स्थान पक्ष का उपयोग एक स्वतंत्र सहायक के रूप में हुआ है। (आश्रित सहायक भी देखें)।

14. अभ्यास प्रश्न

1. यूनिवर्सल डेसिमल क्लासीफिकेशन (यू डी सी) की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि का वर्णन कीजिए ?
2. यू डी सी प्रकृति एवं संरचना की विशेषताओं का विवेचन कीजिए ?
3. यू डी सी प्रकृति में मानव ज्ञान को किन दस मुख्य वर्गों में प्रदर्शित किया गया है ?
4. यू डी सी भी सहायक सारणियों की विवेचन कीजिए ?
5. यू डी सी पद्धति के गुण-दोषों का मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिए ?

15. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

UDC International Medium Edition-English Text (BS 1000M: 1985) Part I: Systematic Tables, 1985. Part II: Alphabetical Subject Index (1988). London: British Standards Institution.

Raju, A.A.N. (1991). UDC (IME, 1985): A Practical and Self Instructional Mantal. Madras: T.R. Publications.

कोलन क्लैसिफिकेशन (सी सी)

NOTES

अध्याय में सम्मिलित है :

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. कोलन क्लैसिफिकेशन का उद्भव
 - 3.1. प्रथम संस्करण
 - 3.2. सिद्धान्त की खोज
 - 3.3. उत्तरवर्ती संस्करण
4. कोलन क्लैसिफिकेशन के आधारभूत सिद्धान्त
 - 4.1. मूल पक्ष की अभिधारणाएँ
 - 4.2. कार्य के धरातल
 - 4.3. आवर्तन एवं स्तर
 - 4.4. क्ष अनुक्रम की अभिधारणाएँ
5. अंकन
 - 5.1. मिश्रित अंकन-संकेतक अंक
 - 5.2. रिक्त अंक
6. युक्तियाँ
 - 6.1. कालक्रम युक्ति
 - 6.2. भौगोलिक युक्ति
 - 6.3. विषय युक्ति
 - 6.4. वर्णानुक्रम युक्ति
7. दशा सम्बन्ध
8. प्रणाली एवं विशिष्ट वर्ग
9. कोलन क्लैसिफिकेशन के गुण एवं दोष
10. कोलन क्लैसिफिकेशन द्वारा वर्गीकरण अभ्यास
11. सार-संक्षेप
12. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
13. मुख्य शब्द
14. मुख्य शब्द
15. अभ्यास प्रश्न
16. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अध्ययन के उद्देश्य

इस में आपका परिचय कोलन क्लैसिफिकेशन (सी सी) (CC: Colon Classification) से कराया गया है। इस अध्याय का अध्ययन करने के पश्चात् आपको निम्नलिखित बिन्दुओं पर जानकारी प्राप्त होगी :

NOTES

- कोलन क्लैसिफिकेशन का उद्भव एवं इसकी कार्य प्रणाली;

इस पद्धति के आधारभूत सिद्धान्तों का ज्ञान; तथा

सी सी के अनुसार प्रलेखों का वर्गीकरण।

2. परिचय :

अपने अब तक डी डी सी एवं यू डी सी का विस्तृत अध्ययन कर लिया है। इस अध्याय में आपको कोलन क्लैसिफिकेशन (सी सी) के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराया जा रहा है। सी सी उपर्युक्त दो वर्गीकरण पद्धतियों से कई तरह से भिन्न है। इन दो पद्धतियों का अध्ययन आप इस खंड में पहले ही कर चुके हैं।

सी सी के प्रणेता एस. आर. रंगनाथन को इस बात की पूर्ण जानकारी थी कि वर्गीकरण पद्धतियों ऐसी होनी चाहिए जो बढ़ते हुए ज्ञान-जगत् की चुनौतियों का सामना कर सके एवं नए विषयों को पंक्तियों में बिना किसी व्यवधान के सही स्थान पर ग्राह्यता प्रदान करने में सक्षम हो। इस पद्धति के सातवें संस्करण ने इस उद्देश्य की प्राप्ति में कुछ सीमा तक सफलता प्राप्त की है।

सी सी में वर्ग संख्या निर्माण के लिए दो मुख्य नीतियाँ अपनाई गई हैं। (1) विषय विश्लेषण, एवं (2) संश्लेषण। किसी भी विषय के विश्लेषण के परिणामस्वरूप विषयों के विभिन्न पक्ष उजागर होते हैं जो उस प्रलेख में उपलब्ध जाँच मूलभूत श्रेणियों की अभिव्यक्ति होते हैं। संश्लेषण का अर्थ है विषय के सभी पक्षों को जहाँ तक सम्भव हो एक साथ रखना। संश्लेषण का दूसरा भाव यह भी है कि किसी भी मूल विषय के उन सभी पक्षों को जोड़ना जो अन्य विषयों के भी सहभागी हैं। अपनी इसी विश्लेषण एवं संश्लेषण की क्षमता के कारण ही सी सी एक वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति के रूप में जानी जाती है। सी सी को मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण (Freely Faceted classification) भी कहा जाता है। एक अपरिवर्तनीय पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति में प्रत्येक मुख्य वर्ग को एक पक्ष परिसूत्र (facet formula) प्रदान किया जाता था और वर्ग संख्या के निर्माण में केवल एक योजक चिह्न अर्थात् कोलन (Colon :) का उपयोग किया जाता था। अपरिवर्तनीय पक्षात्मक वर्गीकरण में सबसे बड़ी कमी यही थी कि केवल एक ही योजक चिह्न के उपयोग से योजक चिह्नों का घालमेल (cluttering) हो जाता था। इसका अर्थ यह है कि किसी पक्ष की अनुपस्थिति को भी कोलन चिह्न से ही प्रदर्शित करना पड़ता था। सी सी के चतुर्थ संस्करण में व्यक्तित्व, पदार्थ; ऊर्जा (Personality, Matter, Energy) के लिए भिन्न-भिन्न योजक चिह्नों का प्रावधान किए जाने से यह सम्भव हो गया कि वर्ग संख्या में केवल उन्हीं पक्षों को रखा जाए जिनकी अभिव्यक्ति प्रलेख में है। इसी सुविधा के कारण सी सी को मुक्त पक्षात्मक पद्धति कहा जाता है।

3. कोलन क्लैसिफिकेशन का उद्भव

एस. आर. रंगनाथन गणित के व्याख्याता थे। यह मात्र एक संयोग था कि वे 1924 में मद्रास विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष नियुक्त हुए। नियुक्ति के कुछ ही महीनों पश्चात् उनको ब्रिटेन भेजा गया जहाँ वे ब्रिटिश पुस्तकालयों का अवलोकन एवं प्रेक्षण कर सके। उन्होंने ब्रिटेन में लंदन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ लाइब्रेरियनशिप (School of Librarianship) की कक्षाओं में भी अध्ययन किया। बरविक सेअर्स (Berwick Sayers), जो पुस्तकालय वर्गीकरण के व्याकरणाचार्य के रूप में जाने जाते हैं, इस स्कूल में अध्यापक थे। रंगनाथन ने अपने ब्रिटेन भ्रमण के दौरान अनेक पुस्तकालयों को देखा और शीघ्र ही यह समझ लिया कि प्रचलित वर्गीकरण पद्धति में कुछ कमी है।

लंदन में एक डिपार्टमेंटल स्टोर (Departmental Store) में भ्रमण के दौरान उन्हें एक नवीन वर्गीकरण पद्धति के विकास का विचार आया। उन्होंने एक खिलौने का प्रदर्शन देखा जिसे 'मेकानो सेट' (Meccano

NOTES

set) कहा जाता है जिससे अलग-अलग प्रकार के कल-पुर्जे, छड़ी, चक्र, पेंच इत्यादि को जोड़ कर विभिन्न प्रकार के मॉडल बनाए जा सकते थे। इस प्रदर्शन को देखने के बाद उनके मस्तिष्क में यह विचार उत्पन्न हुआ कि क्यों न एक ऐसी वर्गीकरण पद्धति का निर्माण किया जाए जिससे वर्ग संख्या का निर्माण विषय के विभिन्न पक्षों (मानक इकाइयों) को जोड़कर किया जाए और मानक इकाइयों को जोड़ने के लिए योजक चिहनों का उपयोग किया जाए। रंगनाथन ने इन मानक इकाइयों की अभिकल्पना एक पट्टी (Strips) की तरह तथा योजक चिहनों की अभिकल्पना नट-बोल्स (Nut bolts) की तरह की। ये मानक इकाइयों ही अनुसूचियाँ बन गईं। इस प्रकार वर्ग संख्या के निर्माण में अनुसूचियों में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के घटकों को योजक चिहनों द्वारा जोड़ा जाता है। आरम्भ में रंगनाथन ने एक ही योजक चिहन् 'कोलन' का उपयोग किया था। इस प्रकार रंगनाथन की अवधारणा का 'कोलन क्लैसिफिकेशन' के रूप में प्रादुर्भाव हुआ।

कोलन, क्लैसिफिकेशन पद्धति की नींव ब्रिटेन में 1924 में पड़ी। सन् 1925 में जब वे भारत लौट रहे थे तब रंगनाथन इस पद्धति की विभिन्न विषयों की अनुसूचियों को तैयार करने में जुट गए। समुद्री जहाज पर उपलब्ध पुस्तकालय एवं मद्रास विश्वविद्यालय का बुक कैटलॉग (Book Catalogue) इस कार्य के लिए उपयोगी उपस्कर बने।

3.1. प्रथम संस्करण

मद्रास लौटने के बाद उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय के पुस्तकालय संग्रह का वर्गीकरण करने का कार्य आरम्भ किया। 1925 से 1932 तक का कार्यकाल उन्होंने सी सी की अनुसूचियों का निर्माण करने में लगा दिया। 1929 में इन्होंने इस विश्वविद्यालय में पुस्तकालय विज्ञान विभाग खोला। इसमें अध्यापन कार्य एवं विश्वविद्यालय पुस्तकालय में कार्य करने से जो अनुभव प्राप्त हुए उनके आधार पर इन्होंने 1933 में कोलन क्लैसिफिकेशन का प्रथम संस्करण प्रकाशित किया। इसमें तीन भिन्न भाग थे। प्रथम भाग में कुल 127 पृष्ठ थे जिसमें आध्गारभूत सिद्धान्तों (underlying principles) का वर्णन था। द्वितीय भाग अनुसूचियों के लिए था जिसमें 135 पृष्ठ थे एवं तृतीय भाग में 106 पृष्ठ अनुक्रमणिका के थे। इसमें मिश्रित अंकन का उपयोग किया गया था जिसमें 26 रोमन दीर्घ अक्षरों द्वारा मुख्य वर्गों को प्रदर्शित किया गया था। इसके अलावा हिन्द-अरबी संख्याओं एवं रोमन लघु अक्षरों का भी उपयोग किया गया था। कोलन चिह्न (:) का उपयोग मुख्य पक्षों को जोड़ने के लिए किया गया था तथा हर मुख्य वर्ग को एक पक्ष-परिसूत्र प्रदान किया गया था।

3.2. सिद्धान्तों की खोज

रंगनाथन को अपनी वर्गीकरण पद्धति की विसंगतियों की जानकारी थी। अतः वे अन्य विषय विशेषज्ञों से सलाह लेने में नहीं हिचकिचाए ताकि वे प्रत्येक विषय की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकें। साथ-साथ उन्होंने पुस्तकालय वर्गीकरण के सिद्धान्त का भी विकास किया। 1933 से 1936 के मध्य काल का उपयोग रंगनाथन ने पुस्तकालय वर्गीकरण सिद्धान्त (theory of library classification) की रचना करने में किया। इन वर्षों में ही रंगनाथन ने वर्गीकरण के उपसूत्रों (Canons of Classification) को भी सूत्रबद्ध किया। इसके परिणामस्वरूप **Prolegomena to Library Classification** का 1937 में प्रकाशन हुआ। इस सिद्धान्त के आधार पर 1939 में कोलन क्लैसिफिकेशन का द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ। प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों में कोई मुख्य परिवर्तन नहीं था। इस संस्करण में अष्टक सिद्धान्त (Octave principles) एवं स्वपक्षीय युक्ति (auto bias device) का उपयोग किया गया। एक नये मुख्य वर्ग Spiritual Experience and Mysticism की भी रचना की गई। प्रथम संस्करण में तीन भाग थे जबकि द्वितीय संस्करण में चतुर्थ भाग भी जोड़ा गया। इस अतिरिक्त भाग में 3000 उदाहरण प्रस्तुत किए गए थे जो प्रथम भाग में दिये गए नियमों के स्पष्टीकरण थे।

3.3. उत्तरवर्ती संस्करण

1945 में रंगनाथन बनारस चले गए जहाँ उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में दो वर्षों (1945-1947) तक कार्य किया। प्रशासनिक कार्यों में उलझे रहने के कारण यहाँ इनके शोध कार्य में ठहराव आया।

NOTES

दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति सर मौरिस ग्वायर (Sir Maurice Gwyer) के नियंत्रण पर रंगनाथन दिल्ली आए जहाँ उन्हें उच्च शोध करने की पूरी सुविधा प्रदान की गई। रंगनाथन ने आठ वर्षों (1947-1955) का जो समय दिल्ली विश्वविद्यालय में बिताया वह बहुत ही लाभकारी सिद्ध हुआ। यहाँ दलगत शोधकार्य (team research) सम्भव हो सका तथा उन्होंने Abgila नामक एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया जो शोध निष्कर्षों की जानकारी उपलब्ध कराने के लिए एक माध्यम बनी।

ग्यारह वर्ष अंतराल के पश्चात् 1950 में कोलन क्लैसिफिकेशन का तृतीय संस्करण प्रकाशित हुआ जिसमें विशेष मुख्य परिवर्तन नहीं किए गए। फिर भी, शब्दावली (terminology) में हुए कुछ परिवर्तन किए गए। दिल्ली प्रवास में किए गए शोध कार्य के प्रतिफल के रूप में पुस्तकालय वर्गीकरण के गत्यात्मक सिद्धान्त का प्रतिपादन हुआ। शोध की मुख्य उपलब्धि यह रही कि किसी भी विषय में अधिक पाँच संघटकों (ingredients) के विद्यमान होने की अवधारणा बनाई गई। इससे पाँच मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा का अभ्युदय हुआ जिन्हें व्यक्तित्व, पदार्थ, ऊर्जा, स्थान एवं काल (Personality, Matter, Energy, Space and Time) (PMEST) की संज्ञा दी गई है। अभिधारणा का आशय था कि ये पाँच मुख्य श्रेणियाँ PMEST अनुक्रम में सज्जित रहेंगी। प्रत्येक मूलभूत श्रेणी को एक संकेतक अंक (योजक चिह्न) प्रदान किया गया। ये संकेतक चिह्न निम्नलिखित हैं :

| मूलभूत श्रेणी | संकेतक अंक |
|--------------------------|--------------|
| व्यक्तित्व (Personality) | , (कॉमा) |
| पदार्थ (Matter) | : (सेमीकोलन) |
| ऊर्जा (Energy) | : (कोलन) |
| स्थान (Space) | . (डॉट) |
| काला (Time) | . (डॉट) |

काल के संकेतक अंक हो बाद में single inverted comma (') में परिवर्तित कर दिया गया। योजक चिह्नों का क्रमबोध मान भी सुनिश्चित किया गया। ये उपलब्धियाँ कोलन क्लैसिफिकेशन (1952) के चतुर्थ संस्करण में एवं **Prolegomena to Library Classification** (1957) में सम्मिलित की गई।

कोलन क्लैसिफिकेशन का पाँचवाँ संस्करण 1957 में प्रकाशित हुआ। पाँचवें संस्करण में कई नियमों में एवं अनुसूचियों में भी परिवर्तन किए गए। चतुर्थ संस्करण में मुख्य वर्ग के विस्तार हेतु कई ग्रीक अक्षरों का उपयोग किया गया। ऐसे कुछ क्षोभणों (irritants) को छठे संस्करण में रिक्त एवं रिक्तक अंकों (empty and emptying digits) द्वारा परिवर्तित कर दिया गया (इन अंकों का वर्णन इस इकाई के बाद में किया जाएगा)। कुछ मुख्य वर्गों में भी परिवर्तन किए गए। इसके अतिरिक्त स्थान एवं काल पक्षों के दूसरे स्तर को भी प्रस्तुत किया गया। इसी दौरान 1960 में कोलन क्लैसिफिकेशन का षष्ठम् संस्करण प्रकाशित हुआ। यह वह समय था जब रंगनाथन बंगलोर स्थानांतरित हो गए थे। यहाँ एक नई शोध संस्था, डी आर टी सी (D R T C : Documentation Research and Training Centre) की स्थापना Indian Statistical Institute के तत्वावधान में हुई जिसमें उन्हें अवैतनिक प्रोफेसर नियुक्त किया गया। डी आर टी सी में रंगनाथन को शोधकर्ताओं के दल का बहुत सहयोग मिला। इस संस्था में कई विशिष्ट वर्गीकरण अनुसूचियाँ तैयार की गई जो नवीन शोध निष्कर्षों पर आधारित थीं।

वर्ष 1963 में षष्ठम् संस्करण पुनर्मुद्रण हुआ जिसमें कुछ सुधार एवं संशोधन किए गए। इसी समय इस वर्गीकरण पद्धति के सातवें संस्करण की घोषणा कर दी गई जिसमें नवीन शोध के आधार पर पर पाये गए नये अनेक निष्कर्षों का समायोजन होना था। दुर्भाग्यवश, 1972 में रंगनाथन का देहांत होने के कारण इन कार्यों में विलम्ब हुआ। अंततः 1987 में कोलन क्लैसिफिकेशन का सातवाँ संस्करण प्रकाशित हुआ जो पिछले संस्करणों की अपेक्षा भिन्न था। यह संस्करण बिना अनुक्रमणिका के प्रकाशित हुआ।

4. कोलन क्लैसिफिकेशन के आधारभूत सिद्धान्त

सी सी में भी अन्य वर्गीकरण पद्धतियों के समान मुख्य वर्गों की शुरुआत मुख्य वर्ग समुच्चयों से हुई जिन्हें वर्ग पंक्तियों के प्रथम अनुक्रम में रखा गया है। प्रत्येक वर्ग को पक्षों में बाँटा गया है। सभी पक्ष पाँच मूलभूत श्रेणियों को अभिव्यक्त करते हैं।

आगे बढ़ने से पूर्व आवश्यक है कि उपर्युक्त अनुच्छेदों में प्रयुक्त मुख्य पदों के अर्थ को हम जानें। ये मुख्य पद हैं—1) मुख्य वर्ग, 2) पंक्तियाँ, 3) पक्ष एवं 4) मूलभूत श्रेणियाँ।

मुख्य वर्ग (Main Classes) : सी सी के मुख्य वर्ग डी डी सी की विषय-विधाओं (disciplines) एवं यू डी सी के सैद्धान्तिक विषयों के समान हैं। ये पारम्परिक विषय हैं जिनसे आप सभी परिचित हैं। जैसे गणित, भौतिकी, इतिहास, राजनीति शास्त्र इत्यादि। सी सी में मुख्य वर्गों की संख्या डी डी सी एवं यू डी सी में प्रयुक्त मुख्य वर्गों से अधिक है।

पंक्तियाँ (Arrays) : इसका शब्दकोशीय अर्थ यह है 'a systematic arrangement of numbers or symbols in an orderly manner' अर्थात् संख्याओं अथवा चिहनों की सुनियोजित ढंग से क्रम व्यवस्था करना। सी सी में भी इसका अर्थ शब्दकोशीय अर्थ के समान है। क्रम व्यवस्था का अर्थ यहाँ पर वरीय अनुक्रम से है। वर्गीकरण में संख्याओं का अर्थ किसी भी विषय के उपविभाजन से है जो किसी एकल अभिलक्षण पर आधारित है। उदाहरण के लिए Medicine विषय में मानव शरीर के 'अंग' 'अंग-पंक्ति' में समकक्ष वर्ग (class of arrays) बनेंगे।

पक्ष (Facet) : पक्ष एक अभिलक्षण है जिसके द्वारा वर्ग को विभाजित किया जाता अथवा समूह में रखा जाता है। प्रत्येक मुख्य वर्ग को फिर पक्षों में बाँटा गया है जो यह बताता है कि किस प्रकार एक विभाजन में पारस्परिक अभिलक्षणों के आधार पर पूरी वर्ग पंक्ति की एक माला बनती है। मुख्य वर्ग Literature में सर्वप्रथम भाषा पक्ष का उपयोग किया जाता है जिससे किसी भी देश के साहित्य की पहचान होती है। भाषाएँ परिगणित की गई हैं। इसी वर्ग में साहित्य रूप (कविता, नाटक, कथा साहित्य इत्यादि) इसके दूसरे पक्ष को प्रदर्शित करते हैं। यहाँ पर बताना आवश्यक है कि पक्ष के अंतर्गत प्रत्येक व्यक्तिगत सदस्य को केन्द्र (focus) कहा जाता है। उदाहरणस्वरूप साहित्य वर्ग के भाषा पक्ष में हिन्दी साहित्य केन्द्र है।

मूलभूत श्रेणियाँ (Fundamental Categories) : सी सी के मूलभूत सिद्धान्तों (basic principles) को जानने के लिए यह आवश्यक है कि हम रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित नियमों (rules) को जानें जिन्हें रंगनाथन अभिधारण (Postulates) कहते हैं। एक अभिधारणा यह बताती है कि पाँच मूलभूत श्रेणियाँ व्यक्तित्व (Personality), पदार्थ (Matter), ऊर्जा (Energy), स्थान (Space) एवं काल (Time) हैं। इन्हें संक्षेप में पी एम ई एस टी (PMEST) कहते हैं।

अभिधारणा एक ऐसी परिकल्पना या संकल्पना है जो परीक्षणीय नहीं है अर्थात् जिसकी जाँच नहीं की जाती है। यह तर्क करने का एक आधार है अतः इसकी सत्यता पर प्रश्न चिह्न लगाने का औचित्य नहीं है। रंगनाथन के अनुसार किसी विषय में अधिकतम पाँच मूलभूत श्रेणियाँ हो सकती हैं। ये श्रेणियाँ किसी विषय में पाँच से कम तो हो सकती हैं, लेकिन पाँच से अधिक नहीं। ह्रसमान मूर्तता (decreasing concreteness) के आधार पर इन्हें PMEST के क्रम में रखा जाता है।

यदि आप किसी विषय की मूलभूत श्रेणियों की पहचान कर लें तो आप किसी भी विषय का वर्गीकरण कर सकते हैं। अतः आपको पाँच मूलभूत श्रेणियों का स्पष्ट बोध होना चाहिए और यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि कौन सी श्रेणी क्या अभिव्यक्त (manifestation) करती है। अब हम इन पाँच मूलभूत श्रेणियों का अध्ययन प्रतिलोम क्रम में करेंगे।

काल एवं स्थान (Time and Space) : इन दोनों श्रेणियों का अर्थ आप जानते हैं। शताब्दी, दशक, वर्ष, माह, दिन, घंटा इत्यादि काल या समय को इंगित करते हैं। यदि किसी विषय की आख्या Economic conditions of India in the 19th century है तो इसमें आप काल तत्व को पहचान सकते हैं। कुछ विषयों

NOTES

NOTES

में इसे स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं किया जाता जैसे Economic conditions during the Reign of Akbar। पर इसमें भी काल छिपा हुआ है जिसकी पहचान की जा सकती है।

इसी प्रकार किसी विषय में स्थान तत्व की पहचान भी की जा सकती है। उपर्युक्त उदाहरण Economic conditions of India in the nineteenth century में आप स्थान पक्ष को पहचान सकते हैं। India इस विषय के स्थान पक्ष को इंगित करता है। महाद्वीप, देश, राज्य, नगर, गाँव इत्यादि सारे शब्द स्थान तत्व को अभिव्यक्त करते हैं।

ऊर्जा (Energy) : अगली मूलभूत श्रेणी ऊर्जा की है। ऊर्जा में किसी प्रकार के कार्य या क्रिया (action) का भाव पाया जाता है। मुख्य वर्ग Medicine में उपचार अथवा निदान ऊर्जा पक्ष की श्रेणी में आते हैं। यह श्रेणी क्रिया को प्रदर्शित करती है। कृषि विज्ञान में हल चलाने के कार्य (ploughing), शिक्षा विज्ञान में अध्यापन कार्य, एवं समाज शास्त्र में सहायता कार्य (relief work) ऊर्जा पक्ष की श्रेणी में आते हैं।

पदार्थ (Matter) : कालेन क्लैसिफिकेशन के सातवें संस्करण में इस मूलभूत श्रेणी में भारी परिवर्तन किया गया है। षष्ठम् संस्करण तक पदार्थ पक्ष का उपयोग केवल कुछ ही मुख्य वर्गों में किया गया था लेकिन सातवें संस्करण में यह पूर्ण रूप से विपरीत है। कई विषयों में जो विषय ऊर्जा पक्ष में रखे जाते थे वे अब पदार्थ पक्ष की श्रेणी में रखे गए हैं। इसके अतिरिक्त मूलभूत श्रेणी पदार्थ में कई अन्य परिवर्तन किए गए हैं। इन्हें पदार्थ गुण (Matter Property) (MP), पदार्थ सामग्री (Matter Material) (MMt), तथा पदार्थ विधि (Matter Method) (MM) के रूप में पहचाना जाता है।

पदार्थ गुण (Matter Property) ने मूलभूत श्रेणी ऊर्जा को लगभग प्रतिस्थापित कर दिया है। इसको समझने के लिए यह उदाहरण पर्याप्त होगा है कि मुख्य वर्ग Medicine में anatomy, physiology तथा disease पदार्थ गुण (Matter Property) को अभिव्यक्त करते हैं। ठीक इसी प्रकार Agriculture में soil, manure, propagation इत्यादि पदार्थ गुण को अभिव्यक्त करते हैं। मुख्य वर्ग Fine Arts के उपविषय Drawing में pencil drawing, ink drawing, cartoon drawing पदार्थ विधि (Matter Method) को अभिव्यक्त करते हैं। Technology में product तथा Biology में substance पदार्थ सामग्री (Matter Material) को अभिव्यक्त करते हैं।

इस प्रकार किसी भी विषय में काल, स्थान, ऊर्जा एवं पदार्थ नामक मूल भूत श्रेणियों को पहचाना इतना कठिन नहीं है।

व्यक्तित्व (Personality) : मूलभूत श्रेणी व्यक्तित्व को परिभाषित को परिभाषित करना कठिन है। रंगनाथन ने किसी भी विषय के व्यक्तित्व को पहचानने के लिए अवशेष विधि (Method of Residue) को अपनाया। अर्थात् जो पक्ष किसी अन्य श्रेणी के अंतर्गत न रखा जा सके वह व्यक्तित्व (personality) की श्रेणी में रखा जाएगा। हालाँकि गहन अनुसूचियों के निर्माण के अनुभव से यह पाया गया है कि किसी भी यौगिक विषय की मूल संकल्पना में जो आधारभूत विषय हैं उनको किस प्रकार पहचाना जा सकता है। जैसे Medicine में human body। इस प्रकार सार विचार को व्यक्तित्व (personality) पक्ष की अभिव्यक्ति माना जाता है (खण्ड 3 की इकाई 7 देखें)।

4. 1. मूल पक्ष की अभिधारणाएँ

विभिन्न मूलभूत श्रेणियों को पहचानने के बाद इन्हें मूल वर्ग के साथ PMEST क्रम में जोड़ा जाता है। मूल वर्ग का पारम्परिक अर्थ मुख्य वर्ग से है। जैसे philosophy, psychology, chemistry, literature, history इत्यादि। आरम्भ में सी सी में लगभग 30 मुख्य वर्ग थे जो बढ़कर छठे संस्करण में 47 हो गए। आप देख सकते हैं कि सातवें संस्करण में सूचीबद्ध कई मुख्य वर्ग वास्तव में मूल विषय (basic subject) नहीं हैं। उदाहरण के लिए B Mathematics के अंतर्गत सूचीबद्ध अनेक विषय इसके विस्तार जैसे प्रतीत होते हैं। इसी प्रकार properties of matter, sound, heat, electricity, magnetism जो C Physics के अंतर्गत आते हैं, इसके अनुलग्नक हैं। लेकिन वर्गीकरण कार्य में इसमें अंतर पड़ता है। C6 Electricity में 6 एक

मूलभूत श्रेणी नहीं है लेकिन यह मूल वर्ग का एक भाग है। इसलिए इस विषय के लिए अलग से पक्ष परिसूत्र दिया गया है।

कोलन क्लासिफिकेशन (सी सी)

4. 2. कार्य के धरातल

रंगनाथन के अनुसार तीन प्रकार के कार्य धरातल (Planes of Work) हैं जिनसे होकर वर्गीकरण पद्धति गुजरती है। ये तीन कार्य धरातल निम्नलिखित हैं—वैचारिक धरातल (Idea plane), शाब्दिक धरातल (Verbal plane) एवं अंकन धरातल (Notational plane)। किसी भी पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति को सर्वप्रथम ज्ञान-जगत् के विषयों की परिगणना करनी होगी तथा अंतर-सम्बन्ध को व्यक्त कर इनका अनुक्रम भी सुनिश्चित करना होगा। यह कार्य वैचारिक धरातल में किया जाता है। वैचारिक धरातल की उपलब्धियों अथवा निष्कर्षों को फिर शब्दों में अभिव्यक्त किया जाता है। यही शाब्दिक धरातल है। अंत में इन शब्दों को अंकन द्वारा रूपांतरित किया जाता है। इस अंतिम धरातल को अंकन धरातल कहते हैं। इस प्रकार कार्य के तीन धरातल हैं—वैचारिक, शाब्दिक एवं अंकन धरातल।

4. 3. आवर्तन एवं स्तर

पाँच मुख्य श्रेणियों को पहचानने के पश्चात् यह पाया गया कि इनमें से कुछ श्रेणियाँ किसी विषय में एक से अधिक बार अभिव्यक्त (manifest) होती हैं। विशेषकर व्यक्तित्व, पदार्थ एवं ऊर्जा। इस तथ्य का उपचार, आवर्तन एवं स्तर (Rounds and Levels) की अभिधारणा द्वारा किया गया। उदाहरणस्वरूप एक विषय : Treatment of brain tumour by radium therapy देखें। इसमें मूलभूत श्रेणियाँ brain [P], tumour [M], treatment [E] तथा radium therapy [E] हैं। यहाँ ऊर्जा [E] की अभिव्यक्ति दो बार हुई है। ऐसी ही पुनरावृत्ति को, जो उपर्युक्त किसी भी तीन श्रेणियों में घटित होती है, मूलभूत श्रेणियों का आवर्तन कहा जाता है। इस प्रकार के आवर्तन को निम्नलिखित प्रकार से इंगित किया जाता है—[1P1], [2P1], [1E], [1M1], [2M1]।

अब एक अन्य उदाहरण लें : King Lear by Shakespeare। इसमें सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि इसमें कौन-कौन सी मूलभूत श्रेणियाँ विद्यमान हैं। इसका मूल वर्ग literature है जिसमें language, form of literature, author तथा work एकल हैं। ये सभी एक ही मूलभूत श्रेणी, व्यक्तित्व के अंतर्गत आते हैं। इसलिए ये व्यक्तित्व (Personality) पक्ष से सम्बन्धित हैं। इस प्रकार की उपस्थिति को व्यक्तित्व का स्तर (levels of Personality) कहा जाता है और ये सभी प्रथम आवर्तन की श्रेणी में आते हैं। इसलिए ये इस प्रकार इंगित किए जाते हैं, [1P1], [1P2], [1P3], [1P4]। जिनको प्रथम आवर्तन, प्रथम स्तर; प्रथम आवर्तन, द्वितीय स्तर; प्रथम आवर्तन, तृतीय स्तर; एवं प्रथम आवर्तन, चतुर्थ स्तर के रूप में पढ़ा जाता है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. कोलन क्लासिफिकेशन में वर्ग संख्या निर्माण हेतु कौन-सी नीतियाँ अपनायी गयी हैं?
2. कोलन क्लासिफिकेशन के पाँचवें एवं छठवें संस्करणों का परिचय दीजिए।

.....
.....
.....
.....

4. 4. पक्ष अनुक्रम की अभिधारणाएँ

अब तक हमने पाँच मूलभूत श्रेणियों एवं उनके आवर्तन एवं स्तर के बारे में जानकारी प्राप्त की है। अब अगला प्रश्न यह है कि इन्हें किस अनुक्रम में व्यवस्थित करें। इसका उत्तर रंगनाथन ने पक्ष अनुक्रम की अभिधारणाओं (Postulates of Facet Sequence) से दिया है। इन्होंने पाँच अभिधारणाओं एवं उनसे सम्बन्धित सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। चूँकि इन सिद्धान्त का वर्णन खण्ड 3 में किया जा चुका है अतः केवल अभिधारणाएँ ही यहाँ पर दोहराई गई हैं।

NOTES

NOTES

(i) **प्रथम पक्ष की अभिधारणा (Postulate of first facet)** : किसी भी यौगिक विषय में, मूलभूत पक्ष प्रथम पक्ष होगा। जिसका अर्थ है कि किसी भी विषय में मूल वर्ग अवश्य होना चाहिए चाहे पुस्तक की आख्या में वह सुस्पष्ट है या नहीं। उदाहरणस्वरूप Treatment of Cancer में मूल वर्ग स्पष्ट नहीं है। लेकिन इस आख्या से यह संकेत मिलता है कि इस पुस्तक का मूल वर्ग Medicine है।

(ii) **मूर्तता की अभिधारणा (Postulate of concreteness)** : पाँच मूलभूत श्रेणियों का अनुक्रम PMEST ही होगा। जिसका अर्थ यह हुआ कि इसका क्रम ह्रस्वमान मूर्तता के आधार पर होगा। उदाहरणस्वरूप एक ऐसा विषय लीजिये, जैसे Prevention of Fungus Diseases in Oranges in Nagpur। इसमें मूल वर्ग के अतिरिक्त अन्य मूलभूत श्रेणियों का पता करना है तथा उनको फिर PMEST के अनुक्रम में व्यवस्थित करना है। उपर्युक्त आख्या का मूल वर्ग Agriculture है जो बिना किसी कठिनाई के पहचाना जा सकता है। इसमें अन्य मूलभूत श्रेणियाँ इस प्रकार हैं Orange [P], Prevention [E], Fungus Diseases [M] तथा Nagpur [S]। इनको अभिधारणा के आधार पर क्रम में रखने के लिए निम्नलिखित अनुक्रम है :

(Basic facet) [P] [M] [E] [S]

Agriculture Oranges Fungus Diseases Prevention Nagpur

(iii) **एक आवर्तन में पक्षक्रम की अभिधारणा (Postulate of facet sequence within a round)** : यौगिक विषय में यदि किसी आवर्तन में P, M एवं E उपस्थित हैं तो उन्हें P, M एवं E क्रम में व्यवस्थित करना चाहिए। उदाहरणस्वरूप Preparation of soil for growing grapes में Agriculture मूल वर्ग है जिसमें preparation ऊर्जा पक्ष, soil पदार्थ पक्ष एवं grapes व्यक्तित्व पक्ष के रूप में उपस्थित हैं। अतः अभिधारणा के आधार पर इन पक्षों का क्रम इस प्रकार होगा :

Agriculture (BF), Grapes [P], Soil [M] तथा Preparation [E]। इस प्रकार की अभिधारणा को आवर्तन में क्रम की अभिधारणा (Postulate of Facet Sequence within a Round) कहेंगे।

(iv) **अंतिम आवर्तन में पक्ष क्रम की अभिधारणा (Postulate of facet sequence within the last round)** : यदि किसी यौगिक विषय के पक्षों के अंतिम आवर्तन में, जिसमें ऊर्जा के अतिरिक्त अन्य सारी मूलभूत श्रेणियाँ अभिव्यक्त हैं, और केवल एक बार अभिव्यक्त हैं, तो पक्षों का क्रम P, M, S, T होगा। उदाहरणस्वरूप A study of the emotions of adults in 20th century USA में मूल वर्ग Psychology है तथा अन्य पक्ष, जो उपलब्ध हैं, इस प्रकार हैं—emotions (Matter), adults (Personality), 20th century (Time) तथा USA (Space)। इस उदाहरण में ऊर्जा की अभिव्यक्ति नहीं है। अतः जैसा कि इस अभिधारणा में बताया गया है, इसका अनुक्रम इस प्रकार होना चाहिए।

Psychology (BF), Adults [P], Emotions [M], USA [S], 20th century [T],

(v) **स्तर समूह की अभिधारणा (Postulate of level cluster)** : पक्ष क्रम की अंतिम अभिधारणा यह बतलाती है कि आवर्तन में एक ही मूलभूत श्रेणी के विभिन्न स्तरों को एक साथ रखा जाना चाहिए। उदाहरणस्वरूप Succession rights of minors in Hindu law में Succession, Minor तथा Hindu Law व्यक्तित्व (personality) पक्ष को अभिव्यक्त करते हैं। अतः इन्हें व्यवस्थित करने पर इनका क्रम Law (BF), Hindu Law [1P1], Minor [1P2] तथा Succession [1P3] होगा।

इस अभिधारणा को स्तर समूह की अभिधारणा (Postulates of level cluster) कहते हैं। अब तक इस इकाई में आपने जो भी अध्ययन किया है, उसे संक्षेप में इस प्रकार कहा जा सकता है :

- पक्षकरण के कारण, सी सी अन्य वर्गीकरण पद्धतियों से कौफ़ी हद तक भिन्न हैं।
- सी सी के प्रत्येक उतरवर्ती संस्करण में पूर्व संस्करणों की अपेक्षा निरंतर सुधर हुआ है।
- सी सी के प्रतिपादित मूल सिद्धान्त (basic principles) इस प्रकार हैं :

- (i) कार्य के तीन धरातल
- (ii) पाँच मूलभूत श्रेणियाँ
- (iii) आवर्तन एवं स्तर
- (iv) पक्ष अनुक्रम

NOTES

5. अंकन

रंगनाथन ने, अपने पुस्तकालय वर्गीकरण सिद्धान्त (theory of library classification) में तीन कार्य धरातलों की अवधारणा भी प्रस्तुत की है जिससे आप परिचित हैं। इनमें से अंकन धरातल में कई कठिनाइयाँ हैं। इसी क्षेत्र में सर्वाधिक शोध हुआ है एवं कई नवप्रवर्तन भी हुए हैं। आप अंकन का अर्थ; इसके कार्य एवं प्रकार के बारे में जानते हैं। अब हम सी सी के अंकन को समझने का प्रयास करेंगे।

5.1. मिश्रित अंकन-संकेतक अंक

सी सी में मिश्रित अंकन (Mixed Notation) का उपयोग हुआ है, जिसमें निम्नलिखित अंकों एवं अक्षरों का समावेश किया गया है :

- (1) इंडो-अरबी संख्याएँ 1-9
- (2) रोमन वर्णमाला—रोमन दीर्घ अक्षर एवं रोमन लघु अक्षर—A से Z एवं a से z
- (3) वर्तुल या लघु कोष्ठक ()
- (4) संकेतक अंक

निम्नलिखित सारणी में सी सी के सातवें संस्करण में उपयोग किए गए संकेतक अंकों की सूची प्रस्तुत की गई है।

| अंक/चिह्न | संकेतक अंक का नाम | संकेतक अंक की भूमिका |
|---|----------------------|----------------------------------|
| * | तारक | संकुलन एवं अंतर्निवेशन का द्योतक |
| ← | पश्चमुखी तीर | पश्च परास का द्योतक |
| " | दोहरा विपर्यस्त कोमा | सामान्य एकल का द्योतक |
| (इन उपर्युक्त संकेतक अंकों का पूर्वस्थापक मान (anteriorising value) है) | | |
| & | एंपरसेंड | दशा संबंध का द्योतक |
| ' | एकल विपर्यस्त कोमा | काल पक्ष का द्योतक |
| . | बिंदु | स्थान पक्ष का द्योतक |
| : | कोलन | ऊर्जा पक्ष का द्योतक |
| ; | सेमी कोलन | पदार्थ पक्ष का द्योतक |
| , | कोमा | व्यक्तित्व पक्ष का द्योतक |
| - | हार्डफन | स्पेसियेटर प्रकार-1 का द्योतक |
| = | सम चिह्न | स्पेसियेटर प्रकार-2 का द्योतक |
| + | जोड़ चिह्न | जोड़ने का द्योतक |
| → | अग्रमुखी तीर | अग्र परास का द्योतक |

वर्ग संख्याओं को व्यवस्थित करने के लिए; इस पद्धति में प्रयुक्त सभी प्रकार के अंकन एवं चिह्न को, मान (value) प्रदान किया गया है। आरोही अनुक्रम (ascending sequence) में ये निम्नलिखित क्रम में व्यवस्थित होंगे :

) & ' ; : , = → a से z 01 से 9 A से z

* (तारक चिह्न), + (जोड़), ' (दोहरा विपर्यस्त कोमा), तथा ← (पश्चमुखी तीर) का पूर्वस्थापक मान (anteriorising value) है।

NOTES

5. 2. रिक्त अंक

पंक्तियों की क्षमता बढ़ाने हेतु, सी सी ने रिक्त अंकों (Empty Digit) का उपयोग किया है। रिक्त अंकों का कोई अर्थगत मान (semantic value) नहीं है लेकिन इनका क्रमबोध (ordinal value) मान होता है। यहाँ पर रिक्त अंक के अर्थ को उदाहरण सहित प्रस्तुत किया जा रहा है। यदि आप इंडो-अरेबिक संख्या का उपयोग कर रहे हैं तो अधिक से अधिक केवल 9 संख्याओं (1-9) को ही उपयोग में ला सकते हैं। यदि किसी विषय को 9 से अधिक उपविषयों में विभाजित करना है जो उसमें दसवें एवं उससे अधिक समाने उपविषयों को समायोजित नहीं किया जा सकता है। अतः इस कठिनाई को दूर करने हेतु सी सी ने 1-8 तक की संख्या का उपयोग कर संख्या 9 को रिक्त अंक के रूप में खाली छोड़ दिया। इसका कोई अर्थगत मान नहीं है लेकिन जब इसका उपयोग अन्य अंकों के साथ, जैसे 91,92,93.....98,991,993.....998 के रूप में होता है तब यह संख्या अपना अर्थगत मान फिर से प्राप्त कर लेती है (देखिए इकाई 9)। इस विधि द्वारा किसी भी पक्ष में आश्चर्यजनक रूप से आवश्यकतानुसार पंक्तियों में वृद्धि की जा सकती है। ठीक इसी प्रकार इसी सिद्धान्त का उपयोग a से z तथा A से Z में भी किया जा सकता है। लघु अक्षर माला में z का रिक्त अंक के रूप में तथा T, V एवं X दीर्घ अक्षरों के रिक्त एवं रिक्तक अंक के रूप में तथा Z का रिक्त अंक के रूप में उपयोग किया जाता है। खण्ड 3 की इकाई 9 में सी सी अंकन का विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है। सी सी में संश्लेषण की सुविधा तथा ग्राह्यता में वृद्धि करने हेतु भी कई प्रकार की युक्तियों का उपयोग किया गया है। अब हम अगले अनुभागों में इन युक्तियों की चर्चा करेंगे।

6. युक्तियाँ

हमने देखा है कि समय-समय पर ज्ञान-जगत् में नए-नए विषय जन्म लेते रहते हैं। अतः उन नए विषयों को सही स्थान प्रदान करने हेतु रंगनाथन ने कई युक्तियों (Devices) का उपयोग किया है। इस प्रकार की युक्तियाँ मुख्यतः नवीन एकलों के निर्माण के लिए अथवा पंक्तियों में उपलब्ध एकलों को निखार प्रदान करने के लिए उपयोग में लाई गई हैं। इस विधि के कारण वर्गीकरण पद्धति का भौतिक आकार छोटा हो गया है।

सी सी में चार मुख्य युक्तियों का उपयोग किया गया है :

- (1) कालक्रम युक्ति (CD : Chronological Device)
- (2) भौगोलिक युक्ति (GD : Geographical Device)
- (3) विषय युक्ति (SD : Subject Device)
- (4) वर्णानुक्रम युक्ति (AD : Alphabetical Device)

अब हम प्रत्येक युक्ति का संक्षेप में वर्णन करेंगे।

6. 1. कालक्रम युक्ति

इस युक्ति का उद्देश्य पक्ष संख्या को निखार (Sharpen) प्रदान करना है। यह युक्ति या तो एकल को निखार प्रदान करेगी अथवा नए एक एकल का निर्माण करेगी। वर्ग संख्या बनाने में काल अनुसूची में उपलब्ध काल एकलों का उपयोग किया जाता है। Literature में लेखक संख्या बनाने हेतु इसी कालक्रम युक्ति का उपयोग किया जाता है। सभी लेखकों के लिए वर्ग की संख्याओं का परिगणना अव्यावहारिक है। इस युक्ति ने इस समस्या का समाधान प्रस्तुत किया है। उदाहरणस्वरूप रवीन्द्रनाथन टैगोर की वर्ग संख्या 0, 157, IM 61 बनेगी। यहाँ पर M61 का उपयोग 1861 को प्रदर्शित करने के लिए किया गया है। 1861 में रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म हुआ था। इस युक्ति का उपयोग कई विषयों के मुख्य वर्गों में जैसे पुस्तकालय विज्ञान, गणित, आयुर्विज्ञान, ललित कला, मनोविज्ञान, शिक्षा, अर्थशास्त्र इत्यादि में किया गया है। इस युक्ति का उपयोग जहाँ कहीं भी आवश्यक हो, किया जा सकता है।

6. 2. भौगोलिक युक्ति

सभी युक्तियों का उद्देश्य, जैसा कि पूर्व में बतलाया गया है, एकल संख्या को निखार प्रदान करना अथवा नई एकल संख्या का निर्माण करना है। भौगोलिक युक्ति का उपयोग स्थान अनुसूची में उपलब्ध संख्याओं से किया

जाता है। इस युक्ति का उपयोग पुस्तकालय विज्ञान, ललित कला, धर्म, भाषा विज्ञान, इतिहास एवं अन्य वर्गों में भी किया जाता है। भौगोलिक युक्ति का उपयोग करते हुए एकल निर्माण इस प्रकार किया जा सकता है :

52 = d4437 का अर्थ है Rajasthani Hindi

जिसमें 152 हिन्दी
= योजक चिह्न
d बोली का चिह्न

4437 राजस्थान को प्रदर्शित करता है जिसे स्थान एकल की अनुसूची से लिया गया है।

भौगोलिक युक्ति के उपयोग का एक अन्य उदाहरण लें :

Early Egyptian religion की वर्ग संख्या Q, 8677 है

यहाँ पर Q, 8 अन्य धर्मों को प्रदर्शित करता है।

677 संख्या Egypt को प्रदर्शित करती है जिसे स्थान एकल अनुसूची से लिया गया है।

6. 3. विषय युक्ति

विषय युक्ति का उपयोग पक्ष के निर्माण या फिर उसे निखार प्रदान करने हेतु किया जाता है। ऐसा करने के लिए अनुसूची में दी गई किसी भी अन्य वर्ग संख्या को पक्ष में जोड़ दिया जाता है। इस युक्ति का उपयोग कई मुख्य वर्गों में किया जाता है। वर्ग संख्या के इस भाग को लघु कोष्ठक में आबद्ध किया जाता है।

उदाहरणस्वरूप :

Medical College Library की वर्ग संख्या 2,J3(L) बनेगी।

इस उदाहरण में पुस्तकालय विज्ञान मूल वर्ग है। 2,J3 महाविद्यालय पुस्तकालय को प्रदर्शित करता है जिसके साथ हम (L) का उपयोग करेंगे जोकि मुख्य वर्ग Medicine से लिया गया है। इसी प्रकार एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत है।

Hindu Law Z,(Q,2)

इस वर्ग संख्या में Law को z से प्रदर्शित किया गया है तथा (Q,2) को Hindu Religion जो कि मुख्य वर्ग Z के साथ जोड़ दिया गया है।

6. 4. वर्णानुक्रम युक्ति

वर्णानुक्रम युक्ति का भी उपयोग किसी भी एकल संख्या को निखार प्रदान करने के लिए किया जा सकता है। इस युक्ति का उपयोग किसी भी वस्तु व्यक्ति, पदार्थ, इत्यादि के नाम के प्रथम एक, दो या तीन अक्षरों का उपयोग करके किया जाता है। इसका उपयोग आवश्यकतानुसार उस स्थिति में किया जाता है जब किसी अन्य युक्ति का प्रयोग सम्भव नहीं हो। निम्नलिखित उदाहरणों में इस युक्ति का उपयोग दिखाया गया है।

O,157,3M61,G **Gora**, एक उपन्यास है जो रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित है। यहाँ इस संख्या में G का उपयोग गोरा उपन्यास के लिए किया गया है।

O,157,3M61,H+W **Home and the World** उपन्यास रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित है। यहाँ पर आख्या के दो प्रारम्भिक क्षरों का उपयोग किया गया है जिन्हें जोड़ चिह्न (+) द्वारा दिया गया है : (H को Home के लिए तथा W को World के लिए)।

D93CM **Maruti Motor Car D93C** वर्ग संख्या मोटर कार को प्रदर्शित करती है जबकि M मारुति को।

J,381B **Basmati rice** इसमें J,381 का उपयोग चावल के लिए किया गया तथा B बासमती किस्म के लिए।

सी सी में अन्य कई युक्तियों का उपयोग किया गया है जिनका वर्णन खण्ड 3 की इकाई 9 में किया गया है।

NOTES

NOTES

7. दशा सम्बन्ध

आज हमें कई अंतर्विषयी विषय दिखाई देते हैं जो दो या दो से अधिक विषयों के परस्परिक सम्बन्धों के फलस्वरूप प्रकट होते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु सी सी ने एक युक्ति का उपयोग किया है जिसे दशा सम्बन्ध (phase relation) कहा जाता है। दशा सम्बन्ध दो या दो से अधिक विषयों के मध्य होता है। यह सम्बन्ध विषय के एक ही पक्ष के मध्य या एक ही पंक्ति (array) के एकलों के मध्य भी हो सकता है। इन तीन प्रकार के दशा सम्बन्धों को अंतर्विषयी दशा सम्बन्ध (Inter Subject), अंतः पक्ष दशा सम्बन्ध (Intra Facet) एवं अंतःपंक्ति दशा सम्बन्ध (Intra Array) कहा जाता है।

इनके अतिरिक्त, दशा सम्बन्ध निम्नलिखित छः प्रकार के होते हैं :

- (1) सामान्य दशा सम्बन्ध (General relation phase)
- (2) झुकाव दशा सम्बन्ध (Bias phase)
- (3) तुलनात्मक दशा सम्बन्ध (Comparison phase)
- (4) भेद दशा सम्बन्ध (Difference phase)
- (5) उपकरण दशा सम्बन्ध (Tool phase)
- (6) प्रभाव दशा सम्बन्ध (Influencing phase)

दशा सम्बन्ध द्वारा वर्ग संख्या बनाने हेतु योजक चिह्न ऐम्परसेंड (&) तथा सम्बन्ध संकेतक अंक लगाया जाता है। इसे निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है।

अंकों की अनुसूची (सी सी का सातवाँ संस्करण)

| दशा सम्बन्धों के प्रकार (Kind of phase relation) | अंतर्विषयी (Inter-subjects) | अंतःपक्षीय (Intra-facet) | अंतःपंक्ति (Intra-array) |
|---|--------------------------------|-----------------------------|-----------------------------|
| सामान्य (General) | a | j | t |
| झुकाव (Bias) | b | k | u |
| तुलना (Comparison) | c | m | v |
| भिन्न (Difference) | d | n | w |
| उपकरण (Tool) | e | p | x |
| प्रभाव (Influencing) | g | r | y |

निम्नलिखित उदाहरणों में विभिन्न प्रकार के दशा सम्बन्धों को दिखाया गया है।

- (1) A general study of special and university libraries—
Type : intra-facet, Kind: general, No. 2,J4&jK
- (2) Psychology for teachers—
Type : Intra-subject, Kind: bias, No. S&bT
- (3) Comparison of Jainism and Buddhism—
Type : intra-facet, Kind: comparison, No. Q,3&m4
- (4) Difference between undergraduate and postgraduate education—
Type : intra-array, Kind: difference, No. T, 181 &w2
- (5) Statistical analysis in library management—
Type : inter-subject, Kind: tool, No. 2:8&eBT
- (6) Influence of music on literature—
Type : inter-subject, Kind: influencing, No. O&gNR

8. प्रणाली एवं विशिष्ट वर्ग

सी सी के छठे संस्करण तक प्रणाली एवं विशिष्ट वर्गों को उस विषय से सम्बन्धित मुख्य वर्गों के साथ ही रखा जाता था लेकिन सातवें संस्करण में इन्हें मूल विषयों की अनुसूची में रखा गया है तथा इन्हें अलग से परिभाषित किया गया है।

प्रणाली-वर्ग (Systems) : ये प्रणाली-वर्ग किसी भी विषय से सम्बन्धित एक निश्चित मत या संप्रदाय को प्रस्तुत करते हैं जिनसे मुख्य वर्ग का भान होता है। ये संप्रदाय किसी समूह या व्यक्तियों के परंपरागत मत को अभिव्यक्त करने के लिए विशिष्ट दर्शन के आधार पर विकसित किए गए होते हैं। इनकी वर्ग संख्या बनाने के लिए कालक्रम युक्ति का उपयोग करना पड़ता है। इस के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

B6-M8 Hyperbolic geometry, यहाँ पर B6 वर्ग संख्या Geometry को तथा M8 1880 को प्रदर्शित करती है। यह वर्ग संख्या Geometry के एक प्रणाली-वर्ग को प्रदर्शित करती है जिसको 1880 में प्रतिपादित किया गया था।

L-B Ayurveda, आयुर्वेद एक चिकित्सा प्रणाली है। यहाँ पर L आयुर्विज्ञान को एवं B सन् 999 से 1000 ई.पू. काल को प्रदर्शित करता है, अर्थात् आयुर्विज्ञान की वह प्रणाली जिसका विकास 1000 ईसा पूर्व हुआ था।

S-N14 Individualistic psychology, यह मनोविज्ञान का एक संप्रदाय है जिसका विकास 1914 में हुआ था।

X-N1 Communism, यह वर्ग संख्या अर्थशास्त्र की एक प्रणाली, साम्यवाद के लिए है जिसका विकास 1910 में हुआ था।

विशिष्ट-वर्ग (Specials) : विशिष्ट-वर्ग मूल विषय के ऐसे विभाजन को प्रदर्शित करते हैं जिसमें विषय का अध्ययन किसी एक विशिष्ट शैली तक सीमित होता है। विशिष्ट-वर्ग के लिए वर्ग संख्या का निर्माण परिगणना के आधार पर किया जाता है। इन विशिष्ट मूल विषयों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

G-9Up - Marine biology

J-9B - Dry farming

L-9C - Child medicine

S-9XX - Industrial psychology

9. कोलन क्लैसिफिकेशन के गुण एवं दोष

सशक्त वर्गीकरण सिद्धान्त एवं अंकन की ग्राह्यता के कारण सी सी में किसी भी विषय को विशिष्ट वर्ग संख्या प्रदान करने की क्षमता है। इसमें विद्यमान सुनियोजित क्रम एवं विस्तार की मात्रा विश्लेषण एवं संश्लेषण के कारण हैं। ये इसके दो मुख्य गुण हैं। परिणामस्वरूप इस पद्धति ने निम्नलिखित दो उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया है—i) प्रत्येक वर्ग में सहायक क्रम का प्रावधान, तथा ii) किसी भी विषय का स्थान निर्धारण करने की सुविधा चाहे वह सामान्य अथवा यौगिक अथवा मिश्रित विषय ही क्यों न हो। सी सी वर्गीकरण पद्धति में अधिकृत रूप से एक प्रभावशाली कम्प्यूटर-सहायित प्रणाली बनने की पूर्ण क्षमता है जिसके आधार पर पाठ्य-सामग्री को ढूँढ़ा जा सकता है।

सी सी की प्रमुख दुर्बलता यह रही है कि इसके पीछे कोई ऐसी संस्था नहीं है जो समय-समय पर इसके संशोधन-कार्य को देख सके, जैसा कि डी डी सी एवं यू डी सी वर्गीकरण पद्धति के रख-रखाव के पीछे लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस एवं एफ आई डी जैसी संस्थाएँ कार्य कर रही हैं। सातवें संस्करण में प्रकाशित मार्गदर्शन पर्याप्त नहीं है तथा कई स्थानों पर स्पष्टता का अभाव है। अतः यह आवश्यक है कि सी सी एक मैनुअल प्रकाशित करे जिसमें भरपूर उदाहरणों द्वारा समझाया जाए कि कौन-सा नियम कहाँ लागू होगा। इसके अलावा सी सी में सरलता का भी अभाव है। सरलता का गुण सभी उपयोक्ताओं को प्रिय होता है।

NOTES

NOTES

10. कोलन क्लैसिफिकेशन द्वारा वर्गीकरण अभ्यास

सातवें संस्करण के अध्याय BB एवं BC में कुछ वर्ग संख्याएँ निर्मित की गई हैं। अतः आपको सलाह दी जाती है कि आप इन उदाहरणों को देखें। निम्नलिखित तीन उदाहरण आपके मार्ग-दर्शन हेतु प्रस्तुत किए गए हैं जिनके द्वारा आप मूल वर्ग एवं सही पक्षों को पहचाना सीखेंगे।

Transplanting rice seedlings in India in the monsoon

| | | |
|---------------|---|--------------------------|
| Agriculture | - | J(Main class BS/BF) |
| Rice | - | Plant [1P1] - 381 |
| Seedling | - | Organ [1P2] - 91 |
| Transplanting | - | Action or energy [E] - D |
| India | - | Space [S] - 44 |
| Monsoon | - | Time [T] - v |

आप प्रत्येक मूलभूत श्रेणी के योजक चिहनों को जानते हैं।

अतः वर्ग संख्या J,381,91:D,44 'v' बनेगी।

Treatment for headaches

| | | |
|-----------|---|----------------------------------|
| Medicine | - | L(BS/BF) |
| Head | - | Organ [1P1] - 18 |
| Disease | - | Property [MP] - 4 |
| Ache | - | Pain (part of the disease) = 17' |
| Treatment | - | Action [E] - 6 |

अतः इसकी वर्ग संख्या L,18;417:6 बनेगी।

William Shakespeare : Merchant of Venice

| | | |
|------------|---|---|
| Literature | - | O(BS/BF) |
| Language | - | English [1P1] - 111 (from the language schedule) |
| Form | - | Drama [1P2] - 2 |
| Author | - | Shakespeare, 1564 [1P3] - J64 (chronological devices) |
| Work | - | Merchant of Venice [1P4] - M + V (alphabetical devices) |

अतः उपर्युक्त आख्या की वर्ग संख्या O,111,2J64,M+V बनेगी। यदि आप उपर्युक्त पक्ष-परिसूत्र के आधार पर वर्ग संख्या का निर्माण करेंगे, तो आपकी वर्ग संख्या गलत नहीं बनेगी।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. मूलभूत श्रेणी ऊर्जा एवं पदार्थ में क्या प्रदर्शित किया जाता है?
4. मूल वर्ग का आशय स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

11. सार-संक्षेप

कोलन क्लैसिफिकेशन पूर्ण रूप से एक वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक एवं मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति है। यह बहुत ही संशक्त वैचारिक एवं सैद्धान्तिक आधार पर आधारित है। इन अभिधारणाओं एवं सिद्धान्तों का निरूपण करने हेतु पूर्व में पर्याप्त शोध किया गया है। इसी पाँच मूलभूत श्रेणियाँ (PMEST) सी सी के विश्लेषण को सबल आधार प्रदान करती हैं। ठीक इसी प्रकार पक्षकरण सी सी के संश्लेषण का आधार है।

पक्ष अनुक्रम के लिए सिद्धान्तों का विकास किया गया है। कालक्रम, भौगोलिक, विषय एवं वर्णानुक्रमिक युक्तियों ने इस वर्गीकरण पद्धति की क्षमता को और भी बढ़ा दिया है, जिनके द्वारा नए विषयों के वर्गीकरण में कठिनाई नहीं होती है क्योंकि इनसे विद्यमान एकलों की तीव्रता में वृद्धि होती है। अतः सी सी का अंकन ग्राह्यता की दृष्टि से समृद्ध है।

इन सभी उपर्युक्त प्रमुख विशेषताओं का इस इकाई में वर्णन किया गया है।

12. स्व-प्रगति परीक्षण के उत्तर

1. सी सी में वर्ग संख्या निर्माण के लिए दो मुख्य नीतियाँ अपनाई गई हैं। (1) विषय विश्लेषण, एवं (2) संश्लेषण। किसी भी विषय के विश्लेषण के परिणामस्वरूप विषयों के विभिन्न पक्ष उजागर होते हैं जो उस प्रलेख में उपलब्ध ज्ञान मूलभूत श्रेणियों की अभिव्यक्ति होते हैं। संश्लेषण का अर्थ है विषय के सभी पक्षों को जहाँ तक सम्भव हो एक साथ रखना। संश्लेषण का दूसरा भाव यह भी है कि किसी भी मूल विषय के उन सभी पक्षों को जोड़ना जो अन्य विषयों के भी सहभागी हैं। अपनी इसी विश्लेषण एवं संश्लेषण की क्षमता के कारण ही सी सी एक वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति के रूप में जानी जाती है। सी सी को मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण (Freely Faceted classification) भी कहा जाता है। एक अपरिवर्तनीय पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति में प्रत्येक मुख्य वर्ग को एक पक्ष परिसूत्र (facet formula) प्रदान किया जाता था और वर्ग संख्या के निर्माण में केवल एक योजक चिह्न अर्थात् कोलन (Colon :) का उपयोग किया जाता था। अपरिवर्तनीय पक्षात्मक वर्गीकरण में सबसे बड़ी कमी यही थी कि केवल एक ही योजक चिह्न के उपयोग से योजक चिह्नों का घालमेल (cluttering) हो जाता था। इसका अर्थ यह है कि किसी पक्ष की अनुपस्थिति को भी कोलन चिह्न से ही प्रदर्शित करना पड़ता था। सी सी के चतुर्थ संस्करण में व्यक्तित्व, पदार्थ, ऊर्जा (Personality, Matter, Energy) के लिए भिन्न-भिन्न योजक चिह्नों का प्रावधान किए जाने से यह सम्भव हो गया कि वर्ग संख्या में केवल उन्हीं पक्षों को रखा जाए जिनकी अभिव्यक्ति प्रलेख में है। इसी सुविधा के कारण सी सी को मुक्त पक्षात्मक पद्धति कहा जाता है।
2. कोलन क्लैसिफिकेशन का पाँचवाँ संस्करण 1957 में प्रकाशित हुआ। पाँचवें संस्करण में कई नियमों में एवं अनुसूचियों में भी परिवर्तन किए गए। चतुर्थ संस्करण में मुख्य वर्ग के विस्तार हेतु कई ग्रीक अक्षरों का उपयोग किया गया। ऐसे कुछ क्षोभणों (irritants) को छूटे संस्करण में रिक्त एवं रिक्तक अंकों (empty and emptying digits) द्वारा परिवर्तित कर दिया गया (इन अंकों का वर्णन इस इकाई के बाद में किया जाएगा)। कुछ मुख्य वर्गों में भी परिवर्तन किए गए। इसके अतिरिक्त स्थान एवं काल पक्षों के दूसरे स्तर को भी प्रस्तुत किया गया। इसी दौरान 1960 में कोलन क्लैसिफिकेशन का षष्ठम् संस्करण प्रकाशित हुआ। यह वह समय था जब रंगनाथन बंगलोर स्थानांतरित हो गए थे। यहाँ एक नई शोध संस्था, डी आर टी सी (D R T C : Documentation Research and Training Centre) की स्थापना Indian Statistical Institute के तत्वावधान में हुई जिसमें उन्हें अवैतनिक प्रोफेसर नियुक्त किया गया। डी आर टी सी में रंगनाथन को शोधकर्ताओं के दल का बहुत सहयोग मिला। इस संस्था में कई विशिष्ट वर्गीकरण अनुसूचियाँ तैयार की गईं जो नवीन शोध निष्कर्षों पर आधारित थीं।

NOTES

NOTES

3. **ऊर्जा (Energy) :** अगली मूलभूत श्रेणी ऊर्जा की है। ऊर्जा में किसी प्रकार के कार्य या क्रिया (action) का भाव पाया जाता है। मुख्य वर्ग Medicine में उपचार अथवा निदान ऊर्जा पक्ष की श्रेणी में आते हैं। यह श्रेणी क्रिया को प्रदर्शित करती है। कृषि विज्ञान में हल चलाने के कार्य (ploughing), शिक्षा विज्ञान में अध्यापन कार्य, एवं समाज शास्त्र में सहायता कार्य (relief work) ऊर्जा पक्ष की श्रेणी में आते हैं।

पदार्थ (Matter) : कालेन क्लैसिफिकेशन के सातवें संस्करण में इस मूलभूत श्रेणी में भारी परिवर्तन किया गया है। षष्ठम् संस्करण तक पदार्थ पक्ष का उपयोग केवल कुछ ही मुख्य वर्गों में किया गया था लेकिन सातवें संस्करण में यह पूर्ण रूप से विपरीत है। कई विषयों में जो विषय ऊर्जा पक्ष में रखे जाते थे वे अब पदार्थ पक्ष की श्रेणी में रखे गए हैं। इसके अतिरिक्त मूलभूत श्रेणी पदार्थ में कई अन्य परिवर्तन किए गए हैं। इन्हें पदार्थ गुण (Matter Property) (MP), पदार्थ सामग्री (Matter Material) (MMt), तथा पदार्थ विधि (Matter Method) (MM) के रूप में पहचाना जाता है।

4. विभिन्न मूलभूत श्रेणियों को पहचानने के बाद इन्हें मूल वर्ग के साथ PMEST क्रम में जोड़ा जाता है। मूल वर्ग का पारम्परिक अर्थ मुख्य वर्ग से है। जैसे philosophy, psychology, chemistry, literature, history इत्यादि। आरम्भ में सी सी में लगभग 30 मुख्य वर्ग थे जो बढ़कर छठे संस्करण में 47 हो गए। आप देख सकते हैं कि सातवें संस्करण में सूचीबद्ध कई मुख्य वर्ग वास्तव में मूल विषय (basic subject) नहीं हैं। उदाहरण के लिए B Mathematics के अंतर्गत सूचीबद्ध अनेक विषय इसके विस्तार जैसे प्रतीत होते हैं। इसी प्रकार properties of matter, sound, heat, electricity, magnetism जो C Physics के अंतर्गत आते हैं, इसके अनुलग्नक हैं। लेकिन वर्गीकरण कार्य में इसमें अंतर पड़ता है। C6 Electricity में 6 एक मूलभूत श्रेणी नहीं है लेकिन यह मूल वर्ग का एक भाग है। इसलिए इस विषय के लिए अलग से पक्ष परिसूत्र दिया गया है।

13. मुख्य शब्द

- अंतर्वेशन (Interpolation) :** किसी भी शब्द का दो शब्दों अथवा संख्याओं के मध्य में अंतर्वेशन करना। यह एक तकनीक है जिसके द्वारा नवीन विचार समायोजित किए जाते हैं।
- अर्थगत मान (Semantic Value) :** चिह्नों, संकेतकों इत्यादि के बीच का संबंध तथा वे जिस भाव का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- अनुलग्न (Adjunct) :** आनुषंगिक अथवा जिसे मूल विषय में जोड़ना अपरिहार्य नहीं हो।
- अभिधारणा (Postulate) :** जिसे तर्क-वितर्क के आधार के रूप में स्वतः स्पष्ट एवं तर्क से परे मान लिया जाए।
- अभिव्यक्ति (Manifestation) :** प्रदर्शित करना, व्यक्त करना अथवा प्रकट होना।
- अष्टक सिद्धांत (Octave Principle) :** अष्टक का अर्थ आठ से है। वह सिद्धांत जो केवल आठ तक की संख्याओं का उपयोग करता है अर्थात् विषय के विभाजन में संख्या 9 का उपयोग नहीं किया जाता है। इसके स्थान पर इसका उपयोग अष्टक अंक के रूप में अन्य पंक्तियों की संख्या दर्शाने के लिए प्रथम अंक के रूप में किया जाता है जैसे — 91, 92, 93 98, 991,

992, 993 998, 9991, 9992, 9993
9998। इस विधि द्वारा एक ही पंक्ति में उपलब्ध समकक्ष
वर्गों की अनंत संख्याएँ प्राप्त की जा सकती हैं।

NOTES

- एकल (Isolate)** : किसी मूल विषय के साथ रखा जाने वाला एक विचार।
- क्रमबोध मान (Ordinal Value)** : वह मान जो क्रमिक संख्याओं के मध्य किसी संख्या का अनुक्रम निर्धारित करे। जैसे प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय।
- पंक्ति (Array)** : किसी एकल अभिलक्षण द्वारा प्राप्त संख्याओं का ऐसा जिसमें उन संख्याओं को एक पंक्ति में रखा जा सके।
- पक्ष (Facet)** : किसी एक मूलभूत श्रेणी के आधार पर निर्धारित एकलों का समूह।
- पूर्वस्थापक मान (Anteriorising Value)** : वह मान जो मान युक्त संख्या को मान वियुक्त संख्या के पहले रखे जाने योग्य बनाता है।
- मूल पक्ष (Basic Facet)** : मुख्य वर्ग अथवा आधार वर्ग।
- रिक्त अंक (Empty Digit)** : ऐसा अंक जो किसी अर्थ को व्यंजित नहीं करता परंतु क्रमबोध मान को व्यंजित करता है (देखें क्रमबोध मान)।
- वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक (Analytico-Synthetic)** : एक ऐसी वर्गीकरण पद्धति जो विषय विश्लेषण के आधार पर विभिन्न पक्षों में विभाजित होती है। ये पक्ष अभिधारणा के आधार पर मुख्य शब्दों में व्यवस्थित किये जाते हैं। तत्पश्चात् इन्हें संख्या में परिवर्तित किया जाता है एवं इन पक्ष संख्याओं का संश्लेषण कर योजक चिहनों के उपयोग द्वारा एक वर्ग संख्या निर्मित की जाती है।
- संकेतक अंक (Indicator Digit)** : किसी पक्ष के पूर्व लगाया जाने वाला योजक चिह्न।
- स्पेसियेटर (Speciator)** : किसी अंग, गुण पदार्थ, भौगोलिक विभाजन अथवा काल विभाजन के एकलों को प्रदर्शित करने हेतु प्रयुक्त पद।

14. अभ्यास-प्रश्न

1. कोलन क्लासिफिकेशन के उद्भव एवं विकास-क्रम का वर्णन कीजिए।
2. कोलन क्लासिफिकेशन के आधारभूत सिद्धान्तों की विवेचना कीजिए।
3. कोलन क्लासिफिकेशन में प्रयुक्त युक्तियों की व्याख्या कीजिए।
4. दशा सम्बन्ध के प्रकारों का वर्णन कीजिए।
5. कोलन क्लासिफिकेशन के गुण-दोषों की समीक्षा कीजिए।

15. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Encyclopaedia of Library and Information Science. (1971). New York: Mrcel Dekker. Vol.5. pp.316-340.

Foskett, A.C. (1982). The Subject Approach to Information. 4th ed. Clive Bingley : London.

Raju, A. A. N. (1984). Decimal, Universal Decimal and Colon Classification : A Study in Comparison. Delhi: Ajanta Publications.

Ranganathan, S.R. (1987). Colon Classification, 7th ed. Edited by M.A. Gopinath.

NOTES

Bangalore: Sarada Ranganathan Endowment for library Science.

शर्मा, पाण्डेय एस. के. (1998)। सरलीकृत द्विविन्दु वर्गीकरण दिल्ली: सत्साहित्य प्रकाशन।

शर्मा, पाण्डेय एस. के. (1998)। सरलीकृत द्विविन्दु वर्गीकरण सिद्धान्त दिल्ली: ज्ञान गंगा।

कोलन क्लैसिफिकेशन के विभिन्न पाठांतर

NOTES

अध्याय में सम्मिलित है :

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. कोलन क्लैसिफिकेशन पाठांतर 1 : सिद्धान्त निरपेक्ष पाठांतर
4. कोलन क्लैसिफिकेशन पाठांतर 2 : सिद्धान्त सापेक्ष पाठांतर
 4. 1. चौथा संस्करण
 4. 2. पाँचवाँ संस्करण
 4. 3. छठा संस्करण
5. कोलन क्लैसिफिकेशन पाठांतर 3
 5. 1. सिद्धान्त से प्राप्त नवीन परिणाम
6. सी सी के सातवें संस्करण में किए गए परिवर्तन
7. सार-संक्षेप
8. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों
9. अभ्यास-प्रश्न
10. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

NOTES

1. अध्याय के उद्देश्य

यह अध्याय कोलन क्लैसिफिकेशन के अभिकल्प एवं विकास की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करती है।

इस अध्याय के अध्ययन के बाद आप :

- जिस सिद्धान्त के मार्गदर्शन में कोलन क्लैसिफिकेशन का विकास एक अपरिवर्तनीय पक्षात्मक वर्गीकरण से मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति की ओर अग्रसर हुआ है, उसे पूर्णतया समझ पाएँगे; सी सी के तीन पाठांतरों की विशेषताओं से परिचित होंगे; तथा सी सी के सातवें संस्करण में किए गए परिवर्तनों की जानकारी प्राप्त करेंगे।

2. परिचय

जीवन के किसी भी क्षेत्र में पहले व्यवहार प्रचलित होता है और सिद्धान्त उसके बाद निर्मित होते हैं। ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के प्रतिपादन के पश्चात् के पिछले पचास वर्षों में रिचर्डसन (Richardson) एवं सेयर्स (Sayers) ने उस काल की प्रचलित वर्गीकरण पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन कर वर्गीकरण के सिद्धान्त (Theory of Classification) का प्रतिपादन किया जो पूर्णतः एक विवरणात्मक निरूपण (descriptive formulation) एवं निर्वचनात्मक व्याख्या (interpretative explanation) पद आधारित था। यह स्थिर सिद्धान्त था न गत्यात्मक। 1949 के बाद रंगनाथन ने वर्गीकरण के गत्यात्मक सिद्धान्त (Dynamic Theory of Classification) का निरूपण किया जिससे कोलन क्लैसिफिकेशन के द्वितीय पाठांतर (चतुर्थ संस्करण 1952) से लेकर छठे संस्करण के परिशिष्ट के साथ (1963) पुनर्मुद्रण तक एवं उतरवर्ती कोलन क्लैसिफिकेशन के तृतीय पाठांतर (सातवाँ संस्करण, 1998) का पूरा विकास सम्भव हुआ। सी सी के द्वितीय पाठांतर को रंगनाथन ने लगभग मुक्त पक्षात्मक पद्धति माना है क्योंकि इसमें रंगनाथन अपरिवर्तनीय पक्षात्मक रूप को समाप्त किया जो सी सी के पाठांतर (प्रथम से तृतीय संस्करण) में विद्यमान था। अलग-अलग मूलभूत श्रेणियों के लिए अलग-अलग संकेतक चिह्नों का प्रावधान कर यह सम्भव हुआ। साथ ही आवर्तन एवं स्तर में कठोरता एवं अपरिवर्तनीयता, जो पक्षों के अनुक्रम में विद्यमान थी, को तोड़ना सम्भव हुआ। यौगिक विषयों के पक्षों के मध्य अनुक्रम की अपरिवर्तनीयता को आवर्तन एवं स्तर के उपयोग से समाप्त किया जा सका। फिर भी कुछ अपरिवर्तनीयता पक्षों के स्तर में आवर्तन के भीतर छिपी रह गई है। इसी कारण तब तक यह पद्धति पूर्ण रूप से मुक्त पक्षात्मक पद्धति नहीं बन पाई।

यहाँ पर यह बताना आवश्यक है कि कोलन क्लैसिफिकेशन के सभी संस्करण वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक प्रकृति के हैं। "वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति" शब्द सामान्य शब्द है जिसका अर्थ यह है, वह पद्धति जो पहले यौगिक विषयों के पक्षों का विश्लेषण करती है (विशेष कर वैचारिक धरातल पर;) तत्पश्चात् शाब्दिक एवं अंकन धरातल पर उनका संश्लेषण करती है। अतः सभी पक्षात्मक पद्धतियाँ वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक होती हैं।

3. कोलन क्लैसिफिकेशन पाठांतर 1 : सिद्धान्त निरपेक्ष पाठांतर

ज्ञान जगत् की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कोलन क्लैसिफिकेशन के प्रथम पाठांतर की अभिकल्पना 1924 में की गई थी। इसका प्रथम संस्करण 1933 प्रकाशित हुआ। उस समय तक ज्ञान जगत् में नए विषयों की संख्या में प्रचुर वृद्धि होने लगी थी। 1924 तक इस प्रचुर वृद्धि ने पर्याप्त मात्रा में साहित्य समादेश (literary warrant) को आकर्षित किया।

इन उपर्युक्त कारणों से यौगिक विषयों के परिगणन का परित्याग करना पड़ा। इसी कारण कोलन क्लैसिफिकेशन ने मूल विषयों एवं विभिन्न सामान्य एकलों—कालक्रम, स्थान, भाषा एवं पूर्वस्थापक सामान्य एकलों की लघु अनुसूचियाँ ही प्रस्तुत कीं। इसके अतिरिक्त कुछ लघु अनुसूचियाँ विशिष्ट एकलों की बनाई गईं जिनका उपयोग मूल वर्गों के मूल विषयों में किया जाता है। वर्गीकरणकार को प्रत्येक मूल विषय की मूल वर्ग संख्या का निर्माण निर्धारित नियमों के अनुसार ही करना होता था। केवल मूल वर्गों को ही वर्ग संख्याएँ प्रदान की गईं

न कि यौगिक विषयों को। यह प्रक्रिया अन्य प्रचलित पद्धतियों की प्रचलित विधि से पूर्णतया भिन्न थी। इसी विशेषता ने हेनरी ऐवलिन् ब्लिस (Henry Evelyn Bliss) को यह कहने पर विवश कर दिया कि कोलन क्लैसिफिकेशन एक संश्लेषणात्मक पद्धति है। अंकन धरातल में कोलन क्लैसिफिकेशन के प्रथम पाठान्तर में कोलन अंक का उपयोग सभी प्रकार के एकल पक्षों को प्रदर्शित करने के लिए किया गया था।

कोलन क्लैसिफिकेशन पाठान्तर 1 की अभिकल्पना किसी सूत्रबद्ध वर्गीकरण सिद्धान्त पर आधारित नहीं थी हालाँकि अवचेतन स्तर पर सैद्धान्तिक पक्ष ने अवश्य ही इसका मार्ग-निर्देशन किया होगा।

कोलन क्लैसिफिकेशन पाठान्तर 1 (प्रथम से तृतीय संस्करण तक) ने कई वर्षों तक, अर्थात् 1950 तक संतोषजनक कार्य किया। उस समय तक यह अनुभव किया जाने लगा कि किसी वर्गीकरण सिद्धान्त पर आधारित हुए बिना कोई भी पदार्थ वर्गीकरण पद्धति ज्ञान जगत् में हुए परिवर्तनों का सामना नहीं कर सकती। अतः यह विचार उत्पन्न हुआ कि एक वर्गीकरण पद्धति को गत्यात्मक सिद्धान्त पर आधारित होना चाहिए। यदि ज्ञान जगत् में हो रहे परिवर्तनों एवं नए विषयों की निरंतर प्रचुर वृद्धि के साथ चलना है तो सिद्धान्त का गत्यात्मक होना अति आवश्यक है।

4. कोलन क्लैसिफिकेशन पाठान्तर 2 : सिद्धान्त सापेक्ष पाठान्तर

गत्यात्मक सिद्धान्त (Dynamic Theory) का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि इसने सी सी के द्वितीय पाठान्तर का मार्गदर्शन कर वर्गीकरण कार्य को वैचारिक, शाब्दिक एवं अंकन धरातलों में बाँटने के लिए किया। इसके पूर्व में अंकन धरातल की अक्षमता ने वैचारिक धरातल के कार्य को रोक दिया था।

अंकन धरातल भी उतना परिष्कृत नहीं था। दूसरी ओर इसका परिष्कार करने के प्रति अनिच्छा भी थी। यहाँ तक इस समस्या की ओर ध्यान देने का भी विरोध किया गया। शाब्दिक धरातल में लोक प्रचलित शब्दों एवं समाना और पर्यायवाची शब्दों के उपयोग ने वैचारिक धरातल में अव्यवस्था पैदा कर दी थी।

तीनों धरातलों में कार्य को अलग-अलग करने से वैचारिक धरातल के कार्य को सर्वोच्चता प्रदान कर दी गई एवं इस कार्य को अपने तरीके से आगे बढ़ने देने की आवश्यकता पर बल दिया गया। इसमें अंकन धरातल की बहुमुखी प्रतिभा को निरंतर बढ़ाने पर भी बल दिया गया ताकि यह वैचारिक धरातल के प्रत्येक निष्कर्ष को कार्यान्वित करने में सक्षम बने।

प्रत्येक विषय के लिए समाना एवं पर्यायवाची शब्दों से मुक्त तकनीकी शब्दावली का विकास करने की आवश्यकता का अनुभव किया गया। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि एक ही मुख्य शब्द का विभिन्न विषयों में उपयोग विभिन्न अर्थों में हो रहा है, यद्यपि अच्छा तो यही रहेगा कि ऐसे समानाओं को हटाया जाए।

अंकन धरातल की बहुमुखी प्रतिभा में परिष्कार का कार्य पूर्णतया पुस्तकालय व्यवसाय की परिधि में आता है। लेकिन शाब्दिक धरातल में सुधार कार्य के लिए विषय विशेषज्ञों एवं भाषाविदों के सहयोग की आवश्यकता है। हालाँकि इस क्षेत्र में कार्य की गति मंद होगी लेकिन संतोषजनक परिणाम प्राप्त तक संदर्भ उपसूत्र एवं परिगणनात्मक उपसूत्र का उपयोग प्रारम्भ किया गया ताकि समानाओं के दोष को दूर किया जा सके।

कोलन क्लैसिफिकेशन पाठान्तर 2 कोलन क्लैसिफिकेशन पाठान्तर 1 की अपेक्षा अधिक परिष्कृत है और 1950-1963 के मध्य विकसित वर्गीकरण सिद्धान्त पर आधारित है। इस पद्धति का दूसरा पाठान्तर 1952 में चतुर्थ संस्करण के रूप में प्रकाशित हुआ। इस क्षेत्र में समयानुसार विकास होता रहा था। पाठान्तर 2 का अंतिम संस्करण इस पद्धति के पुनर्मुद्रण परिशिष्ट वाले छठे संस्करण के पाठान्तर में अवतरित हुआ। इस पाठान्तर की खास विशेषता यह है कि इसमें पाँच मूलभूत श्रेणियों के आवर्तन एवं उनके स्तर की अभिधारणाओं को कार्यान्वित किया गया जिनका वैचारिक धरातल में निरूपण किया गया था। पहले (पाठान्तर 1 में) अंकन धरातल में इसका कार्यान्वयन पाँच संकेतक चिह्नों के स्थान पर एक ही योजक चिह्न (कोलन) के उपयोग द्वारा किया गया था। लेकिन अब हर पक्ष को प्रदर्शित करने के लिए भिन्न प्रकार के योजक चिह्नों का उपयोग किया गया। ये पाँच मूलभूत श्रेणियाँ निम्नलिखित हैं :

NOTES

NOTES

व्यक्तित्व (Personality) [P], पदार्थ (Matter) [M], ऊर्जा (Energy) [E], स्थान (Space) [S] एवं काल (Time) [T]। संक्षेप में इन्हें पी एम ई एस टी (PMEST) कहते हैं।

इस पाठान्तर में वैचारिक धरातल में एक अन्य आवश्यक नवीन विशेषता है। वह है, मुख्य विषयों की माला या पंक्ति में आंशिक बोध (Partial Comprehensions) वाले विषयों का अंतर्वेशन करना। अंकन धरातल में अंतर्वेशन क्रिया को कार्यान्वित करने हेतु ग्रीक वर्णमाला का अस्थायी उपयोग इस पद्धति के छोटे संस्करण (1960) तक किया गया।

कोलन क्लैसिफिकेशन पाठान्तर 2 ने लगभग चौदह वर्षों तक संतोषजनक सेवा प्रदान की।

4.1. चौथा संस्करण

यह संस्करण पिछले संस्करणों से मूल रूप से भिन्न था। स्थान एवं काल के योजक चिहनों को छोड़कर इसमें प्रत्येक मूलभूत श्रेणी के लिए अलग-अलग योजक चिह्न प्रदान किए गए जो निम्नलिखित हैं :

सारणी : मूलभूत श्रेणियाँ एवं योजक चिह्न

| मूलभूत श्रेणियाँ | योजक चिह्न |
|------------------|------------|
| व्यक्तित्व | कॉमा |
| पदार्थ | सेमी कोलन |
| ऊर्जा | कोलन |
| स्थान | डॉट |
| काल | डॉट |

इन उपर्युक्त योजक चिहनों के अतिरिक्त निम्नलिखित ग्रीक अक्षरों का उपयोग भी किया गया।

| | |
|------------------|--|
| बीटा (Beta) | गणित विज्ञान (Mathematical Sciences) |
| गामा (Gama) | भौतिक विान (Physical Science) |
| ईटा (Etah) | खनिज विज्ञानप (Mining) |
| लेम्बडा (Lambda) | पशु चिकित्सा (Animal Husbandry) |
| म्यु (Mu) | मानविकी एवं समाज विज्ञान (Humanities and Social Science) |
| न्यु (Nu) | मानविकी (Humanities) |
| सिगमा (Sigma) | सामाजिक विज्ञान (Social Sciences) |
| B डेल्टा (Delta) | स्पीरिचुअल एक्सपीरियन्स एवं मिस्टिसिज्म (Spiritual Experience and Mysticism) |

इस संस्करण में एवं स्तर की संकल्पना का थ्यम बार उपयोग किया गया।

4.2. पाँचवाँ संस्करण

वर्गीकरण सिद्धान्त के क्षेत्र में निरंतर शोध के फलस्वरूप 1957 में कोलन क्लैसिफिकेशन का पाँचवाँ संस्करण प्रकाशित हुआ, जिसमें निम्नलिखित मुख्य परिवर्तन किए गए।

- (1) भारत में राज्यों के पुनर्गठन कार्य के कारण नए राज्यों के विभाजन को एक संक्षिप्त विकल्प के रूप में अनुसूची के चौथे अध्याय में दिया गया। नवीन संक्षिप्त अनुसूची को पूर्व संस्करण की अनुसूची के अंत में दिया गया।
- (2) नवीन अंतर्विषयी एवं अंतर्पक्षीय दशा सम्बन्धों की एक पूर्ण सूची सातवें अध्याय में प्रस्तुत की गई। अंतर्पक्षीय दशा सम्बन्धों की संकल्पना से वर्ग संख्या की लम्बाई में कमी लाई गई।

- (3) N ललित कला (Fine Arts) के प्रामाणिक विभाजनों (Canonical Divisions) को संशोधित किया गया एवं संख्याओं के स्थान पर दीर्घ अक्षरों का उपयोग किया गया।
- (4) Economics में Management and Labour की अनुसूचियों को संशोधित किया गया।
- (5) Z विधि (Law) की अनुसूची में और अधिक विस्तार किया गया।
- (6) J कृषि विज्ञान (Agriculture) की अनुसूची के विस्तारों को हटा दिया गया।
- (7) वर्गीकरण उपसूत्रों को 1.7-1.18 पृष्ठों पर सूचीबद्ध किया गया।
- (8) एक नवीन वर्ग "Maning" को सम्मिलित किया गया, जिसको ग्रीक वर्ण अक्षर v (etah) प्रदान किया गया।

NOTES

4.3. छठा संस्करण

छठा संस्करण, जो कि 1960 में प्रकाशित हुआ, में अधिक वृद्धि नहीं की गई। इस संस्करण में निम्नलिखित परिवर्तन किए गए।

- (1) यह प्रयास किया गया कि जितने भी ग्रीक अक्षर हैं उनमें से कुछ को छोड़कर सभी को हटाया जाए। मुख्य वर्गों के सन्दर्भ में, रिक्त एवं रिक्तक अंकों की संकल्पना द्वारा इन्हें प्रतिस्थापित कर दिया गया।
- (2) पुनर्मुद्रित अनुसूची (1963) में काल पक्ष के लिए प्रयुक्त योजक चिह्न डॉट (.) को हटाकर इसके लिए एक विपर्यस्त कॉमा (') चिह्न का उपयोग किया गया।
- (3) स्थान एवं काल के दूसरे स्तर [S2] एवं [T2] के एकलों का उपयोग किया गया।
- (4) Education, Nuclear Physics एवं Nuclear Engineering की अनुसूचियों में भी ठोस परिवर्तन किए गए।
- (5) पद्धति के नियम भाग को पुनर्गठित किया गया तथा कुद अंश पुनः लिखे गए।
- (6) पद्धति के द्वितीय भाग में सबसे पहले पुस्तक संख्या निर्माण करने हेतु अनुसूची प्रस्तुत की गई।
- (7) पुनर्मुद्रण परिशिष्ट (1961, 1969, एवं 1970) में छठे संस्करण में किए गए परिवर्तनों को प्रस्तुत किया गया। इसमें ध्यान देने योग्य परिवर्तन अष्टक (octave) से खण्ड (sector) हैं।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. कोलन क्लासीफिकेशन के प्रथम पाठान्तर की विशेषता बताइये।
2. कोलन क्लासीफिकेशन पाठान्तर-2 के अंतिम संस्करण की मुख्य विशेषता बताइये।

5. कोलन क्लैसिफिकेशन पाठान्तर 3

कोलन क्लैसिफिकेशन पाठान्तर 1 ने लगभग 25 वर्षों तक संतोषजनक कार्य किया लेकिन पाठान्तर 2 में इससे केवल आधे समय से कम में ही परिवर्तन की आवश्यकता पड़ गई; जबकि यह सिद्धान्त पर आधारित था। यह परिदृश्य विषय जगत् में आई नई प्रवृत्ति को प्रस्तुत करता है। 1950 के पश्चात् लेख स्तर विषय पुस्तक के पाठान्तर में प्रस्तुत किए जाने लगे।

बार-बार नवीन विषयों के आलेखों से पुस्तक स्तर का स्थानांतरण यह इंगित करता है कि ऐसे गहन एवं ग्रन्थात्मक वर्गीकरण सिद्धान्त (Dynamic Theory of Classification) की अति आवश्यकता है जो थोड़े समय में ही इस प्रकार के हो रहे विषयों के स्थानांतरण की चुनौती का सामना कर सके। यह विकास यह भी

संकेत देता है कि अब लेखों के वर्गीकरण के साथ-साथ पुस्तकों के वर्गीकरण के लिए भी एक ऐसी वर्गीकरण पद्धति की आवश्यकता थी जिसमें गत्यात्मक सिद्धान्त पर बल दिया गया हो। ऐसे वर्गीकरण को गहन वर्गीकरण कहा जाता है।

NOTES

5.1. सिद्धान्त से प्राप्त नवीन परिणाम

- (1) यह पाया गया कि गुणधर्म एकल (property isolate) पदार्थ (Matter) की अभिव्यक्ति करता है। अतः पदार्थ की अभिव्यक्ति को पदार्थ-गुणधर्म एकल (Matter Property) [MP] कहा गया ताकि उनको पदार्थ धातु (Matter Material) [MMt] एकलों से भिन्न किया जा सके। इस अवधारणा के कार्यन्वयन ने उन एकलों को जिन्हें पहले समस्या अनुसूची (Problem Schedules) में धकेल दिया गया था और जिन्हें बाद में ऊर्जा अनुसूची कहा गया, वे वास्तव में ये पदार्थ-गुण एकल [MP] एकल थे।
इस परिणाम को कार्यान्वित (implement) करने हेतु अंकन धरातल में इस प्रकार के एकलों के लिए कोलन (:) के स्थान पर सेमीकोलन (;) योजक चिह्न का उपयोग किया गया।
- (2) यह प्रावधान कि योजक चिह्न कॉमा (,) का उपयोग मूल वर्ग के साथ प्रथम व्यक्तित्व एकल [P] के पूर्व तथा ऊर्जा एकल [E] के पश्चात् नहीं करना चाहिए, एक गलत मितव्ययिता साबित हुआ। अतः उसे त्यागना पड़ा।
- (3) रोमन लघु अक्षरों को पूर्वस्थापक मान से वंचित करने तथा "0" (शून्य) के स्वाभाविक क्रम-मान अर्थात् "z" एवं "1" के मध्य में होने, को फिर से बहाल किया गया और इस प्रकार, अंकन धरातल में पंक्तियों की क्षमता में वृद्धि की गई।
- (4) मुख्य वर्ग की पंक्ति के हर स्तर पर अंतर्वेशन की सुविधा के लिए रोमन वर्णमाला के "I" से "z" तक के अक्षरों की अवधारणा रिक्तक, रिक्त-रिक्तक या रिक्त अंक के रूप में दी गई। इससे ग्रीक वर्णमाला के अक्षरों की आवश्यकता नहीं रही।
- (5) यह सुविधाजनक पाया गया कि एकलों के अध्यारोपण से निर्मित पक्ष को यौगिक पक्ष कहा जाए। केवल एकल पक्षों में ही नहीं बल्कि आधारभूत पक्षों में भी यह सम्भावना है कि तीन अथवा उससे भी अधिक घटकों के योजन की आवश्यकता पड़े।
- (6) वैचारिक धरातल के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है जिससे एकलों में सहायक अनुक्रम (helpful sequence) मिले। एकलों तथा पक्षों के सहायक अनुक्रम हेतु सशक्त भित्ति चित्र सिद्धान्त (Wall-Picture Principle) का प्रतिपादन किया गया।
- (7) अंकन धरातल के सिद्धान्तों में भी आवश्यक परिवर्तन किए गए जिससे वैचारिक धरातल के निष्कर्ष को कार्यान्वित किया जा सके। इसका परिणाम यह हुआ कि पंक्तियों के सेक्टरों में वृद्धि का प्रावधान सम्भव हो सका। अंकन धरातल में स्मृति सहायकों को और अधिक सुधारा गया।

6. कोलन क्लैसिफिकेशन के सातवें संस्करण में किए गए परिवर्तन

पूर्व में किए गए विवेचन के परिणामस्वरूप सातवें संस्करण में परिवर्तन किए गए। इस अनुभाग में कुछ परिवर्तनों का उल्लेख किया गया है :

(क) सातवें संस्करण में मुख्य/मूल विषयों की संख्या में वृद्धि की गई है। इसे निम्नलिखित विधियों से प्राप्त किया गया है :

- (i) कुछ नवीन तथा कुछ विषयों को प्रामाणिक (Canonical) विभाजनों में विभक्त किया गया है। उदाहरणस्वरूप : 3 Book Science एवं 9 Research Technique।
- (ii) कुछ विषयों के [1P1] एकलों को प्रामाणिक (Canonical) विभाजन की तरह माना गया है जैसे—Engineering, Technology, Geography, Economics।

NOTES

- (iii) "X Economics" के कुछ ऊर्जा [E] एकलों को प्रामाणिक (Canonical) विभाजनों में परिवर्तित किया गया है।
- (iv) कुछ नये विषयों की उत्पत्ति में संकुलन (agglomeration) विधि भी सम्मिलित है, जिसे Subject Bundles भी कहा जाता है। उनको भी प्रामाणिक (Canonical) विभाजन की तरह जोड़ा गया है।
- (v) प्रणाली-वर्गों (Systems) को मूल विषयों में परिवर्तित किया गया है।
- (vi) विशिष्ट वर्गों (Specials) को भी मूल विषयों में परिवर्तित किया गया है।
- (vii) पर्यावरण युक्ति (Environmental Devie) का उपयोग किसी भी विषय के वातावरण चित्रण के लिए एक विशिष्ट वर्ग के रूप में किया गया है।
- (viii) यौगिक मूल विषय : प्रणाली भाग, विशिष्ट वर्ग भाग एवं प्रामाणिक भाग को इसका घटक माना गया है।
- (ख) अब संकेतक चिह्न " (दोहरा विपर्यस्त कॉमा) का उपयोग पूर्वस्थापक सामान्य एकल (anteriorising isolate) के रूप में किया जा रहा है जबकि छठे संस्करण में रोमन लघु वर्णमाला का उपयोग किया गया है।
- (ग) सातवें संस्करण में [E], [MP], तथा [P] के लिए सामान्य मूलभूत श्रेणी एकलों (Common Fundamental Category Isolate) का समावेश है।
- (घ) दशां सम्बन्ध को दर्शाने के लिए नया संकेतक चिह्न "&" (ampersand) का उपयोग पुराने संकेतक चिह्न "0" के स्थान पर किया गया है।
- (ङ) कुछ [E] ऊर्जा एकलों को अब [MP] एकलों के रूप में बदल दिया गया है। उदाहरणस्वरूप B23 Theory of Equation, C7 Magnetism, J Agriculture, JX Forestry, KX Animal Husbandry इत्यादि के सभी [E] एकलों को।
- (च) [E] cum [2P] एकलों का अब [MP] एकलों के रूप में परिवर्तन हुआ है। उदाहरणस्वरूप 2 Library Science, C3 Sound, G Biology, L Medicine, P Linguistics, Y Sociology इत्यादि।
- (छ) [2E] एकलों का [1E] cum [2P] में परिवर्तन हुआ है। उदाहरणस्वरूप J Agriculture।
- (ज) [2E] cum [3P] एकलों को तोड़कर [E] एकल एवं [2P] एकल रूप में परिवर्तित किया गया है। अब [P] एकलों का स्पेसियेटर्स (speciators) की तरह उपयोग किया जाता है।
- (झ) पक्ष संरचना में परिवर्तन। पक्ष-परिसूत्र का अब कोई अर्थ नहीं रहा है क्योंकि यह पुराना पड़ गया है।
- (ण) संकेतक चिह्न "," (comma) का उपयोग किसी भी विषय के व्यक्तित्व [P] के प्रथम स्तर के आवर्तन में किया जाएगा।

उपर्युक्त परिवर्तनों का अनुपालन करने के लिए छठे संस्करण के आधार पर वर्गीकृत प्रलेखों का पुनर्वर्गीकरण करना आवश्यक होगा। पुनर्वर्गीकरण के लिए रसाकर्षण सिद्धान्त (Principle of Osmosis) का उपयोग किया जा सकता है।

उदाहरण (Illustrative Examples)

निम्नलिखित उदाहरणों से यह स्पष्ट होगा कि छठे संस्करण के परिप्रेक्ष्य में सातवें संस्करण के कौन से परिवर्तन हैं।

NOTES

| क्र. सं. | किए गए परिवर्तन (क) मुख्य/मूल वर्गों में वृद्धि | छटा संस्करण (उदाहरण) | सातवाँ संस्करण (उदाहरण) |
|----------|---|---|--|
| (i) | पुराने मुख्य विषयों एवं नए मुख्य विषयों की प्रामाणिक विभाजनों में विभक्ति | 3 Book Science 9 Research Technique | 3 Book Science 31 Authorial method 3V Reading method 9f Research methodology 9ft Survey methodology 8f8 Planning methodology |
| (ii) | [1P1] एकलों को प्रामाणिक विभाजन की तरह मानना | B28 Statistical Calculus D1 Civil engineering [P] D3 Building [P] G9555 Marine biology [P] U1 Mathematical geography [P] U2 Physical geography [P] | BT Statistics D1 Civil engineering D2 Building engineering G-9Up Marine biology U1 Mathematical geography U2 Physical geography |
| (iii) | कुछ ऊर्जा "E" एलकों की प्रामाणिक विभाजनों में विभक्ति | X:2 Consumption X:3 Distribution | X2 Consumption X3 Distribution |
| (iv) | नई विधि से उत्पन्न विषयों (Agglomeration) (Subject bundles) का रूप में उपयोग | | AC Surface science AD Soil science |
| (v) | प्रणाली वर्गों का मुख्य विषय के रूप में परिवर्तन | JB Forestry LB Ayurveda LC Homocopathy SM Experimental Psychology SN3 Field Psychology XN Communism XN19 Technocracy | JX forestry L-B Ayurveda L-C Homoeopathy S-M Experimental Psychology S-N3 Field Psychology X-N1 Communism X-N19 Technocracy |
| (vi) | विशिष्ट वर्गों का मुख्य विषय के रूप में परिवर्तन | J9D Dry farming L9C Child medicine | J-9B Dry farming L-9C Child medicine |
| (vii) | पर्यावरण निरूपण के लिए पर्यावरण युक्ति का उपयोग मुख्य विषय के लिए एक विशेष के रूप में | L9V War medicine | L-9V War medicine |
| (viii) | विशिष्ट भाग, प्रणाली भाग एवं प्रामाणिक विभाजन का यौगिक मुख्य विषय के संघटक के रूप में उपयोग | LB, 9C Ayurvedic child medicine | L-B-9C Ayurvedic child medicine |

NOTES

| | | | |
|-----|---|---|--|
| (ख) | पूर्वस्थापक एकल में रोमन लघु अक्षर के स्थान पर संकेतक चिह्न "(दोहरा विषयस्त कोमा) का उपयोग | Am 56, K Philosophical Transaction, Rolay Society of Loday LK Encyclopacdia of Medicine | A"m56. K Philosophical Transaction, Royal Society of London L"K Encyclopaedia of Medicine |
| (ग) | [P] [MP] एवं [E] मूलभूत श्रेणी के सामान्य एकल | पूर्वस्थापक एवं पश्चस्थापक व्यक्तित्व एकल | पूर्वस्थापक सामान्य एकल पदार्थ गुण सामान्य एकल ऊर्जा सामान्य एकल |
| (घ) | दशा सम्बन्धों को दर्शाने हेतु पुराने संकेतक "0" के स्थान पर नवीन संकेतक "&" का उपयोग | General Study of College and University Libraries 233oj4 Psychology for teachers SobT Statistical analysis in library management 2:80cB28 | General Study of College and Universtity Librarics 2,J3&jK Psychology for Teachers S&bT Statistical analysis in library management 2:8&eBT |
| (ङ) | [E] एकलों का [MP] एकलों में परिवर्तन | Quadratic equation B23:2 | Quadratic equation B2,3:2 |
| (च) | [E] cum [2P] एकलों का [MP] एकलो में परिवर्तन | human Physiology L:3 | Human Physiology L:3 |
| (छ) | [2E] एकलों का [1E] एकलों में परिवर्तन | Treatment of diseases affecting Rice J381:4;6 | Treatment of discases affecting Rice J,381;4;6 |
| (ज) | [2E] cum [3P] एकलों को [E] एकलों एवं [2P] एकलों में तोड़ना। अब [P] एकलों का उपयोग Speciators के रूप में किया जा रहा है। | Drug therapy for lung tuberculosis L45:421:63 | Drug therapy for lung tuberculosis L,45:421:6.3 or L.45:421:6-3 |
| (i) | संकेतक चिह्न "," का [P], पक्ष के प्रथम स्तर के पूर्व में उपयोग | Diagnosis of Lung cancer L45:4725;3 | Diagnosis of Lung Cancer L,45:4725:3 |

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. कोलन क्लासिफिकेशन के पाँचवें संस्करण में किये गये मुख्य परिवर्तनों का उल्लेख कीजिए।
4. कोलन क्लासिफिकेशन पाठान्तर 3 की आवश्यकता क्यों पड़ी?

.....

.....

.....

.....

NOTES

7. सार-संक्षेप

कोलन क्लैसिफिकेशन यथार्थ रूप से एक वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति है जिसमें पहले वैचारिक धरातल में सभी पक्षों के विश्लेषण तथा फिर शाब्दिक एवं अंकन धरातल में उनका संश्लेषण करने की दो महत्वपूर्ण युक्तियाँ अपनाई गई हैं। प्रारम्भ में कोलन क्लैसिफिकेशन का पाठांतर 1 (1 से 3 तक के संस्करण) एक अपरिवर्तनीय पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति के रूप में विकसित हुआ। तत्पश्चात् यह पद्धति लगभग पूर्ण पक्षात्मक पाठांतर 2 में (चौथे संस्करण से छठे संस्करण तक) विकसित हुई। इसका सातवाँ संस्करण पूर्णरूप से मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण बन कर उभरा है जिसका मुख्य कारण वर्गीकरण सिद्धान्त में रंगनाथन एवं उनके सहयोगियों द्वारा निरंतर शोध किया जाना है।

इस अध्याय में कोलन क्लैसिफिकेशन के पाठांतरों 1, 2 एवं 3 की प्रमुख विशेषताओं को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

8. स्व-प्रगति परीक्षण के उत्तर

1. कोलन क्लैसिफिकेशन के प्रथम पाठांतर की अभिकल्पना 1924 में की गई थी। इसका प्रथम संस्करण 1933 प्रकाशित हुआ। उस समय तक ज्ञान जगत् में नए विषयों की संख्या में प्रचुर वृद्धि होने लगी थी। 1924 तक इस प्रचुर वृद्धि ने पर्याप्त मात्रा में साहित्य समादेश (literary warrant) को आकर्षित किया।

इन उपर्युक्त कारणों से यौगिक विषयों के परिगणन का परित्याग करना पड़ा। इसी कारण कोलन क्लैसिफिकेशन ने मूल विषयों एवं विभिन्न सामान्य एकलों—कालक्रम, स्थान, भाषा एवं पूर्वस्थापक सामान्य एकलों की लघु अनुसूचियाँ ही प्रस्तुत कीं। इसके अतिरिक्त कुछ लघु अनुसूचियाँ विशिष्ट एकलों की बनाई गईं जिनका उपयोग मूल वर्गों के मूल विषयों में किया जाता है। वर्गीकरणकार को प्रत्येक मूल विषय की मूल वर्ग संख्या का निर्माण निर्धारित नियमों के अनुसार ही करना होता था। केवल मूल वर्गों को ही वर्ग संख्याएँ प्रदान की गईं न कि यौगिक विषयों को। यह प्रक्रिया अन्य प्रचलित पद्धतियों की प्रचलित विधि से पूर्णतया भिन्न थी। इसी विशेषता ने हेनरी ऐवलिन ब्लिस (Henry Evelyn Bliss) को यह कहने पर विवश कर दिया कि कोलन क्लैसिफिकेशन एक संश्लेषणात्मक पद्धति है। अंकन धरातल में कोलन क्लैसिफिकेशन के प्रथम पाठांतर में कोलन अंक का उपयोग सभी प्रकार के एकल पक्षों को प्रदर्शित करने के लिए किया गया था।

2. पाठांतर 2 का अंतिम संस्करण इस पद्धति के पुनर्मुद्रण परिशिष्ट वाले छठे संस्करण के पाठांतर में अवतरित हुआ। इस पाठांतर की खास विशेषता यह है कि इसमें पाँच मूलभूत श्रेणियों के आवर्तन एवं उनके स्तर की अभिधारणाओं को कार्यान्वित किया गया जिनका वैचारिक धरातल में निरूपण किया गया था। पहले (पाठांतर 1 में) अंकन धरातल में इसका कार्यान्वयन पाँच संकेतक चिहनों के स्थान पर एक ही योजक चिह्न (कोलन) के उपयोग द्वारा किया गया था। लेकिन अब हर पक्ष को प्रदर्शित करने के लिए भिन्न प्रकार के योजक चिहनों का उपयोग किया गया। ये पाँच मूलभूत श्रेणियाँ निम्नलिखित हैं :

व्यक्तित्व (Personality) [P], पदार्थ (Matter) [M], ऊर्जा (Energy) [E], स्थान (Space) [S] एवं काल (Time) [T]। संक्षेप में इन्हें पी एम ई एस टी (PMEST) कहते हैं।

इस पाठांतर में वैचारिक धरातल में एक अन्य आवश्यक नवीन विशेषता है। वह है, मुख्य विषयों की माला या पंक्ति में आंशिक बोध (Partial Comprehensions) वाले विषयों का अंतर्वेशन

करना। अंकन धरातल में अंतर्वेशन क्रिया को कार्यान्वित करने हेतु ग्रीक वर्णमाला का अस्थायी उपयोग इस पद्धति के छठे संस्करण (1960) तक किया गया।

कोलन क्लैसिफिकेशन के
विभिन्न पाठांतर

NOTES

3. वर्गीकरण सिद्धान्त के क्षेत्र में निरंतर शोध के फलस्वरूप 1957 में कोलन क्लैसिफिकेशन का पाँचवाँ संस्करण प्रकाशित हुआ, जिसमें निम्नलिखित मुख्य परिवर्तन किए गए।

- (1) भारत में राज्यों के पुनर्गठन कार्य के कारण नए राज्यों के विभाजन को एक संक्षिप्त विकल्प के रूप में अनुसूची के चौथे अध्याय में दिया गया। नवीन संक्षिप्त अनुसूची को पूर्व संस्करण की अनुसूची के अंत में दिया गया।
- (2) नवीन अंतर्विषयी एवं अंतर्पक्षीय दशा सम्बन्धों की एक पूर्ण सूची सातवें अध्याय में प्रस्तुत की गई। अंतर्पक्षीय दशा सम्बन्धों की संकल्पना से वर्ग संख्या की लम्बाई में कमी लाई गई।
- (3) N ललित कला (Fine Arts) के प्रामाणिक विभाजनों (Canonical Divisions) को संशोधित किया गया एवं संख्याओं के स्थान पर दीर्घ अक्षरों का उपयोग किया गया।
- (4) Economics में Management and Labour की अनुसूचियों को संशोधित किया गया।
- (5) Z विधि (Law) की अनुसूची में और अधिक विस्तार किया गया।
- (6) J कृषि विज्ञान (Agriculture) की अनुसूची के विस्तारों को हटा दिया गया।
- (7) वर्गीकरण उपसूत्रों को 1.7-1.18 पृष्ठों पर सूचीबद्ध किया गया।
- (8) एक नवीन वर्ग "Maning" को सम्मिलित किया गया, जिसको ग्रीक वर्ण अक्षर v (etah) प्रदान किया गया।

4. कोलन क्लैसिफिकेशन पाठांतर 1 ने लगभग 25 वर्षों तक संतोषजनक कार्य किया लेकिन पाठांतर 2 में इससे केवल आधे समय से कम में ही परिवर्तन की आवश्यकता पड़ गई; जबकि यह सिद्धान्त पर आधारित था। यह परिदृश्य विषय जगत् में आई नई प्रवृत्ति को प्रस्तुत करता है। 1950 के पश्चात् लेख स्तर विषय पुस्तक के पाठांतर में प्रस्तुत किए जाने लगे।

बार-बार नवीन विषयों के आलेखों से पुस्तक स्तर का स्थानांतरण यह इंगित करता है कि ऐसे गहन एवं ग्रत्यात्मक वर्गीकरण सिद्धान्त (Dynamic Theory of Classification) की अति आवश्यकता है जो थोड़े समय में ही इस प्रकार के हो रहे विषयों के स्थानांतरण की चुनौती का सामना कर सके। यह विकास यह भी संकेत देता है कि अब लेखों के वर्गीकरण के साथ-साथ पुस्तकों के वर्गीकरण के लिए भी एक ऐसी वर्गीकरण पद्धति की आवश्यकता थी जिसमें गत्यात्मक सिद्धान्त पर बल दिया गया हो। ऐसे वर्गीकरण को गहन वर्गीकरण कहा जाता है।

9. अभ्यास-प्रश्न

1. कोलन क्लैसिफिकेशन पाठांतर 1 सिद्धान्त निरपेक्ष पाहान्तर क्यों कहा जाता है ?
2. कोलन क्लैसिफिकेशन पाहान्तर 2 सिद्धान्त सांपेक्ष क्यों है ?
3. कोलन क्लैसिफिकेशन के छठवें संस्करण में कौन-कौन से परिवर्तन किये गये ?

4. गत्यात्मक सिद्धान्त से प्राप्त नवीन परिणामों का वर्णन कीजिए ?

5. कोलन क्लासीफिकेशन के सातवें संस्करण में किये गये परिवर्तनों का विवेचन कीजिए ?

NOTES

10. सन्दर्भ एवं इतर पाठ्य सामग्री

Documentation Research and Training Centre. Annual Seminars. 1971-1977. Papers and Proceedings.

Gopinath, M.A. (1974). Classification Research (India) : 1968-73, FID/CR Report Series. 14.

Library Science with a Slant to Documentation. (1973). 19,2.

Ranganathan, S.R. (1987). Colon Classification, 7th ed. Edited by M.A. Gopinath.

Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Bibliary Science.

Ranganathan, S.R. (1969). Colon Classification Edition 7 : A Preview. Lib Sei 6; Paper M.

शर्मा, पाण्डेय एस. के. (1998)। सरलीकृत द्विविन्दु वर्गीकरण, दिल्ली: सत्साहित्य प्रकाश।

शर्मा, पाण्डेय एस. के. (1998)। सरलीकृत द्विविन्दु वर्गीकरण सिद्धान्त दिल्ली: ज्ञान गंगा।

पुस्तकालय वर्गीकरण में वर्तमान प्रवृत्तियाँ

NOTES

अध्याय में सम्मिलित है :

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. तीन मुख्य काल
4. डी डी सी का विकास
 4. 1. 18वाँ एवं 19वाँ संस्करण
 4. 2. 20वाँ एवं 21वाँ संस्करण
 4. 3. डी डी सी का कम्प्यूटरीकरण
5. यू डी सी का विकास
 5. 1. आई एम ई 1985 एवं 1993
 5. 2. कम्प्यूटर आधारित सूचना पुनर्प्रापित प्रणाली में यू डी सी
 5. 3. यू डी सी यूनीसिस्ट
 5. 4. यू डी सी का कम्प्यूटरीकरण
6. कोलन क्लैसिफिकेशन का विकास
 6. 1. सातवें संस्करण का प्रकाशन
 6. 2. सी सी का कम्प्यूटरीकरण
7. अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन
 7. 1. एफ आई डी / सी आर इंटरनेशनल स्टडी कॉन्फ्रेंस आन क्लैसिफिकेशन रिसर्च (आई एस सी सी आर)
 7. 2. इस्को के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन
8. संगठन, संस्थाएँ एवं शोध दल
 8. 1. लाइब्रेरी रिसर्च सर्कल (एल आर सी)
 8. 2. एफ आई डी / सी आर
 8. 3. क्लैसिफिकेशन रिसर्च ग्रुप (सी आर जी)
 8. 4. डाक्युमेन्टेशन रिसर्च एवं ट्रेनिंग सेन्टर (डी आर टी सी)
 8. 5. इंटरनेशनल सोसायटी फॉर नालेज ऑर्गेनाइजेशन (इस्को)
9. वर्गीकरण पद्धतियों की जाँच
10. यूनीसिस्ट एवं ब्रॉड सिस्टम ऑफ आर्डरिंग (बी एस ओ)
11. स्टैंडर्ड रेफरेन्स कोड (एस आर सी) तथा बी एस ओ के लिए एफ आई डी का प्रस्ताव
12. पुस्तकालय वर्गीकरण की विशिष्ट पद्धतियाँ
13. पुस्तकालय वर्गीकरण एवं कम्प्यूटर
14. इंटरनेट : पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धतियाँ
15. सार-संक्षेप
16. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
17. अभ्यास-प्रश्न

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

अब तक आपको डी डी सी, यू डी सी एवं सी सी के बारे में जानकारी प्राप्त हो गई है, जिसे अध्ययन 10-14 में प्रस्तुत किया गया है। इस अध्ययन में आपको पुस्तकालय वर्गीकरण विकास में वर्तमान प्रवृत्तियों के बारे में जानकारी दी जाएगी।

इस अध्ययन का अध्ययन करने के पश्चात् आपको निम्नलिखित बिन्दुओं की जानकारी हो सकेगी :

- पुस्तकालय वर्गीकरण के इतिहास का गहन अध्ययन एवं उससे परिचय;

डी डी सी, यू डी सी एवं सी सी में हुए प्रमुख विकास का ज्ञान;

एफ आई डी-सी आर तथा इस्को द्वारा संचालित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में वर्गीकरण एवं ज्ञान संगठन के मुख्य क्षेत्रों में हुई परिचर्चा;

अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में पुस्तकालय वर्गीकरण के क्षेत्र में विभिन्न संगठनों, संस्थाओं एवं अनुसंधान दलों के योगदान का मूल्यांकन; तथा

पुस्तकालय वर्गीकरण की विशिष्ट पद्धतियों के प्रकाशन के बारे में एवं सी आर जी एवं डी आर टी सी के योगदान के बारे में जानकारी।

2. परिचय

पुस्तकालय वर्गीकरण के इतिहास, प्रवृत्तियों एवं विकास को जानने के लिए यह आवश्यक है कि हम युगांतकारी वर्ष 1876 पर दृष्टि डालें जब मेल्विल ड्यूई ने डेसिमल क्लैसिफिकेशन को प्रकाशित किया। पिछले बारह दशकों (1976-1996) में वर्गीकरण क्षेत्र में महत्वपूर्ण विकास हुए हैं। इसी काल में कई सामान्य एवं विशिष्ट पद्धतियाँ प्रकाशित हुई हैं। कुछ प्रमुख पद्धतियों, विशेषकर ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन, यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन एवं कोलन क्लैसिफिकेशन में महत्वपूर्ण सुधार हुआ। इन तीनों मुख्य पद्धतियों का पूर्ण परिचय इकाई 4 के अध्याय 10-14 में दिया जा चुका है।

अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगठनों एवं प्रसिद्ध वर्गीकरण प्रणाली प्रणेताओं ने पुस्तकालय वर्गीकरण से सम्बन्धित मुद्दों को उठाया। कई अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक सम्मेलनों में वर्गीकरण के विभिन्न पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। वर्गीकरण क्षेत्र में माइक्रो एवं मैक्रो साहित्य का उत्पादन बहुत ही प्रभावशाली रहा है। निम्नलिखित अनुभागों में पिछले पाँच दशकों में हुए विकास एवं प्रवृत्तियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है।

3. तीन मुख्य काल

रंगनाथन ने पिछले सौ वर्षों में हुए वर्गीकरण क्षेत्र में प्रवृत्तियों एवं विकास को तीन मुख्य कालों में विभक्त किया है जो निम्नलिखित हैं :

(1) पक्ष-पूर्व काल (Pre-facet Period) (1876-1896)

(2) पक्ष संक्रमण काल (Transition to Facet Period) (1897-1932)

(3) पक्ष काल (Facet Period) (1933-1972)

पक्ष-पूर्व काल में ड्यूई रचित डेसिमल क्लैसिफिकेशन (Dewey Decimal Classification) (1876) एवं सी. ए. कटर रचित एक्सपैंसिव क्लैसिफिकेशन (Expansive Classification) (1879) का प्रकाशन हुआ। पक्ष संक्रमण काल में यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन (Universal Deciaml Classification) (1897-1905) एवं लाइब्रेरी ऑफ कॉंग्रेस क्लैसिफिकेशन (Library of Congress Classification) (1902) का प्रकाशन हुआ। पक्ष काल में रंगनाथन कृत कोलन क्लैसिफिकेशन (Colon Classification) (1933) एच. ई. ब्लिस कृत बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन (Bibliographic Classification) (1935), लाइब्रेरी बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन (1960) एवं फरमोन्ट राईडर कृत राईडर्स इंटरनेशनल क्लैसिफिकेशन

(Riders International Classification) (1961) का प्रकाशन हुआ। इनमें कुछ वर्गीकरण पद्धतियों का अपना संगठनात्मक ढाँचा है या फिर कुछ संस्थाएँ हैं, जो इनमें समय-समय पर हो रहे संशोधन, रखरखाव, विकास एवं अनुप्रयोग की पूर्ण जिम्मेदारी का वहन करती हैं।

आगे के अनुभागों में डी डी सी, यू डी सी एवं सी सी में हो रहे प्रमुख विकासों एवं प्रवृत्तियों पर संक्षेप में चर्चा की जाएगी।

NOTES

4. डी डी सी का विकास

16वें संस्करण (1958) के पूर्व ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के संस्करण अनिश्चित अंतराल में प्रकाशित होते थे। 16वें संस्करण के बाद ही यह सम्भव हो सका कि इस पद्धति का हर सात वर्ष पश्चात् नया संस्करण प्रकाशित किया गया। यह सब बैजामिन कस्टर के प्रयासों के फलस्वरूप सम्भव हो सका, जो 16वें संस्करण के संपादक थे। इस संस्करण में यह प्रयास किया गया कि अंकनों में जो परस्पर विरोध था, उन अंकनों का किस प्रकार एकीकरण कर नवीन विषयों के लिए प्रावधान किया जाए। 17वाँ संस्करण 1965 में दो खण्डों में प्रकाशित हुआ खण्ड 1 सारणियाँ; एवं खण्ड 2 भौगोलिक क्षेत्र सारणी एवं सापेक्षिक अनुक्रमणिका। इस संस्करण में पूर्व संस्करणों की अपेक्षा संश्लेषण की ओर अधिक प्रवृत्ति दिखाई दी। विषय विभाजन का शून्य के साथ उपयोग एवं रूप विभाजन में भी शून्य के उपयोग के कारण जो कुछ विसंगतियाँ उत्पन्न हो गई थीं उनको 17वें संस्करण में दूर किया गया।

4.1. 18वाँ एवं 19वाँ संस्करण

18वाँ संस्करण (1976) तीन खंडों में प्रकाशित हुआ। खंड 1 सारणियाँ, खंड 2 अनुसूचियाँ एवं खंड 3 अनुक्रमणिका। इसमें पहली बार पाँच और सहायक सारणियाँ, जैसे T3 Subdivisions of Individual Literatures, T4, Subdivisions of Individual Languages, T5. Racial, Ethnic and National Groups, T6. Languages तथा T7, Persons को सम्मिलित किया गया। ये सारणियाँ T1 Standard Subdivisions तथा T2 Area के अतिरिक्त थीं। 19वाँ संस्करण 1979 में तीन खंडों में प्रकाशित हुआ। जो नीति 17वें संस्करण में अपनाई गई, वही इसी संस्करण में भी अपनाई गई। इस संस्करण में जो महत्वपूर्ण लक्षण परिलिखित हुए वे हैं : 1) एक डायग्राम के माध्यम से यह दिखाया गया कि डी डी सी में किस प्रकार श्रृंखलाबद्ध वर्गीकरण सामान्य से विशिष्टता की ओर अग्रसर होता है, 2) वर्गीकरण कार्य हेतु एक प्रायोगिक गाइड का समावेश किया गया, एवं 3) मुख्य वर्ग 800 Literature में वर्ग संख्या निर्माण हेतु कदम दर कदम विस्तारपूर्वक अनुदेश दिए गए।

4.2. 20वाँ एवं 21वाँ संस्करण

20वाँ संस्करण 1989 में चार खंडों में प्रकाशित हुआ जिसको जॉन पी. कोमारोमी (Jogn P. Comaromi) एवं अन्य ने सम्पादित किया। खण्ड 1) परिचय एवं सारणियाँ, खंड 2) अनुसूचियाँ (000-500), खंड 3) अनुसूचियाँ (600-900) एवं खंड 4) सापेक्षिक अनुक्रमणिका एवं मैनुअल। इस संस्करण के मुख्य उद्देश्य थे : पाठकों की सुविधा, स्पष्ट अनुदेश, अधिक स्पष्टीकरण, विस्तारित सारांश—तालिकाओं के कारण अधिक अभिगम्यता तथा जो विषयों के वर्गीकरण में द्विवारवृत्ति (duplication) लाने वाले प्रावधानों को हटाना।

जोन एस. मिचल (Joan S. Mitchell) इत्यादि के सम्पादन में 1996 में 21वाँ संस्करण 4 खंडों में प्रकाशित हुआ। इस संस्करण में पाठकों की सुविधा की ओर अधिक ध्यान दिया गया है, जो इस प्रकार है—1) वर्गीकरणकार के मार्गदर्शन के लिए उपर्युक्त स्थान पर अधिक से अधिक सूचनाएँ दी गई हैं। 2) अस्पष्ट शीर्षकों को हटा कर नए सिरे से स्पष्ट रूप में लिखा गया है। 3) "Example" तथा "Contain notes" को "including notes" से विस्थापित किया गया है। 4) सापेक्षिक अनुक्रमणिका में 20वें संस्करण से भी अधिक प्रविष्टियाँ दी गई हैं। 5) विस्तारित मैनुअल दिया गया है, तथा 6) विशेष ध्यान इस बात पर दिया गया कि इसमें विद्यमान ईसाई झुकाव (Christian bias) एवं संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) की ओर झुकाव को कम किया जाए।

NOTES

4.3. डी डी सी का कम्प्यूटरीकरण

जुलाई 1988 में फॉरेस्ट प्रेस, जो डी डी सी DDC का प्रकाशक था, 'ऑनलाइन कम्प्यूटर लाइब्रेरी सेन्टर' (OCLC: Online Computer Library Centre) का भाग बन गया। इसी परिवर्तन से डी डी ने कम्प्यूटर युग में प्रवेश किया। 1911 से फॉरेस्ट प्रेस निरंतर डी डी सी के संस्करणों का प्रकाशन करता रहा है। मैल्विल ड्यूई ने सर्वप्रथम इसी प्रकाशन संस्था का उपयोग करना आरम्भ किया था। 1988 तक फॉरेस्ट प्रेस, लेक प्लेसिड एज्युकेशनल फाउंडेशन (Forest Press Lake Placid Educational Foundation) का अंग था, जिसको मैल्विल ड्यूई ने ही स्थापित किया था। 1979 में डी डी सी को कम्प्यूटर टेप से सर्वप्रथम मुद्रित किया। कालांतर में इसमें परिष्कृत कम्प्यूटर आधारित संपादकीय प्रणाली का उदय हुआ जिससे इस डेटाबेस का उपयोग 20वें और 21वें संस्करण को प्रकाशित करने में किया गया। डी डी सी का 21वाँ संस्करण दो आकारों (format) में प्रकाशित हुआ। एक मुद्रित आरूप में एवं दूसरा ड्यूई फार विंडोज (DFW) के आरूप में, जो माइक्रोसॉफ्ट विंडोज (TM: ट्रेड मार्क) टी. एम. आधारित स्वरूप है। यह डी डी स्वरूप अगस्त 1996 में प्रकाशित हुआ। ड्यूई होम पेज ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन की अद्यतन सूचना प्रदान करता है जो World-Wide-Web पर URL: <http://www.oclc.org/fp/> पर उपलब्ध है।

5. यू डी सी का विकास

जैसा कि हमने पूर्व की इकाइयों में वर्णन किया है, यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन को ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के आधार पर विकसित किया गया। इसका सर्वप्रथम प्रकाशन 1905 में क्लैसिफिकेशन डेसिमल यूनीवर्सल (Classification Decimale Universelle) आख्या के अंतर्गत हुआ। यह पद्धति एफ आई डी (FID) द्वारा समय-समय पर अद्यतन एवं संशोधित की जाती है।

अंग्रेजी भाषा में संक्षिप्त संस्करणों का प्रकाशन ब्रिटिश स्टैंडर्ड्स इंस्टीट्यूशन (BSI: British Standards Institution) करता है। सर्वप्रथम 1948 में इसका BS1000A संक्षिप्त संस्करण प्रकाशित हुआ। 1997 में द्वितीय संक्षिप्त संस्करण निकला जिसमें मूलभूत परिवर्तन किए गए थे एवं तृतीय संक्षिप्त संस्करण 1961 में प्रकाशित हुआ।

5.1. आई एम ई 1985 एवं 1993

आगे चलकर संक्षिप्त अंग्रेजी संस्करणों (AEE: Abridged English Edition) को हटाकर इंटरनेशनल मीडियम एडिशन (IME: International Medium Edition) प्रकाशित किया गया जिसमें अधिक विस्तारित विभाजन प्रदान किए गए। आई एम ई संस्करण दो भागों में प्रकाशित हुआ। प्रथम खंड: सिस्टेमेटिक सारणी (Systematic Tables) जिसका प्रकाशन 1985 में तथा दूसरा खंड : वर्णानुक्रमिक विषय अनुक्रमणिका (Alphabetical Subject Index) जिसका प्रकाशन 1988 में हुआ। इस संस्करण में अंग्रेजी, फ्रेंच एवं जर्मन भाषा में प्रकाशित पूर्ण संस्करण का केवल एक तिहाई भाग ही उपलब्ध है कई संकेतक चिहनों एवं अंकों के अलावा संक्षिप्त अंग्रेजी संस्करण में दो और नवीन संकेतकों का उपयोग किया गया। एक तीन (the arrow) जिसका अर्थ 'इसी भी देखिए' (see also) है। उदाहरणस्वरूप 159.9 Psychology (301.151;591.51; 621.821; 616.89), एवं सामानांतर विभाजन (parallel division) जिसका अर्थ "subdivision as" को प्रस्तुत किया गया।

उदाहरण 611.3 Digestive system. Alimentary canal

611.3 (616.3, e.g., 611.31 Oral cavity)

1993 में दूसरा इंटरनेशनल मीडियम एडिशन (IME) प्रकाशित हुआ, जो दो भागों में है। इसमें अंक 4 जिसे 'Linguistics' के लिए उपयोग किया जात था, को हटा लिया गया है तथा Linguistics को वर्ग 8 में स्थानांतरित कर दिया गया है।

NOTES

5.2. कम्प्यूटर आधारित सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली में यू डी सी

1934 में ही सुझाव प्रस्तुत किया गया था कि यू डी सी मशीनी पृथक्करण (mechanical sorting) के लिए उपर्युक्त है। 1948 में रॉयल साइंटिफिक कॉन्फ्रेंस (Royal Society Scientific Conference) ने इस आवश्यकता पर बल दिया कि यू डी सी में मशीनी सूचना पुनर्प्राप्ति की सम्भावनाओं का पता लगाया जाए। संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, डेनमार्क एवं स्विट्जरलैन्ड में साठ के दशक में शोध कार्यक्रम चलाए जाने से यू डी सी का एक अनुक्रमणिका भाषा के रूप में उपयोग किया जाने लगा। इसमें सबसे महत्वपूर्ण शोध कार्य फ्रीमेन तथा एथरटन के निर्देशन में अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स (American Institute of Physics) द्वारा चलाया गया यू डी सी प्रोजेक्ट था। इस क्षेत्र में सन् साठ के दशक के उत्तरवर्ती वर्षों में इस पद्धति में मशीनी अनुप्रयोग के अध्ययन सम्बन्धी अन्य अनुप्रयोग किए गए जिनमें मुख्यतः Geoscience Abstracts का अनुक्रमणीकरण तथा धातु विज्ञान क्षेत्रों (Metallurgic Fields) में कार्यरत उपयोक्ताओं की प्रोफाइलों का रख-रखाव प्रमुख है।

5.3. यू डी सी एवं यूनीसिस्ट

एफ आई डी (FID) ने यू डी सी को एक अंबर प्रणाली (Roof Scheme) के रूप में विकसित करने का मन बनाया, जिसके अंतर्गत विशिष्ट वर्गीकरण, पर्यायकोश (thesauri) अथवा निरूपक (Descriptor) सूचियाँ एस विस्तारित यू डी सी विभाजन (उनके लिए जो यू डी सी को एक समजातीय प्रणाली के रूप में देखना चाहते हैं) व्यवस्थित किए जा सकें। इस संकल्पना को बहुत प्रोत्साहन मिला कि यू डी सी को एक स्विकिंग भाषा के रूप में स्वीकार किया जाए। इसका उपयोग अब यूनीसिस्ट (UNISIST: United Nations World Science Information System) जो ICSU/UNESCO की संयुक्त परियोजना है, में किया जाने लगा है। एसलिब (ASLIB) के तत्वावधान में यूनीसिस्ट के लिए किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया कि यू डी सी अन्य मुख्य पद्धतियों की अपेक्षा कम असंतोषजनक है।

5.4. यू डी सी का कम्प्यूटरीकरण

पिछले तीस वर्षों में कम्प्यूट निर्मित विषय अनुक्रमणिका एवं सारकरण क्षेत्र में यू डी सी का बहुत लाभ उठाया गया है। इसके अलावा इसका उपयोग चयनित सूचना प्रसारण (SDI: Selective Dissemination of Information) के क्षेत्र में भी किया गया है। यू डी सी मशीनीकरण के परिप्रेक्ष्य में रिग्बी (Rigby) ने एल्सिनोर कॉन्फ्रेंस (Elsinore Conference) में 1964 में यह दिखाया कि किस प्रकार कम्प्यूटर के उपयोग द्वारा Meteorological and Geostrophysical Titles के लेखक एवं विषयानुसर अनुक्रमणिका के प्रिंट प्रकाशित किए जा सकते हैं। रिग्बी ने एक बहुत विस्तृत सर्वेक्षण के द्वारा पन्द्रह देशों की साठ प्रायोगिक प्रणालियों और चार अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं में कम्प्यूटर यू डी सी का उपयोग पाया।

6. कोलन क्लैसिफिकेशन का विकास

जैसा कि आपको मालूम है, रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित कोलन क्लैसिफिकेशन (CC: Colon Classification) का प्रथम प्रकाशन 1933 में हुआ। सन् 1952 तक यह एक अपरिवर्तनीय पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति बनी रही। सर्वप्रथम इस पद्धति की अपरिवर्तनीयता को 1950 में पक्ष परिसूत्र की सहायता से तोड़ा गया। तत्पश्चात् सी सी अपने चतुर्थ संस्करण (1952) में मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति के रूप में परिवर्तित हो गई। सन् 1950 के बाद सी सी का विकास वैज्ञानिक विधि (Scientific Method) की ओर अग्रसर होता गया। चतुर्थ संस्करण के पश्चात् हर संस्करण में वैश्लेषी-संश्लेषणात्मकता में वृद्धि होती चली गई। सी सी की प्रमुख संरचना में मूल विषयों की अनुसूचियाँ एवं एकलों की अनुसूचियाँ हैं। व्यक्तित्व पक्ष की अनुसूची मुख्य वर्गों के लिए विशिष्ट है।

6.1. सातवें संस्करण का प्रकाशन

सी सी का सातवाँ संस्करण 1987 में प्रकाशित हुआ। इसको तीन खण्डों में प्रकाशित होना था तथा योजनानुसार प्रथम खण्ड में वर्गीकरण अनुसूची, द्वितीय एवं तृतीय खण्ड में अनुक्रमणिका एवं हल किए हुए

NOTES

उदाहरणों को प्रस्तुत करना था। लेकिन इसका कवेल प्रथम खंड, वर्गीकरण अनुसूची, ही 1987 में प्रकाशित हो सका। इसके द्वितीय एवं तृतीय खण्ड अब तक प्रकाशित नहीं हुए हैं। इस संस्करण में छठे संस्करण में विद्यमान संकेतक चिह्नों के अलावा कुछ और नवीन संकेतकों का उपयोग भी किया गया है। उदाहरणस्वरूप "&" (ampersand), + (plus), = (equals), * (asterisk) एवं "(double inverted comma) भी संकेतों की सूची में सम्मिलित किए गए हैं। मूलभूत श्रेणी पदार्थ (Matter) [M] को पदार्थ विधि (MM: Matter Method), पदार्थ-गुणधर्म (MP: Matter Property) एवं पदार्थ वस्तु (MMt: Matter Material) के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। इस संस्करण में वातावरणीय विभाजन (Environmental divisions) अध्याय DD में दिए गए हैं। मूल विषयों की अनुसूची को भी विस्तृत किया गया है तथा सामान्य पदार्थ गुण एकलों (Common Matter Property Isolates) का प्रावधान भी किया गया है। भाषा (Language), काल (Time) एवं स्थान (Space) की अनुसूचियों को भी विस्तृत किया गया है।

6.2. सी सी का कम्प्यूटरीकरण

केस वेस्टर्न रिजर्व यूनीवर्सिटी, ओहायो (Case Western Reserve University, Ohio) में हुए विकासों से पक्ष विश्लेषण के प्रभाव को जाना जा सकता है। इस्को, जर्मनी के डॉ. फुग्मन (Dr. Fugman) ने अपने केमिकल एनालिसिस सिस्टम (Chemical Analysis System) के लिए पक्ष विश्लेषण का उपयोग किया। पक्ष विश्लेषण का उपयोग आनलाइन इन्फॉर्मेशन सर्च (Online Information Search) में शेल्विंग (Shelving) कार्य के लिए भी किया जाता है। सियराक्यूज यूनीवर्सिटी, न्यूयॉर्क (Syracuse University, New York) में PMEST का उपयोग कम्प्यूटर उत्पादित अनुक्रमणिका में किया गया है।

भारत में डी आर टी सी (DRTC) ने (DRTC) ने 1967 में पक्ष विश्लेषण के आधार पर कुछ कम्प्यूटर प्रोग्राम लिखे एवं कम्प्यूटर द्वारा वर्ग संख्या बनाने का अनुप्रयोग भी किया। सी सी का उपयोग कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग में चयनित सूचना प्रसारण (SDI: Selective Dissemination of Information) सेवा, श्रृंखला अनुक्रमणीकरण (Chain Indexing) एवं चक्रीय अनुक्रमणीकरण (Cyclic Indexing) के लिए भी उपयोग किया गया। कनाडा के Western Ontario School of Library and Information Science ने सी सी अनुसूचियों का उपयोग पर्यायकोश (thesaurus) के निर्माण में किया है। 1968 में डी आर टी सी ने सी सी के मुक्त पक्षात्मक रूप का प्रयोग करते हुए क्लैसीफाइड कैटलॉग कोड (Classified Catalogue Code) आधारित एक डॉक्यूमेंट फाइंडिंग सिस्टम (Document Finding System) में सामान्य कम्प्यूटरों का प्रयोग किया।

7. अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

जैसा कि पहले बताया गया है, पुस्तकालय वर्गीकरण के क्षेत्र में पिछले बारह दशकों में बहुत उन्नति हुई है एवं कई प्रवृत्तियाँ विकसित हुई हैं। इस दिशा में इस विषय क्षेत्र में पुस्तकालय विज्ञान की अन्य पारंपरिक शाखाओं जैसे सूचीकरण, अनुक्रमणीकरण एवं सारांशीकरण इत्यादि की तुलना में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अधिक कार्य पर हुए हैं। पिछले चार दशकों में, विशेषकर 1957 से वर्गीकरण/ज्ञान व्यवस्थापन विषय पर अनेक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किए गए हैं जिनका संचालन एफ आई डी/सी आर (FID/CR) एवं इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर नालेज ऑर्गनाइजेशन (ISKO: International Society for Knowledge Organisation) ने मिलकर किया है जिनका वर्णन आगे के उप अनुभागों में किया गया है।

7.1. एफ आई डी/सी आर-इंटरनेशनल स्टडी कॉन्फ्रेंस आन क्लैसिफिकेशन रिसर्च (आई एस सी सी आर)

1957 से एफ आई डी/सी आर ने अब तक वर्गीकरण शोध विषय पर छः इंटरनेशनल स्टडी कॉन्फ्रेंस आन क्लैसिफिकेशन रिसर्च (ISCCR: International Study Conference on Classification Research) आयोजित किए हैं। प्रथम ISCCR सम्मेलन (कॉन्फ्रेंस) डोकिंग, इंग्लैंड में 13-17 मई, 1957 में सम्पन्न हुआ। डॉ. रंगनाथन ने अपने उद्घाटन भाषण (opening address) में "Library Classification as a Discipline"

NOTES

पर चर्चा की। इस सम्मेलन में निम्नलिखित क्षेत्रों से सम्बन्धित सिफारिशों की गई : (1) वर्गीकरण का विषय-विस्तार, (2) वर्गीकरण पद्धतियों, (3) शोध की आवश्यकता, (4) वर्गीकरण पद्धतियों के लाभ, (5) वर्गीकरण पद्धतियों में अंतर, (6) वर्गीकरण पद्धतियों का निर्माण एवं अनुप्रयोग, (7) दृष्टि द्वारा स्कैन की जाने वाली प्रणालियों, जैसे कार्ड कैटलॉग के लिए अंकन, (8) मशीन प्रणाली, (9) शोध परियोजनाएँ, (10) सामान्य वर्गीकरण पद्धति, (11) वर्गीकरण पद्धतियों का विकास एवं (12) शोध को प्रोत्साहन।

द्वितीय ISCCR का आयोजन एल्सिनोर, डेनमार्क में 14-18 सितम्बर 1964 में हुआ। डॉ. रंगनाथन ने अध्यक्षीय भाषण दिया जिसका विषय था "Library Classification through a Century"। इस सम्मेलन में प्रस्तुत किए गए लेखों को पाँच क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है—(1) वर्गीकरण का सामान्य सिद्धान्त, (2) मशीन संचालित वर्गीकरण में शोध, (3) चयनित एवं विशिष्ट पद्धतियों (4) जाँच तकनीक, एवं (5) भविष्य में काय हेतु निर्देश।

तृतीय ISCCR का आयोजन मुम्बई, भारत में 6-11 जनवरी 1975 जनवरी की अवधि में हुआ। इस सम्मेलन की मुख्य अनुशासार्थ निम्नलिखित विषयों पर केंद्रित की गई—(1) विश्वस्तरीय सूचना नेटवर्क के लिए सामान्य वर्गीकरण पद्धति का अभिकल्प तैयार करना, (2) विश्वस्तरीय सूचना नेटवर्क के लिए आदेश प्रणाली (ordering system) तैयार करने के लिए अनुभवसिद्ध विधियों एवं सैद्धान्तिक प्रतिरूप का उपयोग; (3) प्रणाली मूल्यांकन; (4) अंतर्विषयी अंतर्वस्तु; (5) शिक्षा, तथा (6) विकसित देशों की आवश्यकताएँ एवं समस्याएँ।

चतुर्थ ISCCR का आयोजन ऑग्सबर्ग, जर्मनी में 28 जून से 2 जुलाई 1982 के दौरान हुआ जिसका विषय था "Universal Classification, Subject Analysis and Ordering Systems"।

पाँचवें ISCCR का आयोजन टोरन्टो, कनाडा में 24-28 जून, 1991 की अवधि में किया गया। इस सम्मेलन का मुख्य विषय "Classification Research for Knowledge Representation and Organisation" था। सम्मेलन में प्रस्तुत लेखों को तीन विस्तृत श्रेणियों में रखा जा सकता है—(1) सामान्य सिद्धान्त एवं नीतियाँ, (2) संरचना एवं तर्क वर्गीकरण एवं (3) अनुभवसिद्ध खोज।

छठे ISCCR का आयोजन यूनीवर्सिटी कालेज, लंदन में 16-19 जून 1997 को किया गया जिसका विषय था "Knowledge Organisation for Information Retrieval" इस सम्मेलन का प्रवर्तन यूनीवर्सिटी कालेज, लंदन (University College, London), एसलिब (ASLIB), क्लैसिफिकेशन रिसर्च ग्रुप (CRG: Classification Research Group) एवं इस्को: इंटरनेशनल सोसायटी फॉर नालेज ऑर्गनाइजेशन (ISKO: International Society for Knowledge Organisation) ने मिलकर किया था। इस सम्मेलन में निम्नलिखित विषयों पर विचार हुआ—(1) सूचना प्रबंधन में वर्गीकरण की भूमिका; (2) इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशित सूचना पुनर्प्राप्ति में वर्गीकरण शोध; (3) वर्गीकरण में स्वचालन विधियों; (4) शोधकर्ता एवं वास्तविक विश्व; (5) वर्गीकरण एक उपकरण के रूप में एवं वर्गीकरण के लिए उपकरण; एवं (6) डेटा प्रतिरूपण।

स्व प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. विगत सौ वर्षों में वर्गीकरण के क्षेत्र में हुए विकास को किन तीन कालों में विभक्त किया गया है?
2. पक्ष पूर्व, पक्ष संक्रमण तथा पक्ष काल में हुए प्रकाशनों का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

NOTES

7. इस्को के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

इस्को : इंटरनेशनल सोसायटी फॉर नालेज ऑर्गेनाइजेशन (ISKO: International Society for Knowledge Organisation) की स्थापना 1989 में हुई थी। इस संस्था ने अब तक ज्ञान संगठन पर चार अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया है जिनके विचार विमर्श का सारांश निम्नलिखित अनुच्छेदों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रथम अंतरराष्ट्रीय इस्को सम्मेलन डार्मस्टेड (जर्मनी) में टेक्नीकल यूनीवर्सिटी (Technical University) में 15-17 अगस्त, 1990 को सम्पन्न हुआ जिसका विषय "Tools for Knowledge Organization and Human Interface" था। इसमें पढ़े गए लेखों को निम्नलिखित क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है—(1) ज्ञान संगठन की सामान्य समस्याएँ, (2) कलनविधिपूर्वक मूलपाठ विश्लेषण (algorithmic text analysis) (3) पारिभाषिक शब्दावली (4) सार्वभौमिक प्रणाली में ज्ञान संगठन (Knowledge organisation in universal systems), (5) पर्यायकोश से जुड़े मुद्दे (thesaurus issues), (6) आनलाईन पुनर्प्राप्ति (online retrieval), (7) विशिष्ट पद्धतियों में ज्ञान का व्यवस्थापन, (8) सार्वभौमिक प्रणालियों में पुनर्प्राप्ति (Retrieval from universal system) एवं (9) पुनर्प्राप्ति प्रौद्योगिकी एवं अनुक्रमणीकरण।

द्वितीय अंतरराष्ट्रीय इस्को सम्मेलन मद्रास में 26-28 अगस्त, 1992 को सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन का मुख्य विषय "Cognitive Paradigms in Knowledge Organisation" था। सम्मेलन में पढ़े गए लेखों को निम्नलिखित आठ क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है—(1) ज्ञान एवं ज्ञान संगठन, (2) पुस्तकालयों में ज्ञान की खोज, (3) सूचना पुनर्प्राप्ति में ज्ञान की खोज, (4) समस्या निवारण में ज्ञान की खोज, (5) ज्ञान के व्यवस्थापन में वर्गीकरणात्मक दृष्टिकोण, (6) ज्ञान के व्यवस्थापन में वैश्लेषी संश्लेषणात्मक दृष्टिकोण, (7) संज्ञानात्मक दृष्टांत एवं उनका अनुप्रयोग एवं (8) ज्ञान केन्द्रों में संज्ञानात्मक दृष्टांत।

तृतीय अंतरराष्ट्रीय इस्को सम्मेलन रायल स्कूल ऑफ लाइब्रेरियनशिप, कोपनहेगन, डेनमार्क में 21-24 जून, 1994 को सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन का मुख्य विषय "Knowledge Organisation and Quality Management" था। इस सम्मेलन में पढ़े गए लेखों को निम्नलिखित आठ क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है—(1) ज्ञान संगठन में गुणवत्ता, (2) ज्ञान व्यवस्थापन के सिद्धान्त, (3) वर्गीकरण पद्धति एवं पर्यायकोश के लिए भावी सम्भावनाएँ, (4) विशिष्ट क्षेत्रों में ज्ञान व्यवस्थापन (5) प्रणाली अधिकल्प में संकल्पना प्रतिनिधित्व (6) ज्ञान व्यवस्थापन में भाषा ज्ञान (7) संचारण एवं ज्ञान व्यवस्थापन, एवं (8) नई प्रौद्योगिकी एवं ज्ञान व्यवस्थापन।

चतुर्थ अंतरराष्ट्रीय इस्को सम्मेलन का आयोजन जेम्स मेडीसन मेमोरियल बिल्डिंग, लाइब्रेरी आफ कांग्रेस, वाशिंगटन में 15-19 जुलाई 1969 को किया गया। इस सम्मेलन का मुख्य विषय "Knowledge Organisation and Change" था। इसके उपविषय, जिन पर लेख पढ़े गए थे, वे इस प्रकार हैं (1) लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस क्लैसिफिकेशन, (2) ज्ञान संगठन में प्रबन्ध परिवर्तन, (3) आनलाईन वातावरण में ज्ञान व्यवस्थापन, (4) ग्रन्थपरक तत्वों में प्रौद्योगिकी का प्रभाव, (5) ज्ञान के व्यवस्थापन में पाठकों का केन्द्र, (6) ज्ञान के व्यवस्थापन में अंतरविषयी दृष्टिकोण, (7) प्राकृतिक भाषा प्रस्तुतीकरण एवं (8) ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन।

8. संगठन, संस्थाएँ एवं शोध दल

पिछले पाँच दशकों में न केवल व्यक्ति विशेष बल्कि कई संगठन, संस्थाएँ एवं शोध दलों ने भी वर्गीकरण विषय की प्रगति हेतु कार्य किए हैं। इन्होंने पुस्तकालय वर्गीकरण को एक नई दिशा देने सम्बन्धि गतिविधियाँ जारी रखी हैं जिससे इसे फलक व्यवस्थापन के साथ-साथ ज्ञान संगठन के लिए भी एक प्रभावी उपकरण के रूप में परिवर्तित किया जा सके। इन संस्थाओं की गतिविधियों का वर्णन निम्नलिखित उपअनुच्छेदों में किया गया है।

NOTES

8.1. लाइब्रेरी रिसर्च सर्कल

डॉ. रंगनाथन ने दिल्ली में 1951 में इसकी (LRC : Library Research Circle) स्थापना की। इसी बैठक प्रत्येक रविवार को डॉ. रंगनाथन के निवास पर हुआ करती थी जिसका मुख्य उद्देश्य वर्गीकरण, विशेषकर कोलन क्लैसिफिकेशन के विभिन्न पहलुओं पर, शोध चर्चा करना था। इसके सदस्यों ने मूलभूत श्रेणियों, संकेतक चिह्नों, आवर्तन एवं स्तर की अभिव्यक्ति, मंडल विश्लेषण एवं गहन वर्गीकरण इत्यादि विषयों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। 1953 में भारतीय पुस्तकालय संघ ने एक पुस्तक Depth Classification प्रकाशित की जो यह सिद्ध करती है कि इस सर्कल के सदस्यों ने इस विषय में कितना शोध किया। इसकी गतिविधियाँ 1954 में समाप्त हो गईं।

8.2. एफ आई डी / सी आर

रंगनाथन की पहल पर एफ आई डी ने 1950 में वर्गीकरण सिद्धान्त के लिए एक समिति का गठन किया गया जिसका नाम एफ आई / सी ए (FID/CA) रखा गया। तत्पश्चात् 1961 में इस समिति का नाम बदल कर Committee on Classification Research (FID/CR) रख दिया गया। यह समिति वर्गीकरण शोधकार्य को प्रोत्साहन देती रहती है। इसकी गतिविधियाँ एफ आई डी / सी आर न्यूजलेटर Newsletter में प्रकाशित होती रही हैं। यह न्यूजलेटर वर्ष में चार बार प्रकाशित होता है जिसमें वर्गीकरण शोध प्रोजेक्ट की प्रगति पर सूचना प्रदान की जाती है। अब तक एफ आई डी / सी आर द्वारा छः अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है जिनका वर्णन उपअनुच्छेद 15.6.1 में किया गया है। एफ आई डी / सी आर के वर्तमान अध्यक्ष आई. सी. मेक्लवेन (I.C. Meltwaine) हैं।

8.3. क्लैसिफिकेशन रिसर्च ग्रुप (सी आर जी)

इस ग्रुप की स्थापना लंदन में 1952 में की गई। इस ग्रुप के सदस्यों के पुराने कार्यों को Sayer's Memorial Volume में लाइब्रेरी एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित किया गया। सी आर जी ने 1953 में पक्षात्मक पद्धति पर अपने विचार प्रस्तुत किए, तत्पश्चात् एक ज्ञापन पत्र निकाला जिसकी आख्या "The Need for Faceted Classification as the Basis of All Methods of Information Retrieval" थी। इसका प्रकाशन 1955 में हुआ। 1952 से 1960 तक सी आर जी के सदस्यों ने अपना पूरा ध्यान पुस्तकालय वर्गीकरण की विशिष्ट पद्धतियों के निर्माण पर केन्द्रित किया। सी आर जी की यह मान्यता रही है कि अब तक की कोई भी ऐसी सामान्य वर्गीकरण पद्धति ऐसी नहीं है जो कम्प्यूटर पुनर्प्राप्ति के लिए उपर्युक्त हो। इसलिए यह निश्चय किया कि मार्क प्रोजेक्ट (MARC Project) के साथ मिलकर एक सामान्य वर्गीकरण पद्धति का विकास किया जाए ताकि कम्प्यूटर पुनर्प्राप्ति प्रणाली का विकास हो सके। 1970 के दशक में सी आर जी ने निम्नलिखित क्षेत्रों में सराहनीय कार्य किया : (1) एच.ई. ब्लिस के बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन का जे. मिल्स द्वारा सशोधन; (2) Broad System of Ordering (BSO) का निरूपण; (3) पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के लिए वर्गीकरण पद्धति; एवं (4) प्रेसिस (PRECIS)।

8.4. डॉक्युमेंटेशन रिसर्च एंड ट्रेनिंग सेंटर (डी आर टी सी)

डी आर टी सी (DRTC: Documentation Research and Training Centre) की स्थापना सन् 1962 में एस. आर. रंगनाथन द्वारा बंगलोर में की गई। इस संस्था ने पुस्तकालय वर्गीकरण के क्षेत्र में विभिन्न स्तरों पर शोध को बढ़ावा दिया एवं निम्नलिखित क्षेत्रों पर कार्य किया गया। (1) Development Research to Develop Depth Schedules (2) Fundamental Research to Develop Postulates and Principles, (3) Systematic Testing of Depth Schedules Developed by Faculty and Alumni of DRTC। डी आर टी सी द्वारा पुस्तकालय वर्गीकरण एवं सूचना विज्ञान से सम्बन्धित मुख्य विषयों पर प्रतिवर्ष सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त अल्पावधि की कार्यशालाओं एवं पाठ्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है। यह संस्था शारदा रंगनाथन इन्डोमेंट फॉर लाइब्रेरी साइंस (Sarada Ranganathan Endowment for Library Science) के साथ मिलकर त्रैमासिक पत्रिका भी 1964 से निरंतर प्रकाशित करती आ रही है।

NOTES

8.5. इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर नॉलेज ऑर्गेनाइजेशन (इस्को)

इस सोसायटी का जन्म फ्रैंकफर्ट, जर्मनी में 1989 में हुआ। इस संस्था की सर्वप्रथम अध्यक्ष इनेट्राउट डालबर्ग (Ingetraut Dahlberg) रही हैं। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य ज्ञान संगठन के सभी पहलुओं में शोध के विकास एवं प्रगति को बढ़ावा देना है विशेषकर वर्गीकरण शोध में संकल्पनात्मक दृष्टिकोण एवं कृत्रिम बुद्धि (artificial intelligence) को। यह संस्था संकल्पनात्मक विषयों के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं सुनियोजित दृष्टिकोण पर अधिक बल देती है। संस्था अपने इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु इस विषय के विश्व समुदाय के सभी वर्गों से व्यक्तिगत सम्पर्क रखती है जो इस क्षेत्र में विशेषकर ज्ञान संगठन के महत्वपूर्ण विषयों जैसे कृतित्व, विस्तार, संशोधन एवं उपकरणों के अनुप्रयोग इत्यादि में अवधारणा दृष्टिकोण का अनुसरण करते हैं। अब तक यह संस्था चार अंतरराष्ट्रीय इस्को (ISKO) सम्मेलनों का आयोजन कर चुकी है। इन सम्मेलनों के विचार-विमर्श का सारांश इस पाठ के उपअनुभाग 15.6.2 में प्रस्तुत किया गया है। यह संस्था Knowledge Organisation नामक त्रैमासिक पत्रिका का सम्पादन करती है। पूर्व में यह पत्रिका International Classification के नाम से प्रकाशित होती थी। यह पत्रिका संकल्पना सिद्धान्त, वर्गीकरण, अनुक्रमणिका एवं ज्ञान प्रतिनिधित्व पर अधिक केन्द्रित है।

9. वर्गीकरण पद्धतियों की जाँच

कौन-सी वर्गीकरण पद्धति तथा अनुक्रमणीकरण विधि सर्वश्रेष्ठ एवं प्रभावशाली है, इसे सुनिश्चित करने के लिए नएक अध्ययन किए गए हैं। कई वर्गीकरण पद्धतियों का परीक्षण अब तक नहीं हो पाया है। लेकिन सूचना प्रणाली में उनकी उपर्युक्तता की अवश्य जाँच की गई है। इस सम्बन्ध में क्रैनफील्ड, इंग्लैंड में सी. क्लेवरडन (C. Cleverdon) के निर्देशन में साठ के दशक के प्रारम्भ में अच्छे अध्ययन किया गया था।

10. यूनीसिस्ट एवं ब्रॉड सिस्टम ऑफ ऑर्डरिंग (बी एस ओ)

यूनीसिस्ट (UNISIST : United Nations World Science Information System) कार्यक्रम यूनेस्को द्वारा अंतरसरकारी कार्यक्रम के रूप में 1971 में प्रारम्भ किया गया था। 1971 में आयोजित प्रथम अंतरसरकारी सम्मेलन में इस कार्यक्रम को चलाने हेतु सिफारिश की गई थी।

इस रिपोर्ट में एक अध्याय तकनीकी विकास पर है जिसमें यह सुझाव दिया गया कि व्यापक विषय शीर्षकों (broad subject headings) की एक मानक सूची विशिष्ट प्रलेख-डेटा को ढूँढने के बजाय सूचना के वृहत् खण्डों के स्थान निर्धारण एवं हस्तांतरण में अधिक उपयोगी होगी।

इस कार्य के लिए एसलिब (ASLIB) से अनुरोध किया गया कि वह यह परखे कि क्या विद्यमान वर्गीकरण पद्धतियाँ इस कार्यक्रम के लिए उपर्युक्त हैं। एसलिब समिति ने किसी भी विद्यमान पद्धति को इस कार्य के लिए उपर्युक्त नहीं पाया। अतः स्वाभाविक रूप से यूनीसिस्ट ने यह निष्कर्ष निकाला कि इस कार्य के लिए "स्टैंडर्ड रेफरेन्स कोड" (SRC: Standard Reference Code) के रूप में एक नई पद्धति का विकास किया जाए। इसी कोड को बाद में ब्रॉड सिस्टम ऑफ ऑर्डरिंग (BSO: Broad System of Ordering) कहा गया।

11. स्टैंडर्ड रेफरेन्स कोड (एस आर सी) तथा बी एस ओ के लिए एफ आई डी का प्रस्ताव

एफ आई डी/सी सी सी : इंटरनेशनल फेडरेशन फॉर इंफार्मेशन एंड डॉक्युमेंटेशन/सेंट्रल क्लैसिफिकेशन कमेटी (FID/CCC: International Federation for Information and Documentation/ Central Classification Committee) यू डी सी पद्धति को एक 'अवर-प्रणाली' (roof scheme) के रूप में विकसित करने की व्यवहार्यता पर कार्य कर रही थी। यह तब की बात है जब तक 1971-71 में यूनेस्को के साथ बी.एस.ओ. का विकास करने हेतु इस समिति का अनुबद्ध नहीं हुआ था। बुडापेस्ट, हंगरी में 1972 में

NOTES

सम्पन्न हुए एफ आई डी सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि एफ आई डी / सी सी सी के पैनेल के आकार को विस्तृत किया जाए ताकि यह वर्किंग ग्रुप (Working Group) की तरह कार्य कर सके। इस ग्रुप को एफ आई डी / एस आर सी कहा गया, जिसका मुख्य उद्देश्य स्टैंडर्ड रिफरेंस कोड तैयार करना था जो यूनेस्को की इच्छानुसार बी सी ओ (BSO) के रूप में कार्य कर सके।

इस प्रस्तावित नवीन प्रणाली के निर्माण के लिए एक लघु समिति, एफ आई डी / बी एस ओ, गठित की गई। कुछ वर्षों के अध्ययन के बाद इस समिति ने बी एस ओ का एक प्रारूप तैयार किया, जिसमें दो हजार से अधिक विषयों को संक्षिप्त शृंखलाबद्ध क्रम में सूचीबद्ध किया गया। लेकिन ये विषय क्षेत्र बिना अंकन के थे। एफ आई डी ने 1978 में BSO—Sroad System of Ordering Schedule and Index प्रकाशित किया।

12. पुस्तकालय वर्गीकरण की विशिष्ट पद्धतियाँ

पिछले पाँच दशकों में कई नई विशिष्ट वर्गीकरण पद्धतियों का विकास हुआ है ताकि विशिष्ट पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। विशिष्ट वर्गीकरण पद्धतियों के निर्माण में आने वाली समस्याओं पर डी आर टी सी एवं सी आर जी ग्रुप के सदस्यों ने कॉफी गहन खोज का कार्य किया है। पक्षात्मक अनुसूचियों का विकास होने से विशिष्ट पद्धतियों के निर्माण में एक बड़ी समस्या का समाधान हो गया। 1964 में प्रकाशित रंगनाथन द्वारा रचित पुस्तक Design of Depth Classification Methodology में इस पर पूरी जानकारी प्रदान की गई है कि किस प्रकार वर्गीकरणकर्ताओं द्वारा गहन अनुसूचियों का विकास किया जा सकता है। सी आर जी के सदस्यों ने भी कई विशिष्ट पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धतियों का विकास किया है। डी आर टी सी ने 1963 से 1975 तक पचास गहन अनुसूचियों का निर्माण किया जिसमें विभिन्न प्रकार के विषय क्षेत्र सम्मिलित हैं। 1967 से 1973 तक 71 गहन अनुसूचियाँ तैयार की गईं जिनमें से प्रमुख विशिष्ट पद्धतियाँ निम्नलिखित हैं :

- (1) बी. सी. बिकरी (B. C. Vickery) कृत Soil Earth Science
- (2) बी. एफ. कईल (B.F. Kyle) कृत Classification of Social Sciences (1961)
- (3) ई. जे. कोट्स (E.J. Coats) कृत British Catalogue of Music Classification
- (4) जे. ई. एल. फराडेन (J. E. L. Farradane) कृत Diamond Technology
- (5) पीटर एफ. ब्रोक्सिस (Peter F. Broxis) कृत Organising the Arts
- (6) एन्थोनी क्रघेन (Anthony Croghan) कृत Classification of the Performing Arts, 1968
- (7) डी. डब्ल्यू. लेनगिजक्र (D. W. Langridge) A Clasification for the Literature of Jazz

13. पुस्तकालय वर्गीकरण एवं कम्प्यूटर

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् इलेक्ट्रॉनिकी युग का सूत्रपात हुआ। कम्प्यूटर एक बहुमुखी एवं बहुप्रतिभ सम्पन्न उपकरण है जो हमें पुनरावर्ती कार्यों से भार मुक्त करने में तथा एक सीमा तक सजनात्मक कार्यों में सहायता ध्यान करता है। अतः क्या हम पुस्तक वर्गीकरण हेतु कम्प्यूटर की सहायता ले सकते हैं ?

रंगनाथन के मतानुसार, “वर्गीकरण के कार्य में प्रलेख विषय का निर्धारण तथा उसमें छिपे विभिन्न पक्षों एवं पंक्तियों की पहचान सम्मिलित है। इसे ग्रन्थ में दिए गए शब्दों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा नहीं किया जा सकता है और मशील केवल यही (सांख्यिकी विश्लेषण ही) कर सकती है। कम्प्यूटर आज भी उन्हीं कार्यों को कर सकता है जिनमें स्वतंत्र निर्णय की आवश्यकता नहीं। अतः कम्प्यूटरों में जब तक विवेक क्षमता नहीं

NOTES

आ जाती, तब तक वर्गीकरण कार्य को वर्गीकरण कार्य को मानव द्वारा ही करना होगा।”

फिर भी, सत्तर के दशक से ही स्वचालित वर्गीकरण के क्षेत्र में के. पी. जेन्स (K.P. Jones) रिग्बी (Rigby), आर. फ्रीमैन (R. Freeman) तथा अन्य शोधकर्ताओं द्वारा कार्य चलाया जा रहा है। जोन्स के अनुसार कम्प्यूटर ने “वर्गीकरण के वैचारिक उपागम से अधिक सांख्यिकी को ही प्रोत्साहित किया है। स्वचालित वर्गीकरण एवं हस्तचालित वर्गीकरण प्रणाली में वास्तविक अंतर यह है कि कम्प्यूटर मानव वर्गीकरणकर्ता की अपेक्षा अधिक विस्तार में जा सकता है।” जोन्स ने आगे यह कहा है कि स्वचालित वर्गीकरण की सम्भावना पुस्तकालय कार्य के लिए नितान्त क्षीण है। वर्गीकरण के लिए सही विधियाँ एवं उपयुक्तता अब तक नहीं बन पाई है।

14. इंटरनेट : पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धतियाँ

इंटरनेट, जो सूचनाओं का विशाल भंडार है, के पास लगभग दस करोड़ पृष्ठों की सूचना सामग्री है। इंटरनेट पर चाही गई सूचना को प्राप्त करना एक कठिन कार्य है। अब ऐसे प्रयास किए गए हैं जिनसे पुस्तकालय वर्गीकरण के उपयोग द्वारा इस नेटवर्क पर सूचना की पुनर्धृति की जा सके। पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति को अपनाने से निम्नलिखित लाभ हैं :

- (क) विषयानुसार खोज करने की सुविधा में वृद्धि;
- (ख) बहुभाषीय उपागम की सम्भावना;
- (ग) अन्य सेवाओं के साथ अंतरक्रिया की सुविधा; एवं
- (घ) विशाल डेटाबेस को भागों में बाँटने की सुविधा।

इसके अलावा यदि इंटरनेट सेवा प्रोवाइडर (ISP: Internet Service Provider) एक लोकस्थित विद्यमान वर्गीकरण पद्धति का उपयोग करता है तो इस सेवा को अद्यतन रखने में बहुत आसानी रहेगी क्योंकि इसको समय-समय पर नियमित अंतराल में संशोधित किया जाता है, तथा पाठकों में भी इसकी लोकप्रियता बनी रहेगी।

उन इंटरनेट साइट्स (sites) का, जो किसी वर्गीकरण पद्धति अथवा किसी विषय-शीर्षक सूची का प्रयोग करती हैं, पता इंटरनेट पर निम्नलिखित से मिल सकता है :

<URL: <http://www.iastate.edu/~CYBERSTACKS/CTW.html>>

कुछ इंटरनेट साइट्स, जो अपने ग्रन्थ संग्रह के लिए पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति का उपयोग कर रही हैं, की सूची निम्नलिखित है :

वे साइट्स (sites) जो डी डी सी का उपयोग करती हैं, ये हैं :

CyberDewey : A Catalogue for the World Wide Web. David A. Mundie (Pittsburgh, Penn.) <URL: hyyp...ivory.lm.com/~mundie/DDHC/CyberDewey.html>

Canadian Information by Subject. Ottawa : National Library of Canada.

<URL: <http://www.nlcnc.ca/caninfo/esub.html>>

PICK : Quality Internet Resources in Library and Information Science. Aberystwyth: University of Wales Aberystwyth, Thomas Parry Library. <URL: <http://www.aber.ac.uk/~tplwww/e/pick.html>>

वे साइट्स (sites) जो यू डी सी का उपयोग करती हैं, ये हैं :

BUBL Subject Tree का मुख्य उद्देश्य UK इंटरनेट प्रोटों का व्यापक विवरण प्रदान करना है। BUBL Information sService उच्च शिक्षा समुदाय के लिए एक राष्ट्रीय सेवा है जिसके लिए Joint Information Systems Committee (JISC) UK धन प्रदान कराती है।

The NISS Directory of Networked Resources एक चयनित सेवा है, जो सभी विषयों के क्षेत्रों का विवरण प्रदान करती है। इसके लिए यू डी सी पद्धति का व्यापक उपयोग किया जाता है। इस सेवा के लिए NISS निर्देशिका द्वारा कार्य करना पड़ता है जिसके लिए यू डी सी शृंखलाओं (UDC hierarchies) का उपयोग करके उन संख्याओं के प्रत्येक सेक्शन को ऊपर पदों पर प्रदर्शित किया जाता है।

OMNI (Organising Medical networked Information) भी एक चयनित विषय सेवा है जो आयुर्विज्ञान प्रोटों की सूची है। यह यू डी सी पद्धति का उपयोग अवलोकनीय खोजों के सृजन के लिए करती है। यह अलग अवलोकन सेक्शनों के निर्माण के लिए विषय आधारित वर्गीकरण पद्धति का उपयोग भी करती है।

इंटरनेट पर उपलब्ध लाखों पुस्तकों एवं अन्य पाठ्य-सामग्री का वर्गीकरण यदि मानवीय विधि द्वारा किया जाए तो यह अधिक समय नष्ट करने वाला होगा एवं अधिक धन का व्यय होगा। इसलिए अब कई शोध परियोजनाएँ प्रारम्भ की गई हैं ताकि स्वचालित वर्गीकरण द्वारा इंटरनेट पर उपलब्ध पाठ्य-सामग्री का अवलोकन किया जा सके। ये परियोजनाएँ यह जाँच कर रही हैं कि किस विधि द्वारा विषय पदों (subject terms) को वर्गीकृत अंकन (classified notation) में परिवर्तित किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप परिवर्तन के लिए Nordic WAIS/WWW Project (Lund) and Project Gerhrd (Oldenburg) ने यू डी सी पद्धति का उपयोग किया है जबकि OCLC के Project Scorpion ने डी डी सी पद्धति को चुना है। कई ऐसे प्रोजेक्ट (परियोजनाएँ) भी हैं जो इस सम्भावना का पता लगा रहे हैं कि किस प्रकार naural networks तथा स्वचालित परिवर्तन का वर्गीकरण पद्धति के साथ तालमेल हो।

स्व प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. डी डी सी के 16वें एवं 17वें संस्करणों की मुख्य विशेषता बताइये।
4. डी डी सी के बीसवें तथा इक्कीसवें संस्करण में पाठकों की किन सुविधाओं का ध्यान रखा गया है।

.....

.....

.....

.....

15. सार-संक्षेप

पुस्तकालय वर्गीकरण के इतिहास, विकास एवं प्रवृत्तियों का अध्ययन सन् 1876 से प्रारम्भ किया जा सकता है जब मैल्विल ड्यूई ने सर्वप्रथम डेसिमल क्लैसिफिकेशन का प्रकाशन किया था रंगनाथन ने पुस्तकालय वर्गीकरण इतिहास को तीन मुख्य कालों में बाँटा है : (1) पक्ष-पूर्व काल (1876-1896); (2) पक्ष संक्रमण काल (1897-1032); एवं (3) पक्ष काल (1933-1972)। पिछले पचास वर्षों में तीन मुख्य पद्धतियों (डी डी

NOTES

NOTES

सी, यू डी सी एवं सी सी) में पर्याप्त परिष्कार हुआ है। डी डी सी का 1976 में 18वाँ संस्करण, 1997 में 19वाँ संस्करण, 1988 में 20वाँ संस्करण, तथा 1996 में 21वाँ संस्करण प्रकाशित हुआ। जुलाई 1988 में फॉरिस्ट प्रेस, जो अब तक डी डी सी का प्रकाशन करता रहा है, ओ सी एल सी (OCLC) का अंग बन गया। डी डी सी का 21वाँ संस्करण दो आरूपों (format) में प्रकाशित हुआ : (1) मुद्रित आरूप, तथा (2) ड्यूई फॉर विंडोज (सी डी रूप)। उपयोक्ता प्रस्तकालयों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए यू डी सी ने संक्षिप्त अंग्रेजी संस्करण (Abridged English Edition) प्रकाशित किया। संक्षिप्त अंग्रेजी संस्करण 1985 एवं 1988 में दो खण्डों में प्रकाशित हुआ। यही संस्करण 1993 में फिर प्रकाशित हुआ। इन संस्करणों में दो नए चिह्नों (जियकस अर्थ्स 'इसे भी देखिए') एवं (जिसका अर्थ 'समांतर विभाजन') को भी जोड़ दिया गया। अंक 4, जिसका उपयोग पहले भाषा विज्ञान (linguistics) के लिए किया जाता था, का उपयोग बन्द कर दिया गया है तथा भाषा विज्ञान के विभाजनों (divisions) को अब अंक 8 में स्थानांतरित कर दिया गया है। यू डी सी का उपयोग कम्प्यूटर आधारित सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली के लिए कॉफी प्रभावशाली सिद्ध हुआ है।

सी सी का सातवाँ संस्करण बिना अनुक्रमणिका के 1987 में प्रकाशित हुआ। इसमें कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए हैं जिनमें पाँच और नये संकेतक अंकों जैसे—(ampersand), + (plus), = (equals), * (asterisk), oa "(double inverted comma) का उपयोग किया गया है। सी सी का भी प्रयोग कम्प्यूटर आधारित अनुक्रमणीकरण सेवाओं के लिए किया गया है।

पुस्तकालय वर्गीकरण एवं ज्ञान व्यवस्थापन के क्षेत्र में अब तक कई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है। 1997 तक एफ आई डी / सी आर ने छः अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया है। इस्को (ISKO) द्वारा भी अब तक ज्ञान व्यवस्थापन विषय पर चार अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है।

पिछले पाँच दशकों में अर्थात् सन् 1950 के बाद पुस्तकालय वर्गीकरण एवं ज्ञान संगठन विषय के क्षेत्र में कई संगठन, संघ, एवं अनुसंधान दल स्थापित हुए। आलब्रेरी रिसर्च ग्रुप 1951 में, क्लैसिफिकेशन रिसर्च ग्रुप 1952 में तथा एफ आई डी / सी आर 1961 में, डी आर टी सी 1962 में स्थापित हुए तथा इस्को (ISKO) की स्थापना वर्ष 1989 में हुई। इन सभी संगठनों ने पुस्तकालय वर्गीकरण एवं ज्ञान व्यवस्थापन के क्षेत्र में नवीन आयाम प्रस्तुत किए हैं तथा इन संगठनों/ संस्थाओं ने इस विषय क्षेत्र के विकास में कॉफी योगदान दिया है।

उत्तम एवं प्रभावशाली वर्गीकरण एवं अनुक्रमणिका विधियों को सुनिश्चित करने हेतु कई प्रकार के अध्ययन एवं प्रयोग किए गए हैं। यूनेस्को द्वारा यूनीसिस्ट प्रोग्राम को 1971 में प्रारम्भ करने के पश्चात् एफ आई डी, एसलिब एवं सी आर जी के सहयोग से ब्रॉड सिस्टम ऑफ आर्डीरिंग का उपयोग करने में पहल की गई।

प्रमुख पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धतियों के विकास के अतिरिक्त पिछले पचास वर्षों में विशिष्ट वर्गीकरण पद्धतियों का भी विकास हुआ। सी आर जी ग्रुप एवं डी आर टी सी के आपसी सहयोग से कई विषयों के लिए सी सी वर्गीकरण पद्धति पर आधारित विशिष्ट पद्धतियों एवं गहन अनुसूचियों का निर्माण किया गया। सकार के दशक में पुस्तक वर्गीकरण हेतु कम्प्यूटर का उपयोग किया गए। के. पी. एस. जोन्स, आर. फ्रीमन एवं रिग्बी ने स्वचालित वर्गीकरण के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण नवीन प्रयास किए। जोन्स इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि पुस्तकालय उद्देश्यों की पूर्ति हेतु स्वचालित वर्गीकरण के उपयोग की सम्भावनाएँ अत्यंत क्षीण हैं।

सारांश रूप में यह कहा जा सकता है कि पुस्तकालय वर्गीकरण एवं ज्ञान व्यवस्थापन की स्पष्ट भूमिका 21 वीं शताब्दी में उभरे सूचना आधारित समाज में अब और भी अधिक रहेगी। उपर्युक्त दो विषय एफ आई डी / सी आर एवं इस्को (ISKO) संगठनों के सम्मेलनों एवं गोष्ठियों में हर वर्ष मुख्य विषय के रूप में छारे रहेंगे।

16. स्व-प्रगति परीक्षण के उत्तर

1. रंगनाथन ने पिछले सौ वर्षों में हुए वर्गीकरण क्षेत्र में प्रवृत्तियों एवं विकास को तीन मुख्य कालों में विभक्त किया है जो निम्नलिखित हैं :

(1) पक्ष-पूर्व काल (Pre-facet Period) (1876-1896)

(2) पक्ष संक्रमण काल (Transition to Facet Period) (1897-1932)

(3) पक्ष काल (Facet Period) (1933-1972)

2. पक्ष-पूर्व काल में ड्यूई रचित डेसिमल क्लैसिफिकेशन (Dewey Decimal Classification) (1876) एलु सी. ए. कटर रचित एक्सपेंसिव क्लैसिफिकेशन (Expansive Classification) (1879) का प्रकाशन हुआ। पक्ष संक्रमण काल में यूनीवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन (Universal Deciaml Classification) (1897-1905) एवं लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस क्लैसिफिकेशन (Library of Congress Classification) (1902) का प्रकाशन हुआ। पक्ष काल में रंगनाथन कृत कोलन क्लैसिफिकेशन (Colon Classification) (1933) एच. ई. ब्लिस कृत बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन (Bibliographic Classification) (1935), लाइब्रेरी बिब्लियोग्राफिक क्लैसिफिकेशन (1960) एवं फरमोन्ट राईडर कृत राईडर्स इंटरनेशनल क्लैसिफिकेशन (Riders International Classification) (1961) का प्रकाशन हुआ। इनमें कुछ वर्गीकरण पद्धतियों का अपना संगठनात्मक ढाँचा है या फिर कुछ संस्थाएँ हैं, जो इनमें समय-समय पर हो रहे संशोधन, रखरखाव, विकास एवं अनुप्रयोग की पूर्ण जिम्मेदारी का वहन करती हैं।

3. 16वें संस्करण (1958) के पूर्व ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन के संस्करण अनिश्चित अंतराल में प्रकाशित होते थे। 16वें संस्करण के बाद ही यह सम्भव हो सका कि इस पद्धति का हर सात वर्ष पश्चात् नया संस्करण प्रकाशित किया गया। यह सब बेंजामिन कस्टर के प्रयासों के फलस्वरूप सम्भव हो सका, जो 16वें संस्करण के संपादक थे। इस संस्करण में यह प्रयास किया गया कि अंकनों में जो परस्पर विरोध था, उन अंकनों का किस प्रकार एकीकरण कर नवीन विषयों के लिए प्रावधान किया जाए। 17वाँ संस्करण 1965 में दो खण्डों में प्रकाशित हुआ खण्ड 1 सारणियाँ; एवं खण्ड 2 भौगोलिक क्षेत्र सारणी एवं सापेक्षिक अनुक्रमणिका। इस संस्करण में पूर्व संस्करणों की अपेक्षा संश्लेषण की ओर अधिक प्रवृत्ति दिखाई दी। विषय विभाजन का शून्य के साथ उपयोग एवं रूप विभाजन में भी शून्य के उपयोग के कारण जो कुछ विसंगतियाँ उत्पन्न हो गई थीं उनको 17वें संस्करण में दूर किया गया।

4. 20वाँ एवं 21वाँ संस्करण— 20वाँ संस्करण 1989 में चार खंडों में प्रकाशित हुआ जिसको जॉन पी. कोमारोमी (Jogn P. Comaromi) एवं अन्य ने सम्पादित किया। खण्ड 1) परिचय एवं सारणियाँ, खंड 2) अनुसूचियाँ (000-500), खंड 3) अनुसूचियाँ (600-900) एवं खंड 4) सापेक्षिक अनुक्रमणिका एवं मैनुअल। इस संस्करण के मुख्य उद्देश्य थे : पाठकों की सुविधा, स्पष्ट अनुदेश, अधिक स्पष्टीकरण, विस्तारित सारांश—तालिकाओं के कारण अधिक अभिगम्यता तथा जो विषयों के वर्गीकरण में द्विवरावृत्ति (duplication) लाने वाले प्रावधानों को हटाना।

जोन एस. मिचल (Joan S. Mitchell) इत्यादि के सम्पादन में 1996 में 21वाँ संस्करण 4 खंडों में प्रकाशित हुआ। इस संस्करण में पाठकों की सुविधा की ओर अधिक ध्यान दिया गया है, जो इस प्रकार है—1) वर्गीकरणकार के मार्गदर्शन के लिए उपर्युक्त स्थान पर अधिक से अधिक सूचनाएँ दी गई हैं। 2) अस्पष्ट शीर्षकों को हटा कर नए सिरे से स्पष्ट रूप में लिखा गया है। 3) "Example" तथा "Contain notes" को "including notes" से विस्थापित किया गया है। 4) सापेक्षिक अनुक्रमणिका में 20वें

NOTES

संस्करण से भी अधिक प्रविष्टियाँ दी गई हैं। 5) विस्तारित मैनुअल दिया गया है, तथा 6) विशेष ध्यान इस बात पर दिया गया कि इसमें विद्यमान ईसाई झुकाव (Christian bias) एवं संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) की ओर झुकाव को कम किया जाए।

NOTES

17. अभ्यास-प्रश्न

1. डी डी सी के विकास-क्रम की विवेचना कीजिए ?
2. यू डी सी के विकास-क्रम का विस्तृत वर्णन कीजिए ?
3. कोलन क्लासिफिकेशन के विकास एवं कम्प्यूटरीकरण का परिचय दीजिए ?
4. इस्को (ISKO) के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का क्रमबद्ध वर्णन कीजिए ?
5. पुस्तकालय वर्गीकरण की विशिष्ट पद्धतियों का उल्लेख कीजिए ?